Rohit Kumar

15 Jul 1978

01:22 PM

Patna

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 112697101

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**15/07/1978**
दिन	शनिवार
जन्म समय	**13:22:00 घंटे**
इष्ट	20:35:54 घटी
स्थान	**Patna**
राज्य	Bihar
देश	India

अक्षांश	25:35:38 उत्तर
रेखांश	85:08:15 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	00:10:33 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	13:32:33 घंटे
वेलान्तर	-00:05:50 घंटे
साम्पातिक काल	09:03:49 घंटे
सूर्योदय	05:07:38 घंटे
सूर्यास्त	18:42:46 घंटे
दिनमान	13:35:08 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वर्षा
सूर्य के अंश	28:55:26 मिथुन
लग्न के अंश	17:23:22 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	तुला - शुक्र
राशि-स्वामी	**तुला - शुक्र**
नक्षत्र-चरण	**विशाखा - 1**
नक्षत्र स्वामी	गुरु
योग	साध्य
करण	तैतिल
गण	राक्षस
योनि	व्याघ्र
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	सर्प
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	ती-तीरथ
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कर्क

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1900	आषाढ़	24
पंजाबी	संवत : 2035	आषाढ़	31
बंगाली	सन् : 1385	आषाढ़	30
तमिल	संवत : 2035	आनी	31
केरल	कोल्लम : 1153	मिथुनम	31
नेपाली	संवत : 2035	आषाढ़	31
चैत्रादि	संवत : 2035	आषाढ़	शुक्ल 10
कार्तिकादि	संवत : 2035	आषाढ़	शुक्ल 10

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 10
तिथि समाप्ति काल _____: 25:27:45
जन्म तिथि _____: 10
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: स्वाति
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 09:17:09 घंटे
जन्म योग _____: विशाखा
सूर्योदय कालीन योग _____: साध्य
योग समाप्ति काल _____: 16:41:26 घंटे
जन्म योग _____: साध्य
सूर्योदय कालीन करण _____: तैतिल
करण समाप्ति काल _____: 14:25:43 घंटे
जन्म करण _____: तैतिल
भयात _____: 10:12:08
भभोग _____: 57:03:46
भोग्य दशा काल _____: गुरु 13 वर्ष 2 मा 4 दि

घात चक्र

मास _____: माघ
तिथि _____: 4-9-14
दिन _____: गुरुवार
नक्षत्र _____: शतभिषा
योग _____: शुक्ल
करण _____: तैतिल
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: गरुड़
लग्न _____: कन्या
सूर्य _____: कन्या
चन्द्र _____: धनु
मंगल _____: तुला
बुध _____: कर्क
गुरु _____: वृश्चिक
शुक्र _____: धनु
शनि _____: सिंह
राहु _____: मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

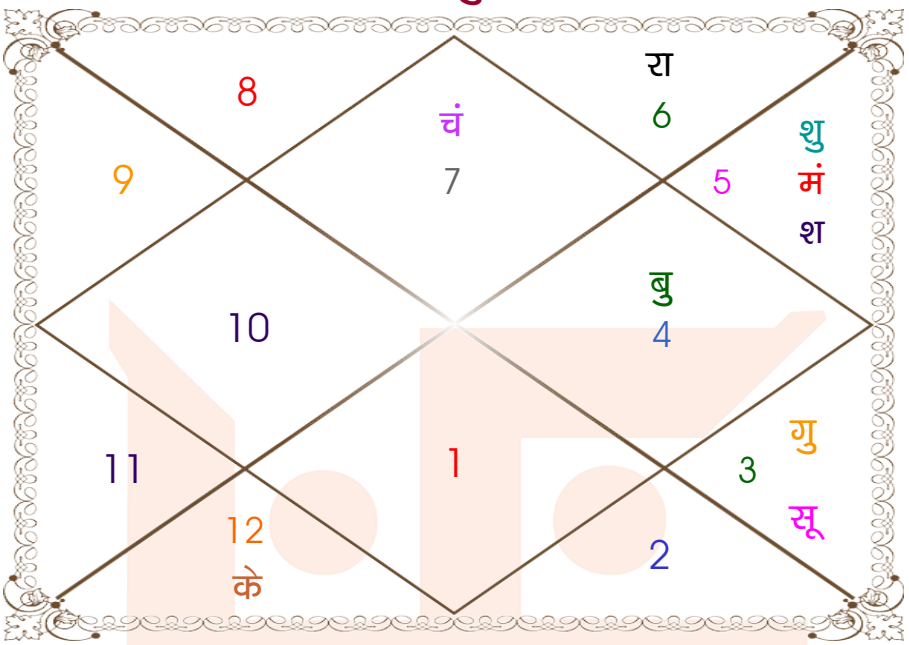

चन्द्र कुंडली

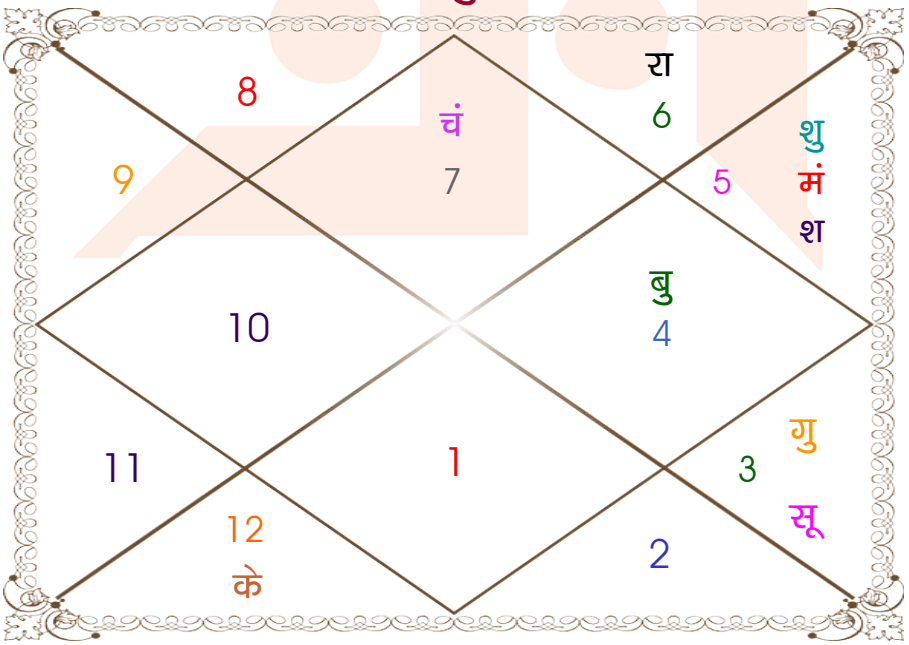

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

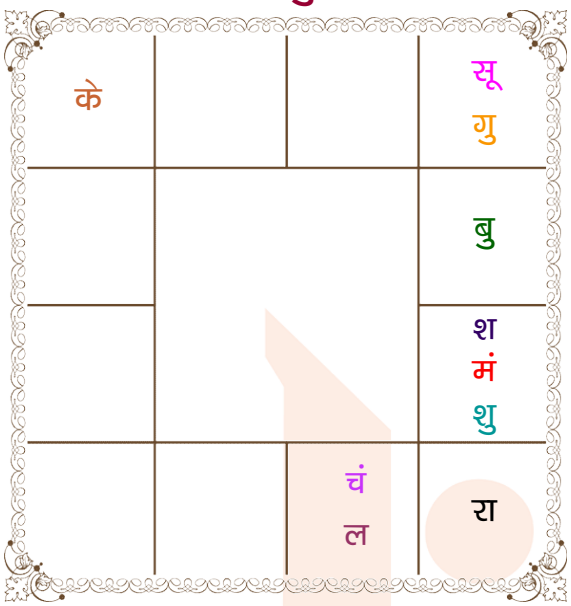

लग्न कुंडली

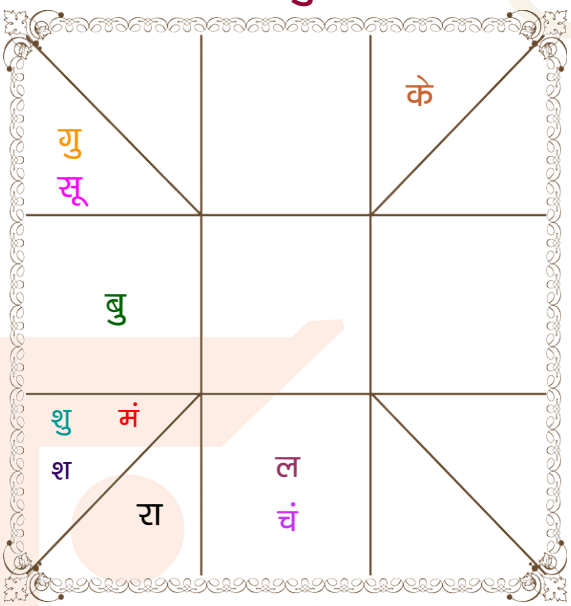

विंशोत्तरी
गुरु 13वर्ष 2मा 4दि

गुरु

15/07/1978

18/09/2095

गुरु	18/09/1991
शनि	18/09/2010
बुध	18/09/2027
केतु	18/09/2034
शुक्र	18/09/2054
सूर्य	18/09/2060
चन्द्र	18/09/2070
मंगल	18/09/2077
राहु	18/09/2095

योगिनी
धान्या 2वर्ष 5मा 19दि

उल्का

03/01/2026

03/01/2032

उल्का	03/01/2027
सिद्धा	04/03/2028
संकटा	04/07/2029
मंगला	03/09/2029
पिंगला	03/01/2030
धान्या	04/07/2030
भ्रामरी	05/03/2031
भद्रिका	03/01/2032

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	17:23:22	315:02:07	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	शुक्र	---
सूर्य			मिथु	28:55:26	00:57:14	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	सूर्य	सम राशि
चंद्र			तुला	22:21:06	13:52:18	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	शनि	सम राशि
मंगल			सिंह	24:17:08	00:35:38	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	बुध	मित्र राशि
बुध			कर्क	24:49:29	01:14:56	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	राहु	शत्रु राशि
गुरु		अ	मिथु	25:21:50	00:13:29	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	बुध	शत्रु राशि
शुक्र			सिंह	10:07:26	01:08:05	मघा	4	10	सूर्य	केतु	शनि	शत्रु राशि
शनि			सिंह	05:09:53	00:06:38	मघा	2	10	सूर्य	केतु	मंगल	शत्रु राशि
राहु	व		कन्या	05:41:19	00:03:12	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	बुध	मूलत्रिकोण
केतु	व		मीन	05:41:19	00:03:12	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	मूलत्रिकोण
हर्ष	व		तुला	18:46:27	00:00:19	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	चंद्र	---
नेप	व		वृश्चि	22:27:57	00:01:13	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	चंद्र	---
प्लूटो			कन्या	20:27:51	00:00:42	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	---
दशम भाव			कर्क	19:55:44	--	आश्लेषा	--	9	चंद्र	बुध	शुक्र	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:33:27

लग्न-चलित

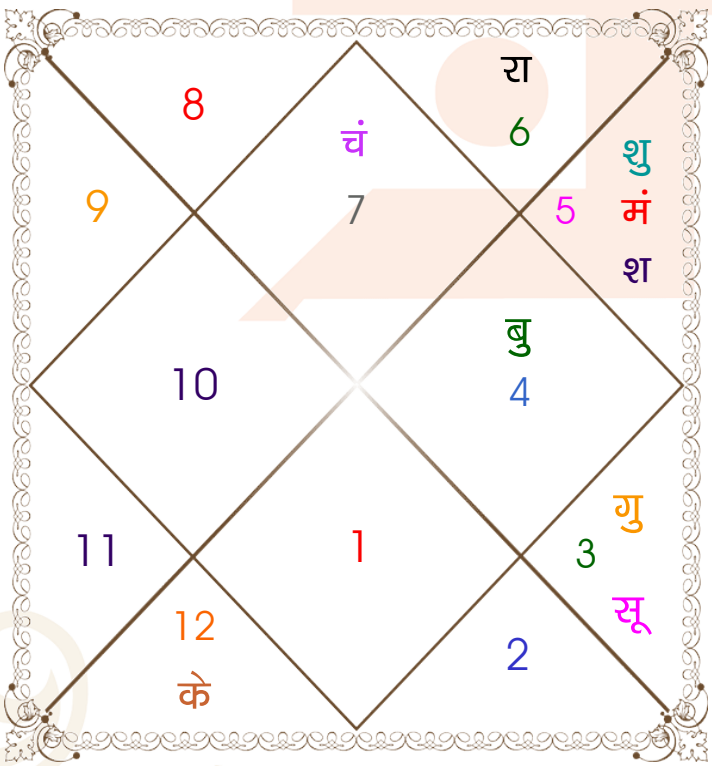

चन्द्र कुंडली

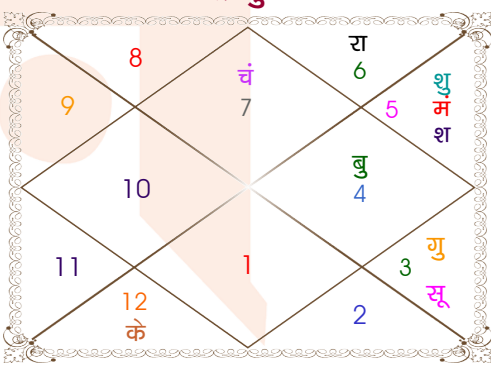

नवमांश कुंडली

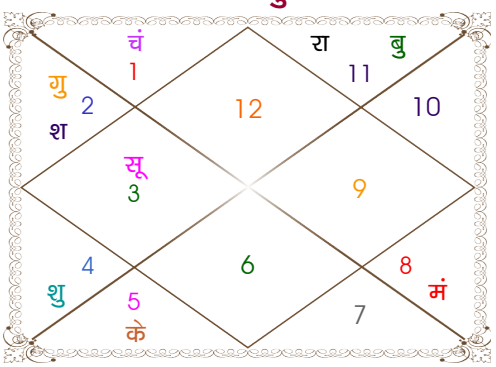

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	तुला	02:48:45	तुला	17:23:22
2	वृश्चिक	02:48:45	वृश्चिक	18:14:09
3	धनु	03:39:33	धनु	19:04:57
4	मकर	04:30:20	मकर	19:55:44
5	कुम्भ	04:30:20	कुम्भ	19:04:57
6	मीन	03:39:33	मीन	18:14:09
7	मेष	02:48:45	मेष	17:23:22
8	वृष	02:48:45	वृष	18:14:09
9	मिथुन	03:39:33	मिथुन	19:04:57
10	कर्क	04:30:20	कर्क	19:55:44
11	सिंह	04:30:20	सिंह	19:04:57
12	कन्या	03:39:33	कन्या	18:14:09

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	17:23:22
2	वृश्चिक	16:35:43
3	धनु	17:31:14
4	मकर	19:55:44
5	कुम्भ	22:09:45
6	मीन	21:40:41
7	मेष	17:23:22
8	वृष	16:35:43
9	मिथुन	17:31:14
10	कर्क	19:55:44
11	सिंह	22:09:45
12	कन्या	21:40:41

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति

चलित कुंडली

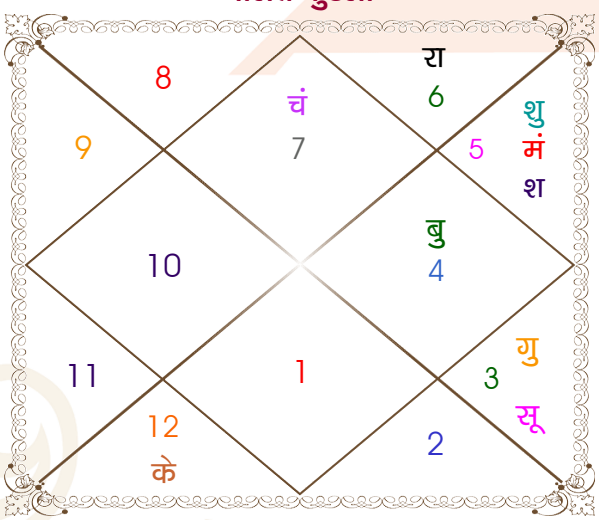

भाव कुंडली

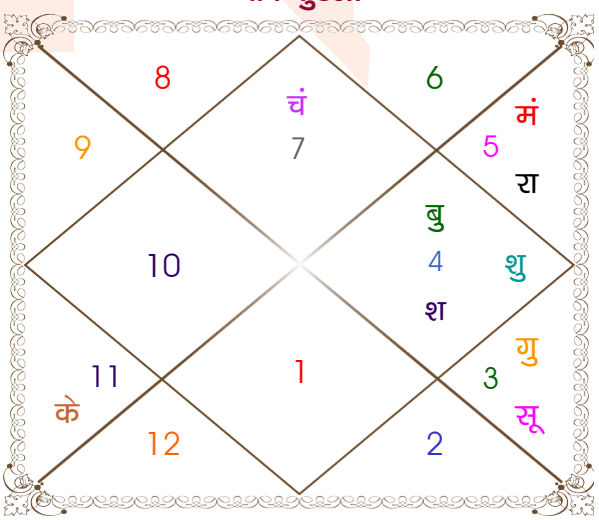

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	आत्मा	पितृ	मृत	शान्त	नृत्यलिप्सा	6.74	58 %
चंद्र	पुत्र	मातृ	वृद्ध	निपीदित	नेत्रपाणि	0.64	62 %
मंगल	मातृ	भ्रातृ	मृत	मुदित	सभा	0.97	44 %
बुध	भ्रातृ	ज्ञाति	बाल	खल	सभा	3.61	66 %
गुरु	अमात्य	धन	मृत	विकल	कौतुक	0.00	67 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	कुमार	खल	सभा	2.08	49 %
शनि	कलत्र	आयु	बाल	खल	नेत्रपाणि	2.92	56 %
राहु	---	ज्ञान	मृत	स्वस्थ	सभा	0.00	86 %
केतु	---	मोक्ष	मृत	स्वस्थ	सभा	0.00	86 %
कुल						16.96	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति

चलित कुंडली

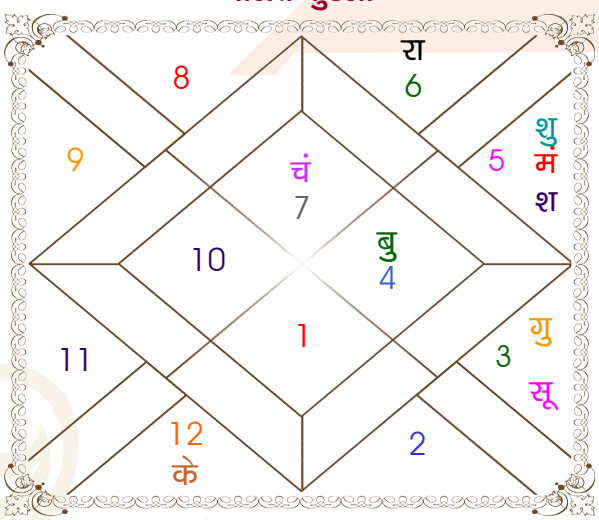

लग्न-चलित

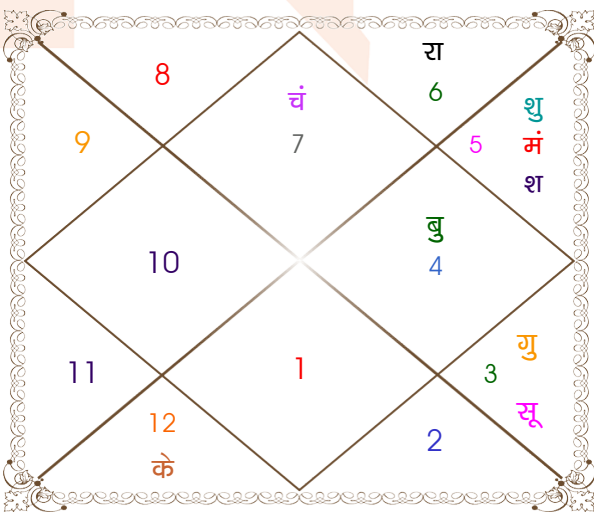

सुदर्शन चक्र

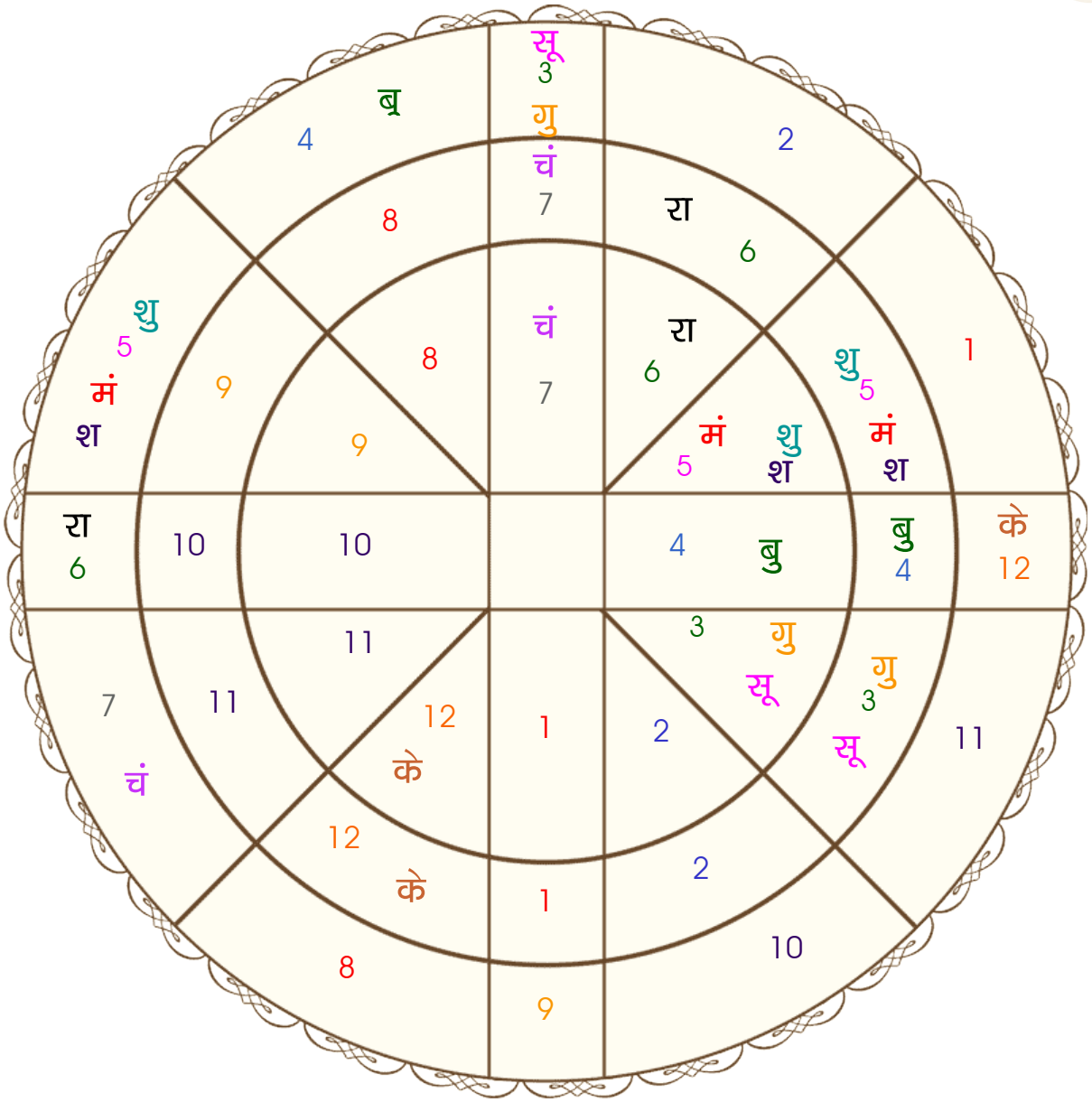

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

भोग्य दशा काल : गुरु 13 वर्ष 0 मास 19 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मिथु	29:01:35	बुध	गुरु	सूर्य	गुरु
चंद्र		तुला	22:27:16	शुक्र	गुरु	शनि	केतु
मंगल		सिंह	24:23:18	सूर्य	शुक्र	बुध	शुक्र
बुध		कर्क	24:55:39	चंद्र	बुध	राहु	शनि
गुरु		मिथु	25:27:59	बुध	गुरु	बुध	गुरु
शुक्र		सिंह	10:13:35	सूर्य	केतु	शनि	शुक्र
शनि		सिंह	05:16:03	सूर्य	केतु	मंगलबुध	
राहु	व	कन्या	05:47:29	बुध	सूर्य	बुध	शुक्र
केतु	व	मीन	05:47:29	गुरु	शनि	बुध	केतु
हर्ष	व	तुला	18:52:36	शुक्र	राहु	चंद्र	बुध
नेप	व	वृश्चि	22:34:07	मंगलबुध	चंद्र	गुरु	
प्लूटो		कन्या	20:34:01	बुध	चंद्र	शुक्र	शुक्र

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	तुला	17:29:31	शुक्र	राहु	सूर्य	चंद्र
2	वृश्चि	16:41:53	मंगलबुध		बुध	बुध
3	धनु	17:37:24	गुरु	शुक्र	मंगलशनि	
4	मक	20:01:54	शनि	चंद्र	केतु	राहु
5	कुंभ	22:15:55	शनि	गुरु	शनि	बुध
6	मीन	21:46:51	गुरु	बुध	सूर्य	राहु
7	मेष	17:29:31	मंगलशुक्र		मंगलराहु	
8	वृष	16:41:53	शुक्र	चंद्र	शनि	शुक्र
9	मिथु	17:37:24	बुध	राहु	सूर्य	राहु
10	कर्क	20:01:54	चंद्र	बुध	शुक्र	मंगल
11	सिंह	22:15:55	सूर्य	शुक्र	शनि	बुध
12	कन्या	21:46:51	बुध	चंद्र	शुक्र	गुरु

के.पी. अयनांश : 23:27:17

फॉरच्युना : कुम्भ 10:55:12

लग्न कुंडली

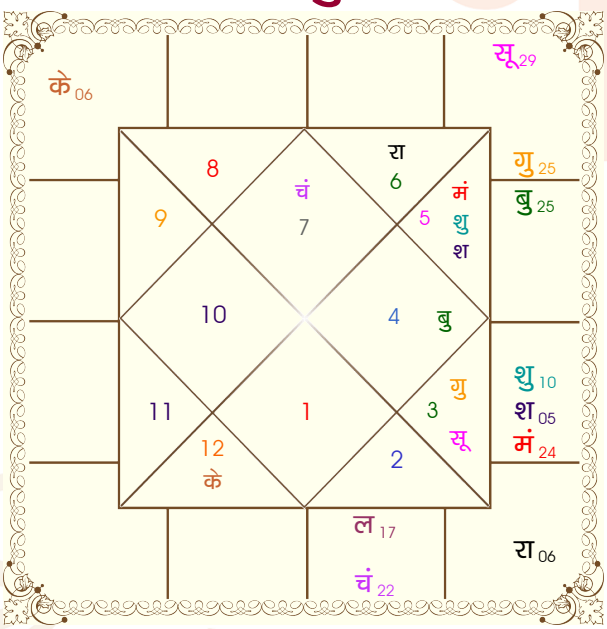

भाव कुंडली

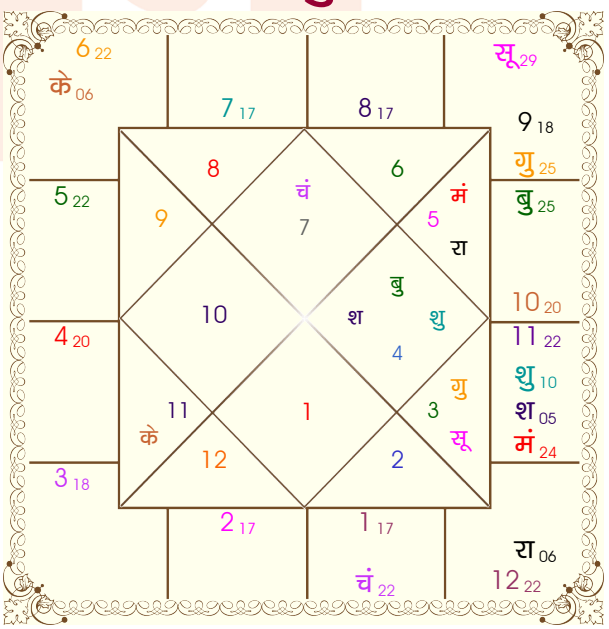

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र, मंगल- शुक्र-
2	मंगल-
3	सूर्य- चंद्र- गुरु,
4	शनि- केतु-
5	शुक्र, शनि+ केतु+
6	सूर्य- चंद्र- गुरु,
7	मंगल-
8	मंगल- शुक्र-
9	सूर्य+ चंद्र, बुध, गुरु+ राहु,
10	चंद्र- मंगल, बुध+ शुक्र, शनि, केतु,
11	सूर्य- मंगल, राहु+
12	बुध,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	3- 6- 9+ 11-
चंद्र	1, 3- 6- 9, 10-
मंगल	1- 2- 7- 8- 10, 11,
बुध	9, 10+ 12,
गुरु	3, 6, 9+
शुक्र	1- 5, 8- 10,
शनि	4- 5+ 10,
राहु	9, 11+
केतु	4- 5+ 10,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	राहु
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	गुरु
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	शनि
लग्न अन्तर स्वामी	सूर्य
राशि अन्तर स्वामी	शनि

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	चं	मं	शु
2	--	--	--	मं
3	--	--	सू चं गु	गु
4	--	--	के	श
5	शु श	के	के	श
6	--	--	सू चं गु	गु
7	--	--	--	मं
8	--	--	मं	शु
9	सू चं गु रा	सू गु	बु	बु
10	मं बु के	बु शु श	--	चं
11	--	मं रा	रा	सू
12	--	--	बु	बु

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	11	---	मिथुन	9
चंद्र	10	4,8,12	तुला	1
मंगल	2,7	---	सिंह	11
बुध	9,12	2,6,10	कर्क	10
गुरु	3,6	5	मिथुन	9
शुक्र	1,8	3,7,11	सिंह	10
शनि	4,5	---	सिंह	10
राहु	---	1,9	कन्या	11
केतु	---	---	मीन	5

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	3,6	5	9	11	---	9
चंद्र	3,6	5	9	4,5	---	10
मंगल	1,8	3,7,11	10	9,12	2,6,10	10
बुध	9,12	2,6,10	10	---	1,9	11
गुरु	3,6	5	9	9,12	2,6,10	10
शुक्र	---	---	5	4,5	---	10
शनि	---	---	5	2,7	---	11
राहु	11	---	9	9,12	2,6,10	10
केतु	4,5	---	10	9,12	2,6,10	10

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	88.92	202.35	144.29	114.82	85.36	130.12	125.16	155.69	335.69	198.77	232.47	170.46
सूर्य	--	--	तृती	--	युति	--	--	--	--	--	--	--
88.92	0.00	0.00	1.05	0.00	9.31	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	--	--	--	--	युति	--	--
202.35	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.31	0.00	0.00
मंगल	--	तृती	--	--	--	युति	--	युति	सप्त	तृती	4था	--
144.29	0.00	2.62	0.00	0.00	0.00	0.88	0.00	3.68	3.68	0.38	9.82	0.00
बुध	--	चतु	--	--	--	--	युति	नवां	--	--	पंच	तृती
114.82	0.00	2.39	0.00	0.00	0.00	0.00	4.69	0.21	0.00	0.00	2.45	1.25
गुरु	युति	5वां	तृती	--	--	अष्ट	नवां	--	9वां	5वां	--	चतु
85.36	9.31	9.51	2.88	0.00	0.00	0.93	0.95	0.00	4.70	7.71	0.00	0.85
शुक्र	--	पंचा	युति	--	--	--	युति	--	--	--	--	नवां
130.12	0.00	0.94	0.88	0.00	0.00	0.00	8.68	0.00	0.00	0.00	0.00	0.86
शनि	--	--	--	युति	--	युति	--	--	--	3रा	--	3रा
125.16	0.00	0.00	0.00	4.69	0.00	8.68	0.00	0.00	0.00	1.45	0.00	0.31
राहु	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	युति
155.69	0.00	0.00	3.68	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.23
केतु	--	--	सप्त	--	--	--	षष्ठ	सप्त	--	--	--	सप्त
335.69	0.00	0.00	3.68	0.00	0.00	0.00	0.68	10.00	0.00	0.00	0.00	0.23
हर्ष	--	युति	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
198.77	0.00	9.31	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
232.47	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	--	--	--	युति	सप्त	--	तृती	--
170.46	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.23	0.23	0.00	2.60	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	197.39	228.24	259.08	289.93	319.08	348.24	17.39	48.24	79.08	109.93	139.08	168.24
सूर्य	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--
88.92	0.00	0.00	5.14	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.14	0.00	0.00	0.00
चंद्र	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--
202.35	8.68	0.00	1.97	2.42	1.97	0.00	8.68	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	4था	--	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति	--
144.29	0.00	8.06	0.00	0.00	8.55	8.06	0.00	0.00	0.00	0.00	8.55	0.00
बुध	--	--	--	--	--	--	--	--	--	युति	--	--
114.82	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.71	0.00	0.00
गुरु	5वां	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--
85.36	6.71	0.00	7.91	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.91	0.00	0.00	0.00
शुक्र	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
130.12	0.00	0.00	0.00	0.00	5.91	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.91	0.00
शनि	3रा	--	--	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	--
125.16	2.87	0.00	0.00	0.00	1.13	0.00	0.00	2.01	0.00	0.00	1.13	0.00
राहु	--	पंचा	--	अष्टां	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
155.69	0.00	0.65	0.00	0.37	0.00	2.54	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.54
केतु	--	--	--	--	--	युति	--	पंचा	--	अष्टां	--	सप्त
335.69	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.54	0.00	0.65	0.00	0.37	0.00	2.54
हर्ष	युति	--	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--	--
198.77	9.90	0.00	2.99	2.86	2.99	0.66	9.90	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--
232.47	0.00	9.03	0.00	2.36	1.90	1.34	0.00	9.03	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	--
170.46	0.00	2.50	2.81	2.97	0.00	9.73	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	197.39	226.60	257.52	289.93	322.16	351.68	17.39	46.60	77.52	109.93	142.16	171.68
सूर्य	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--
88.92	0.00	0.00	3.68	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.68	0.00	0.00	0.00
चंद्र	युति	--	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--	--
202.35	8.68	0.00	0.90	2.42	3.00	0.49	8.68	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	4था	--	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति	--
144.29	0.00	6.93	0.00	0.00	9.75	9.63	0.00	0.00	0.00	0.00	9.75	0.00
बुध	--	--	--	--	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
114.82	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.71	0.00	2.04
गुरु	5वां	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु
85.36	6.71	0.00	6.81	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.81	0.00	2.01	1.71
शुक्र	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
130.12	0.00	0.00	0.00	0.00	3.05	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.05	0.00
शनि	3रा	--	--	--	--	--	--	10वा	--	--	--	3रा
125.16	2.87	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.65	0.00	0.00	0.00	1.58
राहु	--	--	--	अष्टां	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
155.69	0.00	0.00	0.00	0.37	1.54	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.54	0.00
केतु	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	अष्टां	सप्त	--
335.69	0.00	0.00	0.00	0.00	1.54	0.00	0.00	0.00	0.00	0.37	1.54	0.00
हर्ष	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--
198.77	9.90	0.00	2.84	2.86	1.89	0.00	9.90	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--
232.47	0.00	8.17	0.00	2.36	2.99	2.94	0.00	8.17	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	--
170.46	0.00	1.59	2.15	2.97	0.00	9.92	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

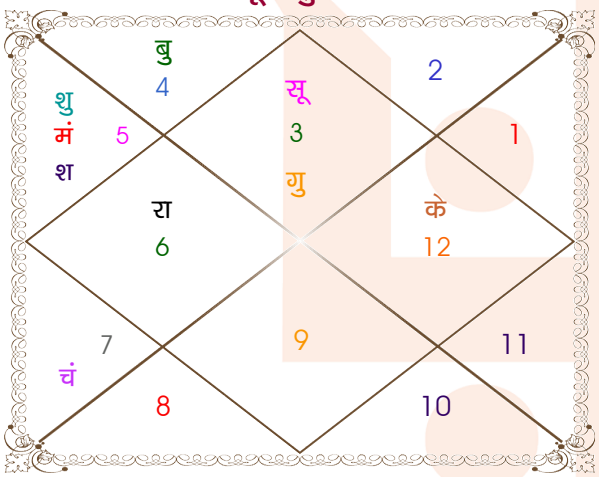

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

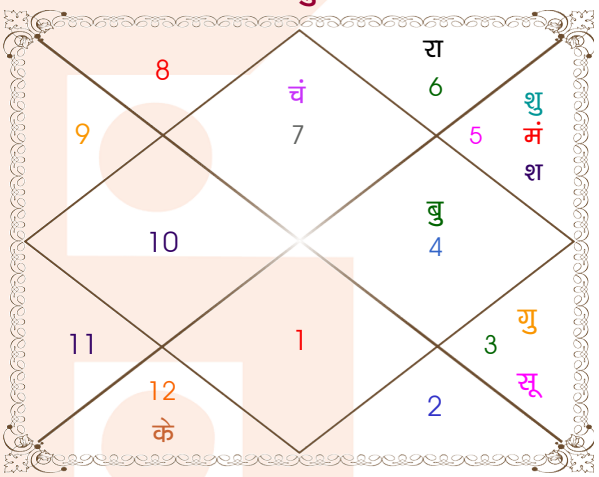

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

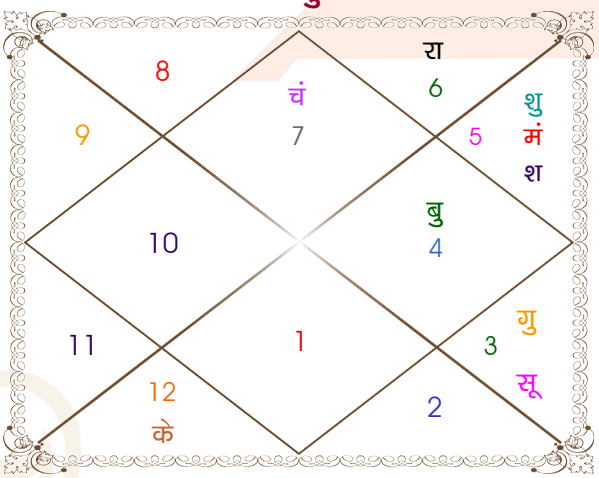

देह विचारः

होरा कुंडली

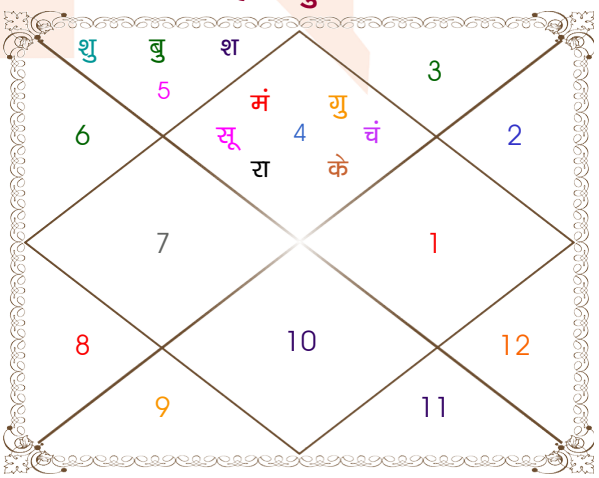

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

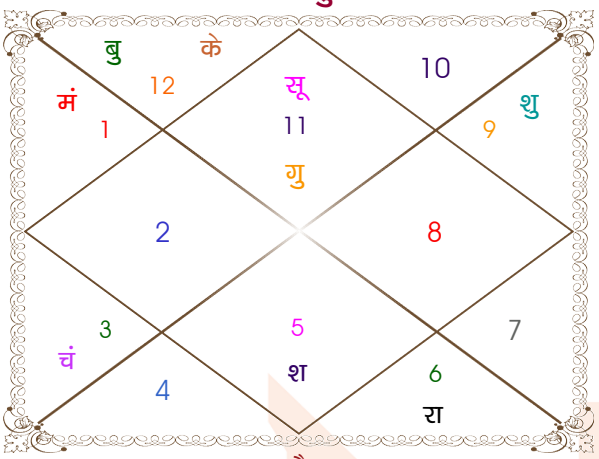

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

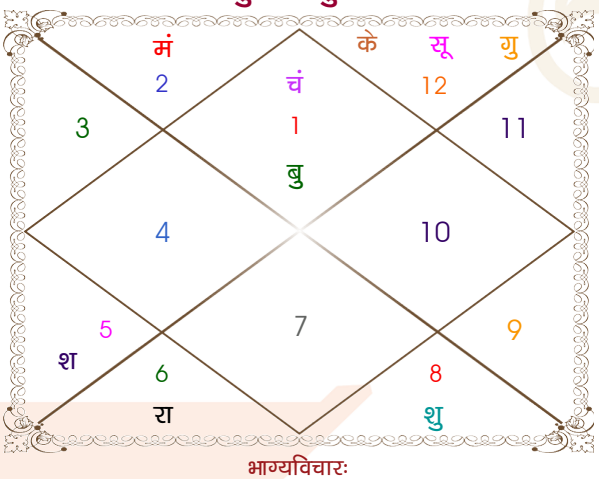

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

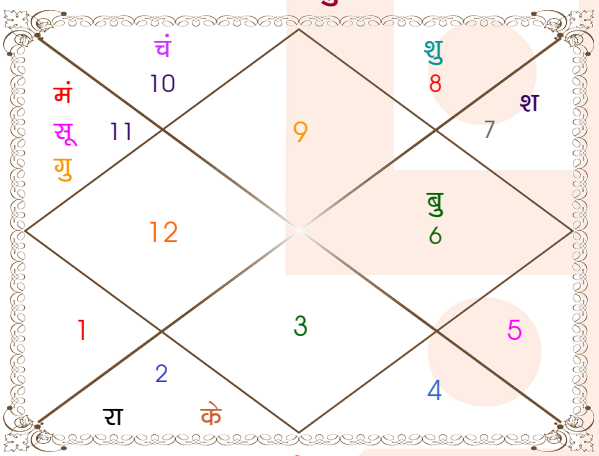

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

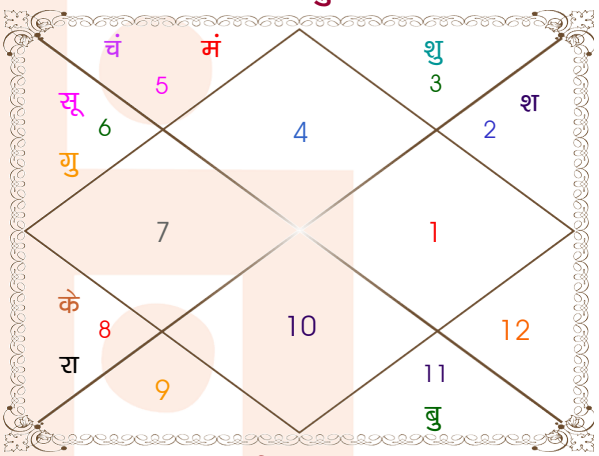

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

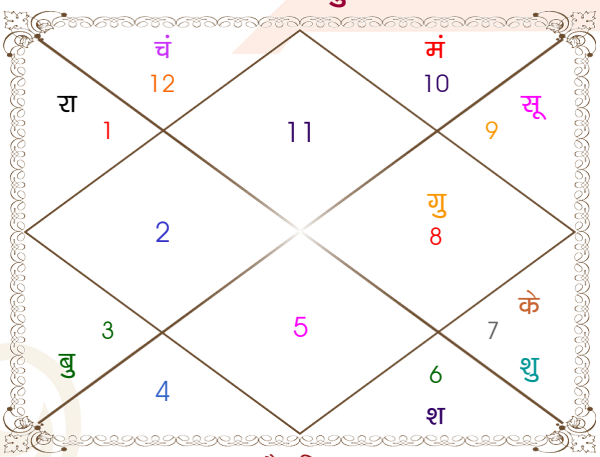

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

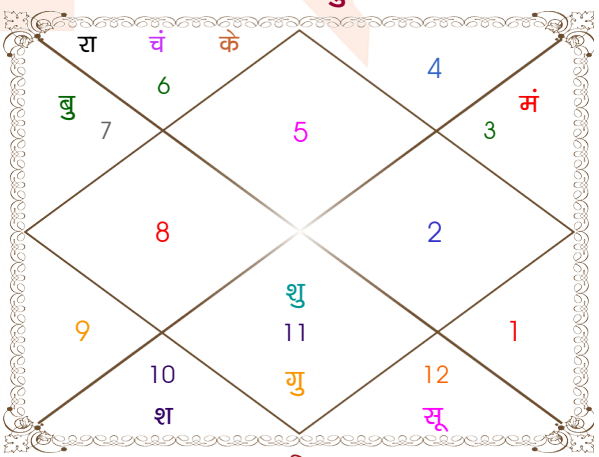

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

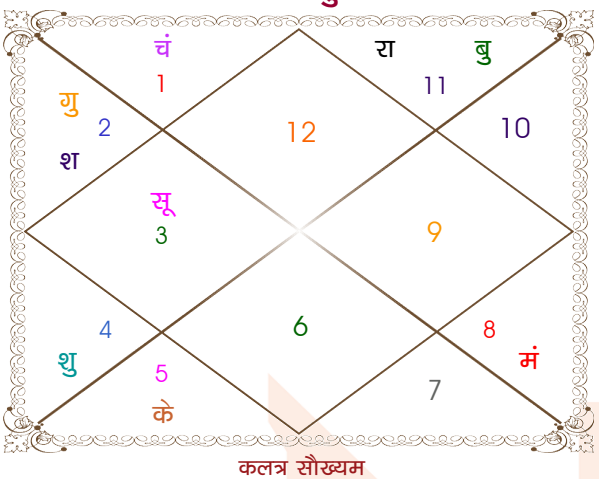

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

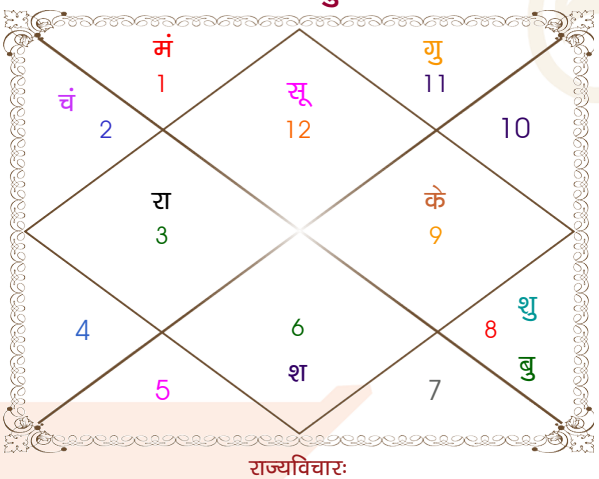

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

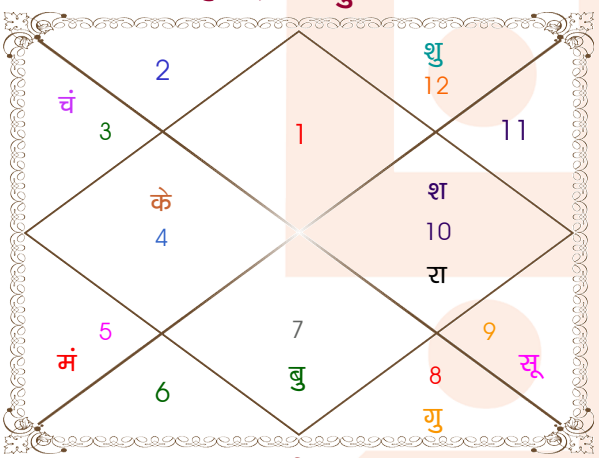

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

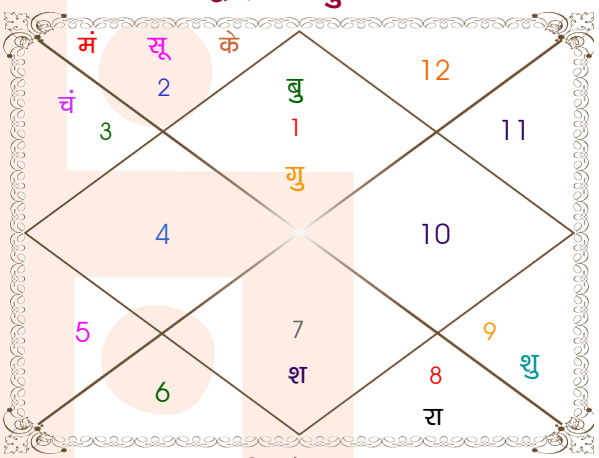

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

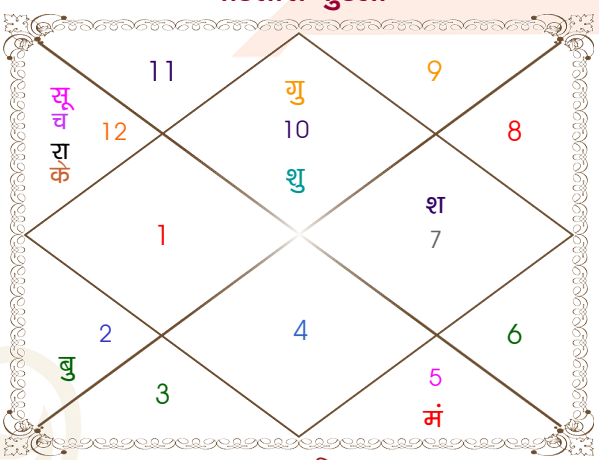

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

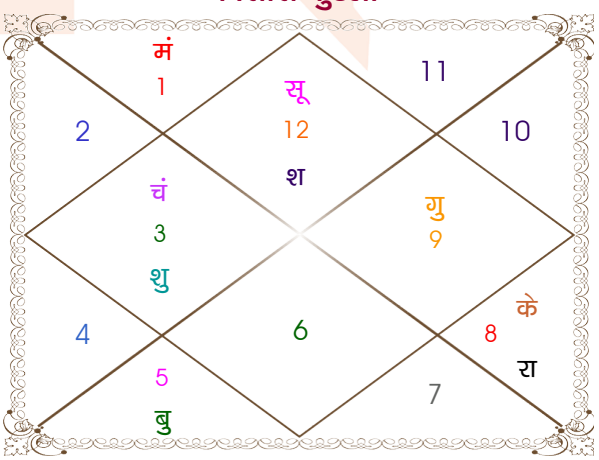

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

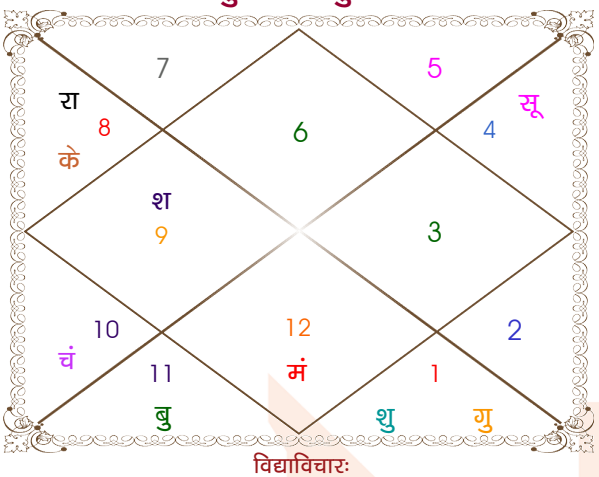

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

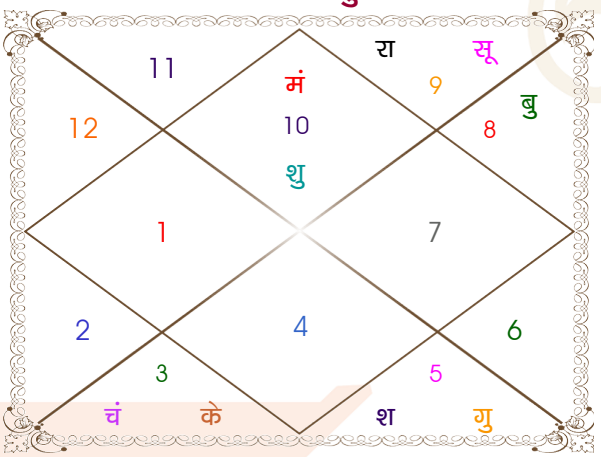

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

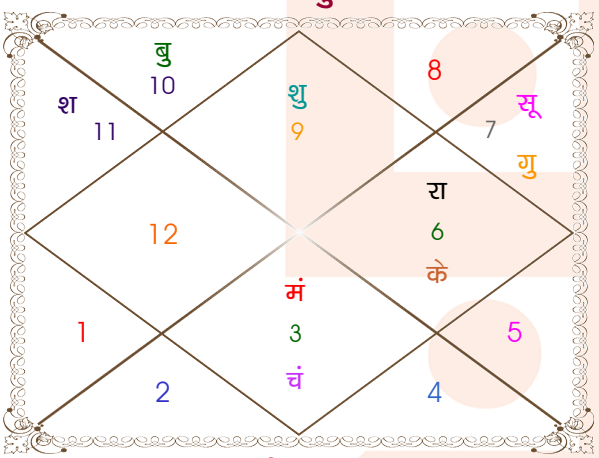

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

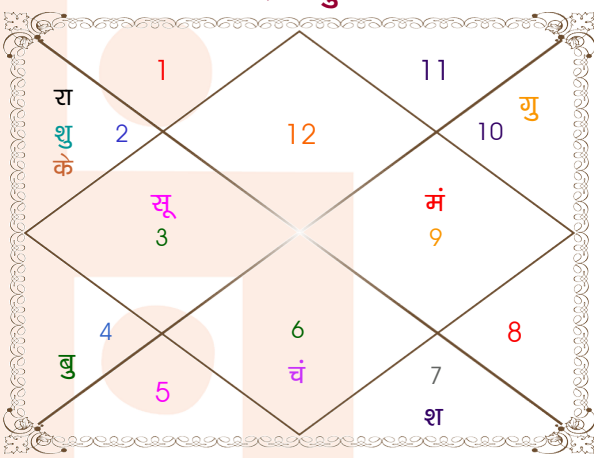

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

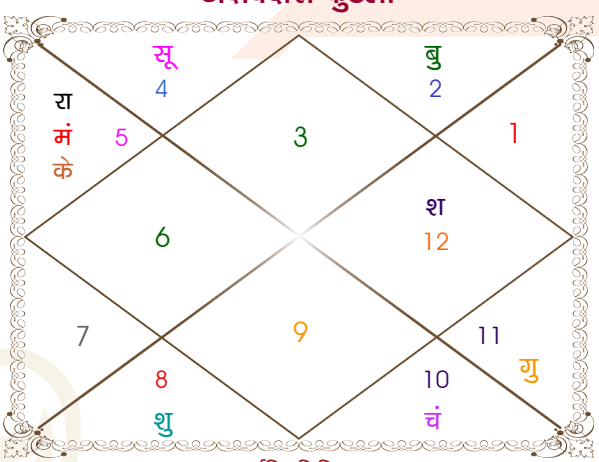

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

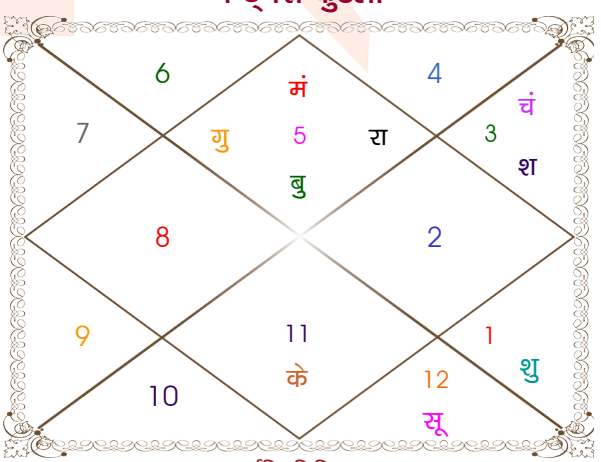

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	तुला	मिथु	तुला	सिंह	कर्क	मिथु	सिंह	सिंह	कन्या	मीन
होरा	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	कुंभ	कुंभ	मिथु	मेष	मीन	कुंभ	धनु	सिंह	कन्या	मीन
चतुर्थांश	मेष	मीन	मेष	वृष	मेष	मीन	वृश्चि	सिंह	कन्या	मीन
सप्तमांश	कुंभ	धनु	मीन	मक	मिथु	वृश्चि	तुला	कन्या	मेष	तुला
नवमांश	मीन	मिथु	मेष	वृश्चि	कुंभ	वृष	कर्क	वृष	कुंभ	सिंह
दशमांश	मीन	मीन	वृष	मेष	वृश्चि	कुंभ	वृश्चि	कन्या	मिथु	धनु
द्वादशांश	मेष	वृष	मिथु	वृष	मेष	मेष	धनु	तुला	वृश्चि	वृष
षोडशांश	मक	मीन	मीन	सिंह	वृष	मक	मक	तुला	मीन	मीन
विंशांश	मीन	मीन	मिथु	मेष	सिंह	धनु	मिथु	मीन	वृश्चि	वृश्चि
चतुर्विंशांश	कन्या	कर्क	मक	मीन	कुंभ	मेष	मेष	धनु	वृश्चि	वृश्चि
सप्तविंशांश	मक	धनु	मिथु	मक	वृश्चि	सिंह	मक	सिंह	धनु	मिथु
त्रिंशांश	धनु	तुला	मिथु	मिथु	मक	तुला	धनु	कुंभ	कन्या	कन्या
खवेदांश	मीन	मिथु	कन्या	धनु	कर्क	मक	वृष	तुला	वृष	वृष
अक्षवेदांश	मिथु	कर्क	मक	सिंह	वृष	कुंभ	वृश्चि	मीन	सिंह	सिंह
षष्ट्यंश	सिंह	मीन	मिथु	सिंह	सिंह	सिंह	मेष	मिथु	सिंह	कुंभ

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
चन्द्र	1 ---	1 ---	2 पारिजात	2 भेदक
मंगल	2 किंसुक	3 व्यंजन	4 गोपुर	6 केरल
बुध	0 ---	1 ---	1 ---	1 ---
गुरु	1 ---	1 ---	1 ---	3 कुसुम
शुक्र	0 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
शनि	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	4 नागपुष्प
राहु	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	5 कन्दुक
केतु	2 किंसुक	2 किंसुक	4 गोपुर	5 कन्दुक

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	12.75	16.55	17.40	13.80	11.80	11.75	10.50	14.75	11.85
सप्तवर्ग	12.38	15.40	15.88	14.68	12.55	12.75	11.50	14.05	11.35
दशवर्ग	11.13	15.60	16.20	15.83	12.33	10.90	13.95	12.85	10.03
षोडशवर्ग	11.75	15.45	17.00	15.33	12.23	10.43	12.88	13.65	10.40

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
चंद्र	शत्रु	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
बुध	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
शुक्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	शत्रु
शनि	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु
राहु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	मित्र	सम	सम	सम	सम	सम
चंद्र	सम	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	सम	सम
बुध	अतिमित्र	सम	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	सम	सम	अतिमित्र	सम	---	सम	मित्र	मित्र	मित्र
शुक्र	सम	सम	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	---	सम	अतिमित्र	सम
शनि	सम	सम	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	सम	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	सम	सम	सम	मित्र	मित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	सम	शत्रु	मित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	34	4	9	43	57	16	35
सप्तवर्गज बल	68	131	120	120	90	98	90
ओजयुग्मक बल	30	0	15	15	15	15	15
केन्द्र बल	15	60	30	60	15	30	30
द्रेष्काण बल	0	15	0	0	0	0	0
कुल स्थान बल	146	210	174	238	177	158	170
कुल दिग्बल	53	31	49	32	23	7	24
नतोन्नत बल	53	7	7	60	53	53	7
पक्ष बल	22	76	22	38	38	38	22
त्रिभाग बल	60	0	0	0	60	0	0
अब्द बल	15	0	0	0	0	0	0
मास बल	0	30	0	0	0	0	0
वार बल	0	0	0	0	0	0	45
होरा बल	0	0	0	0	60	0	0
अयन बल	115	52	36	50	58	43	14
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	265	164	66	148	269	134	89
कुल चेष्टाबल	0	0	24	32	2	30	11
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	7	-6	0	3	7	2	3
कुल षट्बल	531	451	330	480	512	374	305
रूप षट्बल	8.9	7.5	5.5	8.0	8.5	6.2	5.1
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.8	1.3	1.1	1.1	1.3	1.1	1.0
संबंधित पद	1	3	6	4	2	5	7

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	42.06	11.58	14.63	37.25	11.28	21.64	19.82
कष्ट फल	14.04	35.39	42.70	21.61	13.62	36.50	34.89

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	374	330	512	305	305	512	330	374	480	451	531	480
भावदिग्बल	60	10	10	60	20	40	30	40	20	0	50	50
भावदृष्टि बल	47	59	36	93	68	66	22	0	7	4	10	40
कुल भाव बल	481	399	558	458	394	618	382	413	507	455	591	570
रूप भाव बल	8.0	6.6	9.3	7.6	6.6	10.3	6.4	6.9	8.4	7.6	9.9	9.5
संबंधित पद	6	10	4	7	11	1	12	9	5	8	2	3

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

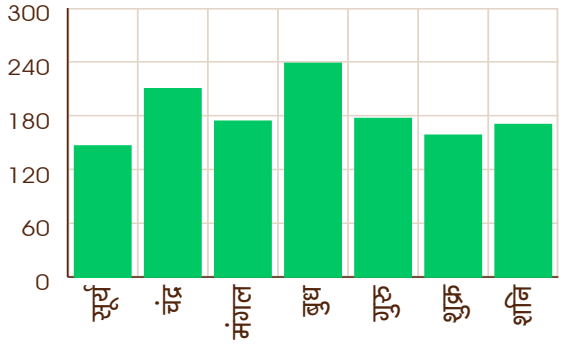

दिग्बल

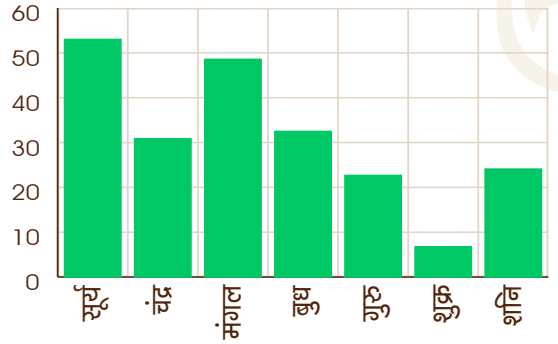

कालबल

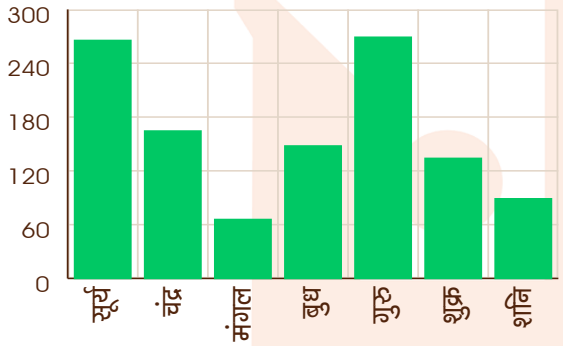

चेष्टाबल

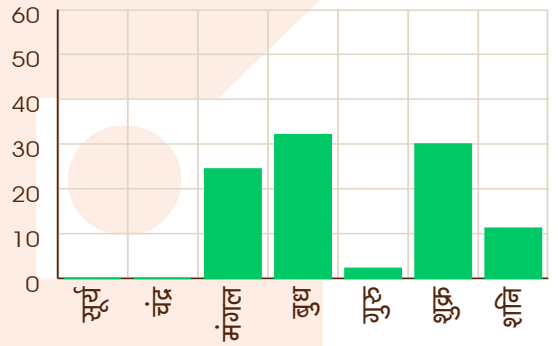

नैसर्गिक बल

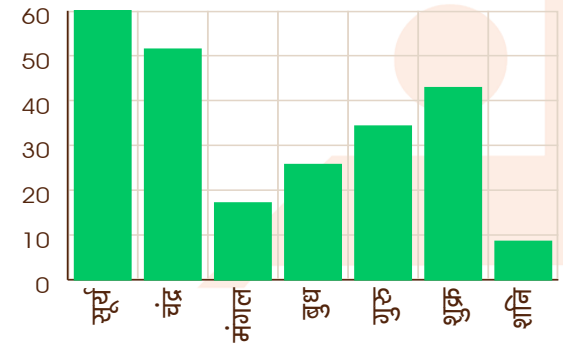

दृग्बल

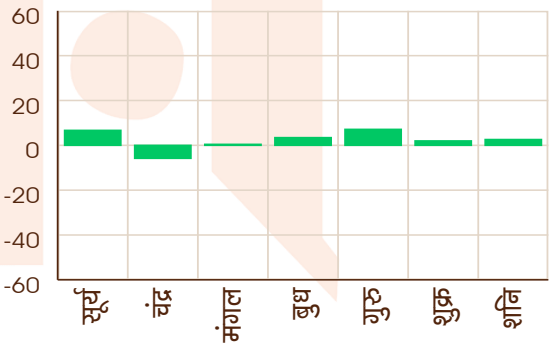

रूप षट्बल

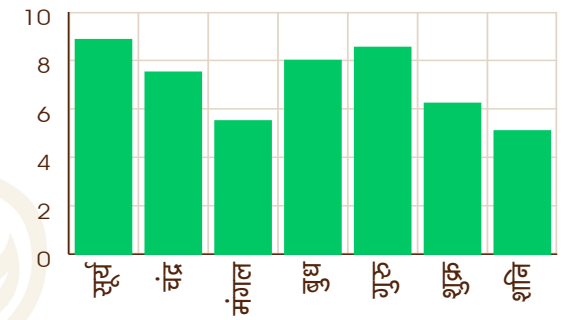

न्यूनतम षट्बल

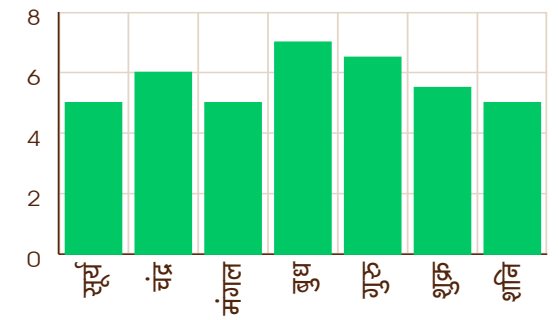

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

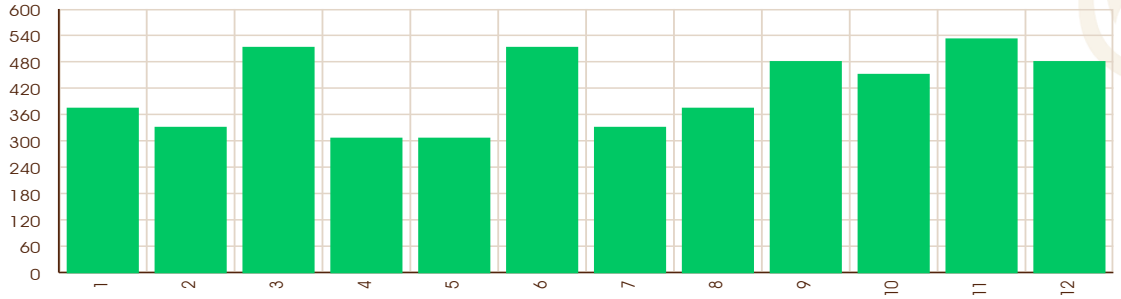

भावदिग्बल

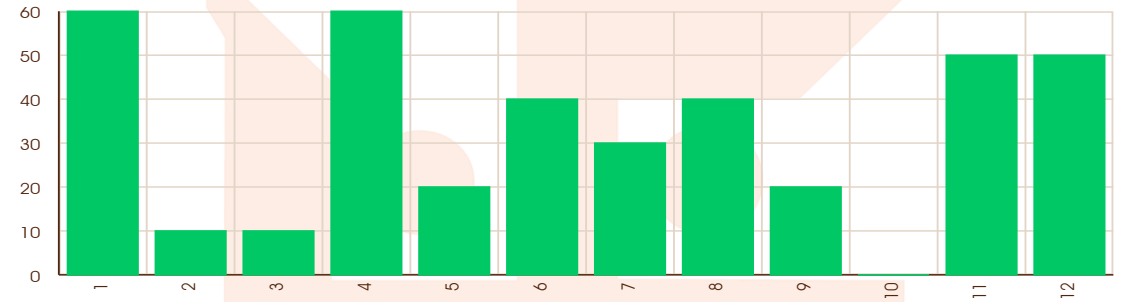

भावदृष्टि बल

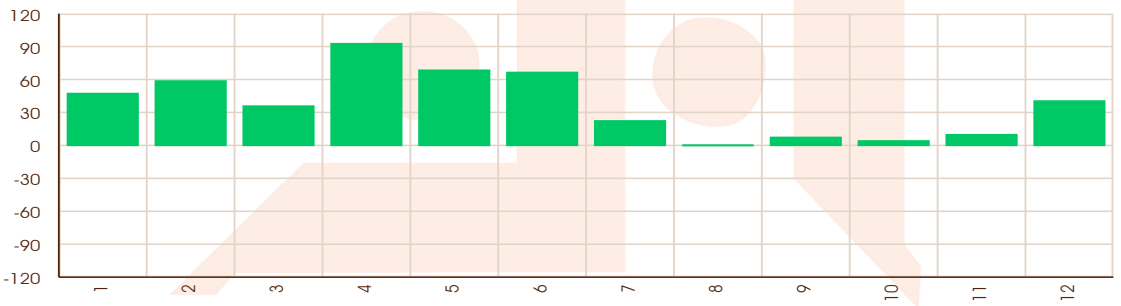

भाव बल

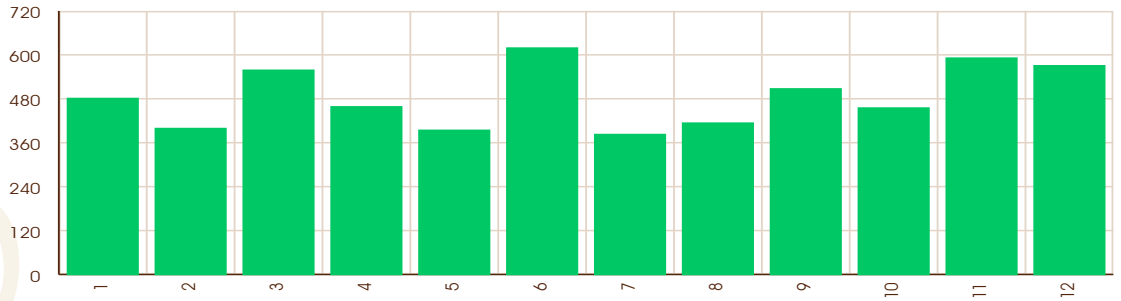

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

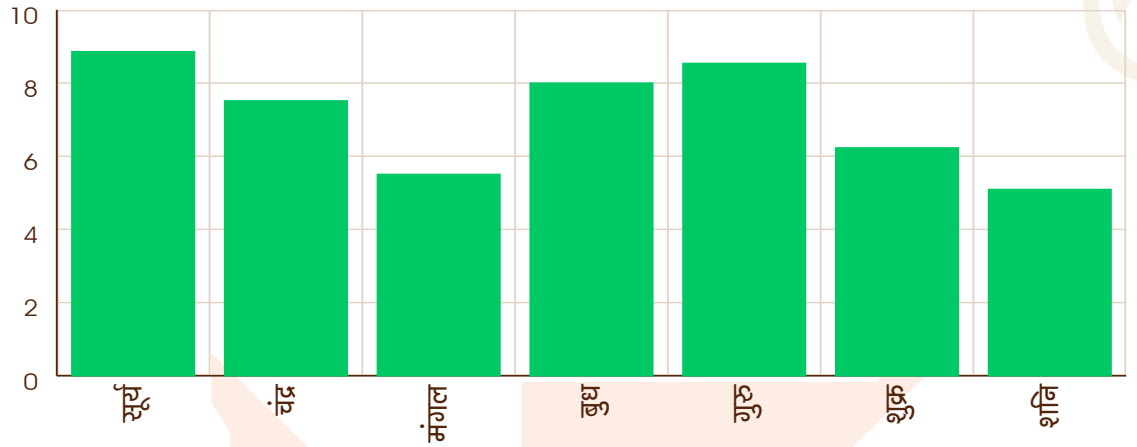

इष्ट - कष्ट फल

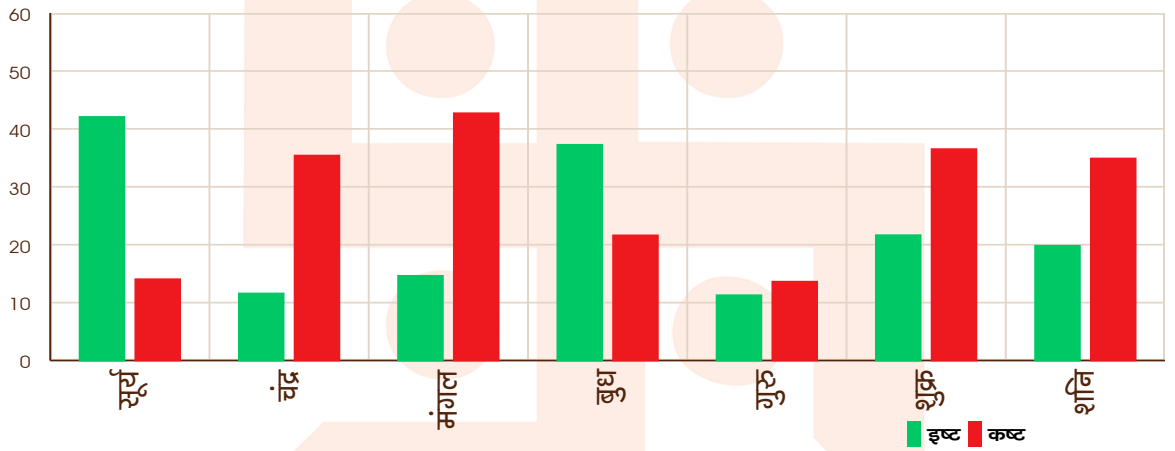

रूप भाव बल

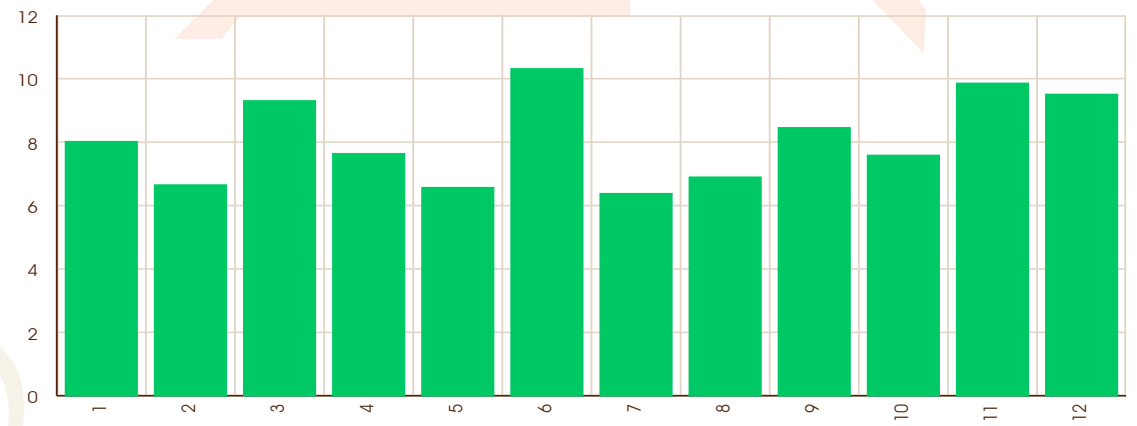

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	तुला	17:23:22	--	--	स्वाति	4	15
गुलिक	गु	कर्क	20:04:14	--	--	आश्लेषा	2	9
काल	का	सिंह	12:17:36	--	--	मघा	4	10
मृत्यु	मृ	कन्या	28:11:20	--	--	चित्रा	2	14
यमघंटक	यम	वृश्चि	13:00:14	--	--	अनुराधा	3	17
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	तुला	20:41:03	--	--	विशाखा	1	16
धूम	धू	वृश्चि	12:15:26	--	--	अनुराधा	3	17
व्यतिपात	व्य	सिंह	17:44:34	--	--	पू०फाल्गुनी	2	11
परिवेश	परि	कुंभ	17:44:34	--	--	शतभिषा	4	24
इन्द्रचाप	इ	वृष	12:15:26	--	--	रोहिणी	1	4
उपकेतु	उप	वृष	28:55:26	--	--	मृगशिरा	2	5

प्राणपद	:	कन्या	10:44:13	कारकाँश लग्न	:	मिथु	20:18:50
भाव लग्न	:	वृश्चि	02:30:52	होरा लग्न	:	मीन	06:06:18
घटी लग्न	:	मीन	16:52:37	वर्णद लग्न	:	तुला	06:30:20

उपग्रह कुंडली

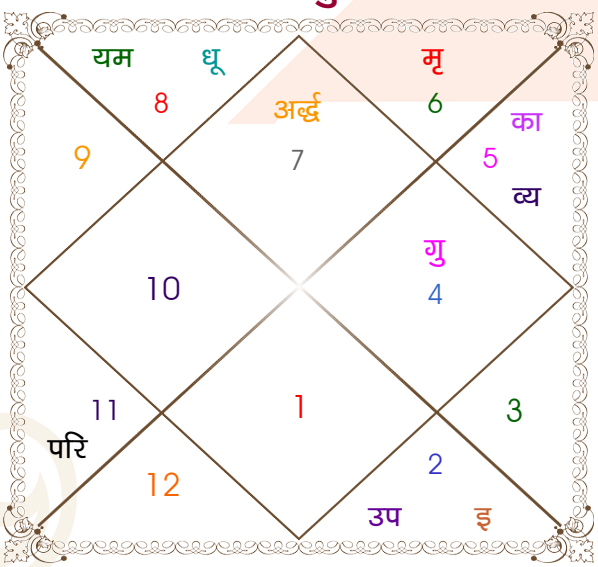

आरूढ़ कुंडली

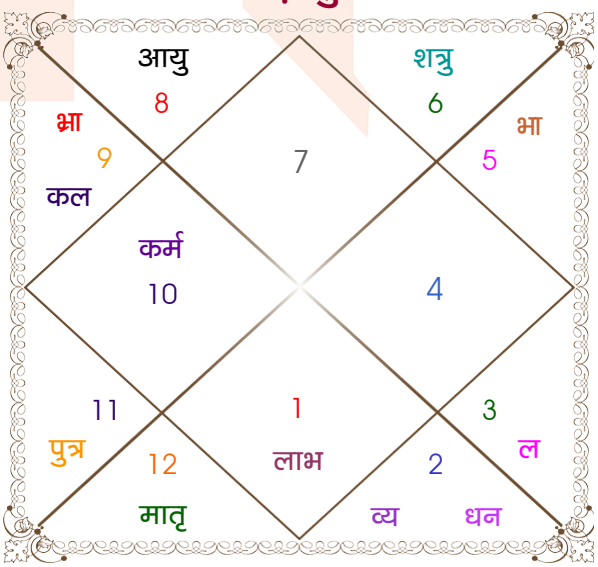

षन्नाडी चक्र

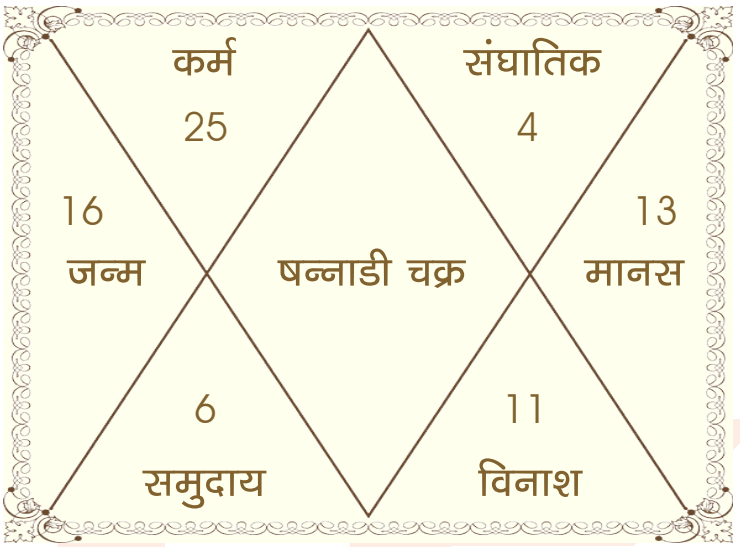

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु
केतु कुंडली	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र
गुरु कुंडली	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य
केतु कुंडली	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र
गुरु कुंडली	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
केतु कुंडली	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र
गुरु कुंडली	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	4
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	3
बुध	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	7
चंद्र	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	4
लग्न	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	6
कुल	4	4	4	5	1	4	4	3	5	6	5	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	कुल
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
गुरु	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
मंगल	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	1	6
सूर्य	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	6
शुक्र	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	5	3	7	5	2	4	5	3	5	4	3	3	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	कुल
शनि	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	7
गुरु	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	5
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	4
बुध	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	4
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	3
लग्न	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
कुल	5	2	2	5	3	1	2	7	3	4	3	2	39

बुध का अष्टकवर्ग

	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
गुरु	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	5
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	6
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	7
कुल	3	5	4	3	8	2	3	3	6	6	7	4	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
सूर्य	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	9
शुक्र	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	6
बुध	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	5
लग्न	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	9
कुल	6	5	6	4	3	4	5	5	4	5	6	3	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	कुल
शनि	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
गुरु	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	5
मंगल	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	5
चंद्र	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	9
लग्न	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
कुल	3	3	6	6	5	5	3	4	5	6	5	1	52

शनि का अष्टकवर्ग

	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	6
सूर्य	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	3
बुध	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	6
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	3
लग्न	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
कुल	2	1	4	1	6	5	1	4	3	3	5	4	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
गुरु	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	9
मंगल	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	5
सूर्य	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	7
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	5	4	5	2	2	5	4	4	3	4	7	4	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	3	5	4	2	1	4	1	6	5	1	4	39
गुरु	6	3	6	5	6	4	3	4	5	5	4	5	56
मंगल	3	4	3	2	5	2	2	5	3	1	2	7	39
सूर्य	5	3	4	4	4	5	1	4	4	3	5	6	48
शुक्र	5	6	5	1	3	3	6	6	5	5	3	4	52
बुध	6	7	4	3	5	4	3	8	2	3	3	6	54
चंद्र	5	3	5	4	3	3	5	3	7	5	2	4	49
बिन्दु	33	29	32	23	28	22	24	31	32	27	20	36	337
रेखा	23	27	24	33	28	34	32	25	24	29	36	20	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	2	4	3	0	0	3	0	4	4	0	3	24
गुरु	1	0	3	1	1	1	0	0	0	2	1	1	11
मंगल	0	3	1	0	2	1	0	3	0	0	0	5	15
सूर्य	1	0	3	0	0	2	0	0	0	0	4	2	12
शुक्र	2	3	2	0	0	0	3	5	2	2	0	3	22
बुध	4	4	1	0	3	1	0	5	0	0	0	3	21
चंद्र	2	0	3	1	0	0	3	0	4	2	0	1	16
रेखा	11	12	17	5	6	5	9	13	10	10	5	18	121

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	0	4	3	0	0	3	0	1	4	0	3	19
गुरु	1	0	3	1	1	0	0	0	0	1	1	1	9
मंगल	0	3	1	0	2	0	0	3	0	0	0	5	14
सूर्य	1	0	3	0	0	0	0	0	0	0	4	2	10
शुक्र	2	0	2	0	0	0	3	3	2	2	0	1	15
बुध	4	4	1	0	3	0	0	1	0	0	0	3	16
चंद्र	2	0	3	1	0	0	3	0	3	2	0	1	15
रेखा	11	7	17	5	6	0	9	7	6	9	5	16	98

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	99	112	142	150	73	115	137
ग्रह पिंड	45	65	55	75	70	45	90
शोध्य पिंड	144	177	197	225	143	160	227

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

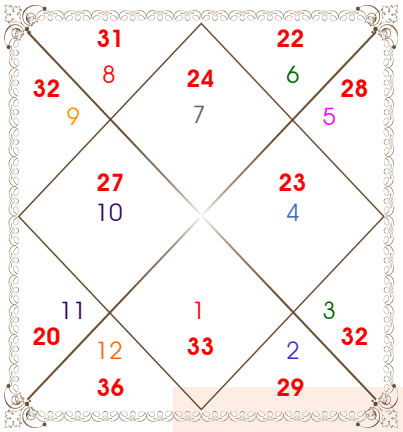

सूर्य का अष्टकवर्ग

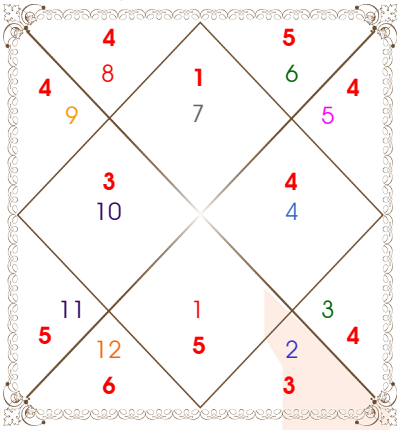

चंद्र का अष्टकवर्ग

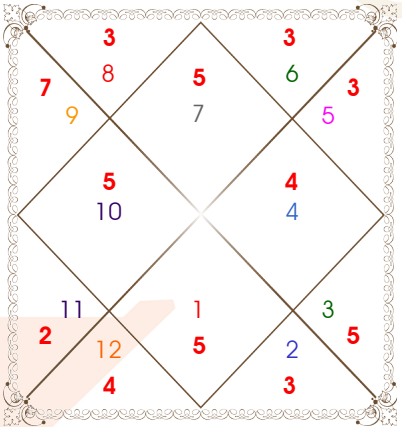

मंगल का अष्टकवर्ग

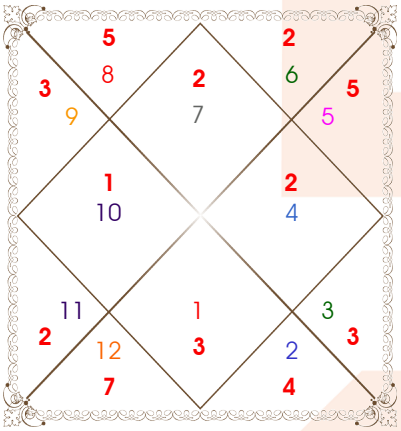

बुध का अष्टकवर्ग

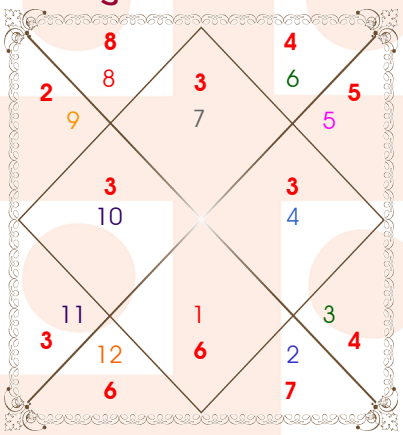

गुरु का अष्टकवर्ग

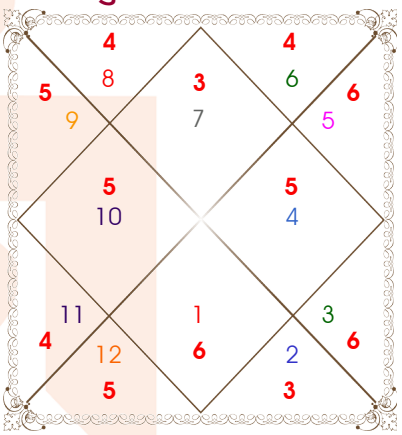

शुक्र का अष्टकवर्ग

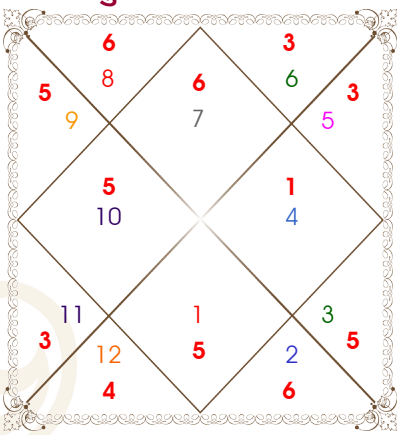

शनि का अष्टकवर्ग

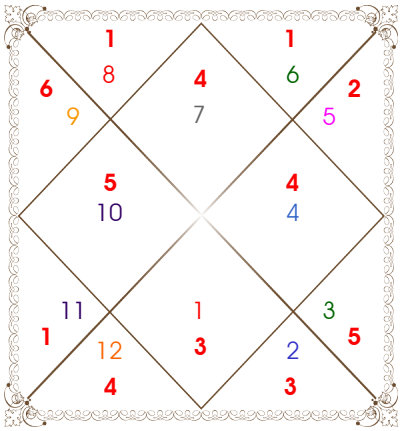

लग्न का अष्टकवर्ग

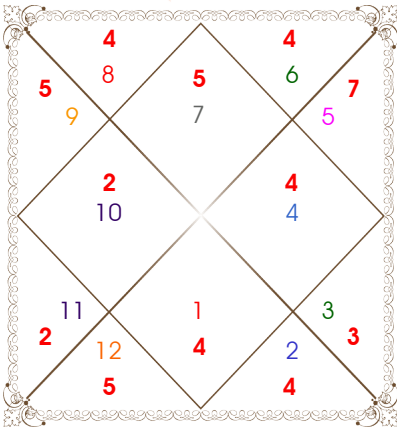

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

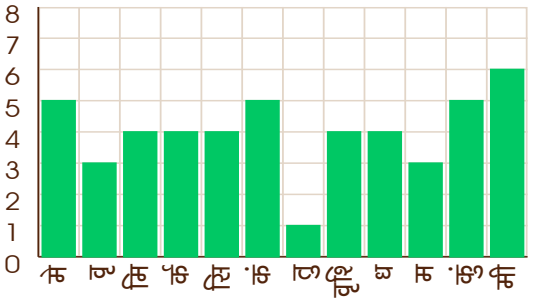

चन्द्र

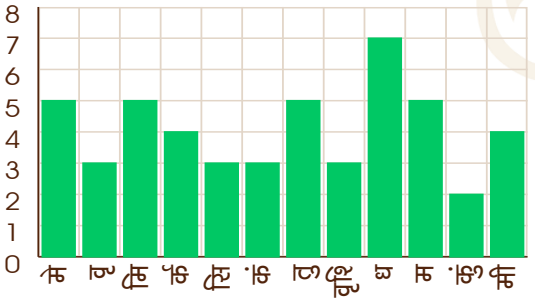

मंगल

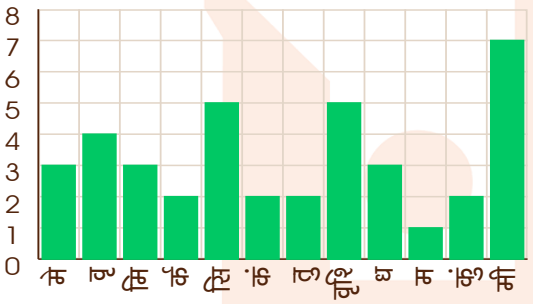

बुध

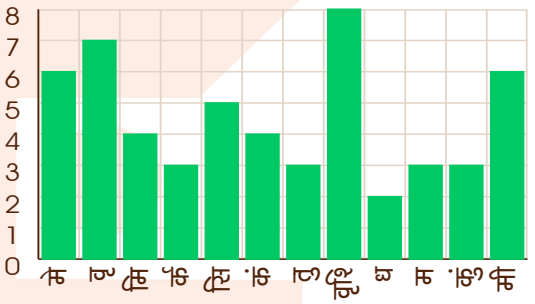

गुरु

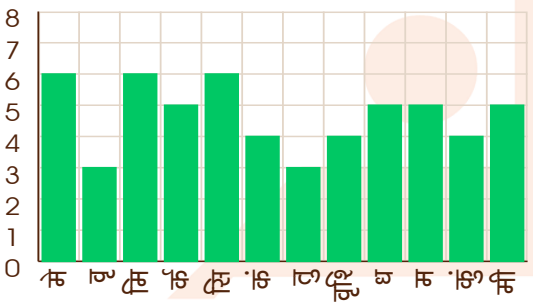

शुक्र

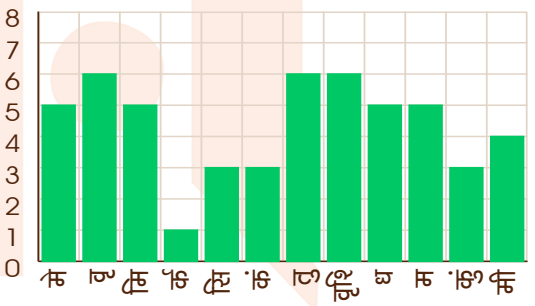

शनि

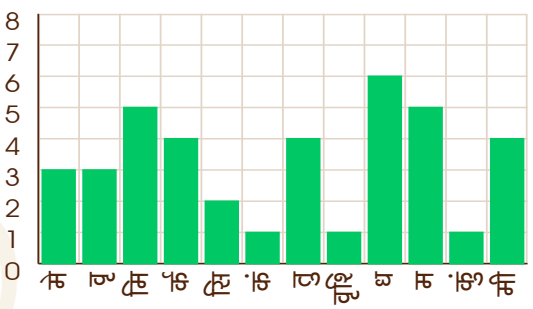

लग्न

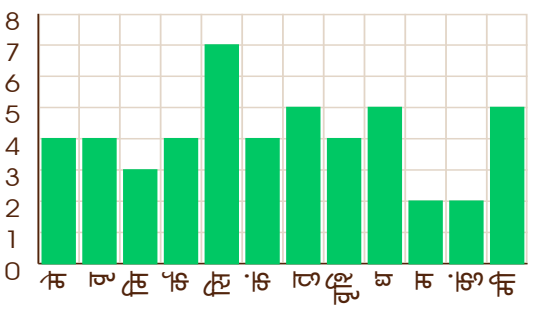

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

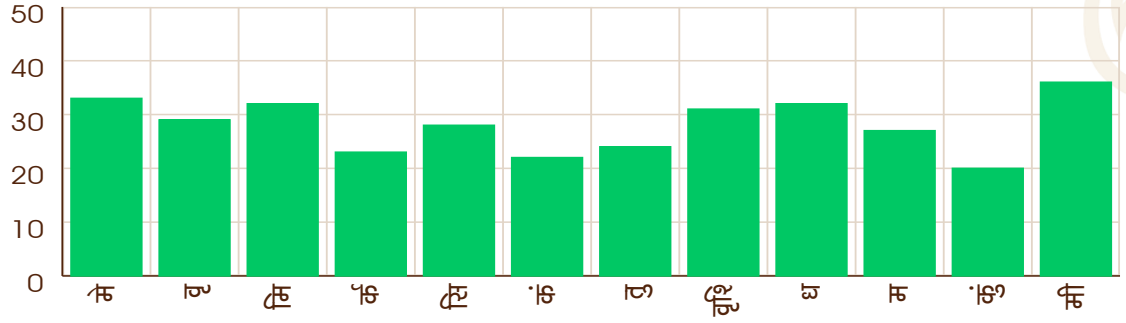

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

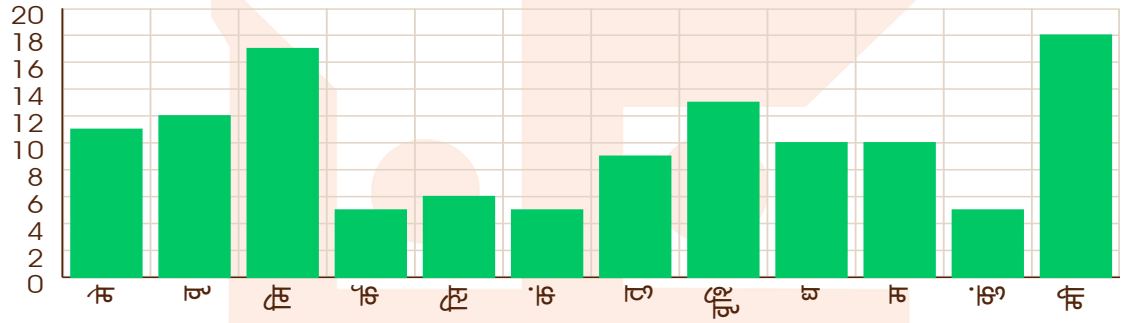

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

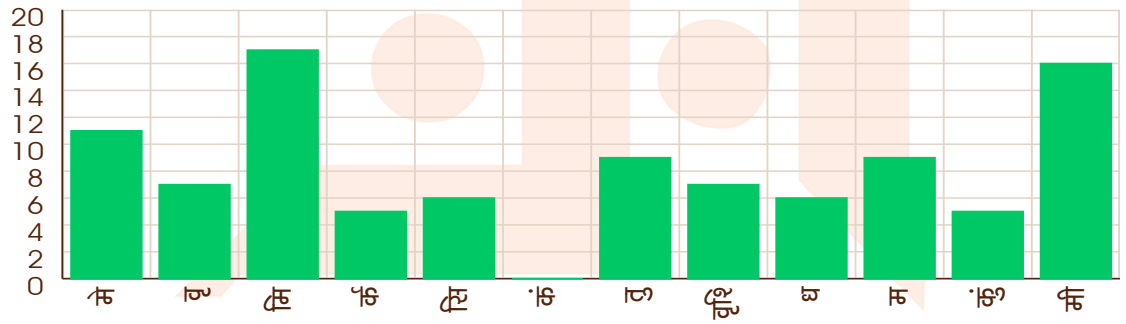

शोध्य पिंड

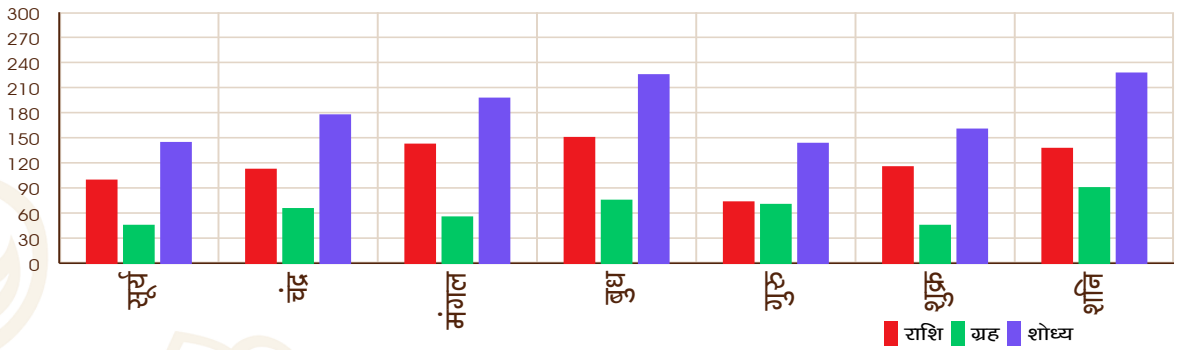

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 13 वर्ष 2 मास 4 दिन

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
15/07/1978		18/09/1991		18/09/2010		18/09/2027		18/09/2034	
18/09/1991		18/09/2010		18/09/2027		18/09/2034		18/09/2054	
	15/07/1978	शनि	21/09/1994	बुध	14/02/2013	केतु	14/02/2028	शुक्र	18/01/2038
शनि	19/05/1980	बुध	31/05/1997	केतु	11/02/2014	शुक्र	16/04/2029	सूर्य	18/01/2039
बुध	25/08/1982	केतु	10/07/1998	शुक्र	12/12/2016	सूर्य	21/08/2029	चंद्र	18/09/2040
केतु	01/08/1983	शुक्र	09/09/2001	सूर्य	18/10/2017	चंद्र	22/03/2030	मंगल	18/11/2041
शुक्र	01/04/1986	सूर्य	22/08/2002	चंद्र	20/03/2019	मंगल	19/08/2030	राहु	17/11/2044
सूर्य	18/01/1987	चंद्र	22/03/2004	मंगल	16/03/2020	राहु	06/09/2031	गुरु	19/07/2047
चंद्र	19/05/1988	मंगल	01/05/2005	राहु	03/10/2022	गुरु	12/08/2032	शनि	18/09/2050
मंगल	25/04/1989	राहु	07/03/2008	गुरु	08/01/2025	शनि	21/09/2033	बुध	19/07/2053
राहु	18/09/1991	गुरु	18/09/2010	शनि	18/09/2027	बुध	18/09/2034	केतु	18/09/2054

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
18/09/2054		18/09/2060		18/09/2070		18/09/2077		18/09/2095	
18/09/2060		18/09/2070		18/09/2077		18/09/2095		00/00/0000	
सूर्य	06/01/2055	चंद्र	19/07/2061	मंगल	14/02/2071	राहु	31/05/2080	गुरु	06/11/2097
चंद्र	07/07/2055	मंगल	17/02/2062	राहु	04/03/2072	गुरु	25/10/2082	शनि	15/07/2098
मंगल	12/11/2055	राहु	19/08/2063	गुरु	08/02/2073	शनि	31/08/2085		00/00/0000
राहु	06/10/2056	गुरु	18/12/2064	शनि	19/03/2074	बुध	19/03/2088		00/00/0000
गुरु	25/07/2057	शनि	19/07/2066	बुध	17/03/2075	केतु	06/04/2089		00/00/0000
शनि	07/07/2058	बुध	19/12/2067	केतु	13/08/2075	शुक्र	06/04/2092		00/00/0000
बुध	13/05/2059	केतु	19/07/2068	शुक्र	12/10/2076	सूर्य	01/03/2093		00/00/0000
केतु	18/09/2059	शुक्र	19/03/2070	सूर्य	17/02/2077	चंद्र	31/08/2094		00/00/0000
शुक्र	18/09/2060	सूर्य	18/09/2070	चंद्र	18/09/2077	मंगल	18/09/2095		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 13 वर्ष 1 मा 20 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
15/07/1978		19/05/1980		25/08/1982		01/08/1983		01/04/1986	
19/05/1980		25/08/1982		01/08/1983		01/04/1986		18/01/1987	
	15/07/1978	बुध	13/09/1980	केतु	14/09/1982	शुक्र	10/01/1984	सूर्य	15/04/1986
बुध	10/08/1978	केतु	31/10/1980	शुक्र	09/11/1982	सूर्य	28/02/1984	चंद्र	10/05/1986
केतु	03/10/1978	शुक्र	18/03/1981	सूर्य	26/11/1982	चंद्र	19/05/1984	मंगल	27/05/1986
शुक्र	06/03/1979	सूर्य	29/04/1981	चंद्र	25/12/1982	मंगल	15/07/1984	राहु	09/07/1986
सूर्य	22/04/1979	चंद्र	07/07/1981	मंगल	14/01/1983	राहु	08/12/1984	गुरु	17/08/1986
चंद्र	08/07/1979	मंगल	24/08/1981	राहु	06/03/1983	गुरु	17/04/1985	शनि	03/10/1986
मंगल	31/08/1979	राहु	26/12/1981	गुरु	20/04/1983	शनि	18/09/1985	बुध	13/11/1986
राहु	16/01/1980	गुरु	16/04/1982	शनि	13/06/1983	बुध	03/02/1986	केतु	30/11/1986
गुरु	19/05/1980	शनि	25/08/1982	बुध	01/08/1983	केतु	01/04/1986	शुक्र	18/01/1987

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध	
18/01/1987		19/05/1988		25/04/1989		18/09/1991		21/09/1994	
19/05/1988		25/04/1989		18/09/1991		21/09/1994		31/05/1997	
चंद्र	27/02/1987	मंगल	08/06/1988	राहु	03/09/1989	शनि	10/03/1992	बुध	07/02/1995
मंगल	28/03/1987	राहु	29/07/1988	गुरु	29/12/1989	बुध	13/08/1992	केतु	06/04/1995
राहु	09/06/1987	गुरु	12/09/1988	शनि	17/05/1990	केतु	16/10/1992	शुक्र	17/09/1995
गुरु	13/08/1987	शनि	05/11/1988	बुध	18/09/1990	शुक्र	17/04/1993	सूर्य	05/11/1995
शनि	29/10/1987	बुध	24/12/1988	केतु	08/11/1990	सूर्य	11/06/1993	चंद्र	26/01/1996
बुध	06/01/1988	केतु	12/01/1989	शुक्र	03/04/1991	चंद्र	11/09/1993	मंगल	23/03/1996
केतु	03/02/1988	शुक्र	10/03/1989	सूर्य	17/05/1991	मंगल	14/11/1993	राहु	17/08/1996
शुक्र	24/04/1988	सूर्य	27/03/1989	चंद्र	29/07/1991	राहु	28/04/1994	गुरु	27/12/1996
सूर्य	19/05/1988	चंद्र	25/04/1989	मंगल	18/09/1991	गुरु	21/09/1994	शनि	31/05/1997

शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
31/05/1997		10/07/1998		09/09/2001		22/08/2002		22/03/2004	
10/07/1998		09/09/2001		22/08/2002		22/03/2004		01/05/2005	
केतु	24/06/1997	शुक्र	19/01/1999	सूर्य	26/09/2001	चंद्र	09/10/2002	मंगल	15/04/2004
शुक्र	30/08/1997	सूर्य	18/03/1999	चंद्र	25/10/2001	मंगल	12/11/2002	राहु	14/06/2004
सूर्य	20/09/1997	चंद्र	22/06/1999	मंगल	14/11/2001	राहु	06/02/2003	गुरु	07/08/2004
चंद्र	23/10/1997	मंगल	29/08/1999	राहु	05/01/2002	गुरु	24/04/2003	शनि	10/10/2004
मंगल	16/11/1997	राहु	18/02/2000	गुरु	20/02/2002	शनि	25/07/2003	बुध	07/12/2004
राहु	16/01/1998	गुरु	21/07/2000	शनि	16/04/2002	बुध	15/10/2003	केतु	30/12/2004
गुरु	11/03/1998	शनि	20/01/2001	बुध	05/06/2002	केतु	18/11/2003	शुक्र	08/03/2005
शनि	14/05/1998	बुध	03/07/2001	केतु	25/06/2002	शुक्र	22/02/2004	सूर्य	28/03/2005
बुध	10/07/1998	केतु	09/09/2001	शुक्र	22/08/2002	सूर्य	22/03/2004	चंद्र	01/05/2005

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र	
01/05/2005		07/03/2008		18/09/2010		14/02/2013		11/02/2014	
07/03/2008		18/09/2010		14/02/2013		11/02/2014		12/12/2016	
राहु	04/10/2005	गुरु	08/07/2008	बुध	21/01/2011	केतु	07/03/2013	शुक्र	02/08/2014
गुरु	20/02/2006	शनि	02/12/2008	केतु	13/03/2011	शुक्र	06/05/2013	सूर्य	23/09/2014
शनि	04/08/2006	बुध	12/04/2009	शुक्र	07/08/2011	सूर्य	24/05/2013	चंद्र	18/12/2014
बुध	29/12/2006	केतु	05/06/2009	सूर्य	20/09/2011	चंद्र	23/06/2013	मंगल	17/02/2015
केतु	28/02/2007	शुक्र	06/11/2009	चंद्र	02/12/2011	मंगल	15/07/2013	राहु	22/07/2015
शुक्र	20/08/2007	सूर्य	22/12/2009	मंगल	22/01/2012	राहु	07/09/2013	गुरु	07/12/2015
सूर्य	11/10/2007	चंद्र	09/03/2010	राहु	02/06/2012	गुरु	25/10/2013	शनि	19/05/2016
चंद्र	06/01/2008	मंगल	02/05/2010	गुरु	27/09/2012	शनि	22/12/2013	बुध	12/10/2016
मंगल	07/03/2008	राहु	18/09/2010	शनि	14/02/2013	बुध	11/02/2014	केतु	12/12/2016

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु	
12/12/2016		18/10/2017		20/03/2019		16/03/2020		03/10/2022	
18/10/2017		20/03/2019		16/03/2020		03/10/2022		08/01/2025	
सूर्य	27/12/2016	चंद्र	30/11/2017	मंगल	10/04/2019	राहु	03/08/2020	गुरु	22/01/2023
चंद्र	22/01/2017	मंगल	31/12/2017	राहु	03/06/2019	गुरु	05/12/2020	शनि	02/06/2023
मंगल	09/02/2017	राहु	18/03/2018	गुरु	21/07/2019	शनि	01/05/2021	बुध	27/09/2023
राहु	28/03/2017	गुरु	26/05/2018	शनि	17/09/2019	बुध	10/09/2021	केतु	14/11/2023
गुरु	08/05/2017	शनि	16/08/2018	बुध	07/11/2019	केतु	04/11/2021	शुक्र	31/03/2024
शनि	26/06/2017	बुध	28/10/2018	केतु	28/11/2019	शुक्र	08/04/2022	सूर्य	12/05/2024
बुध	09/08/2017	केतु	28/11/2018	शुक्र	28/01/2020	सूर्य	24/05/2022	चंद्र	20/07/2024
केतु	27/08/2017	शुक्र	22/02/2019	सूर्य	15/02/2020	चंद्र	10/08/2022	मंगल	06/09/2024
शुक्र	18/10/2017	सूर्य	20/03/2019	चंद्र	16/03/2020	मंगल	03/10/2022	राहु	08/01/2025

बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र	
08/01/2025		18/09/2027		14/02/2028		16/04/2029		21/08/2029	
18/09/2027		14/02/2028		16/04/2029		21/08/2029		22/03/2030	
शनि	13/06/2025	केतु	27/09/2027	शुक्र	25/04/2028	सूर्य	22/04/2029	चंद्र	08/09/2029
बुध	30/10/2025	शुक्र	22/10/2027	सूर्य	17/05/2028	चंद्र	03/05/2029	मंगल	21/09/2029
केतु	26/12/2025	सूर्य	29/10/2027	चंद्र	21/06/2028	मंगल	10/05/2029	राहु	23/10/2029
शुक्र	08/06/2026	चंद्र	11/11/2027	मंगल	16/07/2028	राहु	29/05/2029	गुरु	20/11/2029
सूर्य	27/07/2026	मंगल	19/11/2027	राहु	18/09/2028	गुरु	15/06/2029	शनि	24/12/2029
चंद्र	17/10/2026	राहु	12/12/2027	गुरु	14/11/2028	शनि	06/07/2029	बुध	23/01/2030
मंगल	14/12/2026	गुरु	01/01/2028	शनि	20/01/2029	बुध	24/07/2029	केतु	04/02/2030
राहु	10/05/2027	शनि	24/01/2028	बुध	22/03/2029	केतु	31/07/2029	शुक्र	12/03/2030
गुरु	18/09/2027	बुध	14/02/2028	केतु	16/04/2029	शुक्र	21/08/2029	सूर्य	22/03/2030

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
22/03/2030		19/08/2030		06/09/2031		12/08/2032		21/09/2033	
19/08/2030		06/09/2031		12/08/2032		21/09/2033		18/09/2034	
मंगल	31/03/2030	राहु	15/10/2030	गुरु	22/10/2031	शनि	15/10/2032	बुध	11/11/2033
राहु	23/04/2030	गुरु	05/12/2030	शनि	15/12/2031	बुध	11/12/2032	केतु	02/12/2033
गुरु	12/05/2030	शनि	04/02/2031	बुध	01/02/2032	केतु	04/01/2033	शुक्र	01/02/2034
शनि	05/06/2030	बुध	30/03/2031	केतु	21/02/2032	शुक्र	13/03/2033	सूर्य	19/02/2034
बुध	26/06/2030	केतु	22/04/2031	शुक्र	18/04/2032	सूर्य	02/04/2033	चंद्र	21/03/2034
केतु	05/07/2030	शुक्र	25/06/2031	सूर्य	05/05/2032	चंद्र	06/05/2033	मंगल	11/04/2034
शुक्र	30/07/2030	सूर्य	14/07/2031	चंद्र	02/06/2032	मंगल	29/05/2033	राहु	04/06/2034
सूर्य	06/08/2030	चंद्र	15/08/2031	मंगल	22/06/2032	राहु	29/07/2033	गुरु	23/07/2034
चंद्र	19/08/2030	मंगल	06/09/2031	राहु	12/08/2032	गुरु	21/09/2033	शनि	18/09/2034

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु	
18/09/2034		18/01/2038		18/01/2039		18/09/2040		18/11/2041	
18/01/2038		18/01/2039		18/09/2040		18/11/2041		17/11/2044	
शुक्र	09/04/2035	सूर्य	05/02/2038	चंद्र	10/03/2039	मंगल	12/10/2040	राहु	01/05/2042
सूर्य	09/06/2035	चंद्र	07/03/2038	मंगल	14/04/2039	राहु	15/12/2040	गुरु	24/09/2042
चंद्र	18/09/2035	मंगल	29/03/2038	राहु	14/07/2039	गुरु	10/02/2041	शनि	17/03/2043
मंगल	28/11/2035	राहु	22/05/2038	गुरु	04/10/2039	शनि	19/04/2041	बुध	19/08/2043
राहु	29/05/2036	गुरु	10/07/2038	शनि	08/01/2040	बुध	18/06/2041	केतु	22/10/2043
गुरु	07/11/2036	शनि	06/09/2038	बुध	03/04/2040	केतु	13/07/2041	शुक्र	21/04/2044
शनि	19/05/2037	बुध	28/10/2038	केतु	09/05/2040	शुक्र	22/09/2041	सूर्य	15/06/2044
बुध	08/11/2037	केतु	18/11/2038	शुक्र	18/08/2040	सूर्य	13/10/2041	चंद्र	15/09/2044
केतु	18/01/2038	शुक्र	18/01/2039	सूर्य	18/09/2040	चंद्र	18/11/2041	मंगल	17/11/2044

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
17/11/2044		19/07/2047		18/09/2050		19/07/2053		18/09/2054	
19/07/2047		18/09/2050		19/07/2053		18/09/2054		06/01/2055	
गुरु	27/03/2045	शनि	19/01/2048	बुध	12/02/2051	केतु	13/08/2053	सूर्य	24/09/2054
शनि	29/08/2045	बुध	30/06/2048	केतु	13/04/2051	शुक्र	23/10/2053	चंद्र	03/10/2054
बुध	13/01/2046	केतु	06/09/2048	शुक्र	03/10/2051	सूर्य	13/11/2053	मंगल	09/10/2054
केतु	11/03/2046	शुक्र	18/03/2049	सूर्य	23/11/2051	चंद्र	19/12/2053	राहु	25/10/2054
शुक्र	21/08/2046	सूर्य	14/05/2049	चंद्र	17/02/2052	मंगल	12/01/2054	गुरु	09/11/2054
सूर्य	08/10/2046	चंद्र	19/08/2049	मंगल	18/04/2052	राहु	17/03/2054	शनि	26/11/2054
चंद्र	29/12/2046	मंगल	25/10/2049	राहु	20/09/2052	गुरु	13/05/2054	बुध	12/12/2054
मंगल	23/02/2047	राहु	17/04/2050	गुरु	05/02/2053	शनि	20/07/2054	केतु	18/12/2054
राहु	19/07/2047	गुरु	18/09/2050	शनि	19/07/2053	बुध	18/09/2054	शुक्र	06/01/2055

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
06/01/2055		07/07/2055		12/11/2055		06/10/2056		25/07/2057	
07/07/2055		12/11/2055		06/10/2056		25/07/2057		07/07/2058	
चंद्र	21/01/2055	मंगल	15/07/2055	राहु	31/12/2055	गुरु	14/11/2056	शनि	18/09/2057
मंगल	01/02/2055	राहु	03/08/2055	गुरु	13/02/2056	शनि	30/12/2056	बुध	06/11/2057
राहु	28/02/2055	गुरु	20/08/2055	शनि	05/04/2056	बुध	09/02/2057	केतु	26/11/2057
गुरु	24/03/2055	शनि	09/09/2055	बुध	22/05/2056	केतु	26/02/2057	शुक्र	23/01/2058
शनि	22/04/2055	बुध	27/09/2055	केतु	10/06/2056	शुक्र	16/04/2057	सूर्य	10/02/2058
बुध	18/05/2055	केतु	05/10/2055	शुक्र	04/08/2056	सूर्य	01/05/2057	चंद्र	10/03/2058
केतु	29/05/2055	शुक्र	26/10/2055	सूर्य	20/08/2056	चंद्र	25/05/2057	मंगल	31/03/2058
शुक्र	28/06/2055	सूर्य	01/11/2055	चंद्र	17/09/2056	मंगल	11/06/2057	राहु	22/05/2058
सूर्य	07/07/2055	चंद्र	12/11/2055	मंगल	06/10/2056	राहु	25/07/2057	गुरु	07/07/2058

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
07/07/2058		13/05/2059		18/09/2059		18/09/2060		19/07/2061	
13/05/2059		18/09/2059		18/09/2060		19/07/2061		17/02/2062	
बुध	20/08/2058	केतु	21/05/2059	शुक्र	18/11/2059	चंद्र	13/10/2060	मंगल	31/07/2061
केतु	07/09/2058	शुक्र	11/06/2059	सूर्य	06/12/2059	मंगल	31/10/2060	राहु	01/09/2061
शुक्र	29/10/2058	सूर्य	18/06/2059	चंद्र	06/01/2060	राहु	15/12/2060	गुरु	30/09/2061
सूर्य	13/11/2058	चंद्र	28/06/2059	मंगल	27/01/2060	गुरु	25/01/2061	शनि	02/11/2061
चंद्र	09/12/2058	मंगल	06/07/2059	राहु	22/03/2060	शनि	14/03/2061	बुध	03/12/2061
मंगल	27/12/2058	राहु	25/07/2059	गुरु	10/05/2060	बुध	26/04/2061	केतु	15/12/2061
राहु	12/02/2059	गुरु	11/08/2059	शनि	07/07/2060	केतु	14/05/2061	शुक्र	20/01/2062
गुरु	25/03/2059	शनि	31/08/2059	बुध	27/08/2060	शुक्र	04/07/2061	सूर्य	30/01/2062
शनि	13/05/2059	बुध	18/09/2059	केतु	18/09/2060	सूर्य	19/07/2061	चंद्र	17/02/2062

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
17/02/2062		19/08/2063		18/12/2064		19/07/2066		19/12/2067	
19/08/2063		18/12/2064		19/07/2066		19/12/2067		19/07/2068	
राहु	10/05/2062	गुरु	23/10/2063	शनि	19/03/2065	बुध	30/09/2066	केतु	31/12/2067
गुरु	22/07/2062	शनि	08/01/2064	बुध	09/06/2065	केतु	31/10/2066	शुक्र	05/02/2068
शनि	17/10/2062	बुध	17/03/2064	केतु	13/07/2065	शुक्र	25/01/2067	सूर्य	15/02/2068
बुध	03/01/2063	केतु	14/04/2064	शुक्र	17/10/2065	सूर्य	20/02/2067	चंद्र	04/03/2068
केतु	04/02/2063	शुक्र	04/07/2064	सूर्य	15/11/2065	चंद्र	04/04/2067	मंगल	16/03/2068
शुक्र	06/05/2063	सूर्य	29/07/2064	चंद्र	03/01/2066	मंगल	04/05/2067	राहु	17/04/2068
सूर्य	02/06/2063	चंद्र	07/09/2064	मंगल	05/02/2066	राहु	21/07/2067	गुरु	16/05/2068
चंद्र	18/07/2063	मंगल	06/10/2064	राहु	03/05/2066	गुरु	28/09/2067	शनि	18/06/2068
मंगल	19/08/2063	राहु	18/12/2064	गुरु	19/07/2066	शनि	19/12/2067	बुध	19/07/2068

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
19/07/2068		19/03/2070		18/09/2070		14/02/2071		04/03/2072	
19/03/2070		18/09/2070		14/02/2071		04/03/2072		08/02/2073	
शुक्र	28/10/2068	सूर्य	29/03/2070	मंगल	27/09/2070	राहु	13/04/2071	गुरु	18/04/2072
सूर्य	28/11/2068	चंद्र	13/04/2070	राहु	19/10/2070	गुरु	03/06/2071	शनि	11/06/2072
चंद्र	17/01/2069	मंगल	23/04/2070	गुरु	08/11/2070	शनि	03/08/2071	बुध	29/07/2072
मंगल	22/02/2069	राहु	21/05/2070	शनि	02/12/2070	बुध	26/09/2071	केतु	18/08/2072
राहु	24/05/2069	गुरु	14/06/2070	बुध	23/12/2070	केतु	18/10/2071	शुक्र	14/10/2072
गुरु	13/08/2069	शनि	13/07/2070	केतु	31/12/2070	शुक्र	21/12/2071	सूर्य	31/10/2072
शनि	18/11/2069	बुध	08/08/2070	शुक्र	25/01/2071	सूर्य	09/01/2072	चंद्र	29/11/2072
बुध	12/02/2070	केतु	19/08/2070	सूर्य	02/02/2071	चंद्र	10/02/2072	मंगल	18/12/2072
केतु	19/03/2070	शुक्र	18/09/2070	चंद्र	14/02/2071	मंगल	04/03/2072	राहु	08/02/2073

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
08/02/2073		19/03/2074		17/03/2075		13/08/2075		12/10/2076	
19/03/2074		17/03/2075		13/08/2075		12/10/2076		17/02/2077	
शनि	13/04/2073	बुध	10/05/2074	केतु	25/03/2075	शुक्र	23/10/2075	सूर्य	18/10/2076
बुध	09/06/2073	केतु	31/05/2074	शुक्र	19/04/2075	सूर्य	13/11/2075	चंद्र	29/10/2076
केतु	03/07/2073	शुक्र	30/07/2074	सूर्य	27/04/2075	चंद्र	19/12/2075	मंगल	05/11/2076
शुक्र	08/09/2073	सूर्य	17/08/2074	चंद्र	09/05/2075	मंगल	12/01/2076	राहु	25/11/2076
सूर्य	28/09/2073	चंद्र	17/09/2074	मंगल	18/05/2075	राहु	16/03/2076	गुरु	12/12/2076
चंद्र	01/11/2073	मंगल	08/10/2074	राहु	09/06/2075	गुरु	12/05/2076	शनि	01/01/2077
मंगल	25/11/2073	राहु	01/12/2074	गुरु	29/06/2075	शनि	19/07/2076	बुध	19/01/2077
राहु	24/01/2074	गुरु	18/01/2075	शनि	23/07/2075	बुध	17/09/2076	केतु	26/01/2077
गुरु	19/03/2074	शनि	17/03/2075	बुध	13/08/2075	केतु	12/10/2076	शुक्र	17/02/2077

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
17/02/2077		18/09/2077		31/05/2080		25/10/2082		31/08/2085	
18/09/2077		31/05/2080		25/10/2082		31/08/2085		19/03/2088	
चंद्र	06/03/2077	राहु	13/02/2078	गुरु	25/09/2080	शनि	07/04/2083	बुध	09/01/2086
मंगल	19/03/2077	गुरु	24/06/2078	शनि	11/02/2081	बुध	02/09/2083	केतु	05/03/2086
राहु	20/04/2077	शनि	27/11/2078	बुध	15/06/2081	केतु	02/11/2083	शुक्र	07/08/2086
गुरु	18/05/2077	बुध	16/04/2079	केतु	05/08/2081	शुक्र	23/04/2084	सूर्य	23/09/2086
शनि	21/06/2077	केतु	13/06/2079	शुक्र	29/12/2081	सूर्य	14/06/2084	चंद्र	09/12/2086
बुध	21/07/2077	शुक्र	24/11/2079	सूर्य	11/02/2082	चंद्र	09/09/2084	मंगल	02/02/2087
केतु	03/08/2077	सूर्य	12/01/2080	चंद्र	25/04/2082	मंगल	09/11/2084	राहु	21/06/2087
शुक्र	07/09/2077	चंद्र	03/04/2080	मंगल	15/06/2082	राहु	14/04/2085	गुरु	23/10/2087
सूर्य	18/09/2077	मंगल	31/05/2080	राहु	25/10/2082	गुरु	31/08/2085	शनि	19/03/2088

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - शनि - शुक्र	
26/12/2025 23:07	
08/06/2026 19:38	
शुक्र	23/01/2026 06:32
सूर्य	31/01/2026 11:10
चंद्र	14/02/2026 02:52
मंगल	23/02/2026 16:16
राहु	20/03/2026 06:09
गुरु	11/04/2026 02:29
शनि	07/05/2026 01:08
बुध	30/05/2026 06:15
केतु	08/06/2026 19:38

बुध - शनि - सूर्य	
08/06/2026 19:38	
27/07/2026 23:24	
सूर्य	11/06/2026 06:38
चंद्र	15/06/2026 08:56
मंगल	18/06/2026 05:46
राहु	25/06/2026 14:43
गुरु	02/07/2026 04:01
शनि	09/07/2026 22:49
बुध	16/07/2026 21:57
केतु	19/07/2026 18:46
शुक्र	27/07/2026 23:24

बुध - शनि - चंद्र	
27/07/2026 23:24	
17/10/2026 21:40	
चंद्र	03/08/2026 19:15
मंगल	08/08/2026 13:57
राहु	20/08/2026 20:53
गुरु	31/08/2026 19:04
शनि	13/09/2026 18:23
बुध	25/09/2026 08:56
केतु	30/09/2026 03:38
शुक्र	13/10/2026 19:21
सूर्य	17/10/2026 21:40

बुध - शनि - मंगल	
17/10/2026 21:40	
14/12/2026 06:03	
मंगल	21/10/2026 05:57
राहु	29/10/2026 20:24
गुरु	06/11/2026 11:55
शनि	15/11/2026 13:51
बुध	23/11/2026 16:50
केतु	27/11/2026 01:08
शुक्र	06/12/2026 14:32
सूर्य	09/12/2026 11:21
चंद्र	14/12/2026 06:03

बुध - शनि - राहु	
14/12/2026 06:03	
10/05/2027 17:19	
राहु	05/01/2027 08:56
गुरु	25/01/2027 00:50
शनि	17/02/2027 09:13
बुध	10/03/2027 06:37
केतु	18/03/2027 21:05
शुक्र	12/04/2027 10:57
सूर्य	19/04/2027 19:55
चंद्र	02/05/2027 02:51
मंगल	10/05/2027 17:19

बुध - शनि - गुरु	
10/05/2027 17:19	
18/09/2027 19:20	
गुरु	28/05/2027 04:47
शनि	17/06/2027 22:54
बुध	06/07/2027 12:35
केतु	14/07/2027 04:07
शुक्र	05/08/2027 00:27
सूर्य	11/08/2027 13:45
चंद्र	22/08/2027 11:55
मंगल	30/08/2027 03:26
राहु	18/09/2027 19:20

केतु - केतु - केतु	
18/09/2027 19:20	
27/09/2027 12:08	
केतु	19/09/2027 07:31
शुक्र	20/09/2027 18:19
सूर्य	21/09/2027 04:45
चंद्र	21/09/2027 22:09
मंगल	22/09/2027 10:20
राहु	23/09/2027 17:39
गुरु	24/09/2027 21:30
शनि	26/09/2027 06:33
बुध	27/09/2027 12:08

केतु - केतु - शुक्र	
27/09/2027 12:08	
22/10/2027 08:43	
शुक्र	01/10/2027 15:34
सूर्य	02/10/2027 21:24
चंद्र	04/10/2027 23:07
मंगल	06/10/2027 09:55
राहु	10/10/2027 03:24
गुरु	13/10/2027 10:56
शनि	17/10/2027 09:24
बुध	20/10/2027 21:55
केतु	22/10/2027 08:43

केतु - केतु - सूर्य	
22/10/2027 08:43	
29/10/2027 19:41	
सूर्य	22/10/2027 17:40
चंद्र	23/10/2027 08:35
मंगल	23/10/2027 19:01
राहु	24/10/2027 21:52
गुरु	25/10/2027 21:43
शनि	27/10/2027 02:04
बुध	28/10/2027 03:25
केतु	28/10/2027 13:51
शुक्र	29/10/2027 19:41

केतु - केतु - चंद्र	
29/10/2027 19:41	
11/11/2027 05:58	
चंद्र	30/10/2027 20:33
मंगल	31/10/2027 13:57
राहु	02/11/2027 10:41
गुरु	04/11/2027 02:27
शनि	06/11/2027 01:41
बुध	07/11/2027 19:57
केतु	08/11/2027 13:21
शुक्र	10/11/2027 15:03
सूर्य	11/11/2027 05:58

केतु - केतु - मंगल	
11/11/2027 05:58	
19/11/2027 22:46	
मंगल	11/11/2027 18:09
राहु	13/11/2027 01:28
गुरु	14/11/2027 05:19
शनि	15/11/2027 14:22
बुध	16/11/2027 19:57
केतु	17/11/2027 08:08
शुक्र	18/11/2027 18:56
सूर्य	19/11/2027 05:22
चंद्र	19/11/2027 22:46

केतु - केतु - राहु	
19/11/2027 22:46	
12/12/2027 07:41	
राहु	23/11/2027 07:19
गुरु	26/11/2027 06:54
शनि	29/11/2027 19:55
बुध	02/12/2027 23:59
केतु	04/12/2027 07:18
शुक्र	08/12/2027 00:47
सूर्य	09/12/2027 03:38
चंद्र	11/12/2027 00:22
मंगल	12/12/2027 07:41

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

केतु - केतु - गुरु	
12/12/2027 07:41	
01/01/2028 04:57	
गुरु	14/12/2027 23:20
शनि	18/12/2027 02:53
बुध	20/12/2027 22:30
केतु	22/12/2027 02:21
शुक्र	25/12/2027 09:53
सूर्य	26/12/2027 09:45
चंद्र	28/12/2027 01:31
मंगल	29/12/2027 05:22
राहु	01/01/2028 04:57

केतु - केतु - शनि	
01/01/2028 04:57	
24/01/2028 19:42	
शनि	04/01/2028 22:41
बुध	08/01/2028 06:58
केतु	09/01/2028 16:02
शुक्र	13/01/2028 14:30
सूर्य	14/01/2028 18:50
चंद्र	16/01/2028 18:04
मंगल	18/01/2028 03:07
राहु	21/01/2028 16:08
गुरु	24/01/2028 19:42

केतु - केतु - बुध	
24/01/2028 19:42	
14/02/2028 22:47	
बुध	27/01/2028 19:32
केतु	29/01/2028 01:07
शुक्र	01/02/2028 13:38
सूर्य	02/02/2028 14:59
चंद्र	04/02/2028 09:14
मंगल	05/02/2028 14:49
राहु	08/02/2028 18:53
गुरु	11/02/2028 14:30
शनि	14/02/2028 22:47

केतु - शुक्र - शुक्र	
14/02/2028 22:47	
25/04/2028 23:17	
शुक्र	26/02/2028 18:52
सूर्य	01/03/2028 08:06
चंद्र	07/03/2028 06:08
मंगल	11/03/2028 09:34
राहु	22/03/2028 01:14
गुरु	31/03/2028 12:30
शनि	11/04/2028 18:23
बुध	21/04/2028 19:51
केतु	25/04/2028 23:17

केतु - शुक्र - सूर्य	
25/04/2028 23:17	
17/05/2028 06:38	
सूर्य	27/04/2028 00:51
चंद्र	28/04/2028 19:28
मंगल	30/04/2028 01:18
राहु	03/05/2028 06:00
गुरु	06/05/2028 02:11
शनि	09/05/2028 11:08
बुध	12/05/2028 11:35
केतु	13/05/2028 17:25
शुक्र	17/05/2028 06:38

केतु - शुक्र - चंद्र	
17/05/2028 06:38	
21/06/2028 18:53	
चंद्र	20/05/2028 05:39
मंगल	22/05/2028 07:22
राहु	27/05/2028 15:13
गुरु	01/06/2028 08:51
शनि	06/06/2028 23:47
बुध	12/06/2028 00:31
केतु	14/06/2028 02:14
शुक्र	20/06/2028 00:16
सूर्य	21/06/2028 18:53

केतु - शुक्र - मंगल	
21/06/2028 18:53	
16/07/2028 15:28	
मंगल	23/06/2028 05:41
राहु	26/06/2028 23:10
गुरु	30/06/2028 06:43
शनि	04/07/2028 05:10
बुध	07/07/2028 17:41
केतु	09/07/2028 04:29
शुक्र	13/07/2028 07:55
सूर्य	14/07/2028 13:45
चंद्र	16/07/2028 15:28

केतु - शुक्र - राहु	
16/07/2028 15:28	
18/09/2028 13:31	
राहु	26/07/2028 05:34
गुरु	03/08/2028 18:06
शनि	13/08/2028 21:00
बुध	22/08/2028 22:19
केतु	26/08/2028 15:49
शुक्र	06/09/2028 07:29
सूर्य	09/09/2028 12:11
चंद्र	14/09/2028 20:01
मंगल	18/09/2028 13:31

केतु - शुक्र - गुरु	
18/09/2028 13:31	
14/11/2028 09:07	
गुरु	26/09/2028 03:19
शनि	05/10/2028 03:14
बुध	13/10/2028 04:24
केतु	16/10/2028 11:57
शुक्र	25/10/2028 23:13
सूर्य	28/10/2028 19:24
चंद्र	02/11/2028 13:02
मंगल	05/11/2028 20:34
राहु	14/11/2028 09:07

केतु - शुक्र - शनि	
14/11/2028 09:07	
20/01/2029 20:23	
शनि	25/11/2028 01:30
बुध	04/12/2028 14:54
केतु	08/12/2028 13:21
शुक्र	19/12/2028 19:14
सूर्य	23/12/2028 04:12
चंद्र	28/12/2028 19:08
मंगल	01/01/2029 17:35
राहु	11/01/2029 20:29
गुरु	20/01/2029 20:23

केतु - शुक्र - बुध	
20/01/2029 20:23	
22/03/2029 05:13	
बुध	29/01/2029 09:38
केतु	01/02/2029 22:09
शुक्र	11/02/2029 23:37
सूर्य	15/02/2029 00:04
चंद्र	20/02/2029 00:48
मंगल	23/02/2029 13:19
राहु	04/03/2029 14:38
गुरु	12/03/2029 15:49
शनि	22/03/2029 05:13

केतु - शुक्र - केतु	
22/03/2029 05:13	
16/04/2029 01:47	
केतु	23/03/2029 16:01
शुक्र	27/03/2029 19:26
सूर्य	29/03/2029 01:16
चंद्र	31/03/2029 02:59
मंगल	01/04/2029 13:47
राहु	05/04/2029 07:16
गुरु	08/04/2029 14:49
शनि	12/04/2029 13:16
बुध	16/04/2029 01:47

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

केतु - सूर्य - सूर्य	
16/04/2029 01:47	
22/04/2029 11:11	
सूर्य	16/04/2029 09:27
चंद्र	16/04/2029 22:14
मंगल	17/04/2029 07:11
राहु	18/04/2029 06:12
गुरु	19/04/2029 02:39
शनि	20/04/2029 02:57
बुध	21/04/2029 00:40
केतु	21/04/2029 09:37
शुक्र	22/04/2029 11:11

केतु - सूर्य - चंद्र	
22/04/2029 11:11	
03/05/2029 02:52	
चंद्र	23/04/2029 08:30
मंगल	23/04/2029 23:25
राहु	25/04/2029 13:46
गुरु	26/04/2029 23:51
शनि	28/04/2029 16:20
बुध	30/04/2029 04:33
केतु	30/04/2029 19:28
शुक्र	02/05/2029 14:05
सूर्य	03/05/2029 02:52

केतु - सूर्य - मंगल	
03/05/2029 02:52	
10/05/2029 13:50	
मंगल	03/05/2029 13:18
राहु	04/05/2029 16:09
गुरु	05/05/2029 16:01
शनि	06/05/2029 20:21
बुध	07/05/2029 21:42
केतु	08/05/2029 08:09
शुक्र	09/05/2029 13:59
सूर्य	09/05/2029 22:55
चंद्र	10/05/2029 13:50

केतु - सूर्य - राहु	
10/05/2029 13:50	
29/05/2029 18:03	
राहु	13/05/2029 10:52
गुरु	16/05/2029 00:14
शनि	19/05/2029 01:06
बुध	21/05/2029 18:18
केतु	22/05/2029 21:09
शुक्र	26/05/2029 01:51
सूर्य	27/05/2029 00:51
चंद्र	28/05/2029 15:12
मंगल	29/05/2029 18:03

केतु - सूर्य - गुरु	
29/05/2029 18:03	
15/06/2029 19:08	
गुरु	01/06/2029 00:36
शनि	03/06/2029 17:22
बुध	06/06/2029 03:19
केतु	07/06/2029 03:11
शुक्र	09/06/2029 23:22
सूर्य	10/06/2029 19:49
चंद्र	12/06/2029 05:54
मंगल	13/06/2029 05:46
राहु	15/06/2029 19:08

केतु - सूर्य - शनि	
15/06/2029 19:08	
06/07/2029 00:55	
शनि	19/06/2029 00:03
बुध	21/06/2029 20:52
केतु	23/06/2029 01:12
शुक्र	26/06/2029 10:10
सूर्य	27/06/2029 10:27
चंद्र	29/06/2029 02:56
मंगल	30/06/2029 07:17
राहु	03/07/2029 08:09
गुरु	06/07/2029 00:55

केतु - सूर्य - बुध	
06/07/2029 00:55	
24/07/2029 03:34	
बुध	08/07/2029 14:29
केतु	09/07/2029 15:51
शुक्र	12/07/2029 16:17
सूर्य	13/07/2029 14:01
चंद्र	15/07/2029 02:14
मंगल	16/07/2029 03:36
राहु	18/07/2029 20:47
गुरु	21/07/2029 06:45
शनि	24/07/2029 03:34

केतु - सूर्य - केतु	
24/07/2029 03:34	
31/07/2029 14:32	
केतु	24/07/2029 14:00
शुक्र	25/07/2029 19:50
सूर्य	26/07/2029 04:47
चंद्र	26/07/2029 19:42
मंगल	27/07/2029 06:08
राहु	28/07/2029 08:59
गुरु	29/07/2029 08:51
शनि	30/07/2029 13:11
बुध	31/07/2029 14:32

केतु - सूर्य - शुक्र	
31/07/2029 14:32	
21/08/2029 21:53	
शुक्र	04/08/2029 03:46
सूर्य	05/08/2029 05:20
चंद्र	06/08/2029 23:56
मंगल	08/08/2029 05:46
राहु	11/08/2029 10:28
गुरु	14/08/2029 06:39
शनि	17/08/2029 15:37
बुध	20/08/2029 16:03
केतु	21/08/2029 21:53

केतु - चंद्र - चंद्र	
21/08/2029 21:53	
08/09/2029 16:01	
चंद्र	23/08/2029 09:24
मंगल	24/08/2029 10:15
राहु	27/08/2029 02:10
गुरु	29/08/2029 10:59
शनि	01/09/2029 06:28
बुध	03/09/2029 18:50
केतु	04/09/2029 19:41
शुक्र	07/09/2029 18:42
सूर्य	08/09/2029 16:01

केतु - चंद्र - मंगल	
08/09/2029 16:01	
21/09/2029 02:18	
मंगल	09/09/2029 09:25
राहु	11/09/2029 06:09
गुरु	12/09/2029 21:56
शनि	14/09/2029 21:09
बुध	16/09/2029 15:25
केतु	17/09/2029 08:49
शुक्र	19/09/2029 10:32
सूर्य	20/09/2029 01:26
चंद्र	21/09/2029 02:18

केतु - चंद्र - राहु	
21/09/2029 02:18	
23/10/2029 01:19	
राहु	25/09/2029 21:21
गुरु	30/09/2029 03:37
शनि	05/10/2029 05:04
बुध	09/10/2029 17:44
केतु	11/10/2029 14:28
शुक्र	16/10/2029 22:19
सूर्य	18/10/2029 12:40
चंद्र	21/10/2029 04:35
मंगल	23/10/2029 01:19

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

केतु - चंद्र - गुरु	
23/10/2029 01:19	
20/11/2029 11:07	
गुरु	26/10/2029 20:14
शनि	31/10/2029 08:11
बुध	04/11/2029 08:46
केतु	06/11/2029 00:32
शुक्र	10/11/2029 18:10
सूर्य	12/11/2029 04:16
चंद्र	14/11/2029 13:05
मंगल	16/11/2029 04:51
राहु	20/11/2029 11:07

केतु - चंद्र - शनि	
20/11/2029 11:07	
24/12/2029 04:46	
शनि	25/11/2029 19:19
बुध	30/11/2029 14:01
केतु	02/12/2029 13:15
शुक्र	08/12/2029 04:11
सूर्य	09/12/2029 20:40
चंद्र	12/12/2029 16:08
मंगल	14/12/2029 15:22
राहु	19/12/2029 16:49
गुरु	24/12/2029 04:46

केतु - चंद्र - बुध	
24/12/2029 04:46	
23/01/2030 09:10	
बुध	28/12/2029 11:23
केतु	30/12/2029 05:39
शुक्र	04/01/2030 06:23
सूर्य	05/01/2030 18:36
चंद्र	08/01/2030 06:58
मंगल	10/01/2030 01:13
राहु	14/01/2030 13:53
गुरु	18/01/2030 14:28
शनि	23/01/2030 09:10

केतु - चंद्र - केतु	
23/01/2030 09:10	
04/02/2030 19:28	
केतु	24/01/2030 02:34
शुक्र	26/01/2030 04:17
सूर्य	26/01/2030 19:12
चंद्र	27/01/2030 20:04
मंगल	28/01/2030 13:28
राहु	30/01/2030 10:12
गुरु	01/02/2030 01:58
शनि	03/02/2030 01:12
बुध	04/02/2030 19:28

केतु - चंद्र - शुक्र	
04/02/2030 19:28	
12/03/2030 07:43	
शुक्र	10/02/2030 17:30
सूर्य	12/02/2030 12:07
चंद्र	15/02/2030 11:08
मंगल	17/02/2030 12:51
राहु	22/02/2030 20:41
गुरु	27/02/2030 14:19
शनि	05/03/2030 05:16
बुध	10/03/2030 06:00
केतु	12/03/2030 07:43

केतु - चंद्र - सूर्य	
12/03/2030 07:43	
22/03/2030 23:23	
सूर्य	12/03/2030 20:30
चंद्र	13/03/2030 17:48
मंगल	14/03/2030 08:43
राहु	15/03/2030 23:04
गुरु	17/03/2030 09:09
शनि	19/03/2030 01:38
बुध	20/03/2030 13:52
केतु	21/03/2030 04:46
शुक्र	22/03/2030 23:23

केतु - मंगल - मंगल	
22/03/2030 23:23	
31/03/2030 16:11	
मंगल	23/03/2030 11:34
राहु	24/03/2030 18:53
गुरु	25/03/2030 22:44
शनि	27/03/2030 07:47
बुध	28/03/2030 13:22
केतु	29/03/2030 01:33
शुक्र	30/03/2030 12:21
सूर्य	30/03/2030 22:47
चंद्र	31/03/2030 16:11

केतु - मंगल - राहु	
31/03/2030 16:11	
23/04/2030 01:06	
राहु	04/04/2030 00:43
गुरु	07/04/2030 00:19
शनि	10/04/2030 13:20
बुध	13/04/2030 17:23
केतु	15/04/2030 00:43
शुक्र	18/04/2030 18:12
सूर्य	19/04/2030 21:02
चंद्र	21/04/2030 17:47
मंगल	23/04/2030 01:06

केतु - मंगल - गुरु	
23/04/2030 01:06	
12/05/2030 22:22	
गुरु	25/04/2030 16:44
शनि	28/04/2030 20:18
बुध	01/05/2030 15:55
केतु	02/05/2030 19:45
शुक्र	06/05/2030 03:18
सूर्य	07/05/2030 03:10
चंद्र	08/05/2030 18:56
मंगल	09/05/2030 22:47
राहु	12/05/2030 22:22

केतु - मंगल - शनि	
12/05/2030 22:22	
05/06/2030 13:07	
शनि	16/05/2030 16:06
बुध	20/05/2030 00:23
केतु	21/05/2030 09:27
शुक्र	25/05/2030 07:54
सूर्य	26/05/2030 12:15
चंद्र	28/05/2030 11:28
मंगल	29/05/2030 20:32
राहु	02/06/2030 09:33
गुरु	05/06/2030 13:07

केतु - मंगल - बुध	
05/06/2030 13:07	
26/06/2030 16:12	
बुध	08/06/2030 12:57
केतु	09/06/2030 18:32
शुक्र	13/06/2030 07:03
सूर्य	14/06/2030 08:24
चंद्र	16/06/2030 02:39
मंगल	17/06/2030 08:14
राहु	20/06/2030 12:18
गुरु	23/06/2030 07:55
शनि	26/06/2030 16:12

केतु - मंगल - केतु	
26/06/2030 16:12	
05/07/2030 09:00	
केतु	27/06/2030 04:23
शुक्र	28/06/2030 15:11
सूर्य	29/06/2030 01:37
चंद्र	29/06/2030 19:01
मंगल	30/06/2030 07:12
राहु	01/07/2030 14:31
गुरु	02/07/2030 18:22
शनि	04/07/2030 03:25
बुध	05/07/2030 09:00

विंशोत्तरी दशा - प्राण

बुध - शनि - शुक्र - राहु	
23/02/2026 16:16	
20/03/2026 06:09	
राहु	27/02/2026 08:45
गुरु	02/03/2026 15:24
शनि	06/03/2026 12:48
बुध	10/03/2026 00:22
केतु	11/03/2026 10:46
शुक्र	15/03/2026 13:05
सूर्य	16/03/2026 18:35
चंद्र	18/03/2026 19:44
मंगल	20/03/2026 06:09

बुध - शनि - शुक्र - गुरु	
20/03/2026 06:09	
11/04/2026 02:29	
गुरु	23/03/2026 04:04
शनि	26/03/2026 15:05
बुध	29/03/2026 17:22
केतु	30/03/2026 23:57
शुक्र	03/04/2026 15:20
सूर्य	04/04/2026 17:33
चंद्र	06/04/2026 13:15
मंगल	07/04/2026 19:50
राहु	11/04/2026 02:29

बुध - शनि - शुक्र - शनि	
11/04/2026 02:29	
07/05/2026 01:08	
शनि	15/04/2026 05:04
बुध	18/04/2026 21:17
केतु	20/04/2026 09:36
शुक्र	24/04/2026 17:23
सूर्य	26/04/2026 00:31
चंद्र	28/04/2026 04:24
मंगल	29/04/2026 16:43
राहु	03/05/2026 14:07
गुरु	07/05/2026 01:08

बुध - शनि - शुक्र - बुध	
07/05/2026 01:08	
30/05/2026 06:15	
बुध	10/05/2026 08:03
केतु	11/05/2026 16:33
शुक्र	15/05/2026 13:24
सूर्य	16/05/2026 17:16
चंद्र	18/05/2026 15:41
मंगल	20/05/2026 00:11
राहु	23/05/2026 11:45
गुरु	26/05/2026 14:02
शनि	30/05/2026 06:15

बुध - शनि - शुक्र - केतु	
30/05/2026 06:15	
08/06/2026 19:38	
केतु	30/05/2026 19:37
शुक्र	01/06/2026 09:51
सूर्य	01/06/2026 21:20
चंद्र	02/06/2026 16:27
मंगल	03/06/2026 05:49
राहु	04/06/2026 16:14
गुरु	05/06/2026 22:49
शनि	07/06/2026 11:08
बुध	08/06/2026 19:38

बुध - शनि - सूर्य - सूर्य	
08/06/2026 19:38	
11/06/2026 06:38	
सूर्य	08/06/2026 22:35
चंद्र	09/06/2026 03:30
मंगल	09/06/2026 06:57
राहु	09/06/2026 15:48
गुरु	09/06/2026 23:40
शनि	10/06/2026 09:00
बुध	10/06/2026 17:21
केतु	10/06/2026 20:48
शुक्र	11/06/2026 06:38

बुध - शनि - सूर्य - चंद्र	
11/06/2026 06:38	
15/06/2026 08:56	
चंद्र	11/06/2026 14:49
मंगल	11/06/2026 20:33
राहु	12/06/2026 11:18
गुरु	13/06/2026 00:25
शनि	13/06/2026 15:59
बुध	14/06/2026 05:54
केतु	14/06/2026 11:38
शुक्र	15/06/2026 04:01
सूर्य	15/06/2026 08:56

बुध - शनि - सूर्य - मंगल	
15/06/2026 08:56	
18/06/2026 05:46	
मंगल	15/06/2026 12:57
राहु	15/06/2026 23:17
गुरु	16/06/2026 08:27
शनि	16/06/2026 19:21
बुध	17/06/2026 05:06
केतु	17/06/2026 09:07
शुक्र	17/06/2026 20:35
सूर्य	18/06/2026 00:01
चंद्र	18/06/2026 05:46

बुध - शनि - सूर्य - राहु	
18/06/2026 05:46	
25/06/2026 14:43	
राहु	19/06/2026 08:18
गुरु	20/06/2026 07:54
शनि	21/06/2026 11:55
बुध	22/06/2026 12:59
केतु	22/06/2026 23:19
शुक्र	24/06/2026 04:48
सूर्य	24/06/2026 13:39
चंद्र	25/06/2026 04:24
मंगल	25/06/2026 14:43

बुध - शनि - सूर्य - गुरु	
25/06/2026 14:43	
02/07/2026 04:01	
गुरु	26/06/2026 11:42
शनि	27/06/2026 12:36
बुध	28/06/2026 10:53
केतु	28/06/2026 20:04
शुक्र	29/06/2026 22:17
सूर्य	30/06/2026 06:09
चंद्र	30/06/2026 19:15
मंगल	01/07/2026 04:26
राहु	02/07/2026 04:01

बुध - शनि - सूर्य - शनि	
02/07/2026 04:01	
09/07/2026 22:49	
शनि	03/07/2026 09:36
बुध	04/07/2026 12:04
केतु	04/07/2026 22:58
शुक्र	06/07/2026 06:06
सूर्य	06/07/2026 15:26
चंद्र	07/07/2026 07:00
मंगल	07/07/2026 17:54
राहु	08/07/2026 21:55
गुरु	09/07/2026 22:49

बुध - शनि - सूर्य - बुध	
09/07/2026 22:49	
16/07/2026 21:57	
बुध	10/07/2026 22:30
केतु	11/07/2026 08:15
शुक्र	12/07/2026 12:06
सूर्य	12/07/2026 20:27
चंद्र	13/07/2026 10:23
मंगल	13/07/2026 20:08
राहु	14/07/2026 21:12
गुरु	15/07/2026 19:29
शनि	16/07/2026 21:57

विंशोत्तरी दशा - प्राण

बुध - शनि - सूर्य - केतु	
16/07/2026 21:57	
19/07/2026 18:46	
केतु	17/07/2026 01:58
शुक्र	17/07/2026 13:26
सूर्य	17/07/2026 16:53
चंद्र	17/07/2026 22:37
मंगल	18/07/2026 02:38
राहु	18/07/2026 12:57
गुरु	18/07/2026 22:08
शनि	19/07/2026 09:01
बुध	19/07/2026 18:46

बुध - शनि - सूर्य - शुक्र	
19/07/2026 18:46	
27/07/2026 23:24	
शुक्र	21/07/2026 03:33
सूर्य	21/07/2026 13:22
चंद्र	22/07/2026 05:46
मंगल	22/07/2026 17:14
राहु	23/07/2026 22:43
गुरु	25/07/2026 00:56
शनि	26/07/2026 08:04
बुध	27/07/2026 11:56
केतु	27/07/2026 23:24

बुध - शनि - चंद्र - चंद्र	
27/07/2026 23:24	
03/08/2026 19:15	
चंद्र	28/07/2026 13:03
मंगल	28/07/2026 22:37
राहु	29/07/2026 23:11
गुरु	30/07/2026 21:02
शनि	31/07/2026 22:59
बुध	01/08/2026 22:12
केतु	02/08/2026 07:45
शुक्र	03/08/2026 11:04
सूर्य	03/08/2026 19:15

बुध - शनि - चंद्र - मंगल	
03/08/2026 19:15	
08/08/2026 13:57	
मंगल	04/08/2026 01:57
राहु	04/08/2026 19:09
गुरु	05/08/2026 10:26
शनि	06/08/2026 04:36
बुध	06/08/2026 20:51
केतु	07/08/2026 03:32
शुक्र	07/08/2026 22:39
सूर्य	08/08/2026 04:24
चंद्र	08/08/2026 13:57

बुध - शनि - चंद्र - राहु	
08/08/2026 13:57	
20/08/2026 20:53	
राहु	10/08/2026 10:12
गुरु	12/08/2026 01:31
शनि	14/08/2026 00:13
बुध	15/08/2026 18:00
केतु	16/08/2026 11:12
शुक्र	18/08/2026 12:22
सूर्य	19/08/2026 03:06
चंद्र	20/08/2026 03:41
मंगल	20/08/2026 20:53

बुध - शनि - चंद्र - गुरु	
20/08/2026 20:53	
31/08/2026 19:04	
गुरु	22/08/2026 07:51
शनि	24/08/2026 01:21
बुध	25/08/2026 14:30
केतु	26/08/2026 05:47
शुक्र	28/08/2026 01:29
सूर्य	28/08/2026 14:36
चंद्र	29/08/2026 12:26
मंगल	30/08/2026 03:44
राहु	31/08/2026 19:04

बुध - शनि - चंद्र - शनि	
31/08/2026 19:04	
13/09/2026 18:23	
शनि	02/09/2026 20:21
बुध	04/09/2026 16:27
केतु	05/09/2026 10:37
शुक्र	07/09/2026 14:30
सूर्य	08/09/2026 06:04
चंद्र	09/09/2026 08:01
मंगल	10/09/2026 02:10
राहु	12/09/2026 00:52
गुरु	13/09/2026 18:23

बुध - शनि - चंद्र - बुध	
13/09/2026 18:23	
25/09/2026 08:56	
बुध	15/09/2026 09:51
केतु	16/09/2026 02:06
शुक्र	18/09/2026 00:31
सूर्य	18/09/2026 14:27
चंद्र	19/09/2026 13:40
मंगल	20/09/2026 05:55
राहु	21/09/2026 23:42
गुरु	23/09/2026 12:50
शनि	25/09/2026 08:56

बुध - शनि - चंद्र - केतु	
25/09/2026 08:56	
30/09/2026 03:38	
केतु	25/09/2026 15:38
शुक्र	26/09/2026 10:45
सूर्य	26/09/2026 16:29
चंद्र	27/09/2026 02:02
मंगल	27/09/2026 08:44
राहु	28/09/2026 01:56
गुरु	28/09/2026 17:14
शनि	29/09/2026 11:23
बुध	30/09/2026 03:38

बुध - शनि - चंद्र - शुक्र	
30/09/2026 03:38	
13/10/2026 19:21	
शुक्र	02/10/2026 10:15
सूर्य	03/10/2026 02:38
चंद्र	04/10/2026 05:57
मंगल	05/10/2026 01:04
राहु	07/10/2026 02:13
गुरु	08/10/2026 21:55
शनि	11/10/2026 01:48
बुध	13/10/2026 00:14
केतु	13/10/2026 19:21

बुध - शनि - चंद्र - सूर्य	
13/10/2026 19:21	
17/10/2026 21:40	
सूर्य	14/10/2026 00:16
चंद्र	14/10/2026 08:27
मंगल	14/10/2026 14:11
राहु	15/10/2026 04:56
गुरु	15/10/2026 18:03
शनि	16/10/2026 09:37
बुध	16/10/2026 23:32
केतु	17/10/2026 05:16
शुक्र	17/10/2026 21:40

बुध - शनि - मंगल - मंगल	
17/10/2026 21:40	
21/10/2026 05:57	
मंगल	18/10/2026 02:21
राहु	18/10/2026 14:23
गुरु	19/10/2026 01:05
शनि	19/10/2026 13:48
बुध	20/10/2026 01:11
केतु	20/10/2026 05:52
शुक्र	20/10/2026 19:15
सूर्य	20/10/2026 23:15
चंद्र	21/10/2026 05:57

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 9 वर्ष 0 मास 21 दिन

सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष	
15/07/1978		06/08/1987		06/08/1999		05/08/2012		06/08/2026	
06/08/1987		06/08/1999		05/08/2012		06/08/2026		06/08/2041	
	15/07/1978	मंगल	02/11/1988	गुरु	19/01/2001	शनि	15/04/2014	केतु	14/07/2028
मंगल	11/10/1978	गुरु	08/03/1990	शनि	15/08/2002	केतु	05/02/2016	चंद्र	09/08/2030
गुरु	04/01/1980	शनि	19/08/1991	केतु	20/04/2004	चंद्र	10/01/2018	बुध	20/10/2032
शनि	03/05/1981	केतु	08/03/1993	चंद्र	04/02/2006	बुध	29/01/2020	शुक्र	17/02/2035
केतु	05/10/1982	चंद्र	02/11/1994	बुध	01/01/2008	शुक्र	02/04/2022	सूर्य	21/07/2036
चंद्र	11/04/1984	बुध	05/08/1996	शुक्र	07/01/2010	सूर्य	31/07/2023	मंगल	07/02/2038
बुध	21/11/1985	शुक्र	17/06/1998	सूर्य	02/04/2011	मंगल	10/01/2025	गुरु	14/10/2039
शुक्र	06/08/1987	सूर्य	06/08/1999	मंगल	05/08/2012	गुरु	06/08/2026	शनि	06/08/2041

चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष	
06/08/2041		06/08/2057		06/08/2074		05/08/2092	
06/08/2057		06/08/2074		05/08/2092		00/00/0000	
चंद्र	21/10/2043	बुध	02/02/2060	शुक्र	22/05/2077	सूर्य	21/08/2093
बुध	23/02/2046	शुक्र	22/09/2062	सूर्य	05/02/2079	मंगल	15/07/2094
शुक्र	18/08/2048	सूर्य	03/05/2064	मंगल	16/12/2080		00/00/0000
सूर्य	23/02/2050	मंगल	04/02/2066	गुरु	22/12/2082		00/00/0000
मंगल	21/10/2051	गुरु	01/01/2068	शनि	23/02/2085		00/00/0000
गुरु	06/08/2053	शनि	20/01/2070	केतु	23/06/2087		00/00/0000
शनि	12/07/2055	केतु	01/04/2072	चंद्र	16/12/2089		00/00/0000
केतु	06/08/2057	चंद्र	06/08/2074	बुध	05/08/2092		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र	
15/07/1978		11/10/1978		04/01/1980		03/05/1981		05/10/1982	
11/10/1978		04/01/1980		03/05/1981		05/10/1982		11/04/1984	
	00/00/0000	गुरु	30/11/1978	शनि	03/03/1980	केतु	09/07/1981	चंद्र	20/12/1982
	00/00/0000	शनि	24/01/1979	केतु	05/05/1980	चंद्र	19/09/1981	बुध	11/03/1983
	00/00/0000	केतु	23/03/1979	चंद्र	10/07/1980	बुध	04/12/1981	शुक्र	05/06/1983
	00/00/0000	चंद्र	24/05/1979	बुध	19/09/1980	शुक्र	23/02/1982	सूर्य	28/07/1983
	00/00/0000	बुध	29/07/1979	शुक्र	04/12/1980	सूर्य	13/04/1982	मंगल	23/09/1983
	15/07/1978	शुक्र	07/10/1979	सूर्य	19/01/1981	मंगल	06/06/1982	गुरु	24/11/1983
शुक्र	02/09/1978	सूर्य	19/11/1979	मंगल	10/03/1981	गुरु	03/08/1982	शनि	30/01/1984
सूर्य	11/10/1978	मंगल	04/01/1980	गुरु	03/05/1981	शनि	05/10/1982	केतु	11/04/1984

सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
11/04/1984		21/11/1985		06/08/1987		02/11/1988		08/03/1990	
21/11/1985		06/08/1987		02/11/1988		08/03/1990		19/08/1991	
बुध	06/07/1984	शुक्र	25/02/1986	मंगल	22/09/1987	गुरु	27/12/1988	शनि	11/05/1990
शुक्र	06/10/1984	सूर्य	26/04/1986	गुरु	12/11/1987	शनि	24/02/1989	केतु	18/07/1990
सूर्य	30/11/1984	मंगल	29/06/1986	शनि	06/01/1988	केतु	28/04/1989	चंद्र	29/09/1990
मंगल	30/01/1985	गुरु	07/09/1986	केतु	04/03/1988	चंद्र	05/07/1989	बुध	16/12/1990
गुरु	06/04/1985	शनि	21/11/1986	चंद्र	06/05/1988	बुध	15/09/1989	शुक्र	08/03/1991
शनि	16/06/1985	केतु	10/02/1987	बुध	11/07/1988	शुक्र	30/11/1989	सूर्य	27/04/1991
केतु	01/09/1985	चंद्र	07/05/1987	शुक्र	20/09/1988	सूर्य	16/01/1990	मंगल	20/06/1991
चंद्र	21/11/1985	बुध	06/08/1987	सूर्य	02/11/1988	मंगल	08/03/1990	गुरु	19/08/1991

मंगल - केतु		मंगल - चंद्र		मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
19/08/1991		08/03/1993		02/11/1994		05/08/1996		17/06/1998	
08/03/1993		02/11/1994		05/08/1996		17/06/1998		06/08/1999	
केतु	31/10/1991	चंद्र	30/05/1993	बुध	04/02/1995	शुक्र	19/11/1996	सूर्य	26/07/1998
चंद्र	17/01/1992	बुध	27/08/1993	शुक्र	15/05/1995	सूर्य	22/01/1997	मंगल	07/09/1998
बुध	09/04/1992	शुक्र	28/11/1993	सूर्य	15/07/1995	मंगल	03/04/1997	गुरु	24/10/1998
शुक्र	06/07/1992	सूर्य	25/01/1994	मंगल	19/09/1995	गुरु	18/06/1997	शनि	13/12/1998
सूर्य	29/08/1992	मंगल	28/03/1994	गुरु	30/11/1995	शनि	08/09/1997	केतु	04/02/1999
मंगल	27/10/1992	गुरु	04/06/1994	शनि	16/02/1996	केतु	05/12/1997	चंद्र	03/04/1999
गुरु	29/12/1992	शनि	16/08/1994	केतु	09/05/1996	चंद्र	09/03/1998	बुध	03/06/1999
शनि	08/03/1993	केतु	02/11/1994	चंद्र	05/08/1996	बुध	17/06/1998	शुक्र	06/08/1999

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - केतु		गुरु - चंद्र		गुरु - बुध	
06/08/1999		19/01/2001		15/08/2002		20/04/2004		04/02/2006	
19/01/2001		15/08/2002		20/04/2004		04/02/2006		01/01/2008	
गुरु	05/10/1999	शनि	29/03/2001	केतु	03/11/2002	चंद्र	20/07/2004	बुध	17/05/2006
शनि	08/12/1999	केतु	12/06/2001	चंद्र	26/01/2003	बुध	24/10/2004	शुक्र	02/09/2006
केतु	15/02/2000	चंद्र	30/08/2001	बुध	26/04/2003	शुक्र	02/02/2005	सूर्य	07/11/2006
चंद्र	28/04/2000	बुध	22/11/2001	शुक्र	31/07/2003	सूर्य	05/04/2005	मंगल	18/01/2007
बुध	15/07/2000	शुक्र	19/02/2002	सूर्य	27/09/2003	मंगल	12/06/2005	गुरु	06/04/2007
शुक्र	06/10/2000	सूर्य	14/04/2002	मंगल	29/11/2003	गुरु	25/08/2005	शनि	29/06/2007
सूर्य	25/11/2000	मंगल	12/06/2002	गुरु	06/02/2004	शनि	12/11/2005	केतु	27/09/2007
मंगल	19/01/2001	गुरु	15/08/2002	शनि	20/04/2004	केतु	04/02/2006	चंद्र	01/01/2008

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु	
01/01/2008		07/01/2010		02/04/2011		05/08/2012		15/04/2014	
07/01/2010		02/04/2011		05/08/2012		15/04/2014		05/02/2016	
शुक्र	24/04/2008	सूर्य	19/02/2010	मंगल	23/05/2011	शनि	19/10/2012	केतु	09/07/2014
सूर्य	03/07/2008	मंगल	06/04/2010	गुरु	17/07/2011	केतु	07/01/2013	चंद्र	08/10/2014
मंगल	18/09/2008	गुरु	27/05/2010	शनि	14/09/2011	चंद्र	02/04/2013	बुध	13/01/2015
गुरु	09/12/2008	शनि	20/07/2010	केतु	17/11/2011	बुध	01/07/2013	शुक्र	26/04/2015
शनि	08/03/2009	केतु	16/09/2010	चंद्र	24/01/2012	शुक्र	05/10/2013	सूर्य	27/06/2015
केतु	11/06/2009	चंद्र	17/11/2010	बुध	05/04/2012	सूर्य	03/12/2013	मंगल	04/09/2015
चंद्र	21/09/2009	बुध	22/01/2011	शुक्र	20/06/2012	मंगल	04/02/2014	गुरु	17/11/2015
बुध	07/01/2010	शुक्र	02/04/2011	सूर्य	05/08/2012	गुरु	15/04/2014	शनि	05/02/2016

शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल	
05/02/2016		10/01/2018		29/01/2020		02/04/2022		31/07/2023	
10/01/2018		29/01/2020		02/04/2022		31/07/2023		10/01/2025	
चंद्र	12/05/2016	बुध	30/04/2018	शुक्र	01/06/2020	सूर्य	18/05/2022	मंगल	24/09/2023
बुध	23/08/2016	शुक्र	24/08/2018	सूर्य	15/08/2020	मंगल	07/07/2022	गुरु	22/11/2023
शुक्र	11/12/2016	सूर्य	03/11/2018	मंगल	05/11/2020	गुरु	30/08/2022	शनि	25/01/2024
सूर्य	16/02/2017	मंगल	20/01/2019	गुरु	02/02/2021	शनि	28/10/2022	केतु	02/04/2024
मंगल	30/04/2017	गुरु	14/04/2019	शनि	09/05/2021	केतु	30/12/2022	चंद्र	14/06/2024
गुरु	18/07/2017	शनि	13/07/2019	केतु	19/08/2021	चंद्र	07/03/2023	बुध	31/08/2024
शनि	11/10/2017	केतु	18/10/2019	चंद्र	07/12/2021	बुध	17/05/2023	शुक्र	21/11/2024
केतु	10/01/2018	चंद्र	29/01/2020	बुध	02/04/2022	शुक्र	31/07/2023	सूर्य	10/01/2025

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु		केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध		केतु - शुक्र	
10/01/2025		06/08/2026		14/07/2028		09/08/2030		20/10/2032	
06/08/2026		14/07/2028		09/08/2030		20/10/2032		17/02/2035	
गुरु	15/03/2025	केतु	06/11/2026	चंद्र	27/10/2028	बुध	05/12/2030	शुक्र	01/03/2033
शनि	23/05/2025	चंद्र	11/02/2027	बुध	14/02/2029	शुक्र	08/04/2031	सूर्य	21/05/2033
केतु	05/08/2025	बुध	26/05/2027	शुक्र	12/06/2029	सूर्य	23/06/2031	मंगल	16/08/2033
चंद्र	23/10/2025	शुक्र	13/09/2027	सूर्य	22/08/2029	मंगल	15/09/2031	गुरु	20/11/2033
बुध	15/01/2026	सूर्य	19/11/2027	मंगल	08/11/2029	गुरु	14/12/2031	शनि	02/03/2034
शुक्र	14/04/2026	मंगल	31/01/2028	गुरु	01/02/2030	शनि	19/03/2032	केतु	20/06/2034
सूर्य	08/06/2026	गुरु	20/04/2028	शनि	03/05/2030	केतु	01/07/2032	चंद्र	16/10/2034
मंगल	06/08/2026	शनि	14/07/2028	केतु	09/08/2030	चंद्र	20/10/2032	बुध	17/02/2035

केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि		चंद्र - चंद्र	
17/02/2035		21/07/2036		07/02/2038		14/10/2039		06/08/2041	
21/07/2036		07/02/2038		14/10/2039		06/08/2041		21/10/2043	
सूर्य	07/04/2035	मंगल	17/09/2036	गुरु	17/04/2038	शनि	02/01/2040	चंद्र	25/11/2041
मंगल	31/05/2035	गुरु	20/11/2036	शनि	30/06/2038	केतु	28/03/2040	बुध	23/03/2042
गुरु	28/07/2035	शनि	27/01/2037	केतु	18/09/2038	चंद्र	27/06/2040	शुक्र	26/07/2042
शनि	29/09/2035	केतु	11/04/2037	चंद्र	11/12/2038	बुध	02/10/2040	सूर्य	10/10/2042
केतु	05/12/2035	चंद्र	28/06/2037	बुध	11/03/2039	शुक्र	12/01/2041	मंगल	02/01/2043
चंद्र	15/02/2036	बुध	19/09/2037	शुक्र	15/06/2039	सूर्य	16/03/2041	गुरु	02/04/2043
बुध	01/05/2036	शुक्र	16/12/2037	सूर्य	12/08/2039	मंगल	24/05/2041	शनि	09/07/2043
शुक्र	21/07/2036	सूर्य	07/02/2038	मंगल	14/10/2039	गुरु	06/08/2041	केतु	21/10/2043

चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु	
21/10/2043		23/02/2046		18/08/2048		23/02/2050		21/10/2051	
23/02/2046		18/08/2048		23/02/2050		21/10/2051		06/08/2053	
बुध	23/02/2044	शुक्र	14/07/2046	सूर्य	10/10/2048	मंगल	27/04/2050	गुरु	02/01/2052
शुक्र	05/07/2044	सूर्य	08/10/2046	मंगल	06/12/2048	गुरु	03/07/2050	शनि	21/03/2052
सूर्य	24/09/2044	मंगल	10/01/2047	गुरु	06/02/2049	शनि	14/09/2050	केतु	14/06/2052
मंगल	22/12/2044	गुरु	21/04/2047	शनि	14/04/2049	केतु	02/12/2050	चंद्र	12/09/2052
गुरु	28/03/2045	शनि	09/08/2047	केतु	25/06/2049	चंद्र	23/02/2051	बुध	17/12/2052
शनि	09/07/2045	केतु	04/12/2047	चंद्र	09/09/2049	बुध	23/05/2051	शुक्र	29/03/2053
केतु	28/10/2045	चंद्र	07/04/2048	बुध	29/11/2049	शुक्र	24/08/2051	सूर्य	30/05/2053
चंद्र	23/02/2046	बुध	18/08/2048	शुक्र	23/02/2050	सूर्य	21/10/2051	मंगल	06/08/2053

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
06/08/2053		12/07/2055		06/08/2057		02/02/2060		22/09/2062	
12/07/2055		06/08/2057		02/02/2060		22/09/2062		03/05/2064	
शनि	30/10/2053	केतु	18/10/2055	बुध	17/12/2057	शुक्र	30/06/2060	सूर्य	17/11/2062
केतु	29/01/2054	चंद्र	30/01/2056	शुक्र	07/05/2058	सूर्य	30/09/2060	मंगल	17/01/2063
चंद्र	06/05/2054	बुध	20/05/2056	सूर्य	02/08/2058	मंगल	07/01/2061	गुरु	24/03/2063
बुध	18/08/2054	शुक्र	14/09/2056	मंगल	04/11/2058	गुरु	25/04/2061	शनि	03/06/2063
शुक्र	05/12/2054	सूर्य	25/11/2056	गुरु	14/02/2059	शनि	19/08/2061	केतु	18/08/2063
सूर्य	10/02/2055	मंगल	11/02/2057	शनि	03/06/2059	केतु	22/12/2061	चंद्र	07/11/2063
मंगल	24/04/2055	गुरु	06/05/2057	केतु	29/09/2059	चंद्र	04/05/2062	बुध	02/02/2064
गुरु	12/07/2055	शनि	06/08/2057	चंद्र	02/02/2060	बुध	22/09/2062	शुक्र	03/05/2064

बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र	
03/05/2064		04/02/2066		01/01/2068		20/01/2070		01/04/2072	
04/02/2066		01/01/2068		20/01/2070		01/04/2072		06/08/2074	
मंगल	08/07/2064	गुरु	23/04/2066	शनि	01/04/2068	केतु	03/05/2070	चंद्र	29/07/2072
गुरु	18/09/2064	शनि	16/07/2066	केतु	07/07/2068	चंद्र	22/08/2070	बुध	01/12/2072
शनि	05/12/2064	केतु	14/10/2066	चंद्र	18/10/2068	बुध	18/12/2070	शुक्र	13/04/2073
केतु	26/02/2065	चंद्र	18/01/2067	बुध	05/02/2069	शुक्र	21/04/2071	सूर्य	03/07/2073
चंद्र	26/05/2065	बुध	30/04/2067	शुक्र	01/06/2069	सूर्य	07/07/2071	मंगल	30/09/2073
बुध	28/08/2065	शुक्र	16/08/2067	सूर्य	11/08/2069	मंगल	28/09/2071	गुरु	04/01/2074
शुक्र	05/12/2065	सूर्य	21/10/2067	मंगल	28/10/2069	गुरु	27/12/2071	शनि	17/04/2074
सूर्य	04/02/2066	मंगल	01/01/2068	गुरु	20/01/2070	शनि	01/04/2072	केतु	06/08/2074

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
06/08/2074		22/05/2077		05/02/2079		16/12/2080		22/12/2082	
22/05/2077		05/02/2079		16/12/2080		22/12/2082		23/02/2085	
शुक्र	11/01/2075	सूर्य	20/07/2077	मंगल	16/04/2079	गुरु	08/03/2081	शनि	28/03/2083
सूर्य	18/04/2075	मंगल	23/09/2077	गुरु	01/07/2079	शनि	05/06/2081	केतु	09/07/2083
मंगल	01/08/2075	गुरु	02/12/2077	शनि	21/09/2079	केतु	08/09/2081	चंद्र	26/10/2083
गुरु	24/11/2075	शनि	15/02/2078	केतु	18/12/2079	चंद्र	19/12/2081	बुध	20/02/2084
शनि	26/03/2076	केतु	06/05/2078	चंद्र	21/03/2080	बुध	06/04/2082	शुक्र	22/06/2084
केतु	05/08/2076	चंद्र	31/07/2078	बुध	29/06/2080	शुक्र	29/07/2082	सूर्य	05/09/2084
चंद्र	24/12/2076	बुध	31/10/2078	शुक्र	12/10/2080	सूर्य	07/10/2082	मंगल	26/11/2084
बुध	22/05/2077	शुक्र	05/02/2079	सूर्य	16/12/2080	मंगल	22/12/2082	गुरु	23/02/2085

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 8 वर्ष 9 मास 12 दिन

गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष	
15/07/1978		28/04/1987		27/12/1999		28/04/2011		27/12/2015	
28/04/1987		27/12/1999		28/04/2011		27/12/2015		27/04/2029	
	15/07/1978	शनि	29/04/1989	बुध	05/08/2001	केतु	05/08/2011	शुक्र	18/03/2018
शनि	07/10/1979	बुध	14/02/1991	केतु	03/04/2002	शुक्र	15/05/2012	सूर्य	17/11/2018
बुध	11/04/1981	केतु	11/11/1991	शुक्र	22/02/2004	सूर्य	09/08/2012	चंद्र	27/12/2019
केतु	24/11/1981	शुक्र	21/12/1993	सूर्य	16/09/2004	चंद्र	29/12/2012	मंगल	06/10/2020
शुक्र	05/09/1983	सूर्य	09/08/1994	चंद्र	27/08/2005	मंगल	07/04/2013	राहु	07/10/2022
सूर्य	18/03/1984	चंद्र	30/08/1995	मंगल	26/04/2006	राहु	19/12/2013	गुरु	17/07/2024
चंद्र	05/02/1985	मंगल	26/05/1996	राहु	07/01/2008	गुरु	03/08/2014	शनि	27/08/2026
मंगल	20/09/1985	राहु	20/04/1998	गुरु	11/07/2009	शनि	30/04/2015	बुध	17/07/2028
राहु	28/04/1987	गुरु	27/12/1999	शनि	28/04/2011	बुध	27/12/2015	केतु	27/04/2029

सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष	
27/04/2029		27/04/2033		27/12/2039		27/08/2044		27/08/2056	
27/04/2033		27/12/2039		27/08/2044		27/08/2056		00/00/0000	
सूर्य	09/07/2029	चंद्र	16/11/2033	मंगल	05/04/2040	राहु	15/06/2046	गुरु	28/01/2058
चंद्र	08/11/2029	मंगल	07/04/2034	राहु	16/12/2040	गुरु	21/01/2048	शनि	15/07/2058
मंगल	01/02/2030	राहु	08/04/2035	गुरु	01/08/2041	शनि	15/12/2049		00/00/0000
राहु	09/09/2030	गुरु	26/02/2036	शनि	28/04/2042	बुध	28/08/2051		00/00/0000
गुरु	22/03/2031	शनि	18/03/2037	बुध	25/12/2042	केतु	09/05/2052		00/00/0000
शनि	09/11/2031	बुध	26/02/2038	केतु	04/04/2043	शुक्र	10/05/2054		00/00/0000
बुध	03/06/2032	केतु	18/07/2038	शुक्र	13/01/2044	सूर्य	15/12/2054		00/00/0000
केतु	27/08/2032	शुक्र	28/08/2039	सूर्य	07/04/2044	चंद्र	15/12/2055		00/00/0000
शुक्र	27/04/2033	सूर्य	27/12/2039	चंद्र	27/08/2044	मंगल	27/08/2056		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
15/07/1978		07/10/1979		11/04/1981		24/11/1981		05/09/1983	
07/10/1979		11/04/1981		24/11/1981		05/09/1983		18/03/1984	
	15/07/1978	बुध	24/12/1979	केतु	24/04/1981	शुक्र	13/03/1982	सूर्य	14/09/1983
बुध	01/08/1978	केतु	26/01/1980	शुक्र	01/06/1981	सूर्य	14/04/1982	चंद्र	01/10/1983
केतु	06/09/1978	शुक्र	27/04/1980	सूर्य	13/06/1981	चंद्र	07/06/1982	मंगल	12/10/1983
शुक्र	18/12/1978	सूर्य	24/05/1980	चंद्र	02/07/1981	मंगल	15/07/1982	राहु	10/11/1983
सूर्य	18/01/1979	चंद्र	09/07/1980	मंगल	15/07/1981	राहु	21/10/1982	गुरु	06/12/1983
चंद्र	10/03/1979	मंगल	10/08/1980	राहु	18/08/1981	गुरु	15/01/1983	शनि	06/01/1984
मंगल	15/04/1979	राहु	01/11/1980	गुरु	17/09/1981	शनि	28/04/1983	बुध	03/02/1984
राहु	17/07/1979	गुरु	14/01/1981	शनि	23/10/1981	बुध	29/07/1983	केतु	14/02/1984
गुरु	07/10/1979	शनि	11/04/1981	बुध	24/11/1981	केतु	05/09/1983	शुक्र	18/03/1984

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध	
18/03/1984		05/02/1985		20/09/1985		28/04/1987		29/04/1989	
05/02/1985		20/09/1985		28/04/1987		29/04/1989		14/02/1991	
चंद्र	14/04/1984	मंगल	18/02/1985	राहु	17/12/1985	शनि	22/08/1987	बुध	31/07/1989
मंगल	03/05/1984	राहु	25/03/1985	गुरु	05/03/1986	बुध	04/12/1987	केतु	08/09/1989
राहु	20/06/1984	गुरु	24/04/1985	शनि	06/06/1986	केतु	15/01/1988	शुक्र	26/12/1989
गुरु	03/08/1984	शनि	30/05/1985	बुध	27/08/1986	शुक्र	16/05/1988	सूर्य	28/01/1990
शनि	23/09/1984	बुध	01/07/1985	केतु	30/09/1986	सूर्य	22/06/1988	चंद्र	23/03/1990
बुध	08/11/1984	केतु	14/07/1985	शुक्र	06/01/1987	चंद्र	22/08/1988	मंगल	30/04/1990
केतु	27/11/1984	शुक्र	21/08/1985	सूर्य	04/02/1987	मंगल	04/10/1988	राहु	07/08/1990
शुक्र	20/01/1985	सूर्य	02/09/1985	चंद्र	25/03/1987	राहु	22/01/1989	गुरु	02/11/1990
सूर्य	05/02/1985	चंद्र	20/09/1985	मंगल	28/04/1987	गुरु	29/04/1989	शनि	14/02/1991

शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
14/02/1991		11/11/1991		21/12/1993		09/08/1994		30/08/1995	
11/11/1991		21/12/1993		09/08/1994		30/08/1995		26/05/1996	
केतु	02/03/1991	शुक्र	18/03/1992	सूर्य	01/01/1994	चंद्र	10/09/1994	मंगल	14/09/1995
शुक्र	16/04/1991	सूर्य	26/04/1992	चंद्र	21/01/1994	मंगल	03/10/1994	राहु	25/10/1995
सूर्य	29/04/1991	चंद्र	29/06/1992	मंगल	03/02/1994	राहु	30/11/1994	गुरु	30/11/1995
चंद्र	22/05/1991	मंगल	13/08/1992	राहु	10/03/1994	गुरु	20/01/1995	शनि	12/01/1996
मंगल	06/06/1991	राहु	07/12/1992	गुरु	10/04/1994	शनि	22/03/1995	बुध	19/02/1996
राहु	17/07/1991	गुरु	19/03/1993	शनि	16/05/1994	बुध	16/05/1995	केतु	06/03/1996
गुरु	22/08/1991	शनि	20/07/1993	बुध	18/06/1994	केतु	07/06/1995	शुक्र	20/04/1996
शनि	03/10/1991	बुध	06/11/1993	केतु	02/07/1994	शुक्र	10/08/1995	सूर्य	03/05/1996
बुध	11/11/1991	केतु	21/12/1993	शुक्र	09/08/1994	सूर्य	30/08/1995	चंद्र	26/05/1996

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र	
26/05/1996		20/04/1998		27/12/1999		05/08/2001		03/04/2002	
20/04/1998		27/12/1999		05/08/2001		03/04/2002		22/02/2004	
राहु	07/09/1996	गुरु	11/07/1998	बुध	19/03/2000	केतु	19/08/2001	शुक्र	27/07/2002
गुरु	08/12/1996	शनि	16/10/1998	केतु	23/04/2000	शुक्र	28/09/2001	सूर्य	31/08/2002
शनि	28/03/1997	बुध	12/01/1999	शुक्र	29/07/2000	सूर्य	10/10/2001	चंद्र	27/10/2002
बुध	04/07/1997	केतु	17/02/1999	सूर्य	28/08/2000	चंद्र	30/10/2001	मंगल	07/12/2002
केतु	14/08/1997	शुक्र	31/05/1999	चंद्र	16/10/2000	मंगल	13/11/2001	राहु	20/03/2003
शुक्र	08/12/1997	सूर्य	30/06/1999	मंगल	19/11/2000	राहु	20/12/2001	गुरु	20/06/2003
सूर्य	11/01/1998	चंद्र	21/08/1999	राहु	15/02/2001	गुरु	21/01/2002	शनि	07/10/2003
चंद्र	10/03/1998	मंगल	26/09/1999	गुरु	04/05/2001	शनि	28/02/2002	बुध	13/01/2004
मंगल	20/04/1998	राहु	27/12/1999	शनि	05/08/2001	बुध	03/04/2002	केतु	22/02/2004

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु	
22/02/2004		16/09/2004		27/08/2005		26/04/2006		07/01/2008	
16/09/2004		27/08/2005		26/04/2006		07/01/2008		11/07/2009	
सूर्य	04/03/2004	चंद्र	15/10/2004	मंगल	10/09/2005	राहु	28/07/2006	गुरु	20/03/2008
चंद्र	21/03/2004	मंगल	04/11/2004	राहु	16/10/2005	गुरु	19/10/2006	शनि	16/06/2008
मंगल	02/04/2004	राहु	26/12/2004	गुरु	18/11/2005	शनि	25/01/2007	बुध	02/09/2008
राहु	03/05/2004	गुरु	10/02/2005	शनि	26/12/2005	बुध	23/04/2007	केतु	04/10/2008
गुरु	31/05/2004	शनि	05/04/2005	बुध	29/01/2006	केतु	29/05/2007	शुक्र	04/01/2009
शनि	02/07/2004	बुध	24/05/2005	केतु	12/02/2006	शुक्र	10/09/2007	सूर्य	31/01/2009
बुध	01/08/2004	केतु	13/06/2005	शुक्र	24/03/2006	सूर्य	11/10/2007	चंद्र	18/03/2009
केतु	13/08/2004	शुक्र	10/08/2005	सूर्य	05/04/2006	चंद्र	01/12/2007	मंगल	20/04/2009
शुक्र	16/09/2004	सूर्य	27/08/2005	चंद्र	26/04/2006	मंगल	07/01/2008	राहु	11/07/2009

बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र	
11/07/2009		28/04/2011		05/08/2011		15/05/2012		09/08/2012	
28/04/2011		05/08/2011		15/05/2012		09/08/2012		29/12/2012	
शनि	23/10/2009	केतु	04/05/2011	शुक्र	22/09/2011	सूर्य	20/05/2012	चंद्र	20/08/2012
बुध	24/01/2010	शुक्र	20/05/2011	सूर्य	06/10/2011	चंद्र	27/05/2012	मंगल	29/08/2012
केतु	03/03/2010	सूर्य	25/05/2011	चंद्र	30/10/2011	मंगल	01/06/2012	राहु	19/09/2012
शुक्र	21/06/2010	चंद्र	03/06/2011	मंगल	15/11/2011	राहु	14/06/2012	गुरु	08/10/2012
सूर्य	23/07/2010	मंगल	08/06/2011	राहु	28/12/2011	गुरु	25/06/2012	शनि	30/10/2012
चंद्र	16/09/2010	राहु	23/06/2011	गुरु	04/02/2012	शनि	08/07/2012	बुध	20/11/2012
मंगल	24/10/2010	गुरु	06/07/2011	शनि	20/03/2012	बुध	20/07/2012	केतु	28/11/2012
राहु	30/01/2011	शनि	22/07/2011	बुध	29/04/2012	केतु	25/07/2012	शुक्र	22/12/2012
गुरु	28/04/2011	बुध	05/08/2011	केतु	15/05/2012	शुक्र	09/08/2012	सूर्य	29/12/2012

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
29/12/2012		07/04/2013		19/12/2013		03/08/2014		30/04/2015	
07/04/2013		19/12/2013		03/08/2014		30/04/2015		27/12/2015	
मंगल	03/01/2013	राहु	15/05/2013	गुरु	18/01/2014	शनि	15/09/2014	बुध	03/06/2015
राहु	18/01/2013	गुरु	19/06/2013	शनि	23/02/2014	बुध	23/10/2014	केतु	17/06/2015
गुरु	01/02/2013	शनि	29/07/2013	बुध	27/03/2014	केतु	08/11/2014	शुक्र	27/07/2015
शनि	16/02/2013	बुध	03/09/2013	केतु	10/04/2014	शुक्र	23/12/2014	सूर्य	09/08/2015
बुध	02/03/2013	केतु	18/09/2013	शुक्र	17/05/2014	सूर्य	05/01/2015	चंद्र	29/08/2015
केतु	08/03/2013	शुक्र	31/10/2013	सूर्य	29/05/2014	चंद्र	28/01/2015	मंगल	12/09/2015
शुक्र	25/03/2013	सूर्य	13/11/2013	चंद्र	17/06/2014	मंगल	12/02/2015	राहु	18/10/2015
सूर्य	30/03/2013	चंद्र	04/12/2013	मंगल	30/06/2014	राहु	25/03/2015	गुरु	19/11/2015
चंद्र	07/04/2013	मंगल	19/12/2013	राहु	03/08/2014	गुरु	30/04/2015	शनि	27/12/2015

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु	
27/12/2015		18/03/2018		17/11/2018		27/12/2019		06/10/2020	
18/03/2018		17/11/2018		27/12/2019		06/10/2020		07/10/2022	
शुक्र	11/05/2016	सूर्य	30/03/2018	चंद्र	20/12/2018	मंगल	13/01/2020	राहु	24/01/2021
सूर्य	20/06/2016	चंद्र	20/04/2018	मंगल	13/01/2019	राहु	25/02/2020	गुरु	01/05/2021
चंद्र	27/08/2016	मंगल	04/05/2018	राहु	15/03/2019	गुरु	02/04/2020	शनि	25/08/2021
मंगल	13/10/2016	राहु	09/06/2018	गुरु	08/05/2019	शनि	17/05/2020	बुध	07/12/2021
राहु	12/02/2017	गुरु	12/07/2018	शनि	11/07/2019	बुध	27/06/2020	केतु	18/01/2022
गुरु	31/05/2017	शनि	19/08/2018	बुध	07/09/2019	केतु	13/07/2020	शुक्र	20/05/2022
शनि	07/10/2017	बुध	23/09/2018	केतु	30/09/2019	शुक्र	30/08/2020	सूर्य	25/06/2022
बुध	30/01/2018	केतु	07/10/2018	शुक्र	07/12/2019	सूर्य	13/09/2020	चंद्र	25/08/2022
केतु	18/03/2018	शुक्र	17/11/2018	सूर्य	27/12/2019	चंद्र	06/10/2020	मंगल	07/10/2022

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
07/10/2022		17/07/2024		27/08/2026		17/07/2028		27/04/2029	
17/07/2024		27/08/2026		17/07/2028		27/04/2029		09/07/2029	
गुरु	02/01/2023	शनि	16/11/2024	बुध	03/12/2026	केतु	03/08/2028	सूर्य	01/05/2029
शनि	14/04/2023	बुध	06/03/2025	केतु	12/01/2027	शुक्र	19/09/2028	चंद्र	07/05/2029
बुध	15/07/2023	केतु	20/04/2025	शुक्र	07/05/2027	सूर्य	03/10/2028	मंगल	11/05/2029
केतु	22/08/2023	शुक्र	26/08/2025	सूर्य	11/06/2027	चंद्र	27/10/2028	राहु	22/05/2029
शुक्र	08/12/2023	सूर्य	04/10/2025	चंद्र	07/08/2027	मंगल	13/11/2028	गुरु	01/06/2029
सूर्य	10/01/2024	चंद्र	07/12/2025	मंगल	17/09/2027	राहु	25/12/2028	शनि	13/06/2029
चंद्र	04/03/2024	मंगल	21/01/2026	राहु	29/12/2027	गुरु	01/02/2029	बुध	23/06/2029
मंगल	11/04/2024	राहु	17/05/2026	गुरु	30/03/2028	शनि	18/03/2029	केतु	27/06/2029
राहु	17/07/2024	गुरु	27/08/2026	शनि	17/07/2028	बुध	27/04/2029	शुक्र	09/07/2029

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
09/07/2029		08/11/2029		01/02/2030		09/09/2030		22/03/2031	
08/11/2029		01/02/2030		09/09/2030		22/03/2031		09/11/2031	
चंद्र	20/07/2029	मंगल	13/11/2029	राहु	06/03/2030	गुरु	05/10/2030	शनि	28/04/2031
मंगल	27/07/2029	राहु	26/11/2029	गुरु	05/04/2030	शनि	04/11/2030	बुध	31/05/2031
राहु	14/08/2029	गुरु	07/12/2029	शनि	09/05/2030	बुध	02/12/2030	केतु	13/06/2031
गुरु	30/08/2029	शनि	21/12/2029	बुध	09/06/2030	केतु	13/12/2030	शुक्र	22/07/2031
शनि	18/09/2029	बुध	02/01/2030	केतु	22/06/2030	शुक्र	15/01/2031	सूर्य	02/08/2031
बुध	06/10/2029	केतु	07/01/2030	शुक्र	29/07/2030	सूर्य	25/01/2031	चंद्र	22/08/2031
केतु	13/10/2029	शुक्र	21/01/2030	सूर्य	09/08/2030	चंद्र	10/02/2031	मंगल	04/09/2031
शुक्र	02/11/2029	सूर्य	25/01/2030	चंद्र	27/08/2030	मंगल	21/02/2031	राहु	09/10/2031
सूर्य	08/11/2029	चंद्र	01/02/2030	मंगल	09/09/2030	राहु	22/03/2031	गुरु	09/11/2031

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
09/11/2031		03/06/2032		27/08/2032		27/04/2033		16/11/2033	
03/06/2032		27/08/2032		27/04/2033		16/11/2033		07/04/2034	
बुध	08/12/2031	केतु	08/06/2032	शुक्र	06/10/2032	चंद्र	14/05/2033	मंगल	25/11/2033
केतु	20/12/2031	शुक्र	22/06/2032	सूर्य	19/10/2032	मंगल	26/05/2033	राहु	16/12/2033
शुक्र	24/01/2032	सूर्य	26/06/2032	चंद्र	08/11/2032	राहु	26/06/2033	गुरु	04/01/2034
सूर्य	03/02/2032	चंद्र	03/07/2032	मंगल	22/11/2032	गुरु	23/07/2033	शनि	26/01/2034
चंद्र	20/02/2032	मंगल	08/07/2032	राहु	29/12/2032	शनि	24/08/2033	बुध	15/02/2034
मंगल	03/03/2032	राहु	21/07/2032	गुरु	30/01/2033	बुध	22/09/2033	केतु	24/02/2034
राहु	03/04/2032	गुरु	01/08/2032	शनि	10/03/2033	केतु	03/10/2033	शुक्र	19/03/2034
गुरु	01/05/2032	शनि	15/08/2032	बुध	13/04/2033	शुक्र	06/11/2033	सूर्य	27/03/2034
शनि	03/06/2032	बुध	27/08/2032	केतु	27/04/2033	सूर्य	16/11/2033	चंद्र	07/04/2034

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
07/04/2034		08/04/2035		26/02/2036		18/03/2037		26/02/2038	
08/04/2035		26/02/2036		18/03/2037		26/02/2038		18/07/2038	
राहु	01/06/2034	गुरु	21/05/2035	शनि	27/04/2036	बुध	06/05/2037	केतु	06/03/2038
गुरु	20/07/2034	शनि	11/07/2035	बुध	21/06/2036	केतु	26/05/2037	शुक्र	30/03/2038
शनि	16/09/2034	बुध	26/08/2035	केतु	13/07/2036	शुक्र	22/07/2037	सूर्य	06/04/2038
बुध	06/11/2034	केतु	14/09/2035	शुक्र	16/09/2036	सूर्य	09/08/2037	चंद्र	18/04/2038
केतु	28/11/2034	शुक्र	07/11/2035	सूर्य	05/10/2036	चंद्र	06/09/2037	मंगल	26/04/2038
शुक्र	28/01/2035	सूर्य	24/11/2035	चंद्र	06/11/2036	मंगल	26/09/2037	राहु	17/05/2038
सूर्य	15/02/2035	चंद्र	21/12/2035	मंगल	29/11/2036	राहु	17/11/2037	गुरु	05/06/2038
चंद्र	17/03/2035	मंगल	09/01/2036	राहु	25/01/2037	गुरु	02/01/2038	शनि	28/06/2038
मंगल	08/04/2035	राहु	26/02/2036	गुरु	18/03/2037	शनि	26/02/2038	बुध	18/07/2038

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
18/07/2038		28/08/2039		27/12/2039		05/04/2040		16/12/2040	
28/08/2039		27/12/2039		05/04/2040		16/12/2040		01/08/2041	
शुक्र	23/09/2038	सूर्य	03/09/2039	मंगल	02/01/2040	राहु	13/05/2040	गुरु	16/01/2041
सूर्य	14/10/2038	चंद्र	13/09/2039	राहु	17/01/2040	गुरु	16/06/2040	शनि	21/02/2041
चंद्र	17/11/2038	मंगल	20/09/2039	गुरु	30/01/2040	शनि	27/07/2040	बुध	25/03/2041
मंगल	10/12/2038	राहु	08/10/2039	शनि	15/02/2040	बुध	01/09/2040	केतु	07/04/2041
राहु	09/02/2039	गुरु	24/10/2039	बुध	29/02/2040	केतु	16/09/2040	शुक्र	15/05/2041
गुरु	04/04/2039	शनि	13/11/2039	केतु	06/03/2040	शुक्र	28/10/2040	सूर्य	26/05/2041
शनि	07/06/2039	बुध	30/11/2039	शुक्र	23/03/2040	सूर्य	10/11/2040	चंद्र	14/06/2041
बुध	04/08/2039	केतु	07/12/2039	सूर्य	28/03/2040	चंद्र	02/12/2040	मंगल	28/06/2041
केतु	28/08/2039	शुक्र	27/12/2039	चंद्र	05/04/2040	मंगल	16/12/2040	राहु	01/08/2041

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
01/08/2041		28/04/2042		25/12/2042		04/04/2043		13/01/2044	
28/04/2042		25/12/2042		04/04/2043		13/01/2044		07/04/2044	
शनि	12/09/2041	बुध	01/06/2042	केतु	31/12/2042	शुक्र	21/05/2043	सूर्य	17/01/2044
बुध	21/10/2041	केतु	15/06/2042	शुक्र	16/01/2043	सूर्य	04/06/2043	चंद्र	24/01/2044
केतु	05/11/2041	शुक्र	25/07/2042	सूर्य	21/01/2043	चंद्र	28/06/2043	मंगल	29/01/2044
शुक्र	20/12/2041	सूर्य	06/08/2042	चंद्र	30/01/2043	मंगल	14/07/2043	राहु	11/02/2044
सूर्य	03/01/2042	चंद्र	26/08/2042	मंगल	05/02/2043	राहु	26/08/2043	गुरु	22/02/2044
चंद्र	25/01/2042	मंगल	09/09/2042	राहु	19/02/2043	गुरु	03/10/2043	शनि	07/03/2044
मंगल	10/02/2042	राहु	16/10/2042	गुरु	05/03/2043	शनि	17/11/2043	बुध	19/03/2044
राहु	23/03/2042	गुरु	17/11/2042	शनि	20/03/2043	बुध	27/12/2043	केतु	24/03/2044
गुरु	28/04/2042	शनि	25/12/2042	बुध	04/04/2043	केतु	13/01/2044	शुक्र	07/04/2044

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
07/04/2044		27/08/2044		15/06/2046		21/01/2048		15/12/2049	
27/08/2044		15/06/2046		21/01/2048		15/12/2049		28/08/2051	
चंद्र	19/04/2044	राहु	04/12/2044	गुरु	01/09/2046	शनि	10/05/2048	बुध	13/03/2050
मंगल	27/04/2044	गुरु	01/03/2045	शनि	03/12/2046	बुध	16/08/2048	केतु	18/04/2050
राहु	18/05/2044	शनि	13/06/2045	बुध	24/02/2047	केतु	25/09/2048	शुक्र	30/07/2050
गुरु	06/06/2044	बुध	14/09/2045	केतु	30/03/2047	शुक्र	19/01/2049	सूर्य	30/08/2050
शनि	29/06/2044	केतु	23/10/2045	शुक्र	05/07/2047	सूर्य	23/02/2049	चंद्र	21/10/2050
बुध	19/07/2044	शुक्र	09/02/2046	सूर्य	03/08/2047	चंद्र	22/04/2049	मंगल	26/11/2050
केतु	27/07/2044	सूर्य	14/03/2046	चंद्र	21/09/2047	मंगल	01/06/2049	राहु	28/02/2051
शुक्र	20/08/2044	चंद्र	08/05/2046	मंगल	25/10/2047	राहु	13/09/2049	गुरु	21/05/2051
सूर्य	27/08/2044	मंगल	15/06/2046	राहु	21/01/2048	गुरु	15/12/2049	शनि	28/08/2051

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 16 वर्ष 3 मास 0 दिन

बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष	
15/07/1978		15/10/1994		14/10/2004		15/10/2023		15/10/2035	
15/10/1994		14/10/2004		15/10/2023		15/10/2035		14/10/2056	
बुध	18/06/1980	शनि	18/09/1995	गुरु	17/02/2008	राहु	13/02/2025	शुक्र	14/11/2039
शनि	14/01/1982	गुरु	21/06/1997	राहु	29/03/2010	शुक्र	15/06/2027	सूर्य	13/01/2041
गुरु	10/01/1985	राहु	01/08/1998	शुक्र	07/12/2013	सूर्य	14/02/2028	चंद्र	15/12/2043
राहु	01/12/1986	शुक्र	11/07/2000	सूर्य	28/12/2014	चंद्र	14/10/2029	मंगल	05/07/2045
शुक्र	22/03/1990	सूर्य	30/01/2001	चंद्र	18/08/2017	मंगल	04/09/2030	बुध	24/10/2048
सूर्य	02/03/1991	चंद्र	22/06/2002	मंगल	14/01/2019	बुध	25/07/2032	शनि	04/10/2050
चंद्र	12/07/1993	मंगल	19/03/2003	बुध	10/01/2022	शनि	04/09/2033	गुरु	15/06/2054
मंगल	15/10/1994	बुध	14/10/2004	शनि	15/10/2023	गुरु	15/10/2035	राहु	14/10/2056

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
14/10/2056		15/10/2062		14/10/2077		14/10/2085	
15/10/2062		14/10/2077		14/10/2085		00/00/0000	
सूर्य	13/02/2057	चंद्र	13/11/2064	मंगल	19/05/2078	बुध	15/07/2086
चंद्र	14/12/2057	मंगल	24/12/2065	बुध	22/08/2079		00/00/0000
मंगल	25/05/2058	बुध	05/05/2068	शनि	18/05/2080		00/00/0000
बुध	05/05/2059	शनि	24/09/2069	गुरु	14/10/2081		00/00/0000
शनि	24/11/2059	गुरु	15/05/2072	राहु	04/09/2082		00/00/0000
गुरु	14/12/2060	राहु	14/01/2074	शुक्र	25/03/2084		00/00/0000
राहु	14/08/2061	शुक्र	14/12/2076	सूर्य	03/09/2084		00/00/0000
शुक्र	15/10/2062	सूर्य	14/10/2077	चंद्र	14/10/2085		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - बुध		बुध - शनि		बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र	
15/07/1978		18/06/1980		14/01/1982		10/01/1985		01/12/1986	
18/06/1980		14/01/1982		10/01/1985		01/12/1986		22/03/1990	
	00/00/0000	शनि	10/08/1980	गुरु	25/07/1982	राहु	28/03/1985	शुक्र	24/07/1987
	15/07/1978	गुरु	19/11/1980	राहु	23/11/1982	शुक्र	09/08/1985	सूर्य	29/09/1987
गुरु	05/12/1978	राहु	22/01/1981	शुक्र	24/06/1983	सूर्य	16/09/1985	चंद्र	14/03/1988
राहु	23/03/1979	शुक्र	14/05/1981	सूर्य	23/08/1983	चंद्र	21/12/1985	मंगल	12/06/1988
शुक्र	29/09/1979	सूर्य	15/06/1981	चंद्र	22/01/1984	मंगल	10/02/1986	बुध	19/12/1988
सूर्य	22/11/1979	चंद्र	02/09/1981	मंगल	12/04/1984	बुध	30/05/1986	शनि	10/04/1989
चंद्र	06/04/1980	मंगल	15/10/1981	बुध	01/10/1984	शनि	01/08/1986	गुरु	08/11/1989
मंगल	18/06/1980	बुध	14/01/1982	शनि	10/01/1985	गुरु	01/12/1986	राहु	22/03/1990

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु	
22/03/1990		02/03/1991		12/07/1993		15/10/1994		18/09/1995	
02/03/1991		12/07/1993		15/10/1994		18/09/1995		21/06/1997	
सूर्य	10/04/1990	चंद्र	30/06/1991	मंगल	15/08/1993	शनि	15/11/1994	गुरु	09/01/1996
चंद्र	28/05/1990	मंगल	02/09/1991	बुध	26/10/1993	गुरु	13/01/1995	राहु	20/03/1996
मंगल	23/06/1990	बुध	16/01/1992	शनि	08/12/1993	राहु	20/02/1995	शुक्र	23/07/1996
बुध	16/08/1990	शनि	04/04/1992	गुरु	27/02/1994	शुक्र	27/04/1995	सूर्य	28/08/1996
शनि	17/09/1990	गुरु	03/09/1992	राहु	19/04/1994	सूर्य	15/05/1995	चंद्र	25/11/1996
गुरु	17/11/1990	राहु	08/12/1992	शुक्र	17/07/1994	चंद्र	01/07/1995	मंगल	12/01/1997
राहु	25/12/1990	शुक्र	25/05/1993	सूर्य	12/08/1994	मंगल	26/07/1995	बुध	23/04/1997
शुक्र	02/03/1991	सूर्य	12/07/1993	चंद्र	15/10/1994	बुध	18/09/1995	शनि	21/06/1997

शनि - राहु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
21/06/1997		01/08/1998		11/07/2000		30/01/2001		22/06/2002	
01/08/1998		11/07/2000		30/01/2001		22/06/2002		19/03/2003	
राहु	05/08/1997	शुक्र	17/12/1998	सूर्य	23/07/2000	चंद्र	11/04/2001	मंगल	12/07/2002
शुक्र	23/10/1997	सूर्य	26/01/1999	चंद्र	20/08/2000	मंगल	18/05/2001	बुध	23/08/2002
सूर्य	15/11/1997	चंद्र	04/05/1999	मंगल	04/09/2000	बुध	06/08/2001	शनि	17/09/2002
चंद्र	10/01/1998	मंगल	26/06/1999	बुध	06/10/2000	शनि	22/09/2001	गुरु	04/11/2002
मंगल	09/02/1998	बुध	16/10/1999	शनि	25/10/2000	गुरु	20/12/2001	राहु	04/12/2002
बुध	14/04/1998	शनि	20/12/1999	गुरु	29/11/2000	राहु	15/02/2002	शुक्र	25/01/2003
शनि	22/05/1998	गुरु	23/04/2000	राहु	22/12/2000	शुक्र	24/05/2002	सूर्य	10/02/2003
गुरु	01/08/1998	राहु	11/07/2000	शुक्र	30/01/2001	सूर्य	22/06/2002	चंद्र	19/03/2003

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - बुध		गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
19/03/2003		14/10/2004		17/02/2008		29/03/2010		07/12/2013	
14/10/2004		17/02/2008		29/03/2010		07/12/2013		28/12/2014	
बुध	18/06/2003	गुरु	17/05/2005	राहु	13/05/2008	शुक्र	16/12/2010	सूर्य	29/12/2013
शनि	10/08/2003	राहु	29/09/2005	शुक्र	10/10/2008	सूर्य	01/03/2011	चंद्र	20/02/2014
गुरु	19/11/2003	शुक्र	25/05/2006	सूर्य	21/11/2008	चंद्र	05/09/2011	मंगल	21/03/2014
राहु	22/01/2004	सूर्य	01/08/2006	चंद्र	08/03/2009	मंगल	14/12/2011	बुध	21/05/2014
शुक्र	13/05/2004	चंद्र	17/01/2007	मंगल	05/05/2009	बुध	13/07/2012	शनि	25/06/2014
सूर्य	14/06/2004	मंगल	18/04/2007	बुध	03/09/2009	शनि	15/11/2012	गुरु	01/09/2014
चंद्र	01/09/2004	बुध	27/10/2007	शनि	13/11/2009	गुरु	10/07/2013	राहु	14/10/2014
मंगल	14/10/2004	शनि	17/02/2008	गुरु	29/03/2010	राहु	07/12/2013	शुक्र	28/12/2014

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु	
28/12/2014		18/08/2017		14/01/2019		10/01/2022		15/10/2023	
18/08/2017		14/01/2019		10/01/2022		15/10/2023		13/02/2025	
चंद्र	11/05/2015	मंगल	25/09/2017	बुध	05/07/2019	शनि	11/03/2022	राहु	08/12/2023
मंगल	21/07/2015	बुध	15/12/2017	शनि	14/10/2019	गुरु	02/07/2022	शुक्र	12/03/2024
बुध	20/12/2015	शनि	31/01/2018	गुरु	23/04/2020	राहु	11/09/2022	सूर्य	08/04/2024
शनि	18/03/2016	गुरु	02/05/2018	राहु	22/08/2020	शुक्र	14/01/2023	चंद्र	14/06/2024
गुरु	04/09/2016	राहु	28/06/2018	शुक्र	23/03/2021	सूर्य	19/02/2023	मंगल	20/07/2024
राहु	20/12/2016	शुक्र	06/10/2018	सूर्य	23/05/2021	चंद्र	19/05/2023	बुध	05/10/2024
शुक्र	25/06/2017	सूर्य	03/11/2018	चंद्र	21/10/2021	मंगल	06/07/2023	शनि	19/11/2024
सूर्य	18/08/2017	चंद्र	14/01/2019	मंगल	10/01/2022	बुध	15/10/2023	गुरु	13/02/2025

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध	
13/02/2025		15/06/2027		14/02/2028		14/10/2029		04/09/2030	
15/06/2027		14/02/2028		14/10/2029		04/09/2030		25/07/2032	
शुक्र	28/07/2025	सूर्य	29/06/2027	चंद्र	08/05/2028	मंगल	07/11/2029	बुध	22/12/2030
सूर्य	14/09/2025	चंद्र	01/08/2027	मंगल	22/06/2028	बुध	28/12/2029	शनि	23/02/2031
चंद्र	10/01/2026	मंगल	19/08/2027	बुध	26/09/2028	शनि	27/01/2030	गुरु	25/06/2031
मंगल	14/03/2026	बुध	27/09/2027	शनि	21/11/2028	गुरु	26/03/2030	राहु	09/09/2031
बुध	26/07/2026	शनि	19/10/2027	गुरु	08/03/2029	राहु	01/05/2030	शुक्र	22/01/2032
शनि	13/10/2026	गुरु	01/12/2027	राहु	15/05/2029	शुक्र	03/07/2030	सूर्य	29/02/2032
गुरु	12/03/2027	राहु	28/12/2027	शुक्र	10/09/2029	सूर्य	21/07/2030	चंद्र	04/06/2032
राहु	15/06/2027	शुक्र	14/02/2028	सूर्य	14/10/2029	चंद्र	04/09/2030	मंगल	25/07/2032

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शनि		राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
25/07/2032		04/09/2033		15/10/2035		14/11/2039		13/01/2041	
04/09/2033		15/10/2035		14/11/2039		13/01/2041		15/12/2043	
शनि	31/08/2032	गुरु	17/01/2034	शुक्र	31/07/2036	सूर्य	08/12/2039	चंद्र	10/06/2041
गुरु	11/11/2032	राहु	13/04/2034	सूर्य	22/10/2036	चंद्र	05/02/2040	मंगल	28/08/2041
राहु	26/12/2032	शुक्र	10/09/2034	चंद्र	17/05/2037	मंगल	08/03/2040	बुध	12/02/2042
शुक्र	15/03/2033	सूर्य	23/10/2034	मंगल	04/09/2037	बुध	14/05/2040	शनि	22/05/2042
सूर्य	06/04/2033	चंद्र	07/02/2035	बुध	27/04/2038	शनि	22/06/2040	गुरु	25/11/2042
चंद्र	02/06/2033	मंगल	05/04/2035	शनि	12/09/2038	गुरु	05/09/2040	राहु	23/03/2043
मंगल	02/07/2033	बुध	04/08/2035	गुरु	01/06/2039	राहु	22/10/2040	शुक्र	16/10/2043
बुध	04/09/2033	शनि	15/10/2035	राहु	14/11/2039	शुक्र	13/01/2041	सूर्य	15/12/2043

शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध		शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु	
15/12/2043		05/07/2045		24/10/2048		04/10/2050		15/06/2054	
05/07/2045		24/10/2048		04/10/2050		15/06/2054		14/10/2056	
मंगल	26/01/2044	बुध	11/01/2046	शनि	29/12/2048	गुरु	30/05/2051	राहु	17/09/2054
बुध	24/04/2044	शनि	03/05/2046	गुरु	03/05/2049	राहु	27/10/2051	शुक्र	02/03/2055
शनि	16/06/2044	गुरु	01/12/2046	राहु	21/07/2049	शुक्र	15/07/2052	सूर्य	19/04/2055
गुरु	24/09/2044	राहु	14/04/2047	शुक्र	06/12/2049	सूर्य	28/09/2052	चंद्र	15/08/2055
राहु	26/11/2044	शुक्र	05/12/2047	सूर्य	14/01/2050	चंद्र	03/04/2053	मंगल	17/10/2055
शुक्र	16/03/2045	सूर्य	10/02/2048	चंद्र	23/04/2050	मंगल	12/07/2053	बुध	28/02/2056
सूर्य	17/04/2045	चंद्र	27/07/2048	मंगल	15/06/2050	बुध	10/02/2054	शनि	17/05/2056
चंद्र	05/07/2045	मंगल	24/10/2048	बुध	04/10/2050	शनि	15/06/2054	गुरु	14/10/2056

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध		सूर्य - शनि	
14/10/2056		13/02/2057		14/12/2057		25/05/2058		05/05/2059	
13/02/2057		14/12/2057		25/05/2058		05/05/2059		24/11/2059	
सूर्य	21/10/2056	चंद्र	27/03/2057	मंगल	26/12/2057	बुध	19/07/2058	शनि	24/05/2059
चंद्र	07/11/2056	मंगल	19/04/2057	बुध	21/01/2058	शनि	20/08/2058	गुरु	29/06/2059
मंगल	16/11/2056	बुध	05/06/2057	शनि	05/02/2058	गुरु	19/10/2058	राहु	21/07/2059
बुध	05/12/2056	शनि	04/07/2057	गुरु	05/03/2058	राहु	27/11/2058	शुक्र	30/08/2059
शनि	16/12/2056	गुरु	26/08/2057	राहु	23/03/2058	शुक्र	02/02/2059	सूर्य	10/09/2059
गुरु	07/01/2057	राहु	29/09/2057	शुक्र	24/04/2058	सूर्य	21/02/2059	चंद्र	08/10/2059
राहु	20/01/2057	शुक्र	27/11/2057	सूर्य	03/05/2058	चंद्र	10/04/2059	मंगल	23/10/2059
शुक्र	13/02/2057	सूर्य	14/12/2057	चंद्र	25/05/2058	मंगल	05/05/2059	बुध	24/11/2059

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
24/11/2059		14/12/2060		14/08/2061		15/10/2062		13/11/2064	
14/12/2060		14/08/2061		15/10/2062		13/11/2064		24/12/2065	
गुरु	31/01/2060	राहु	10/01/2061	शुक्र	05/11/2061	चंद्र	28/01/2063	मंगल	14/12/2064
राहु	14/03/2060	शुक्र	26/02/2061	सूर्य	29/11/2061	मंगल	26/03/2063	बुध	15/02/2065
शुक्र	28/05/2060	सूर्य	12/03/2061	चंद्र	27/01/2062	बुध	23/07/2063	शनि	25/03/2065
सूर्य	18/06/2060	चंद्र	15/04/2061	मंगल	28/02/2062	शनि	02/10/2063	गुरु	04/06/2065
चंद्र	11/08/2060	मंगल	03/05/2061	बुध	06/05/2062	गुरु	13/02/2064	राहु	19/07/2065
मंगल	09/09/2060	बुध	10/06/2061	शनि	14/06/2062	राहु	07/05/2064	शुक्र	06/10/2065
बुध	08/11/2060	शनि	03/07/2061	गुरु	28/08/2062	शुक्र	02/10/2064	सूर्य	29/10/2065
शनि	14/12/2060	गुरु	14/08/2061	राहु	15/10/2062	सूर्य	13/11/2064	चंद्र	24/12/2065

चंद्र - बुध		चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र	
24/12/2065		05/05/2068		24/09/2069		15/05/2072		14/01/2074	
05/05/2068		24/09/2069		15/05/2072		14/01/2074		14/12/2076	
बुध	09/05/2066	शनि	21/06/2068	गुरु	13/03/2070	राहु	21/07/2072	शुक्र	09/08/2074
शनि	28/07/2066	गुरु	18/09/2068	राहु	28/06/2070	शुक्र	17/11/2072	सूर्य	07/10/2074
गुरु	27/12/2066	राहु	13/11/2068	शुक्र	01/01/2071	सूर्य	21/12/2072	चंद्र	04/03/2075
राहु	01/04/2067	शुक्र	20/02/2069	सूर्य	24/02/2071	चंद्र	15/03/2073	मंगल	22/05/2075
शुक्र	16/09/2067	सूर्य	20/03/2069	चंद्र	07/07/2071	मंगल	29/04/2073	बुध	05/11/2075
सूर्य	03/11/2067	चंद्र	30/05/2069	मंगल	17/09/2071	बुध	03/08/2073	शनि	12/02/2076
चंद्र	02/03/2068	मंगल	06/07/2069	बुध	16/02/2072	शनि	28/09/2073	गुरु	18/08/2076
मंगल	05/05/2068	बुध	24/09/2069	शनि	15/05/2072	गुरु	14/01/2074	राहु	14/12/2076

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि		मंगल - गुरु	
14/12/2076		14/10/2077		19/05/2078		22/08/2079		18/05/2080	
14/10/2077		19/05/2078		22/08/2079		18/05/2080		14/10/2081	
सूर्य	31/12/2076	मंगल	30/10/2077	बुध	30/07/2078	शनि	16/09/2079	गुरु	17/08/2080
चंद्र	11/02/2077	बुध	03/12/2077	शनि	11/09/2078	गुरु	02/11/2079	राहु	13/10/2080
मंगल	06/03/2077	शनि	23/12/2077	गुरु	01/12/2078	राहु	02/12/2079	शुक्र	21/01/2081
बुध	23/04/2077	गुरु	30/01/2078	राहु	21/01/2079	शुक्र	24/01/2080	सूर्य	18/02/2081
शनि	21/05/2077	राहु	24/02/2078	शुक्र	20/04/2079	सूर्य	08/02/2080	चंद्र	01/05/2081
गुरु	13/07/2077	शुक्र	07/04/2078	सूर्य	16/05/2079	चंद्र	17/03/2080	मंगल	08/06/2081
राहु	16/08/2077	सूर्य	19/04/2078	चंद्र	19/07/2079	मंगल	06/04/2080	बुध	28/08/2081
शुक्र	14/10/2077	चंद्र	19/05/2078	मंगल	22/08/2079	बुध	18/05/2080	शनि	14/10/2081

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : धान्या 2 वर्ष 5 मास 19 दिन

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
15/07/1978		03/01/1981		03/01/1985		03/01/1990		03/01/1996	
03/01/1981		03/01/1985		03/01/1990		03/01/1996		03/01/2003	
	15/07/1978	भ्राम	14/06/1981	भद्रि	13/09/1985	उल्क	03/01/1991	सिद्ध	14/05/1997
भ्राम	04/08/1978	भद्रि	03/01/1982	उल्क	15/07/1986	सिद्ध	04/03/1992	संक	04/12/1998
भद्रि	03/01/1979	उल्क	03/09/1982	सिद्ध	05/07/1987	संक	04/07/1993	मंग	13/02/1999
उल्क	05/07/1979	सिद्ध	14/06/1983	संक	13/08/1988	मंग	03/09/1993	पिंग	05/07/1999
सिद्ध	03/02/1980	संक	04/05/1984	मंग	03/10/1988	पिंग	03/01/1994	धांय	03/02/2000
संक	03/10/1980	मंग	14/06/1984	पिंग	13/01/1989	धांय	04/07/1994	भ्राम	13/11/2000
मंग	03/11/1980	पिंग	03/09/1984	धांय	14/06/1989	भ्राम	05/03/1995	भद्रि	03/11/2001
पिंग	03/01/1981	धांय	03/01/1985	भ्राम	03/01/1990	भद्रि	03/01/1996	उल्क	03/01/2003

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
03/01/2003		03/01/2011		03/01/2012		03/01/2014		03/01/2017	
03/01/2011		03/01/2012		03/01/2014		03/01/2017		03/01/2021	
संक	13/10/2004	मंग	13/01/2011	पिंग	13/02/2012	धांय	04/04/2014	भ्राम	14/06/2017
मंग	03/01/2005	पिंग	02/02/2011	धांय	14/04/2012	भ्राम	04/08/2014	भद्रि	03/01/2018
पिंग	14/06/2005	धांय	05/03/2011	भ्राम	04/07/2012	भद्रि	03/01/2015	उल्क	03/09/2018
धांय	12/02/2006	भ्राम	14/04/2011	भद्रि	13/10/2012	उल्क	05/07/2015	सिद्ध	14/06/2019
भ्राम	03/01/2007	भद्रि	04/06/2011	उल्क	12/02/2013	सिद्ध	03/02/2016	संक	04/05/2020
भद्रि	13/02/2008	उल्क	04/08/2011	सिद्ध	04/07/2013	संक	03/10/2016	मंग	14/06/2020
उल्क	14/06/2009	सिद्ध	14/10/2011	संक	13/12/2013	मंग	03/11/2016	पिंग	03/09/2020
सिद्ध	03/01/2011	संक	03/01/2012	मंग	03/01/2014	पिंग	03/01/2017	धांय	03/01/2021

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
03/01/2021		03/01/2026		03/01/2032		03/01/2039		03/01/2047	
03/01/2026		03/01/2032		03/01/2039		03/01/2047		03/01/2048	
भद्रि	13/09/2021	उल्क	03/01/2027	सिद्ध	14/05/2033	संक	13/10/2040	मंग	13/01/2047
उल्क	15/07/2022	सिद्ध	04/03/2028	संक	04/12/2034	मंग	03/01/2041	पिंग	02/02/2047
सिद्ध	05/07/2023	संक	04/07/2029	मंग	13/02/2035	पिंग	14/06/2041	धांय	05/03/2047
संक	13/08/2024	मंग	03/09/2029	पिंग	05/07/2035	धांय	12/02/2042	भ्राम	14/04/2047
मंग	03/10/2024	पिंग	03/01/2030	धांय	03/02/2036	भ्राम	03/01/2043	भद्रि	04/06/2047
पिंग	13/01/2025	धांय	04/07/2030	भ्राम	13/11/2036	भद्रि	13/02/2044	उल्क	04/08/2047
धांय	14/06/2025	भ्राम	05/03/2031	भद्रि	03/11/2037	उल्क	14/06/2045	सिद्ध	14/10/2047
भ्राम	03/01/2026	भद्रि	03/01/2032	उल्क	03/01/2039	सिद्ध	03/01/2047	संक	03/01/2048

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
03/01/2048		03/01/2050		03/01/2053		03/01/2057		03/01/2062	
03/01/2050		03/01/2053		03/01/2057		03/01/2062		03/01/2068	
पिंग	13/02/2048	धांय	04/04/2050	भ्राम	14/06/2053	भद्रि	13/09/2057	उल्क	03/01/2063
धांय	14/04/2048	भ्राम	04/08/2050	भद्रि	03/01/2054	उल्क	15/07/2058	सिद्ध	04/03/2064
भ्राम	04/07/2048	भद्रि	03/01/2051	उल्क	03/09/2054	सिद्ध	05/07/2059	संक	04/07/2065
भद्रि	13/10/2048	उल्क	05/07/2051	सिद्ध	14/06/2055	संक	13/08/2060	मंग	03/09/2065
उल्क	12/02/2049	सिद्ध	03/02/2052	संक	04/05/2056	मंग	03/10/2060	पिंग	03/01/2066
सिद्ध	04/07/2049	संक	03/10/2052	मंग	14/06/2056	पिंग	13/01/2061	धांय	04/07/2066
संक	13/12/2049	मंग	03/11/2052	पिंग	03/09/2056	धांय	14/06/2061	भ्राम	05/03/2067
मंग	03/01/2050	पिंग	03/01/2053	धांय	03/01/2057	भ्राम	03/01/2062	भद्रि	03/01/2068

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
03/01/2068		03/01/2075		03/01/2083		03/01/2084		03/01/2086	
03/01/2075		03/01/2083		03/01/2084		03/01/2086		00/00/0000	
सिद्ध	14/05/2069	संक	13/10/2076	मंग	13/01/2083	पिंग	13/02/2084	धांय	04/04/2086
संक	04/12/2070	मंग	03/01/2077	पिंग	02/02/2083	धांय	14/04/2084	भ्राम	15/07/2086
मंग	13/02/2071	पिंग	14/06/2077	धांय	05/03/2083	भ्राम	04/07/2084		00/00/0000
पिंग	05/07/2071	धांय	12/02/2078	भ्राम	14/04/2083	भद्रि	13/10/2084		00/00/0000
धांय	03/02/2072	भ्राम	03/01/2079	भद्रि	04/06/2083	उल्क	12/02/2085		00/00/0000
भ्राम	13/11/2072	भद्रि	13/02/2080	उल्क	04/08/2083	सिद्ध	04/07/2085		00/00/0000
भद्रि	03/11/2073	उल्क	14/06/2081	सिद्ध	14/10/2083	संक	13/12/2085		00/00/0000
उल्क	03/01/2075	सिद्ध	03/01/2083	संक	03/01/2084	मंग	03/01/2086		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

उल्क - उल्क		उल्क - सिद्ध		उल्क - संक		उल्क - मंग		उल्क - पिंग	
03/01/2026		03/01/2027		04/03/2028		04/07/2029		03/09/2029	
03/01/2027		04/03/2028		04/07/2029		03/09/2029		03/01/2030	
उल्क	05/03/2026	सिद्ध	27/03/2027	संक	20/06/2028	मंग	06/07/2029	पिंग	10/09/2029
सिद्ध	15/05/2026	संक	30/06/2027	मंग	04/07/2028	पिंग	09/07/2029	धांय	20/09/2029
संक	04/08/2026	मंग	11/07/2027	पिंग	31/07/2028	धांय	14/07/2029	भ्राम	03/10/2029
मंग	14/08/2026	पिंग	04/08/2027	धांय	10/09/2028	भ्राम	21/07/2029	भद्रि	20/10/2029
पिंग	03/09/2026	धांय	09/09/2027	भ्राम	03/11/2028	भद्रि	30/07/2029	उल्क	10/11/2029
धांय	04/10/2026	भ्राम	26/10/2027	भद्रि	09/01/2029	उल्क	09/08/2029	सिद्ध	03/12/2029
भ्राम	13/11/2026	भद्रि	24/12/2027	उल्क	31/03/2029	सिद्ध	21/08/2029	संक	30/12/2029
भद्रि	03/01/2027	उल्क	04/03/2028	सिद्ध	04/07/2029	संक	03/09/2029	मंग	03/01/2030

उल्क - धांय		उल्क - भ्राम		उल्क - भद्रि		सिद्ध - सिद्ध		सिद्ध - संक	
03/01/2030		04/07/2030		05/03/2031		03/01/2032		14/05/2033	
04/07/2030		05/03/2031		03/01/2032		14/05/2033		04/12/2034	
धांय	18/01/2030	भ्राम	31/07/2030	भद्रि	16/04/2031	सिद्ध	09/04/2032	संक	18/09/2033
भ्राम	07/02/2030	भद्रि	03/09/2030	उल्क	06/06/2031	संक	28/07/2032	मंग	03/10/2033
भद्रि	05/03/2030	उल्क	14/10/2030	सिद्ध	04/08/2031	मंग	11/08/2032	पिंग	04/11/2033
उल्क	04/04/2030	सिद्ध	30/11/2030	संक	11/10/2031	पिंग	08/09/2032	धांय	21/12/2033
सिद्ध	10/05/2030	संक	23/01/2031	मंग	19/10/2031	धांय	19/10/2032	भ्राम	23/02/2034
संक	19/06/2030	मंग	30/01/2031	पिंग	05/11/2031	भ्राम	14/12/2032	भद्रि	12/05/2034
मंग	24/06/2030	पिंग	13/02/2031	धांय	30/11/2031	भद्रि	21/02/2033	उल्क	15/08/2034
पिंग	04/07/2030	धांय	05/03/2031	भ्राम	03/01/2032	उल्क	14/05/2033	सिद्ध	04/12/2034

सिद्ध - मंग		सिद्ध - पिंग		सिद्ध - धांय		सिद्ध - भ्राम		सिद्ध - भद्रि	
04/12/2034		13/02/2035		05/07/2035		03/02/2036		13/11/2036	
13/02/2035		05/07/2035		03/02/2036		13/11/2036		03/11/2037	
मंग	06/12/2034	पिंग	21/02/2035	धांय	22/07/2035	भ्राम	05/03/2036	भद्रि	01/01/2037
पिंग	10/12/2034	धांय	04/03/2035	भ्राम	15/08/2035	भद्रि	14/04/2036	उल्क	01/03/2037
धांय	15/12/2034	भ्राम	20/03/2035	भद्रि	14/09/2035	उल्क	31/05/2036	सिद्ध	09/05/2037
भ्राम	23/12/2034	भद्रि	09/04/2035	उल्क	19/10/2035	सिद्ध	25/07/2036	संक	27/07/2037
भद्रि	02/01/2035	उल्क	03/05/2035	सिद्ध	30/11/2035	संक	26/09/2036	मंग	06/08/2037
उल्क	14/01/2035	सिद्ध	30/05/2035	संक	16/01/2036	मंग	04/10/2036	पिंग	26/08/2037
सिद्ध	28/01/2035	संक	01/07/2035	मंग	22/01/2036	पिंग	20/10/2036	धांय	24/09/2037
संक	13/02/2035	मंग	05/07/2035	पिंग	03/02/2036	धांय	13/11/2036	भ्राम	03/11/2037

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

सिद्ध - उल्क		संक - संक		संक - मंग		संक - पिंग		संक - धांय	
03/11/2037		03/01/2039		13/10/2040		03/01/2041		14/06/2041	
03/01/2039		13/10/2040		03/01/2041		14/06/2041		12/02/2042	
उल्क	13/01/2038	संक	27/05/2039	मंग	16/10/2040	पिंग	12/01/2041	धांय	04/07/2041
सिद्ध	06/04/2038	मंग	14/06/2039	पिंग	20/10/2040	धांय	25/01/2041	भ्राम	31/07/2041
संक	09/07/2038	पिंग	20/07/2039	धांय	27/10/2040	भ्राम	12/02/2041	भद्रि	03/09/2041
मंग	21/07/2038	धांय	13/09/2039	भ्राम	05/11/2040	भद्रि	07/03/2041	उल्क	14/10/2041
पिंग	14/08/2038	भ्राम	24/11/2039	भद्रि	16/11/2040	उल्क	03/04/2041	सिद्ध	30/11/2041
धांय	19/09/2038	भद्रि	22/02/2040	उल्क	30/11/2040	सिद्ध	04/05/2041	संक	23/01/2042
भ्राम	05/11/2038	उल्क	09/06/2040	सिद्ध	16/12/2040	संक	09/06/2041	मंग	30/01/2042
भद्रि	03/01/2039	सिद्ध	13/10/2040	संक	03/01/2041	मंग	14/06/2041	पिंग	12/02/2042

संक - भ्राम		संक - भद्रि		संक - उल्क		संक - सिद्ध		मंग - मंग	
12/02/2042		03/01/2043		13/02/2044		14/06/2045		03/01/2047	
03/01/2043		13/02/2044		14/06/2045		03/01/2047		13/01/2047	
भ्राम	20/03/2042	भद्रि	28/02/2043	उल्क	04/05/2044	सिद्ध	02/10/2045	मंग	03/01/2047
भद्रि	05/05/2042	उल्क	07/05/2043	सिद्ध	07/08/2044	संक	06/02/2046	पिंग	04/01/2047
उल्क	28/06/2042	सिद्ध	25/07/2043	संक	23/11/2044	मंग	21/02/2046	धांय	05/01/2047
सिद्ध	30/08/2042	संक	23/10/2043	मंग	06/12/2044	पिंग	25/03/2046	भ्राम	06/01/2047
संक	10/11/2042	मंग	03/11/2043	पिंग	03/01/2045	धांय	11/05/2046	भद्रि	07/01/2047
मंग	19/11/2042	पिंग	26/11/2043	धांय	12/02/2045	भ्राम	13/07/2046	उल्क	09/01/2047
पिंग	07/12/2042	धांय	30/12/2043	भ्राम	07/04/2045	भद्रि	30/09/2046	सिद्ध	11/01/2047
धांय	03/01/2043	भ्राम	13/02/2044	भद्रि	14/06/2045	उल्क	03/01/2047	संक	13/01/2047

मंग - पिंग		मंग - धांय		मंग - भ्राम		मंग - भद्रि		मंग - उल्क	
13/01/2047		02/02/2047		05/03/2047		14/04/2047		04/06/2047	
02/02/2047		05/03/2047		14/04/2047		04/06/2047		04/08/2047	
पिंग	14/01/2047	धांय	05/02/2047	भ्राम	09/03/2047	भद्रि	22/04/2047	उल्क	14/06/2047
धांय	16/01/2047	भ्राम	08/02/2047	भद्रि	15/03/2047	उल्क	30/04/2047	सिद्ध	26/06/2047
भ्राम	18/01/2047	भद्रि	13/02/2047	उल्क	22/03/2047	सिद्ध	10/05/2047	संक	10/07/2047
भद्रि	21/01/2047	उल्क	18/02/2047	सिद्ध	30/03/2047	संक	21/05/2047	मंग	11/07/2047
उल्क	24/01/2047	सिद्ध	24/02/2047	संक	08/04/2047	मंग	23/05/2047	पिंग	15/07/2047
सिद्ध	28/01/2047	संक	02/03/2047	मंग	09/04/2047	पिंग	25/05/2047	धांय	20/07/2047
संक	02/02/2047	मंग	03/03/2047	पिंग	11/04/2047	धांय	30/05/2047	भ्राम	27/07/2047
मंग	02/02/2047	पिंग	05/03/2047	धांय	14/04/2047	भ्राम	04/06/2047	भद्रि	04/08/2047

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : सिंह 4 वर्ष 3 मास 27 दिन
कुल दशाकाल : 86 वर्ष
तिथि : विशाखा - 1 अपसव्य
देह : कर्क जीव : धनु

सिंह 5 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		धनु 10 वर्ष		मकर 4 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष	
15/07/1978		11/11/1982		11/11/2003		11/11/2013		11/11/2017	
11/11/1982		11/11/2003		11/11/2013		11/11/2017		11/11/2021	
	15/07/1978	कर्क	28/12/1987	धनु	09/01/2005	मक	18/01/2014	कुंभ	18/01/2018
कर्क	17/05/1979	धनु	07/06/1990	मक	28/06/2005	कुंभ	27/03/2014	मीन	07/07/2018
धनु	15/12/1979	मक	30/05/1991	कुंभ	15/12/2005	मीन	13/09/2014	मेष	03/11/2018
मक	09/03/1980	कुंभ	21/05/1992	मीन	13/02/2007	मेष	10/01/2015	वृष	01/08/2019
कुंभ	02/06/1980	मीन	29/10/1994	मेष	07/12/2007	वृष	08/10/2015	मिथु	01/01/2020
मीन	01/01/1981	मेष	15/07/1996	वृष	16/10/2009	मिथु	09/03/2016	सिंह	26/03/2020
मेष	29/05/1981	वृष	11/06/2000	मिथु	03/11/2010	सिंह	02/06/2016	कर्क	18/03/2021
वृष	04/05/1982	मिथु	22/08/2002	सिंह	03/06/2011	कर्क	25/05/2017	धनु	04/09/2021
मिथु	11/11/1982	सिंह	11/11/2003	कर्क	11/11/2013	धनु	11/11/2017	मक	11/11/2021

मीन 10 वर्ष		मेष 7 वर्ष		वृष 16 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष		सिंह 5 वर्ष	
11/11/2021		11/11/2031		11/11/2038		11/11/2054		11/11/2063	
11/11/2031		11/11/2038		11/11/2054		11/11/2063		00/00/0000	
मीन	10/01/2023	मेष	07/06/2032	वृष	02/11/2041	मिथु	21/10/2055	सिंह	26/02/2064
मेष	03/11/2023	वृष	25/09/2033	मिथु	07/07/2043	सिंह	29/04/2056	कर्क	15/07/2064
वृष	12/09/2025	मिथु	20/06/2034	सिंह	11/06/2044	कर्क	11/07/2058		00/00/0000
मिथु	30/09/2026	सिंह	15/11/2034	कर्क	08/05/2048	धनु	28/07/2059		00/00/0000
सिंह	30/04/2027	कर्क	01/08/2036	धनु	18/03/2050	मक	28/12/2059		00/00/0000
कर्क	08/10/2029	धनु	25/05/2037	मक	15/12/2050	कुंभ	29/05/2060		00/00/0000
धनु	07/12/2030	मक	21/09/2037	कुंभ	13/09/2051	मीन	15/06/2061		00/00/0000
मक	26/05/2031	कुंभ	18/01/2038	मीन	23/07/2053	मेष	10/03/2062		00/00/0000
कुंभ	11/11/2031	मीन	11/11/2038	मेष	11/11/2054	वृष	11/11/2063		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मीन - मिथु		मीन - सिंह		मीन - कर्क		मीन - धनु		मीन - मक	
12/09/2025		30/09/2026		30/04/2027		08/10/2029		07/12/2030	
30/09/2026		30/04/2027		08/10/2029		07/12/2030		26/05/2031	
मिथु	22/10/2025	सिंह	12/10/2026	कर्क	04/12/2027	धनु	26/11/2029	मक	15/12/2030
सिंह	14/11/2025	कर्क	03/12/2026	धनु	17/03/2028	मक	16/12/2029	कुंभ	22/12/2030
कर्क	15/02/2026	धनु	28/12/2026	मक	27/04/2028	कुंभ	05/01/2030	मीन	11/01/2031
धनु	31/03/2026	मक	06/01/2027	कुंभ	07/06/2028	मीन	23/02/2030	मेष	25/01/2031
मक	18/04/2026	कुंभ	16/01/2027	मीन	19/09/2028	मेष	30/03/2030	वृष	26/02/2031
कुंभ	06/05/2026	मीन	10/02/2027	मेष	01/12/2028	वृष	17/06/2030	मिथु	15/03/2031
मीन	19/06/2026	मेष	27/02/2027	वृष	16/05/2029	मिथु	31/07/2030	सिंह	25/03/2031
मेष	21/07/2026	वृष	08/04/2027	मिथु	17/08/2029	सिंह	25/08/2030	कर्क	06/05/2031
वृष	30/09/2026	मिथु	30/04/2027	सिंह	08/10/2029	कर्क	07/12/2030	धनु	26/05/2031

मीन - कुंभ		मेष - मेष		मेष - वृष		मेष - मिथु		मेष - सिंह	
26/05/2031		11/11/2031		07/06/2032		25/09/2033		20/06/2034	
11/11/2031		07/06/2032		25/09/2033		20/06/2034		15/11/2034	
कुंभ	02/06/2031	मेष	28/11/2031	वृष	03/09/2032	मिथु	23/10/2033	सिंह	28/06/2034
मीन	22/06/2031	वृष	06/01/2032	मिथु	23/10/2032	सिंह	08/11/2033	कर्क	04/08/2034
मेष	06/07/2031	मिथु	28/01/2032	सिंह	19/11/2032	कर्क	12/01/2034	धनु	21/08/2034
वृष	07/08/2031	सिंह	09/02/2032	कर्क	16/03/2033	धनु	12/02/2034	मक	28/08/2034
मिथु	24/08/2031	कर्क	31/03/2032	धनु	10/05/2033	मक	25/02/2034	कुंभ	04/09/2034
सिंह	03/09/2031	धनु	24/04/2032	मक	01/06/2033	कुंभ	09/03/2034	मीन	21/09/2034
कर्क	15/10/2031	मक	04/05/2032	कुंभ	23/06/2033	मीन	09/04/2034	मेष	03/10/2034
धनु	04/11/2031	कुंभ	13/05/2032	मीन	17/08/2033	मेष	01/05/2034	वृष	31/10/2034
मक	11/11/2031	मीन	07/06/2032	मेष	25/09/2033	वृष	20/06/2034	मिथु	15/11/2034

मेष - कर्क		मेष - धनु		मेष - मक		मेष - कुंभ		मेष - मीन	
15/11/2034		01/08/2036		25/05/2037		21/09/2037		18/01/2038	
01/08/2036		25/05/2037		21/09/2037		18/01/2038		11/11/2038	
कर्क	17/04/2035	धनु	04/09/2036	मक	31/05/2037	कुंभ	26/09/2037	मीन	21/02/2038
धनु	28/06/2035	मक	18/09/2036	कुंभ	05/06/2037	मीन	10/10/2037	मेष	18/03/2038
मक	27/07/2035	कुंभ	02/10/2036	मीन	19/06/2037	मेष	20/10/2037	वृष	12/05/2038
कुंभ	26/08/2035	मीन	06/11/2036	मेष	29/06/2037	वृष	11/11/2037	मिथु	12/06/2038
मीन	06/11/2035	मेष	30/11/2036	वृष	21/07/2037	मिथु	24/11/2037	सिंह	29/06/2038
मेष	27/12/2035	वृष	24/01/2037	मिथु	02/08/2037	सिंह	30/11/2037	कर्क	10/09/2038
वृष	21/04/2036	मिथु	24/02/2037	सिंह	09/08/2037	कर्क	29/12/2037	धनु	14/10/2038
मिथु	25/06/2036	सिंह	13/03/2037	कर्क	07/09/2037	धनु	12/01/2038	मक	28/10/2038
सिंह	01/08/2036	कर्क	25/05/2037	धनु	21/09/2037	मक	18/01/2038	कुंभ	11/11/2038

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृष - वृष		वृष - मिथु		वृष - सिंह		वृष - कर्क		वृष - धनु	
11/11/2038		02/11/2041		07/07/2043		11/06/2044		08/05/2048	
02/11/2041		07/07/2043		11/06/2044		08/05/2048		18/03/2050	
वृष	01/06/2039	मिथु	05/01/2042	सिंह	27/07/2043	कर्क	25/05/2045	धनु	26/07/2048
मिथु	23/09/2039	सिंह	10/02/2042	कर्क	18/10/2043	धनु	07/11/2045	मक	26/08/2048
सिंह	25/11/2039	कर्क	09/07/2042	धनु	26/11/2043	मक	13/01/2046	कुंभ	27/09/2048
कर्क	17/08/2040	धनु	18/09/2042	मक	12/12/2043	कुंभ	20/03/2046	मीन	15/12/2048
धनु	21/12/2040	मक	17/10/2042	कुंभ	28/12/2043	मीन	02/09/2046	मेष	08/02/2049
मक	10/02/2041	कुंभ	14/11/2042	मीन	05/02/2044	मेष	27/12/2046	वृष	15/06/2049
कुंभ	01/04/2041	मीन	24/01/2043	मेष	04/03/2044	वृष	18/09/2047	मिथु	25/08/2049
मीन	06/08/2041	मेष	15/03/2043	वृष	06/05/2044	मिथु	15/02/2048	सिंह	03/10/2049
मेष	02/11/2041	वृष	07/07/2043	मिथु	11/06/2044	सिंह	08/05/2048	कर्क	18/03/2050

वृष - मक		वृष - कुंभ		वृष - मीन		वृष - मेष		मिथु - मिथु	
18/03/2050		15/12/2050		13/09/2051		23/07/2053		11/11/2054	
15/12/2050		13/09/2051		23/07/2053		11/11/2054		21/10/2055	
मक	31/03/2050	कुंभ	28/12/2050	मीन	01/12/2051	मेष	31/08/2053	मिथु	17/12/2054
कुंभ	13/04/2050	मीन	28/01/2051	मेष	25/01/2052	वृष	28/11/2053	सिंह	06/01/2055
मीन	14/05/2050	मेष	20/02/2051	वृष	31/05/2052	मिथु	16/01/2054	कर्क	31/03/2055
मेष	05/06/2050	वृष	11/04/2051	मिथु	10/08/2052	सिंह	13/02/2054	धनु	10/05/2055
वृष	26/07/2050	मिथु	10/05/2051	सिंह	18/09/2052	कर्क	09/06/2054	मक	26/05/2055
मिथु	23/08/2050	सिंह	25/05/2051	कर्क	03/03/2053	धनु	04/08/2054	कुंभ	11/06/2055
सिंह	08/09/2050	कर्क	31/07/2051	धनु	21/05/2053	मक	26/08/2054	मीन	21/07/2055
कर्क	14/11/2050	धनु	31/08/2051	मक	22/06/2053	कुंभ	17/09/2054	मेष	18/08/2055
धनु	15/12/2050	मक	13/09/2051	कुंभ	23/07/2053	मीन	11/11/2054	वृष	21/10/2055

मिथु - सिंह		मिथु - कर्क		मिथु - धनु		मिथु - मक		मिथु - कुंभ	
21/10/2055		29/04/2056		11/07/2058		28/07/2059		28/12/2059	
29/04/2056		11/07/2058		28/07/2059		28/12/2059		29/05/2060	
सिंह	01/11/2055	कर्क	11/11/2056	धनु	24/08/2058	मक	04/08/2059	कुंभ	04/01/2060
कर्क	18/12/2055	धनु	13/02/2057	मक	11/09/2058	कुंभ	11/08/2059	मीन	22/01/2060
धनु	09/01/2056	मक	22/03/2057	कुंभ	29/09/2058	मीन	29/08/2059	मेष	03/02/2060
मक	18/01/2056	कुंभ	28/04/2057	मीन	12/11/2058	मेष	11/09/2059	वृष	03/03/2060
कुंभ	27/01/2056	मीन	31/07/2057	मेष	14/12/2058	वृष	09/10/2059	मिथु	19/03/2060
मीन	18/02/2056	मेष	04/10/2057	वृष	23/02/2059	मिथु	25/10/2059	सिंह	28/03/2060
मेष	05/03/2056	वृष	02/03/2058	मिथु	04/04/2059	सिंह	03/11/2059	कर्क	04/05/2060
वृष	09/04/2056	मिथु	25/05/2058	सिंह	26/04/2059	कर्क	10/12/2059	धनु	22/05/2060
मिथु	29/04/2056	सिंह	11/07/2058	कर्क	28/07/2059	धनु	28/12/2059	मक	29/05/2060

चर दशा

भोग्य दशा काल : तुला 10 वर्ष 0 मास 0 दिन

तुला 10 वर्ष	
15/07/1978	
15/07/1988	
वृश्चि	15/05/1979
धनु	15/03/1980
मक	13/01/1981
कुंभ	14/11/1981
मीन	14/09/1982
मेष	15/07/1983
वृष	15/05/1984
मिथु	15/03/1985
कर्क	13/01/1986
सिंह	14/11/1986
कन्या	14/09/1987
तुला	15/07/1988

वृश्चिक 9 वर्ष	
15/07/1988	
15/07/1997	
तुला	14/04/1989
कन्या	13/01/1990
सिंह	14/10/1990
कर्क	15/07/1991
मिथु	14/04/1992
वृष	13/01/1993
मेष	14/10/1993
मीन	15/07/1994
कुंभ	15/04/1995
मक	14/01/1996
धनु	14/10/1996
वृश्चि	15/07/1997

धनु 6 वर्ष	
15/07/1997	
15/07/2003	
वृश्चि	13/01/1998
तुला	15/07/1998
कन्या	14/01/1999
सिंह	15/07/1999
कर्क	14/01/2000
मिथु	15/07/2000
वृष	13/01/2001
मेष	15/07/2001
मीन	13/01/2002
कुंभ	15/07/2002
मक	14/01/2003
धनु	15/07/2003

मकर 5 वर्ष	
15/07/2003	
15/07/2008	
धनु	14/12/2003
वृश्चि	15/05/2004
तुला	14/10/2004
कन्या	15/03/2005
सिंह	14/08/2005
कर्क	13/01/2006
मिथु	15/06/2006
वृष	14/11/2006
मेष	15/04/2007
मीन	14/09/2007
कुंभ	13/02/2008
मक	15/07/2008

कुम्भ 6 वर्ष	
15/07/2008	
15/07/2014	
मीन	13/01/2009
मेष	15/07/2009
वृष	13/01/2010
मिथु	15/07/2010
कर्क	14/01/2011
सिंह	15/07/2011
कन्या	14/01/2012
तुला	15/07/2012
वृश्चि	13/01/2013
धनु	15/07/2013
मक	13/01/2014
कुंभ	15/07/2014

मीन 9 वर्ष	
15/07/2014	
15/07/2023	
मेष	15/04/2015
वृष	14/01/2016
मिथु	14/10/2016
कर्क	15/07/2017
सिंह	15/04/2018
कन्या	14/01/2019
तुला	15/10/2019
वृश्चि	15/07/2020
धनु	14/04/2021
मक	13/01/2022
कुंभ	14/10/2022
मीन	15/07/2023

मेष 4 वर्ष	
15/07/2023	
15/07/2027	
वृष	14/11/2023
मिथु	15/03/2024
कर्क	15/07/2024
सिंह	13/11/2024
कन्या	15/03/2025
तुला	15/07/2025
वृश्चि	14/11/2025
धनु	15/03/2026
मक	15/07/2026
कुंभ	14/11/2026
मीन	16/03/2027
मेष	15/07/2027

वृष 3 वर्ष	
15/07/2027	
15/07/2030	
मेष	15/10/2027
मीन	14/01/2028
कुंभ	14/04/2028
मक	15/07/2028
धनु	14/10/2028
वृश्चि	13/01/2029
तुला	14/04/2029
कन्या	15/07/2029
सिंह	14/10/2029
कर्क	13/01/2030
मिथु	15/04/2030
वृष	15/07/2030

मिथुन 1 वर्ष	
15/07/2030	
15/07/2031	
वृष	14/08/2030
मेष	14/09/2030
मीन	14/10/2030
कुंभ	14/11/2030
मक	14/12/2030
धनु	14/01/2031
वृश्चि	13/02/2031
तुला	16/03/2031
कन्या	15/04/2031
सिंह	15/05/2031
कर्क	15/06/2031
मिथु	15/07/2031

कर्क 9 वर्ष	
15/07/2031	
15/07/2040	
मिथु	14/04/2032
वृष	13/01/2033
मेष	14/10/2033
मीन	15/07/2034
कुंभ	15/04/2035
मक	14/01/2036
धनु	14/10/2036
वृश्चि	15/07/2037
तुला	15/04/2038
कन्या	14/01/2039
सिंह	15/10/2039
कर्क	15/07/2040

सिंह 2 वर्ष	
15/07/2040	
15/07/2042	
कन्या	13/09/2040
तुला	13/11/2040
वृश्चि	13/01/2041
धनु	15/03/2041
मक	15/05/2041
कुंभ	15/07/2041
मीन	14/09/2041
मेष	14/11/2041
वृष	13/01/2042
मिथु	15/03/2042
कर्क	15/05/2042
सिंह	15/07/2042

कन्या 2 वर्ष	
15/07/2042	
15/07/2044	
तुला	14/09/2042
वृश्चि	14/11/2042
धनु	14/01/2043
मक	16/03/2043
कुंभ	15/05/2043
मीन	15/07/2043
मेष	14/09/2043
वृष	14/11/2043
मिथु	14/01/2044
कर्क	15/03/2044
सिंह	15/05/2044
कन्या	15/07/2044

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

मेष - मक	
15/03/2026	
15/07/2026	
धनु	25/03/2026
वृश्चि	05/04/2026
तुला	15/04/2026
कन्या	25/04/2026
सिंह	05/05/2026
कर्क	15/05/2026
मिथु	25/05/2026
वृष	04/06/2026
मेष	15/06/2026
मीन	25/06/2026
कुंभ	05/07/2026
मक	15/07/2026

मेष - कुंभ	
15/07/2026	
14/11/2026	
मीन	25/07/2026
मेष	04/08/2026
वृष	14/08/2026
मिथु	25/08/2026
कर्क	04/09/2026
सिंह	14/09/2026
कन्या	24/09/2026
तुला	04/10/2026
वृश्चि	14/10/2026
धनु	25/10/2026
मक	04/11/2026
कुंभ	14/11/2026

मेष - मीन	
14/11/2026	
16/03/2027	
मेष	24/11/2026
वृष	04/12/2026
मिथु	14/12/2026
कर्क	24/12/2026
सिंह	04/01/2027
कन्या	14/01/2027
तुला	24/01/2027
वृश्चि	03/02/2027
धनु	13/02/2027
मक	23/02/2027
कुंभ	05/03/2027
मीन	16/03/2027

मेष - मेष	
16/03/2027	
15/07/2027	
वृष	26/03/2027
मिथु	05/04/2027
कर्क	15/04/2027
सिंह	25/04/2027
कन्या	05/05/2027
तुला	15/05/2027
वृश्चि	26/05/2027
धनु	05/06/2027
मक	15/06/2027
कुंभ	25/06/2027
मीन	05/07/2027
मेष	15/07/2027

वृष - मेष	
15/07/2027	
15/10/2027	
वृष	23/07/2027
मिथु	31/07/2027
कर्क	07/08/2027
सिंह	15/08/2027
कन्या	22/08/2027
तुला	30/08/2027
वृश्चि	07/09/2027
धनु	14/09/2027
मक	22/09/2027
कुंभ	29/09/2027
मीन	07/10/2027
मेष	15/10/2027

वृष - मीन	
15/10/2027	
14/01/2028	
मेष	22/10/2027
वृष	30/10/2027
मिथु	06/11/2027
कर्क	14/11/2027
सिंह	22/11/2027
कन्या	29/11/2027
तुला	07/12/2027
वृश्चि	14/12/2027
धनु	22/12/2027
मक	30/12/2027
कुंभ	06/01/2028
मीन	14/01/2028

वृष - कुंभ	
14/01/2028	
14/04/2028	
मीन	22/01/2028
मेष	29/01/2028
वृष	06/02/2028
मिथु	13/02/2028
कर्क	21/02/2028
सिंह	29/02/2028
कन्या	07/03/2028
तुला	15/03/2028
वृश्चि	22/03/2028
धनु	30/03/2028
मक	07/04/2028
कुंभ	14/04/2028

वृष - मक	
14/04/2028	
15/07/2028	
धनु	22/04/2028
वृश्चि	29/04/2028
तुला	07/05/2028
कन्या	15/05/2028
सिंह	22/05/2028
कर्क	30/05/2028
मिथु	07/06/2028
वृष	14/06/2028
मेष	22/06/2028
मीन	29/06/2028
कुंभ	07/07/2028
मक	15/07/2028

वृष - धनु	
15/07/2028	
14/10/2028	
वृश्चि	22/07/2028
तुला	30/07/2028
कन्या	06/08/2028
सिंह	14/08/2028
कर्क	22/08/2028
मिथु	29/08/2028
वृष	06/09/2028
मेष	13/09/2028
मीन	21/09/2028
कुंभ	29/09/2028
मक	06/10/2028
धनु	14/10/2028

वृष - वृश्चि	
14/10/2028	
13/01/2029	
तुला	21/10/2028
कन्या	29/10/2028
सिंह	06/11/2028
कर्क	13/11/2028
मिथु	21/11/2028
वृष	29/11/2028
मेष	06/12/2028
मीन	14/12/2028
कुंभ	21/12/2028
मक	29/12/2028
धनु	06/01/2029
वृश्चि	13/01/2029

वृष - तुला	
13/01/2029	
14/04/2029	
वृश्चि	21/01/2029
धनु	28/01/2029
मक	05/02/2029
कुंभ	13/02/2029
मीन	20/02/2029
मेष	28/02/2029
वृष	07/03/2029
मिथु	15/03/2029
कर्क	23/03/2029
सिंह	30/03/2029
कन्या	07/04/2029
तुला	14/04/2029

वृष - कन्या	
14/04/2029	
15/07/2029	
तुला	22/04/2029
वृश्चि	30/04/2029
धनु	07/05/2029
मक	15/05/2029
कुंभ	23/05/2029
मीन	30/05/2029
मेष	07/06/2029
वृष	14/06/2029
मिथु	22/06/2029
कर्क	30/06/2029
सिंह	07/07/2029
कन्या	15/07/2029

वृष - सिंह	
15/07/2029	
14/10/2029	
कन्या	22/07/2029
तुला	30/07/2029
वृश्चि	07/08/2029
धनु	14/08/2029
मक	22/08/2029
कुंभ	29/08/2029
मीन	06/09/2029
मेष	14/09/2029
वृष	21/09/2029
मिथु	29/09/2029
कर्क	07/10/2029
सिंह	14/10/2029

वृष - कर्क	
14/10/2029	
13/01/2030	
मिथु	22/10/2029
वृष	29/10/2029
मेष	06/11/2029
मीन	14/11/2029
कुंभ	21/11/2029
मक	29/11/2029
धनु	06/12/2029
वृश्चि	14/12/2029
तुला	22/12/2029
कन्या	29/12/2029
सिंह	06/01/2030
कर्क	13/01/2030

वृष - मिथु	
13/01/2030	
15/04/2030	
वृष	21/01/2030
मेष	29/01/2030
मीन	05/02/2030
कुंभ	13/02/2030
मक	20/02/2030
धनु	28/02/2030
वृश्चि	08/03/2030
तुला	15/03/2030
कन्या	23/03/2030
सिंह	31/03/2030
कर्क	07/04/2030
मिथु	15/04/2030

चर दशा - प्रत्यन्तर

वृष - वृष		मिथु - वृष		मिथु - मेष		मिथु - मीन		मिथु - कुंभ	
15/04/2030		15/07/2030		14/08/2030		14/09/2030		14/10/2030	
15/07/2030		14/08/2030		14/09/2030		14/10/2030		14/11/2030	
मेष	22/04/2030	मेष	18/07/2030	वृष	17/08/2030	मेष	16/09/2030	मीन	17/10/2030
मीन	30/04/2030	मीन	20/07/2030	मिथु	20/08/2030	वृष	19/09/2030	मेष	19/10/2030
कुंभ	08/05/2030	कुंभ	23/07/2030	कर्क	22/08/2030	मिथु	22/09/2030	वृष	22/10/2030
मक	15/05/2030	मक	25/07/2030	सिंह	25/08/2030	कर्क	24/09/2030	मिथु	25/10/2030
धनु	23/05/2030	धनु	28/07/2030	कन्या	27/08/2030	सिंह	27/09/2030	कर्क	27/10/2030
वृश्चि	30/05/2030	वृश्चि	30/07/2030	तुला	30/08/2030	कन्या	29/09/2030	सिंह	30/10/2030
तुला	07/06/2030	तुला	02/08/2030	वृश्चि	01/09/2030	तुला	02/10/2030	कन्या	01/11/2030
कन्या	15/06/2030	कन्या	04/08/2030	धनु	04/09/2030	वृश्चि	04/10/2030	तुला	04/11/2030
सिंह	22/06/2030	सिंह	07/08/2030	मक	06/09/2030	धनु	07/10/2030	वृश्चि	06/11/2030
कर्क	30/06/2030	कर्क	09/08/2030	कुंभ	09/09/2030	मक	09/10/2030	धनु	09/11/2030
मिथु	07/07/2030	मिथु	12/08/2030	मीन	11/09/2030	कुंभ	12/10/2030	मक	11/11/2030
वृष	15/07/2030	वृष	14/08/2030	मेष	14/09/2030	मीन	14/10/2030	कुंभ	14/11/2030

मिथु - मक		मिथु - धनु		मिथु - वृश्चि		मिथु - तुला		मिथु - कन्या	
14/11/2030		14/12/2030		14/01/2031		13/02/2031		16/03/2031	
14/12/2030		14/01/2031		13/02/2031		16/03/2031		15/04/2031	
धनु	16/11/2030	वृश्चि	17/12/2030	तुला	16/01/2031	वृश्चि	16/02/2031	तुला	18/03/2031
वृश्चि	19/11/2030	तुला	19/12/2030	कन्या	19/01/2031	धनु	18/02/2031	वृश्चि	21/03/2031
तुला	21/11/2030	कन्या	22/12/2030	सिंह	21/01/2031	मक	21/02/2031	धनु	23/03/2031
कन्या	24/11/2030	सिंह	24/12/2030	कर्क	24/01/2031	कुंभ	23/02/2031	मक	26/03/2031
सिंह	26/11/2030	कर्क	27/12/2030	मिथु	26/01/2031	मीन	26/02/2031	कुंभ	28/03/2031
कर्क	29/11/2030	मिथु	29/12/2030	वृष	29/01/2031	मेष	28/02/2031	मीन	31/03/2031
मिथु	02/12/2030	वृष	01/01/2031	मेष	31/01/2031	वृष	03/03/2031	मेष	02/04/2031
वृष	04/12/2030	मेष	04/01/2031	मीन	03/02/2031	मिथु	05/03/2031	वृष	05/04/2031
मेष	07/12/2030	मीन	06/01/2031	कुंभ	06/02/2031	कर्क	08/03/2031	मिथु	07/04/2031
मीन	09/12/2030	कुंभ	09/01/2031	मक	08/02/2031	सिंह	10/03/2031	कर्क	10/04/2031
कुंभ	12/12/2030	मक	11/01/2031	धनु	11/02/2031	कन्या	13/03/2031	सिंह	12/04/2031
मक	14/12/2030	धनु	14/01/2031	वृश्चि	13/02/2031	तुला	16/03/2031	कन्या	15/04/2031

मिथु - सिंह		मिथु - कर्क		मिथु - मिथु		कर्क - मिथु		कर्क - वृष	
15/04/2031		15/05/2031		15/06/2031		15/07/2031		14/04/2032	
15/05/2031		15/06/2031		15/07/2031		14/04/2032		13/01/2033	
कन्या	18/04/2031	मिथु	18/05/2031	वृष	17/06/2031	वृष	07/08/2031	मेष	07/05/2032
तुला	20/04/2031	वृष	21/05/2031	मेष	20/06/2031	मेष	30/08/2031	मीन	30/05/2032
वृश्चि	23/04/2031	मेष	23/05/2031	मीन	22/06/2031	मीन	22/09/2031	कुंभ	22/06/2032
धनु	25/04/2031	मीन	26/05/2031	कुंभ	25/06/2031	कुंभ	15/10/2031	मक	15/07/2032
मक	28/04/2031	कुंभ	28/05/2031	मक	28/06/2031	मक	06/11/2031	धनु	06/08/2032
कुंभ	30/04/2031	मक	31/05/2031	धनु	30/06/2031	धनु	29/11/2031	वृश्चि	29/08/2032
मीन	03/05/2031	धनु	02/06/2031	वृश्चि	03/07/2031	वृश्चि	22/12/2031	तुला	21/09/2032
मेष	05/05/2031	वृश्चि	05/06/2031	तुला	05/07/2031	तुला	14/01/2032	कन्या	14/10/2032
वृष	08/05/2031	तुला	07/06/2031	कन्या	08/07/2031	कन्या	06/02/2032	सिंह	06/11/2032
मिथु	10/05/2031	कन्या	10/06/2031	सिंह	10/07/2031	सिंह	29/02/2032	कर्क	29/11/2032
कर्क	13/05/2031	सिंह	12/06/2031	कर्क	13/07/2031	कर्क	22/03/2032	मिथु	21/12/2032
सिंह	15/05/2031	कर्क	15/06/2031	मिथु	15/07/2031	मिथु	14/04/2032	वृष	13/01/2033

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	6
भाग्यांक	2
मित्र अंक	3, 4, 6, 9, 2
शत्रु अंक	1, 7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मकर, मिथुन
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	लक्ष्मी
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	95%	धनार्जन, सुख, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	81%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	73%	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय, कम खर्च
हीरा	शुक्र	69%	धनार्जन, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
माणिक्य	सूर्य	61%	भाग्योदय, धनार्जन
लहसुनिया	केतु	58%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
पुखराज	गुरु	50%	भाग्योदय, पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति
गोमेद	राहु	50%	कम खर्च, व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	44%	हानि, दाम्पत्य कष्ट, धन हानि

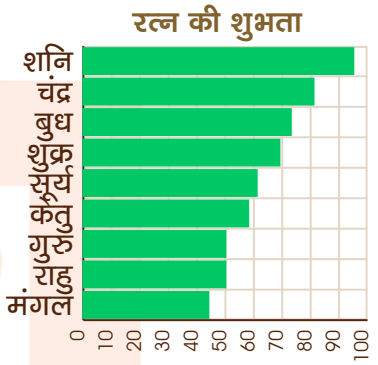

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	18/09/1991	67%	88%	53%	61%	62%	56%	95%	50%	58%
शनि	18/09/2010	47%	69%	19%	80%	50%	75%	100%	57%	41%
बुध	18/09/2027	67%	69%	44%	86%	50%	75%	95%	50%	58%
केतु	18/09/2034	47%	69%	53%	73%	50%	75%	83%	26%	71%
शुक्र	18/09/2054	47%	69%	44%	80%	50%	81%	100%	57%	64%
सूर्य	18/09/2060	73%	88%	53%	73%	56%	56%	83%	26%	41%
चंद्र	18/09/2070	67%	94%	44%	80%	50%	69%	95%	26%	41%
मंगल	18/09/2077	67%	88%	59%	61%	56%	69%	95%	26%	64%
राहु	18/09/2095	47%	69%	19%	73%	50%	75%	100%	63%	41%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए नीलम व मोती रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम व मोती रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए पन्ना, हीरा, माणिक्य, लहसुनिया, पुखराज एवं गोमेद रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मूंगा रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

नीलम

आपकी कुंडली में शनि एकादश भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न धारण कर आप निर्लोभी और सुखी व्यक्ति बनेंगे। आपको दीर्घकाल के लिए रोग अपने प्रभाव में नहीं पायेंगे। आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन-संपति होगी। सरकार की कृपा से भी धन, मान की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपके लिए शुभ होकर आपको

वाहनों का सुख देगा। धन संचय में सहयोग करेगा। नौकर चाकरों का सुख देगा। तथा नीलम रत्न प्रभाव से संतान प्राप्ति का विलम्ब दूर होगा। अनेक प्रकार के सुखों को आप प्राप्त करेंगे।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शनि चतुर्थेश एवं पंचमेश है। शनि का रत्न नीलम आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। आप इसे धारण कर शनि की शुभता प्राप्त कर सकते है। नीलम रत्न आपको पौराणिक विषयों से शिक्षा प्राप्ति के अवसर दे सकता है। यह रत्न आपके संतान स्वास्थ्य को प्रबल कर अनुकूल बनाए रखेगा। नीलम रत्न शुभता से आपके अपनी संतान से संबंध मजबूत हो सकते है। ज्ञान प्राप्ति के लिए यह रत्न आपको सर्वोत्तम फल प्रदान कर सकता है। रत्न प्रभाव से कुटुंब में वृद्धि, भूमि-भवन के मामलों में शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। इसलिए आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। चंद्र रत्न मोती धारण करने से आपके अपनी माता से संबंध मजबूत होंगे। मोती रत्न आपको मानसिक शांति देगा। इसके अलावा मोती रत्न आपको व्यवसायिक विवेकशीलता देकर आपके धन प्रवाह को अनुकूल बनाये रखेगा। सप्तम भाव में स्थित तुला राशि पर चन्द्र की दृष्टि होने के कारण आपका जीवनसाथी गुणवान, कला प्रेमी और कलाप्रेमी होगा। साथ ही यह मोती रत्न आपके वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में सहयोग करेगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में चंद्र दशम भाव के स्वामी है। चंद्र आपके लिए शुभ ग्रह है। चंद्र का मोती रत्न धारण करने से आपको कर्म क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर देगा। रत्न शुभता से आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता आ सकती है। आजीविका क्षेत्र से जुड़ी मानसिक चिंताओं का समाधान भी यह रत्न कर सकता है। मोती रत्न आपको राजनीति में अग्रणी रखेगा। मोती रत्न व्यवसायिक सफलता, सूझ-बूझ की योग्यता, मनोविश्लेषक, कलात्मक कार्यो से आय प्राप्ति के योग बना सकता है। रत्न शुभता से आपकी धार्मिक प्रवृति का विकास होकर आपको समाजसेवी संगठन या न्यासों के संचालण कार्य से सम्मान दिला सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

पन्ना

आपकी कुंड़ली में बुध दशम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपकी न्यायप्रियता और नीतिनिपुणता में वृद्धि करेगा। रत्न शुभता आपको विवेकवान। गुणवान और सत्यवादी व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपके धैर्य और विनम्रता को बढ़ाएगा। परिस्थिति अनुसार बोलने का कौशल यह रत्न पन्ना आपको दे सकता है। रत्न प्रभाव आपको यशस्वी और व्यवहार कुशल बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आपको विभिन्न प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त होगा। रत्न शुभता आपको धनाढ्य और संपतिवान बनाएगी। व्यापार के माध्यम से लाभ, सफलता दोनों देगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व द्वादशेश है। बुध ग्रह आपके लिए शुभ है। यहां बुध लग्नेश शुक्र का मित्र भी है इसलिए ओर अधिक शुभ हो गया है। इसकी शुभता प्राप्त करने के लिए आप बुध रत्न पन्ना धारण करें। पन्ना रत्न आपके लिए भाग्योदय रत्न सिद्ध हो सकता है। इस रत्न को धारण कर आप दांपत्य जीवन के सुखों में वृद्धि कर सकता है। बुध रत्न पन्ना आपको धर्म, पुण्य, भाग्य, गुरु, देवता, तीर्थ यात्रा, दान इत्यादि विषयों से संलग्न कर सकता है। यह रत्न आपको बौद्धिक कार्यो में भाग्य का सहयोग दे सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र एकादश भाव में स्थित है। शुक्र ग्रह की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको उदार, सदाचार संपन्न, सुशील और परोपकारी बनाएगा। हीरा रत्न से आप अपने वाकचातुर्य के कारण प्रसिद्ध होंगे। अनेक वाहनों का सुख आपको यह रत्न दे सकता है। शुक्र रत्न हीरे की शुभता आपको समृद्धि और सम्पन्नता देगी। इस रत्न प्रभाव से नियमित रूप से आपके पास धनागमन होता रहेगा और दिनों दिन धनवृद्धि होती जाएगी।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं अष्टमेश है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ रहेगा। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए भी आप हीरा रत्न धारण कर सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपके शरीर, आयु, मस्तिष्क, आपका स्वभाव और संपूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाये रखने में सहयोगी हो सकता है। हीरा अष्टमेश का भी रत्न होने के कारण आपको मानसिक चिंताओं से बचाएगा, दुर्भाग्य का नाश, ससुराल से मधुर संबंध, अस्पताल आदि विषयों में राहत दे सकता है। अपने स्वास्थ्य और आयुवृद्धि के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य नवम भाव में स्थित है। सूर्य रत्न माणिक्य आपके लिए शुभ रत्न है। अतः आप माणिक्य रत्न धारण करें। माणिक्य रत्न शुभता आपको लम्बी दूरी की यात्राएं करवाएगी। धर्म-कर्म एवं परोपकार से जुड़े कार्यों में आपकी सहभागिता बढ़ेगी। रत्न प्रभाव आपको अपने परिवार के अत्यधिक निकट लायेंगा। पिता से संबंध मधुर होकर मजबूत होंगे। सूर्य रत्न माणिक्य आपको शिक्षा के क्षेत्र में उत्तम फल देगा। उच्च शिक्षा प्राप्ति में माणिक्य रत्न शुभ फलदायक रत्न है। रत्न प्रभाव से विदेश गमन के योग बन सकते है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में सूर्य एकादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य को बल प्रदान कर सकते है। माणिक्य रत्न धारण करने से आपके

शारीरिक बल का विकास होगा। यह माणिक्य रत्न आय क्षेत्रों में आपको प्रभावशाली बना सकता है। रत्न शुभता से आपका आत्मविश्वास उच्च रहेगा। इसके साथ ही यह रत्न आपकी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में भी शुभ रत्न सिद्ध हो सकता है। सूर्य रत्न माणिक्य आपको उच्च पद और सरकारी क्षेत्रों से आय प्राप्ति के साधन उपलब्ध करा सकता है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु छ्ठें भाव में स्थित है। केतु रत्न लहसुनिया धारण करना आपके लिए शुभ रहेगा। लहसुनिया रत्न धारण कर आप स्वयं को निरोगी बनाए रख सकते है। आपके अपने भाईयों से संबंध मधुर रहेंगे। यह रत्न आपको गुणवान और दृढ प्रतिज्ञ व्यक्ति बनायेगा। लहसुनिया रत्न आपको विद्या के कारण यश देगा। रत्न शुभता से आप अपने शत्रुओं को नष्ट करने वाले और विभिन्न विवादों में विजय प्राप्त करेंगे। लहसुनिया रत्न आपको अपने जीवन काल में श्रेष्ठ पद दिलाएगा। ननिहाल से आदर सम्मान प्राप्त होगा।

केतु मीन राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु नवम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपके जीवन के शुभ फलों की अधिकता होगी। आप धार्मिक कार्यों में रुचि लेंगे। आपको लोगों द्वारा पसंद किया जाएगा। रत्न शुभता से आपको अपने सभी प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। यह रत्न आपको भाग्यशाली बना रहा है। इस रत्न की शुभता से आप प्रवासी हो सकते हैं तथा यह रत्न आपको तीर्थाटन प्रवृत्ति देगा। आप धार्मिक, उदार, कृतज्ञ, दयालु, देव- भक्त, भाई बन्धुओं के संरक्षक, प्रसिद्ध तथा पराक्रमी होंगे। एवं यह रत्न आपको अनेक प्रकार के धन रत्नादि से सुखी तथा सभी प्रकार की सुख समृद्धि देगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती

होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु नवम भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए शुभफल प्रदान करेगा। पुखराज रत्न की शुभता से आप नीतिमान, विचारशील और माननीय व्यक्ति बनेंगे। देवताओं, ब्राह्मणों और गुरुजनों में आपकी श्रद्धा का विस्तार होगा। रत्न शुभता आपको दान-पुण्य कार्यों में सहभागिता देगी। पुखराज रत्न प्रभाव से आप शांत, सदाचारी, और उच्च विचार वाले व्यक्ति बनेंगे। रत्न शक्तियां आपको तीर्थ यात्रा और धार्मिक कार्यों से जोड़े रखेगी। आपको विदेश गमन से लाभ प्राप्त हो सकता है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश है। गुरु रत्न पुखराज धारण कर आप गुरु शुभता को बढ़ा सकते है। पुखराज रत्न की शुभता आपको सेवकों का सुख एवं रोगों से बचाव दे सकती है। रत्न की अद्भुत शक्तियां आपके पुरुषार्थ व सम्मान में वृद्धि दे सकता है। रत्न प्रभाव से आप शत्रुओं पर साहस के साथ विजय प्राप्त कर सकते है। पुखराज रत्न आपके संतान सुख को बेहतर करने में उपयोगी साबित हो सकती है। आपको विद्या बुद्धि के प्रयोग से लाभ हो सकते है। यह रत्न आपको भाग्य व धर्म के क्षेत्र में भी सामान्य लाभ दे सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहू द्वादश भाव में स्थित है। आप राहु ग्रह का गोमेद रत्न धारण करें। रत्न धारण कर आप उदारवादी, महत्वाकांक्षी और उच्च आदर्श वाले व्यक्ति बनेंगे। रत्न शुभता से आप परिश्रम के दम पर सुखी रहेंगे। गोमेद रत्न धारण करने से आपके लिए आध्यात्मिक ज्ञान पाना एक सहज कार्य होगा। आपकी रुचि वेदों और वेदांतों में होगी और आप साधु स्वभाव वाले व्यक्ति बनेंगे। राहु प्रभाव आपके भाग्य में वृद्धि कर आपकी आय प्राप्ति के

भरपूर अवसर देगा। इसके अलावा रत्न धारण के बाद आप विवेकहीनता, छल-कपट, पापपूर्ण विचारों, प्रपंच और नीचकर्म से बचेंगे।

राहु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध दशम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण कर आप आजीविका क्षेत्र में चातुर्य से उन्नति प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको कर्मक्षेत्र में उच्च पद, सम्मान एवं अधिकार शक्ति देगा तथा रत्न पहन कर आप व्यवहार कुशल होंगे। रत्न शुभता से आप धनवान, बुद्धिमान और पितृ-सुखयुक्त होंगे। यह रत्न आपको आजीविका क्षेत्र में व्यर्थ विवादों में सम्मिलित होने से बचाएगा। इस रत्न को धारण करने से आपको अधीनस्थों का सुख-सहयोग प्राप्त होगा। तथा यह रत्न आपके कार्यभार में कमी करेगा। आपके कार्यों में नियमितता आएगी। न्याय और परिश्रम कुशलता में वृद्धि होगी। आपको उत्तम व्यक्तियों के संपर्क में रहने के अवसर प्राप्त होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा आपको जोखिम पूर्ण क्षेत्रों से आय प्राप्ति के अवसर दे सकता है। आपके बड़े भाई में अत्यधिक क्रोध भाव आ सकता है। आपकी वाणी में कठोरता आ सकती है। मूंगा रत्न आपको संतान से संबंधित परेशानियां दे सकता है। इस रत्न से संतान की पैदाइस में विलम्ब या गर्भपात जैसी स्थितियां भी आ सकती है। आपके बड़े भाई बहन वादि-ववाद में सम्मिलित हो सकते है। मूंगा रत्न आपको मित्रों से मतभेद और विरोध दे सकते है। इस रत्न को धारण करने पर आपके विरोधी प्रबल हो सकते है। आपको रोग, ऋण और शत्रुओं की अधिकता से परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके कुटुंब में वादि-ववाद का कारण बन सकता है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में मंगल द्वितीय भाव एवं सप्तम भाव के स्वामी है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपको कुटुंब सुख और धन संचय में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। रत्न प्रभाव से आपको परिश्रम और बुद्धि का सहयोग पूर्ण रूप से नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको सभा में भाषण देने में संकोच भाव दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपका वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है। मूंगा रत्न धारण से आपका जीवन साथी

अत्यधिक क्रोध करने वाला हो सकता है। रत्न प्रभाव आपके जीवन साथी में अत्यधिक जोश, ऊर्जा और उत्तेजना दे सकता है। इस रत्न को धारण करने के बाद व्यापारिक साझेदार से अनबन हो सकती है। ग्रहस्थ जीवन में तनाव, क्लेश और अंशान्ति की स्थिति बन सकती है।

दशानुसार रत्न विचार

बुध
(18/09/2010 - 18/09/2027)

बुध की दशा में आपका नीलम, पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, माणिक्य, लहसुनिया, पुखराज व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(18/09/2027 - 18/09/2034)

केतु की दशा में आपका नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, लहसुनिया, मोती, मूंगा व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व गोमेद रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(18/09/2034 - 18/09/2054)

शुक्र की दशा में आपका नीलम, हीरा व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, लहसुनिया, गोमेद व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व मूंगा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(18/09/2054 - 18/09/2060)

सूर्य की दशा में आपका मोती व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, पन्ना, पुखराज, हीरा व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व गोमेद रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(18/09/2060 - 18/09/2070)

चन्द्र की दशा में आपका नीलम, मोती व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, माणिक्य व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा, लहसुनिया व गोमेद रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(18/09/2070 - 18/09/2077)

मंगल की दशा में आपका नीलम व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, माणिक्य, लहसुनिया, पन्ना, मूंगा व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(18/09/2077 - 18/09/2095)

राहु की दशा में आपका नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, मोती, गोमेद व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

गुरु - 18/09/1991

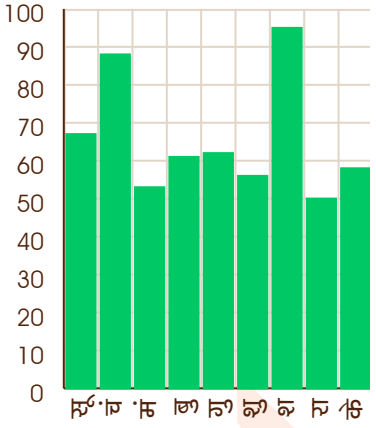

शनि - 18/09/2010

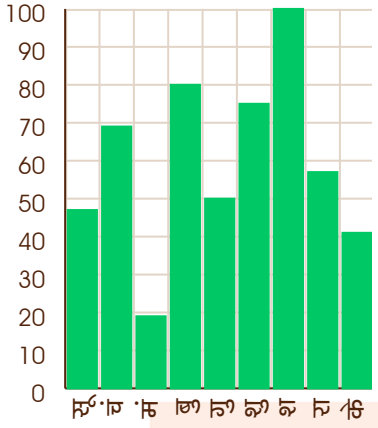

बुध - 18/09/2027

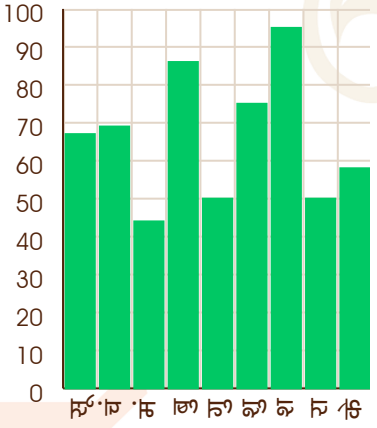

केतु - 18/09/2034

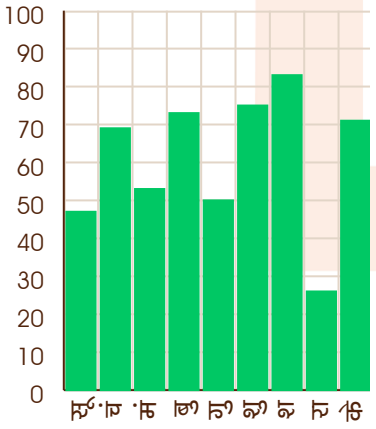

शुक्र - 18/09/2054

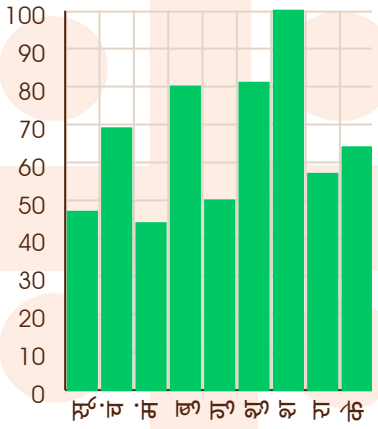

सूर्य - 18/09/2060

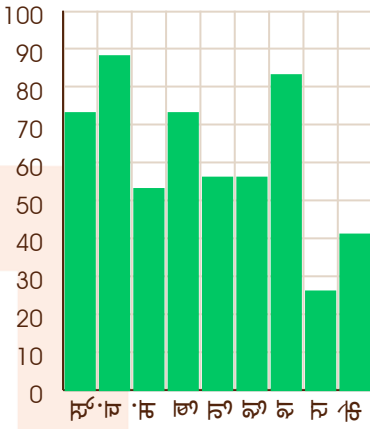

चन्द्र - 18/09/2070

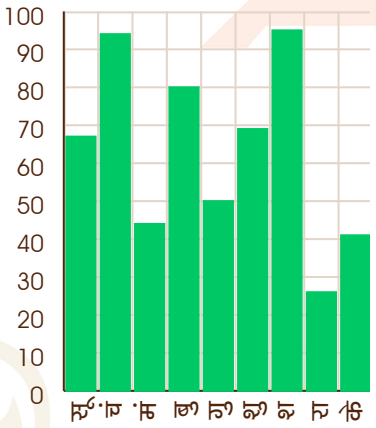

मंगल - 18/09/2077

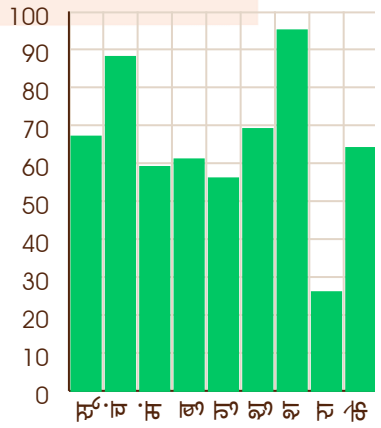

राहु - 18/09/2095

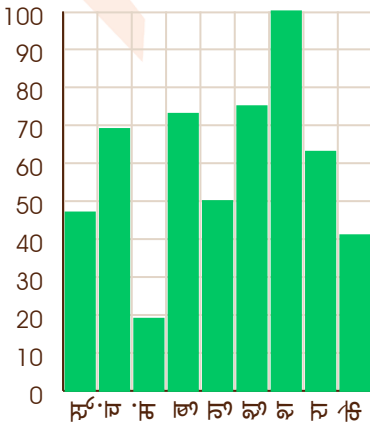

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - ओपल

आपका जन्म तुला राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शुक्र होता है। शुक्र ज्योतिषशास्त्र में शुभ ग्रह माना जाता है, शुक्र को असुरों का देव भी माना जाता है। सभी विलासिता देने वाला शुक्र ग्रह होता है जो जातक को सभी सुख, समृद्धि और ऐश्वर्य प्रदान करता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः तुला राशि के लग्न वाले जातकों को तुला राशि के स्वामी ग्रह शुक्र को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शुक्र ग्रह के लिये ओपल रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी शुक्र राजा के सलाहकार का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज दरबार में सलाहकार तुल्य अधिकार प्राप्त तथा उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को अपने जीवन साथी का सहयोग भी प्राप्त होता है। शुक्र ग्रह यौन अंगों एवं यौन सुखों आदि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको यौन रोग हों या यौन सुख से संबंधित कष्ट हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

ओपल रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है और सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने के कारण उसको ग्रहों का राजा माना जाता है। ओपल रत्न शुक्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शुक्रवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल शुक्र की होरा में श्रेष्ठ होता है। शुक्रवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय शुक्र की होरा का होता है। ओपल को यदि शुक्रवार के साथ-साथ शुक्र के नक्षत्र अर्थात् भरणी, पूर्वाफाल्गुनी और पूर्वाषाढ़ा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

ओपल को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शुक्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

शुक्र का मंत्र - ॐ शुं शुक्राय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शुक्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चांदी, सफेद कपड़ा सवा मीटर का दान करें तो ओपल रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी शुक्र का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या दुर्गा मां की पूजा-स्तुति तथा दुर्गा चालीसा का पाठ करें तो यह ओपल रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शुक्रवार को दुर्गा सप्तशती का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

तुला लग्न वाले जातक यदि ओपल रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली तुला लग्न की है। तुला लग्न का स्वामी शुक्र होने के कारण आपके व्यक्तित्व में शुक्र का प्रभाव दिखाई देता हैं। आपका स्वभाव सौम्यता लिये होता है। आप व्यवहार पसंद हैं। वायु तत्व होने के कारण आप अक्सर योजनाएं बनाते हुए मिल जाते हैं परन्तु उन पर क्रियान्वयन नहीं कर पाते। आपको भोग विलास की वस्तुओं का उपभोग करना और खरीदना ज्यादा पसंद हो सकता है। नई टेक्नोलॉजी का स्वागत करते है। नये चिन्तन व परीक्षण करने वाले (क्रियटिव) होते हैं और संगीत, गायन, नृत्य, एक्टिंग आदि चीजे पसंद करते हैं।

आप अपनी साज-सज्जा और कपड़ों पर विशेष रूप से ध्यान रखते हैं। आपको वात संबंधी पेरशानी अधिक रहती है। आप बहुत जल्दी ही हर माहौल में समझौता कर लेते हैं।

हमेशा आपका अलग ही रूप देखने को मिलता है। आप मे हाजिर जवाब क्षमता अद्भूत है। आप एक जगह टिक कर नहीं बैठ सकते। आदर्शवादी और साहित्यप्रिय होने के कारण आपकी लेखन क्षमता भी अच्छी होती है।

कुंडली के 12 भावों में से 3 भाव विशेष रूप से अशुभ भाव होने के कारण अनिष्ट करने का सामर्थ्य रखते हैं। 6, 8 व 12 वें भाव को त्रिक भावों के नाम से जाना जाता है। तथा त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं कहा जाता है। इन भावों का संबन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती है। कुंडली के आठवें घर से मृत्यु, दुर्घटना, क्लेश, विघ्न, अकाल मत्यु और परेशानियों का विचार किया जाता है। कुंडली का बारहवां भाव व्यय भाव, हानि भाव, मोक्ष भाव, बंधन भाव तथा शयन भाव के नाम से जाना जाता हैं। त्रिक भावों में यह सबसे अंतिम भाव हैं। उपरोक्त विषयों के अलावा इस भाव से कोर्ट कचहरी, अस्पताल, कारावास आदि का विश्लेषण भी किया जाता हैं। इस भाव में किसी भावेश का बैठना या इस भावेश का किसी ग्रह या भावेश से सम्बन्ध अशुभता समझा जाता हैं।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके तुला लग्न के लिए गुरु षष्टेश व तृतीयेश हैं। षष्टेश व तृतीयेश गुरु आपके धन में अल्पता, ऋणग्रस्तता, संतानविरोधी, न्यायालयों में अधिक व्यय, जीवन साथी से अनबन तथा जीवन में समय समय पर धोखो की स्थिति उत्पन्न कर सकता हैं।

शुक्र अष्टमेश व लग्नेश है आप चतुराई से धन-संग्रह, कुटुम्बियों से परेशानियां, स्वास्थ्य में न्यूनता दे सकता हैं। शुक्र अष्टमेश है, इसलिए आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता हैं। जीवन साथी के प्रति निष्ठावान रहने से गृहस्थ जीवन के कष्टों में कमी कर सकते है।

बुध द्वादशेश और नवमेश हैं। नवमेश व द्वादशेश बुध आपके लिए व्यय, हानियों और दंड की स्थिति बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह आपके विवेक, वाक्शक्ति, भाग्य, धर्म, यश में कमी भी करेंगे। आपमें तुरन्त निर्णय की क्षमता, न्यायालयों पर व्यय, राज्य व भाग्य के क्षेत्र में हानि दे सकता है।

आपकी कुंडली के छठे भाव में केतु स्थित हैं, आप अपने शत्रुओं पर हावी रहेंगे, वात सम्बन्धी रोग शीघ्र अपने प्रभाव में ले सकते हैं, भूत-प्रेत बाधा से पीड़ित हो सकते हैं, अत्यधिक बोलने वाले, तथा ननिहाल पक्ष से अपमानित हो सकते हैं। आप अल्पकालीन रोगों से पीड़ित हो सकते है।

राहु आपके द्वादश भाव में स्थित है, राहु की यह स्थिति आपको अवनति का कारण बन सकती है, आप शत्रुहंता बनेंगे। आप नीच प्रवृतियुक्त, कपटी, कुटिल, नेत्ररोगी, असत्यभाषी, दुराचारी, पत्नी की चिंता से ग्रस्त, दुष्ट संगती में धन का अपव्यय करने वाला हो सकते है। धानार्जन तथा व्यय दोनों ही अधिक होते है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 4, 5, 6, 8, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	04/11/1979-15/03/1980	27/07/1980-06/10/1982	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/10/1982-21/12/1984	01/06/1985-17/09/1985	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	21/12/1984-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढेसाती द्वितीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढेसाती तृतीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	कम खर्च
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	स्वास्थ्य
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	धन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	सुख
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है यह भाव आय समृद्धि आदि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही आपके आय स्रोत भी एक से अधिक रहेंगे। जीवन में जमीन जायदाद से भी आप युक्त होंगे तथा इसके क्रय विक्रय से यथोचित लाभ प्राप्त करेंगे। समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपको उचित आदर प्रदान करेंगे। आपको किसी विशिष्ट सम्मान की भी प्राप्ति होगी एवं धनऐश्वर्य से युक्त रहकर आप अपना जीवन यापन करेंगे।

एकादश भाव से द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही वाणी में भी यदा कदा कठोरता रहेगी एवं प्रारंभिक शिक्षा अर्जित करने में आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तथा परिश्रम पूर्वक आप इसमें सफलता प्राप्त करेंगे। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से संतति से आप युक्त रहेंगे लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है साथ ही उनसे आपको जीवन में सुख एवं सहयोग सामान्य रूप से ही प्राप्त होगा। उच्च शिक्षा को आप परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके अच्छे संबंध रहेंगे एवं उनसे न्यूनाधिक मात्रा में सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठ भाव में मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही किसी प्रतियोगी परीक्षा मुक्दमे या चुनाव आदि में आप सफलता अर्जित करेंगे। शरीर यदा कदा गर्मी पित या रक्त विकार आदि से सामान्य अस्वस्थ हो सकता है। लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके साथ ही मामा आदि से भी आपके विशेष संबंधों में अल्पता रहेगी तथा उनसे जीवन में सुख एवं सहयोग भी अल्प मात्रा में प्राप्त होगा।

इस प्रकार आप धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा यत्न पूर्वक पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करेंगे जिससे आपसे वे सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग एवं सुख प्राप्त करेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा एवं आपसी संबंधों में भी सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शेषनाग नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक के शरीर में रोग व्याधि कभी लग जाती है, जिसमें नेत्र रोग, उदर रोग, अनिद्रा आदि सम्मिलित हैं। मानसिक उद्विग्नता के कारण दिल और दिमाग थोड़ा बहुत परेशान रहता है और शारीरिक सुख का प्रायः अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक को अपने जन्मस्थान व देश से दूर रहना पड़ता है और बेवजह अनेक शत्रु हो जाते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं। परन्तु वे अपने षड्यन्त्र में प्रायः सफल नहीं होते। झगड़ा-झंझट, वाद-विवाद में जातक को हार का सामना करना पड़ता है। जातक को न्यायालय से प्रायः नुकसान ही उठाना पड़ता है। जातक को अपनी जिन्दगी में समय-समय पर बदनाम होने का भय बना रहता है। काम बनते-बनते रह जाते हैं। काम करने का ढंग निराला होता है। कामों को सफल करने के लिए थोड़ा बहुत संघर्ष करना पड़ता है, पर सफलता संदिग्ध रहती है।

इसके प्रभाव से आमदनी से अधिक व्यय होने के कारण आर्थिक संकट घेर लेते हैं। जातक के प्रायः अनेक कर्जदार हो जाते हैं। कर्जा उतारने हेतु किए गए प्रयासों में सफलता मिलती है पर थोड़ा बहुत नुकसान भी उठाना पड़ता है। मनोनुकूल काम पूरा होने में थोड़ा विलम्ब होता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है और सामाजिक मान-सम्मान भी मिलता है। जीवन के अन्त में या मरणोपरान्त इनका नाम प्रसिद्ध होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक

करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।

11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुडली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 15 है। एक एवं पाँच के योग से आपका मूलांक 6 होगा। मूलांक 6 का अधिष्ठाता शुक्र है एवं एक का सूर्य तथा पाँच का बुध है। आपके जीवन में इन तीनों ग्रहों की काफी भूमिका रहेगी। मूलांक 6 के प्रभाव से आप एक सौन्दर्य प्रेमी, सुरुचिपूर्ण व्यवहार करने वाले, जनता के मध्य लोकप्रिय व्यक्ति होंगे। ललित कलाओं में आपकी रुचि रहेगी एवं गान, वाद्य, गीत संगीत सुनने का शौक रहेगा। आप प्रत्येक कार्य में स्वच्छता पसन्द करेंगे। आपके अन्दर दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करने की शक्ति रहेगी एवं उन्हें अपना बना लेने की कला रहेगी।

सूर्य के प्रभाव से आप जीवन में सदैव प्रकाशित रहना चाहेंगे। परोपकार में हिचकेंगे नहीं तथा अपने कार्य को निष्पक्ष एवं ईमानदारी से करेंगे। बुध के प्रभाव से आपमें वाणी चातुर्य का विकास होगा। आप सोच-समझकर वाणी व्यवहार करेंगे। तर्क शक्ति अच्छी होगी तथा दूसरों को अपनी बात सहज में समझाने की सामर्थ्य रहेगी। आपकी समाज सेवा के कार्यों में रुचि रहेगी। दान पुण्य के कार्य आपके हाथ से होंगे। विद्याध्यन आपके लिये हितकर है एवं अपने बुद्धि चातुर्य, विद्या बुद्धि के सहारे अपने जीवन में प्रारम्भ से ही सफलता अर्जित करेंगे। एकाध असफलताऐं भी मिलेंगी। लेकिन इनसे आप बिना विचलित हुये अपने जीवन के लक्ष्य पर पहुंचेंगे एवं घर परिवार, समाज में नाम कमायेंगे।

भाग्यांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आपकी कल्पनाशक्ति उन्नत किश्म की होगी। बौद्धिक स्तर आपका उच्च कोटि का रहेगा एवं बुद्धि जन्य कार्यों में आपकी विशेष अभिरुचि रहेगी। शारीरिक श्रम साध्य कार्यों में आपकी दिलचस्पी कम रहेगी। चन्द्रमा जिस तरह घटता-बढ़ता रहता है, उसी प्रकार आपके भाग्य का सितारा भी कभी तो एकदम ऊँचाईयों को प्राप्त करेगा और कभी आप एकदम घोर अंधकार में अपने आप को पायेंगे। ऐसे समय में धैर्य रखना आपके लिए अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि आपके भाग्य का सितारा भी पुनः पूर्णिमा की तरह प्रकाशित होगा। धैर्य न रखना आपकी कमजोरियों में रहेगा।

भाग्य आपका बदलता रहेगा। एक स्थिर मुकाम पर कभी भी नहीं पहुँचेगा। आपको सम्पूर्ण जीवन में भाग्योदय की कुछ कमी खटकती रहेगी। आपको अधिकारियों से लाभ रहेगा तथा धन-धान्य से आप सुखी रहेंगे। आपको अपनी चलायमान प्रकृति पर नियंत्रण रखना होगा अन्यथा एक के बाद एक कार्यों को बीच में छोड़कर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति वश आपके कार्य देर से सफल होंगे और कभी असफल भी होंगे।

आपका मूलांक 6 है तथा आपका भाग्यांक 2 है। मूलांक 6 का स्वामी शुक्र है तथा भाग्यांक 2 का स्वामी चंद्र है। मूलांक 6 और भाग्यांक 2 के बीच सम संबंध है। इसके प्रभाववश आप एक कलाप्रिय व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान स्थापित करेंगे। आपकी चौंसठ कलाओं में से एकाधिक कलाओं में अच्छी रुचि रहेगी। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आप अपनी कलाओं का भरपूर उपयोग करेंगे एवं आप ऐसा ही रोजगार पसंद करेंगे, जिसमें कला के द्वारा अच्छा आर्थिक लाभ प्राप्त होता रहे। शुक्र एवं चंद्र के योग से आप एक लोकप्रिय तथा भाग्यशाली

व्यक्ति के रूप मे उच्च कोटि की ख्याति अर्जित करेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। लेकिन भौतिक सुख-सुविधाओं की वस्तुओं पर आप अत्यधिक धन व्यय करेंगे, जिससे कभी-कभी आपको थोड़ी बहुत आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। आपकी सामान्य रुचियां ललित कला एवं साहित्य इत्यादि में हो सकती है। सामाजिक स्तर पर आप एक मिलनसार, शीघ्र सफलताएं प्राप्त करने वाले, उच्च कोटि के व्यक्ति के रूप में स्थापित होंगे। नगद धन संग्रह की अपेक्षा आपको भौतिक सुख-संपदा का अधिक लाभ प्राप्त होगा।

आपका भाग्योदय 29 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 38 वर्ष की अवस्था पर आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी तथा 47 वर्ष की आयु पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 6 की 3 एवं 9 से मित्रता है तथा भाग्यांक 2 की 7 एवं 9 से मित्रता है। अतः आपके जीवन में 2, 3, 6, 7, 9 के अंक विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा मे, आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए फरवरी, मार्च, जून, जुलाई, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक के अंक से मेल स्थापित करें तथा एक ही स्थान पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 6 एवं भाग्यांक 2 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 2, 3, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 2, 3, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70

9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बन जाएंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

शुक्र दिनांक 21 अप्रैल से 21 मई तक तथा 24 सितंबर से 13 अक्तूबर तक सूर्य, पाश्चात्यमतानुसार, वृष तथा तुला राशि में रहता है, जो भारतीय मतानुसार 13 मई से 14 जून तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर तक का समय होता है। यह शुक्र की स्वराशि है। 14 मार्च से 12 अप्रैल तक मीन राशि से शुक्र उच्च का होता है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक छह के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

आपके लिए शुक्रवार, मंगलवार एवं गुरुवार के दिन शुभ रहेंगे और यदि आपकी शुभ तारीखों में शुक्रवार, मंगलवार एवं गुरुवार पड़ रहा हो तो ऐसी तारीखें एवं दिन आपके लिए विशेष फलदायी सिद्ध होंगे।

शुभ तारीखें

आपके लिए अंग्रेजी माह की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखें किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार या किसी उच्चाधिकारी से संबंध या कोई भी व्यवसाय संबंधी नया कार्य प्रारंभ करने हेतु अधिक उपयुक्त तथा विशेष फलदायक रहेंगी।

अशुभ तारीखें

आपके लिए कोई भी महत्वपूर्ण कार्य, रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य, पत्र व्यवहार संबंधी कार्य प्रारंभ करने हेतु 1, 8, 10, 17, 19, 26 एवं 28 तारीखें में शुभ नहीं है। अतः आप इन दिवसो में कोई भी कार्य प्रारंभ करने की भूल न करें। यही आपके लिए उचित रहेगा।

मित्रता या साझेदारी

आप केवल उन्हीं व्यक्तियों से अधिक मित्रता रखें जिनका जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखों में अथवा 13 मई से 14 जून 12 अक्तूबर से 13 नवंबर एवं 14 मार्च से 13 अप्रैल के बीच हुआ हो। ऐसे व्यक्ति सुख एवं दुख के समय में भी अपनी मित्रता का परिचय देंगे तथा आपके रोजगार-व्यापार में भी सहायक होंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

जिन महिलाओं का जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीख को हुआ हो तथा जिनका मूलांक 3, 6, 9 हो, ऐसी महिलाएं आपके लिए प्रेम संबंध या विवाह संबंध हेतु उचित रहेंगी तथा आपके रोजगार आदि में भी आपको सफलता के शिखर पर पहुंचाएंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए शुभ रंग हल्का नीला, आसमानी, गहरा नीला, हल्का गुलाबी होने चाहिए। नीला हल्का नीला होना चाहिए और हो सके तो घर की दीवारें, चादर आदि का चुनाव भी इन्हीं रंगों के अनुरूप ही करें और यदि स्वास्थ्य में अच्छा परिवर्तन लाना हो तो इन्हीं रंगों के वस्त्र पहनें और हो सके तो इन्हीं रंगों में से किसी एक रंग का रुमाल हर समय अपने पास रखें, जो आपके लिए विशेष फलदायी रहेगा।

वास्तु एवं निवास

यदि आप स्वयं का भवन निर्माण के इच्छुक हैं तो इसके लिए आवश्यक है कि आप सही दिशा का चयन करें। आपके लिए अग्नि कोण दिशा उत्तम रहेगी। मकान क्रमांक 3, 6, 9 हो तो श्रेष्ठ रहेगा। आप शहर के अग्नि कोण क्षेत्र या भवन के अग्नि कोण क्षेत्र में निवास करें। वह आपके लिए उत्तम रहेगा। अतः आप अपने रोजगार संबंधी कार्यों को करते समय भी इन्हीं दिशाओं का चुनाव करें जो आपके लिए श्रेष्ठ फलदायक रहेगा। भवन का रंग, फर्नीचर का रंग हल्का नीला, आसमानी रखना श्रेष्ठ रहेगा।

शुभ वाहन नं

यदि आप चाहते हैं कि आपकी यात्रा मंगलमय हो तो यात्रा के समय उन्हीं अंकों का चुनाव करें जो आपके मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल स्थापित करें। मूलांक 6 के मित्र अंक 3, 9 हैं। अतः आप यात्रा वाहन, रेलवे सीट में इन्हीं अंकों का चुनाव करें और रहने के लिए कमरे का चयन करते समय नंबर 105 = 6 आदि होना उचित है। अगर आप स्वयं का वाहन खरीदते हैं तो उसका पंजीकरण क्रमांक 3, 6 एवं 9 ही होने चाहिए। जैसे अंक 5235 = 6 इत्यादि। ऐसा वाहन आपको अच्छा फलेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी, आपको फेफड़ों से संबंधित रोग, धातु क्षीणता, स्नायु निर्बलता, सीने की कमजोरी, मूत्र रोग, कफ जनित रोग, कब्जियत तथा जुकाम जैसे रोग पीड़ा प्रदान करेंगे। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको कार्त्तवीर्यार्जुन की पूजा एवं उपासना करनी चाहिए। स्त्री जातकों को संतोषी माता का व्रत करना चाहिए।

व्यवसाय

रेस्टोरेंट, होटल, ढाबे, भोजनालय, शिल्पकार, डिजायनर, महाजनी कार्य, संगीतज्ञ, उपन्यासकार, नाट्यकार, कहानीकार, बागवानी, वस्त्र व्यवसायी, अभिनेता, इत्र, तेल और अन्य तेलीय पदार्थों के विक्रेता, पुष्प विक्रेता, वस्त्राभूषण व्यवसाय, रेशम, टेरीलीन, टेरीन, ऊनी वस्त्रादि के विक्रेता, मिष्ठान व्यवसाय, घड़ीसाजी, नृत्याभिनय और काव्य तथा साहित्योपार्जन, सार्वजनिक कार्य, समाज सेवा, दास वृत्ति, यातायात, मुद्रणालय, खाद्य विभाग संबंधी समस्त कार्य।

व्रतोपवास

शुक्रवार को शुक्र अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। इकतीस या इक्कीस शुक्रवारों को शुक्र का व्रत करें। सफेद वस्त्र धारण करें एवं सफेद वस्तुओं का दान करें। यथाशक्ति शुक्र मंत्र का स्फटिक माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

आप हीरा धारण करें। यदि आप हीरा नहीं खरीद सकते तो ओपल, सफेद पुखराज, झरकन धारण करें। 51 सेंट का हीरा आप शुक्ल पक्ष में, शुक्रवार के दिन लाभ के चौघड़िया मुहूर्त में, प्लेटिनम या चांदी की अंगुठी में, दायें हाथ की अनामिका उंगली में त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप शुक्र ग्रह की उपासना करें, अथवा भगवती दुर्गा की आराधना करें भगवती दुर्गा के अष्टाक्षरी मंत्र 'ओम् ह्रीं दुं दुर्गायै नमः' का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा अष्टमी के दिन व्रत करें एवं दुर्गा सप्तशती का पाठ करेंगे तो आप विभिन्न रोगों और समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवती दुर्गा के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए शुक्र के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, शुक्र के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

शुक्र गायत्री मंत्र - ऊँ भृगुजाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप शुक्र का ध्यान करें, मन में शुक्र की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

हिमकुंदमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ शुक्र को अनुकूल बनाने हेतु शुक्र के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ साठ माला का हैं। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।। जप संख्या 16000।।

वनस्पति धारण

आप शुक्रवार के दिन, एक इंच लम्बी सरफोंखा की जड़ ला कर, सफेद धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या प्लेटिनम या चांदी के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे शुक्र के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक शुक्रवार को एक बाल्टी या बर्तन में हरड़, बहेड़ा, आंवला, इलायची, केसर और मैनसील आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ शुक्र के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

शुक्र की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को शुक्र के पदार्थ चांदी, सोना, चावल, घी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, हीरा, सफेद अश्व, दही, गंध द्रव्य, चीता, गौ, भूमि आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

शुक्र को अनुकूल बनाए रखने हेतु शुक्र यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शुक्रवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म स्वाती नक्षत्र के चतुर्थ चरण में तुला लग्नोदय काल हुआ था। तुलालग्नोदय काल मेदिनीय क्षितिज पर मीन नवमांश के साथ-साथ कुंभ राशि का द्रेष्काण भी उदित था। आपके जन्म लग्नोदयादिक प्रभाव से यह दृश्य हो रहा है कि आप गपशप करने वाले होंगे। आपका जीवन आकर्षक परंतु आप दूसरों के साथ इर्ष्या रखने वाले होंगे।

आप अपनी आयु के 30 से 35 वें वर्ष के अंतराल में काफी धन संपति का अर्जन करेंगे तथा आपका जीवन आनंदपूर्वक व्यतीत होगा। आपका रूप आकर्षित होगा आप अपने प्रताप से बहुत धन का व्यय करेंगे तथा अपना सांसारिक जीवन किस प्रकार बिताया जाए। इस बात का अन्वेषण करेंगे। आप अपने फिजूल खर्ची पर नियंत्रण करेंगे तो अनुकूल रहेंगे। अन्यथा आपकी वृद्धावस्था अति सुखद ही नहीं होगी अपितु वह अवस्था निरस भी हो जाएगी।

आप धार्मिक भावना के प्राणी होंगे। आप अनेक तीर्थ स्थलों का भ्रमण कर सत्यकार्यों में दान प्रदान करेंगे। यह संभाव्य है कि आपमें अनेक गुण विद्यमान होंगे तथा आप विश्वसनीयता पूर्वक व्यवहार करेंगे। आप भगवान की कृपा से उत्तम संतान के पिता होंगे। वे अपना नाम एवं अपनी प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे।

आपकी अपनी जीवन संगिनी के रूप में उपयुक्त एवं आदर्श पत्नी प्राप्ति हेतु मिथुन अथवा कुंभ राशि की जातक का चयन करना उत्तम होगा। परंतु यदि आपकी पत्नी कर्क, मकर अथवा मीन राशीय समुदाय की हुई तो वह आपकी आवश्यकता अथवा अनुरूपता के योग्य नहीं होंगी।

परंतु यदि आपकी संगिनी आपको श्रेय नहीं प्रदान करे तो आपको हतोत्साह होने की आवश्यकता नहीं है। आप किसी भी तरह से अपनी पत्नी से विद्वेष नहीं करेंगे।

वास्तव में आप बहुतायत में अपने घरेलू वातावरण को अनुकूल करने के लिए तथा सुव्यवस्थित करने के लिए आपकी पत्नी बेशकीमती आभूषण एवं बहुमूल्य वस्त्रादि से युक्त अपने परिवार के जीवन यापन को प्रमुखता देगी। आप अपने भवन को अपने मित्र एवं सगे संबंधियों की दृष्टि में आकर्षक बनाएंगे। इसके बिना आप अपने रहन सहन को दुष्कर अनुभव करेंगे।

तुला प्रभावित जातक सामान्यतः स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से उत्तम एवं उच्च स्तरीय आनंद से युक्त होता है। परंतु वह छुआछूत की बिमारी से वह अद्योगामी भी हो सकता है एवं आयुवृद्धि के कारण मूत्र संबंधी समस्याएं उत्पन्न हो सकती है। अस्तु आपको इसके विरूद्ध सुरक्षात्मक कदम उठाने चाहिए।

आप हर दशा में धन एवं सुंदर सुखद भवन से युक्त होंगे। आप समयानुकूल अपने कार्य कलाप का संपादन करे निश्चित समय पर भोजनादि कर सकते हैं बशर्ते कि आप निम्नांकित निर्देशन का अनुपालन कर सकें।

आपके लिए अनुकूल एवं उत्तम रंग लाल, नारंगी एवं सफेद रंग है। इसके अतिरिक्त आपको पीला एवं हरा रंगों का त्याग करना चाहिए।

आपके लिए अंको में 1, 2, 4 एवं 7 अंक अनुकूल है। इसके अतिरिक्त 3, 5, 6 एवं 9 अंक आपके लिए हानिकारक है।

आपके लिए साप्ताहिक वारों में भाग्यशाली दिन शनिवार तथा शुक्रवार है। परन्तु आपको रविवार, गुरूवार, मंगलवार एवं सोमवार के दिनों का परित्याग करना चाहिए क्योंकि ये चारों दिन आपके लिए अनुकूल नही है। बुधवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

ग्रह फल

सूर्य

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

सिंह राशि में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता-पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराकमी, धर्मात्मा, पुत्रवान, बुद्धिमान, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

सिंह राशि में शनि हो तो जातक लेखक, अध्यापक, कार्यदक्ष, हठी, कमसन्तान, अभागा एवं ईर्ष्यालु स्वभाव वाला होता है।

राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

केतु

षष्ठभाव में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। तुला लग्न में जन्में जातक सामान्यतया स्वस्थ एवं सुगठित शरीर के व्यक्ति होते हैं तथा उनमें आकर्षण विद्यमान रहता है। उनकी प्रवृति हास्य प्रिय रहती है तथा बच्चों के प्रति मन में विशेष स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। सुन्दरता के ये प्रिय होते हैं तथा सुन्दर वस्तुओं एवं दृश्यों के प्रति आकर्षित रहते हैं। स्वभाविक रूप से ये अन्य जनों को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं देते तथा सबसे समानता का व्यवहार करते हैं जिससे इनकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि बनी रहती है। कला से इनका भावनात्मक संबंध रहता है तथा सत्कर्मों से इनकी आजीविका चलती है। नीति सम्बन्धी कार्यों में ये दक्ष रहते हैं अतः राजनीति के क्षेत्र में नेतृत्व प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन ये एक सिद्धांत पर आस्था नहीं रखते तथा अवसरानुकूल उसमें परिवर्तन करते रहते हैं। साथ ही इनमें भावुकता तथा संवेदनशीलता का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आप हास्य प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा गम्भीरता आपको विशेष रूचिकर नहीं लगेगी। प्राकृतिक दृश्य आपको अत्यंत ही प्रिय होंगे एवं कला के क्षेत्र में क्रियाशील रहेंगे तथा इससे आपका भावनात्मक संबंध होगा।

राजनीति या कार्य क्षेत्र में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके पराक्रम एवं प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप किसी नवीन सिद्धांत या ग्रंथ आदि का भी प्रतिपादन कर सकते हैं जिससे आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि में वृद्धि होगी।

लग्न में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक शांति तथा सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपका स्वरूप सुन्दर एवं व्यक्तित्व आकर्षक होगा फलतः अन्य सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। पिता के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा उनकी सेवा करने में आपको प्रसन्नता की अनुभूति होगी। बाल्यवस्था में आप संघर्षशील रहेंगे परन्तु युवावस्था के बाद आपको सुख एवं समृद्धि की प्राप्ति होगी।

कार्य क्षेत्र में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। कला एवं संगीत में भी आपकी रूचि रहेगी तथा इस क्षेत्र में आपको जीवन में मान सम्मान धनैश्वर्य तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति हो सकती है। आप का स्वभाव उदार एवं परोपकार की भावना से युक्त रहेगा तथा अन्य जनों की समय समय पर आप सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे।

आप एक आस्तिक व्यक्ति होंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा होगी तथा समय समय पर धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करते रहेंगे। साथ ही मित्र वर्ग में भी आप लोकप्रिय होंगे तथा वे सभी शिक्षित एवं गुणवान होंगे तथा आपको उनसे लाभ एवं सहयोग

मिलता रहेगा। इसके अतिरिक्त आप शांत न्याय पर विश्वास करने वाले तेजस्वी एवं पराक्रमी पुरूष होंगे तथा सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए अपना समय व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में अपने प्रयत्न एवं परिश्रम से धनार्जन करने में सफल रहेंगे। आपको पैतृक सम्पति की प्राप्ति अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु बहुमूल्य रत्न तथा धातुओं को आप अपनी योग्यता तथा लगन से अर्जित करने में अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे। आपकी रूचि जायदाद या भूमि संबंधी क्रय विक्रय या सम्बन्धित कार्यो में रहेगी जिससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा परिवार के सहयोग से जीवन में इच्छित उन्नति तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। लेकिन आपात्काल में स्वयं को व्यवस्थित करने में असुविधा की अनुभूति करेंगे।

पारिवारिक जनों की प्रसन्नता तथा सुविधा कार्यो में आप सतत यत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक शान्ति एवं सुख संसाधनों पर काफी व्यय करेंगे जिससे वे लोग सन्तुष्ट रह सकें। आपकी वाणी प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को तर्क पूर्ण वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे तथा आपसे लोग सहमत भी रहेंगे। मिष्ठान के आप प्रिय रहेंगे तथा इसके भक्षण से आपको किंचित प्रसन्नता प्राप्त होगी लेकिन प्रौढ़ावस्था में आप नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त कर सकते है इसके अतिरिक्त धार्मिक परम्पराओं का आप पूर्ण पालन करेंगे तथा शुभ एवं मंगल कार्य भी समय समय पर करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सज्जन पुरूषों के प्रति आपके मन में हमेशा आदर का भाव रहेगा।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय तृतीय भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति उत्तम रहेगी तथा किसी भी वस्तु या विषय को काफी समय तक याद रखने मे समर्थ रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनका आपको वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही वे आपके प्रति कर्तव्य परायण तथा विश्वास पात्र रहेंगे। आप भी पारिवारिक शान्ति के लिए उनकी गलतियों को क्षमा करने में समर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा अपने सिद्धांत के भी पक्के होंगे चाहे इससे आपको कोई परेशानी या समस्याएं ही उत्पन्न क्यों न हों। इसके अतिरिक्त आप एक स्पष्टवादी व्यक्ति होंगे तथा जिसे सही समझेंगे उसे सबके समक्ष कह देंगे चाहे उसका प्रभाव कुछ भी हो।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी पुरूष होंगे तथा नेतृत्व के गुणों से भी युक्त रहेंगे। साथ ही किसी भी मनुष्य या वस्तु के गुणावगुणों को परखकर ही उसको बारे में अपने राय प्रदान करेंगे। आप सद्विचारों के व्यक्ति होंगे तथा धार्मिक विचारों की भी प्रधानता रहेगी। आधुनिक संचार संसाधनों से आप युक्त रहेंगे यथा दूरभाष, दूरदर्शन या वाहन आदि से युक्त रहकर सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही संगीत एवं हस्त कला के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा यदा कदा इसमें भी अपना समय व्यतीत करेंगे। आपकी समीपस्थ या दूर देशों की यात्राएं समय समय पर होती रहेंगी तथा इनसे आपको वांछित लाभ भी प्राप्त होगा। आपकी अध्ययन के प्रति रूचि रहेगी तथा धार्मिक ग्रन्थ, साहित्य तथा वैज्ञानिक पुस्तकों का आप रूचिपूर्वक अध्ययन करेंगे इसके अतिरिक्त आप किसी संस्था के पदाधिकारी एवं दीन दुःखियों के प्रति दयालु रहेंगे जिससे समाज में सम्माननीय समझे जाएंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्त करने में समर्थ होंगे। आपको आधुनिक सुख-संसाधनों की भी प्राप्ति होगी जिसका सुखपूर्वक उपभोग करेंगे। आप एक समृद्ध एवं वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आदरणीय व्यक्ति माने जायेंगे।

आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा चल एवं अचल सम्पत्ति से युक्त होकर उसके स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। विवाह के बाद पत्नी के प्रभाव या सहयोग से भी आपको वांछित चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। इससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आपको समय समय पर धन सम्पत्ति की प्राप्ति होती रहेगी। आप चल एवं अचल दोनों प्रकार की सम्पत्ति से युक्त होंगे। अतः इन पर आप इच्छित निवेश कर सकते है।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी तथा यह विस्तृत क्षेत्र में होगा तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं उपकरणों से सुसज्जित रहेगा। आप भी व्यक्तिगत रूप से इसके आकर्षण एवं सुन्दरता बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील होंगे। आपका घर किसी समृद्ध कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन से भी आप युक्त होंगे तथा इनकी संख्या एक से अधिक भी हो सकती है।

आपकी माताजी सुन्दर, शिक्षित, बुद्धिमान एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक व्यवहार कुशल महिला होंगी तथा पारिवारिक सदस्यों का मर्जी से लालन पालन करेंगी जिससे सभी लोग उनको वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आपकी उन्नति में भी उनका मुख्य योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं आज्ञाकारिता का भाव रखेंगे तथा सुख-दुःख में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे इससे आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में आपकी प्रारंभ से ही रूचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आप छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक लेकर परीक्षाएं उतीर्ण करेंगे। स्नातक परीक्षा भी आप संतोष जनक रूप से उतीर्ण करेंगे। इससे आपके मन में उत्साह के भाव में वृद्धि होगी तथा भविष्य में भी उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए स्वयं को तैयार करेंगे। स्वजनों एवं संबंधियों से भी आप वांछित आदर, स्नेह एवं प्रोत्साहन प्रदान करेंगे।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा आपके सभी कार्य-कलापों में उत्कृष्ट बुद्धिमता की छाप होगी। इससे सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप में सही समय में तत्काल सही निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे समान्यत्या कार्यो में आपको सिद्धि प्राप्त होगी वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म में आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा उनके ज्ञानार्जन से सामाजिक प्रभाव में वृद्धि करेंगे। संगीत कला एवं कविता तथा पाश्चात्य साहित्य के प्रति आपकी ज्ञानार्जन की इच्छा होगी तथा स्वपरिश्रम से इस क्षेत्र का न्यूनाधिक ज्ञान अर्जित करने में समर्थ होंगे।

पंचमभावा में शनि की राशि के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी विशेष रूचि होगी तथा मनोरंजन शान्ति एवं आत्म सन्तुष्टि के लिए आप प्रेम-प्रसंग स्थापित करेंगे। आपके प्रेम में भौतिक तथा भावात्मक दोंनो प्रकार का आकर्षण विद्यमान होगा। अतः इस क्षेत्र में आपको मर्यादा तथा नैतिकता का अवश्य ध्यान रखना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना न करना पड़े।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा कन्या संतति अधिक होगी। आपकी संतति बुद्धिमान योग्य एवं पराक्रमी होगी तथा इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनकी आज्ञा का पालन भी करेंगे। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को वे माता-पिता की सलाह से सम्पन्न करेंगे। इससे आपस में सद्भाव एवं विश्वास का भाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों का विशेष अपनत्व का भाव होगा एवं अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे माता के माध्यम से ही सम्पन्न करेंगे लेकिन आदर का भाव दोनों के प्रति समान होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में माता-पिता की तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः इस संदर्भ में आप भाग्यशाली व्यक्ति होंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति योग्य सिद्ध होगी तथा प्रारंभ से ही वे अध्ययन के क्षेत्र में विशेष उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा का पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा उसमें आवश्यक व्यय करके आधुनिक परिवेश में उन्हें शिक्षा दिलाएंगे। वे भी स्वभाव से मृदु, सुन्दर, सक्रिय एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अन्य जनों को अपने कार्य कलापों तथा बुद्धिमता से प्रभावित एवं प्रसन्न रखेंगे जिससे वे वांछित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। इससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा संतति पर आप गौरवान्वित होंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है अतः इसके प्रभाव से आप को जीवन में किसी उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति से विरोध का सामना करना पड़ेगा साथ ही आपके शत्रु भी सामाजिक मान सम्मान में न्यूनता करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे। जिससे समाज में आपके प्रभाव में अल्पता आएगी। आपके सेवक आज्ञाकारी तथा विश्वास पात्र रहेंगे तथा ईमानदारी से आपकी सेवा में हमेशा तत्पर रहेंगे लेकिन यदि आप उनको उचित पारिश्रमिक प्रदान नहीं करेंगे तो वे घर में किसी प्रकार की चोरी आदि भी कर सकते है अतः ऐसी समस्याओं का निराकरण पहले ही कर लेना चाहिए।

आपकी प्रवृत्ति अधिक से अधिक धन संग्रह करने की रहेगी साथ ही कई प्रकार से पूंजीनिवेश भी करेंगे परन्तु इसमें हानि की अवस्था में आपको ऋण आदि लेना पड़ सकता है लेकिन आपको कर्ज देने वाले विशेष सहयोग नहीं देंगे तथा विलम्ब की अवस्था में आपके सम्मान को प्रभावित करेंगे। अतः धन व्यय या पूंजीनिवेश आदि के कार्यो में आपको अत्यधिक बुद्धिमता एवं सतर्कता का परिचय देना चाहिए। इसके साथ ही अवसरानुकूल बन्धुवर्ग या संबन्धी भी आर्थिक मामलों में आपको हानि प्रदान कर सकते हैं। अतः ऐसे समय में स्थिति को पूर्ण समझकर ही कार्य करने चाहिए।

जीवन में सम्बन्धियों या अन्य जनों से मुकद्दमे बाजी का भी संकेत मिलता है। इसका संबंध आर्थिक, जमीन जायदाद या कुछ फौजदारी मामलों से हो सकता है। साथ ही यदा कदा दाम्पत्य जीवन में भी मधुरता के भाव में न्यूनता आ सकती है। मामा मामियों से आपके संबंध सामान्य ही रहेंगे तथा परस्पर विशेष सहयोग के भाव में न्यूनता रहेगी। शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए उचित खान पान का प्रयोग करें। जब कभी आपको अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तब आप गुप्त कार्यो के द्वारा शान्ति एवं सफलता अर्जित करने की सोचेंगे इसमें या तो पूजा संबन्धी कार्य हो सकता है अन्यथा आप अपने कठोर कार्यो से प्रतिशोध की भावना से पूर्ण करेंगे जिससे आपको न्यूनाधिक रूप से लाभ एवं उपलब्धियां अर्जित हो सकती है।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है सामान्यतया मेष राशि की सप्तम स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी उत्साही पराक्रमी एवं धनाढ्य होता है। शुक्र के प्रभाव से वह आधुनिक विचार धाराओं से युक्त सुन्दर एवं कला प्रेमी होता है एवं स्वभाव में भी विनम्रता एवं सुशीलता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी विनम्र स्वभाव की महिला होंगी आधुनिकता के भावों की उनमें प्रबलता होगी तथा भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों की प्रति विशेष रूचि होगी। अपने संभाषण में वह मधुर शब्दों का उपयोग करेंगी। शुक्र के प्रभाव से उनके कर्तव्य परायणता भी होगी एवं परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदर एवं आकर्षक वर्ण की दर्शनीय महिला होंगी तथा उनका कद भी मध्यम रहेगा उनका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा शरीर के अंग प्रत्यंगों की पुष्टता के कारण सौन्दर्य में आकर्षण की वृद्धि होगी तथा उनके व्यक्तित्व में भी निखार आएगा साथ ही सौन्दर्य में वृद्धि के लिए वह आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का मुक्त रूप से उपयोग करेंगी एवं सुंदर तथा आकर्षक परिधानों से सुसज्जित होंगी संगीत एवं कला के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा।

आपका विवाह किसी समीपी महिला संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रबल आकर्षण तथा प्रेम की भावना रहेगी। सांसारिक महत्व के कार्यो को परस्पर सहयोग एवं सहमति से सम्पन्न करेंगे इससे समानता तथा विश्वसनीयता के भाव में वृद्धि होगी। आप दोनों शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा जीवन में सिद्धांतों में भी समानता रहेगी फलतः आपसी संबंधों में मधुरता के कारण जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका ससुराल किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा सामाजिक रूप से भी उनकी प्रतिष्ठा बनी रहेगी। सास ससुर से आपके अच्छे संबंध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण स्नेह की प्राप्ति होगी। आप भी उन्हें यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त उनसे नैतिक तथा आर्थिक सहयोग भी मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का पूर्ण श्रद्धा एवं सेवा का भाव रहेगा एवं सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी। देवर एवं ननदों को भी अपने सद्व्यवहार एवं मधुर वाणी से प्रसन्न रखेंगी तथा उनसे वांछित सम्मान मिलेगा जिससे परिवार में शांति बनी रहेगी।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्य में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी। यदि स्त्री या स्त्रीवर्ग से साझेदारी की जाये तो आपको विशिष्ट उपलब्धियां मिलेंगी तथा आपस में विश्वसनीयता का भाव भी बना रहेगा।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप में आध्यात्मिक शक्ति विद्यमान रहेगी। साथ ही ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि में आपकी श्रद्धा रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञान अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे। आपके अन्दर सक्रियता के भाव की सदैव प्रबलता रहेगी तथा प्रतिभा से भी युक्त रहेंगे अतः आप कोई भी सृजनात्मक कार्य दूसरों की अपेक्षा आसानी से कर लेंगे। ज्यौतिष आदि के क्षेत्र में आप काफी उन्नति एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इसमें आपको ख्याति भी प्राप्त होगी। आपको मित्र या बन्धु वर्ग के द्वारा जायदाद संबन्धी लाभ का योग बनता है। साथ ही पैतृक सम्पत्ति भी न्यूनाधिक रूप से आपको अवश्य प्राप्त होगी। जायदाद एवं चल अचल सम्पत्ति के स्वामित्व के द्वारा समाज से आपको इच्छित आदर एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। इस प्रकार आप एक वैभवशाली पुरूष के रूप में जाने जाएंगे ।

विवाह आदि के समय आपको आवश्यक मात्रा में धन या उपहार आदि की प्राप्ति होगी तथा अपेक्षानुसार आपके ससुराल पक्ष के लोग आपको ये सब भेंट करेंगे। साथ ही आप आवास को सुदंर सजावट से युक्त रखेंगे तथा समय पर पार्टियों का भी आयोजन करते रहेंगे। बीमा आदि से भी समय समय पर लाभ होगा अतः बीमा आपको अवश्य कराना चाहिए। आपके घर में चोरी की कोई बड़ी घटना नहीं होगी परन्तु सामान्यतया इन घटनाओं से कोई परेशानी नहीं होगी। आपकी सतर्कता की प्रवृति से जीवन में दुर्घटनाएं नहीं होगी तथापि आपको तीव्र गति का वाहन आदि नहीं चलाना चाहिए। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सुख पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे ।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा पारिवारिक नियमों का पालन करते रहेंगे। जीवन में आप भौतिक सुख की प्राप्ति के लिए यत्नशील रहेंगे। आपकी ईश्वर की सत्ता में पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा भाग्य बल से जीवन में धनऐश्वर्य अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। अवसरानुकूल तीर्थ स्थानों की यात्रा भी करेंगे तथा आप एक धर्मनिष्ठ पुरूष के रूप में जाने जाएगें।

विभिन्न धर्मो के ऊपर लिखे गए ग्रंथों का आप रूचिपूर्वक अध्ययन करेंगे। साथ ही ध्यान योग, तंत्र तथा अध्यात्म आदि के प्रति भी आपका विश्वास रहेगा तथा इनसे संबंधित विषयों का भी समय समय पर अध्ययन करके ज्ञानार्जन करते रहेंगे। यदि आप अपनी दृढ़ संकल्पता में वृद्धि कर सके तो इससे आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति में वृद्धि होगी तथा पूर्वाभास एवं भविष्य वाणी करने में समर्थ हो सकेंगे।

आपकी दैनिक पूजा जीवन में आपको ऐश्वर्य प्रदान करने में शक्ति प्रदान करेंगी परन्तु यदा कदा मानसिक असुन्तल के कारण आपको व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा। साथ ही पूजा कार्य में भी समय समय पर व्यवधान आएंगे। व्यावसायिक रूप से की गई लम्बी यात्राओं से आपको लाभ यश तथा समाज में मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। इससे आप में स्थायित्व आएगा तथा धन वैभव की भी वृद्धि होगी। आप एक प्रसिद्ध बुद्धिमान एवं विद्वान पुरूष होंगे तथा अपनी योजनाएं बिना किसी की सलाह लिए सम्पन्न करेंगे। साथ ही अपने प्रथम पौत्र से अत्यधिक सुख एवं आनंद प्राप्त करेंगे तथा जीवन में अन्य शुभ कार्य भी आप करते रहेंगे एवं सुख ऐश्वर्य से युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप धर्मात्मा सौभाग्यशाली अतिथि सत्कार करने वाले तथा दीनों पर कृपा करने वाले व्यक्ति होंगे तथा परोपकार संबधी कार्यो को पूर्ण करने में सफल रहेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। साथ ही बुध भी दशम भाव में ही स्थित है। चन्द्रमा राशि जलतत्व एवं बुध पृथ्वी तत्व युक्त ग्रह है अतः इसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र श्रमसाध्य प्रधान होगा तथापि बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया की भी इसमें प्रबलता होगी। साथ ही समय समय पर आप इसमें परिवर्तन करने में भी तत्पर होंगे। इन सामायिक परिवर्तनों से आप लाभ एवं धन अर्जित करेंगे एवं उन्नति के मार्ग भी प्रशस्त होंगे एवं इससे आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

दशमभाव में कर्क राशि में बुध की स्थिति के प्रभाव से आपके लिए आजीविका के लिए उपयुक्त क्षेत्र लिपिकीय कार्य, शिक्षक, ज्यौतिषी, लेखक, कवि, चित्रकार, जिल्दसाज, पुस्तक विक्रेता या यंत्र निर्माण कर्ता, सम्पादक, संशोधक, अनुवादक, वकील, दूत कार्य, टेलीफोन आपरेटर या दूर संचार विभाग रहेगा एवं इन क्षेत्रों में कार्य करने से आप वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही आसानी से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे एवं उन्नति के क्षेत्र में आपको अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही आजीविका कार्य का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए एजेंसी, दलाली, पुस्तक विक्रेता, प्रकाशन, अगरबत्ती, पुष्प मालाएं, कागज के खिलौने तथा जलोत्पन्न वस्तुओं एवं पदार्थों का व्यापार, वस्त्रों का व्यापार या आयात निर्यात का कार्य आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इसके साथ ही कला एवं चित्रकारी की वस्तुओं से भी आपको विशिष्ट लाभ एवं उन्नति मिलेगी। अतः आपको इन्हीं क्षेत्रों में अपना व्यापार प्रारंभ करना चाहिए।

दशमभाव में बुध के प्रभाव से जीवन में आप वांछित मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगे। साथ ही किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी प्राप्त करेंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। इसके साथ ही समाज में दूर दूर तक आपका यश व्याप्त होगा परन्तु बुध की स्थिति शत्रुराशि में होने के कारण उचित मान सम्मान एवं यश प्राप्ति में किंचित विलम्ब एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है लेकिन इससे आपको हतोत्साहित नहीं होना चाहिए तथा परिश्रम एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिता बुद्धिमान हास्य प्रवृति एवं योग्य व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। साथ ही सामाजिक जनों के मध्य वे लोकप्रिय एवं आदरणीय होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण लगाव होगा तथा शिक्षा का यथोचित प्रबंध करेंगे। साथ ही आपको कार्यक्षेत्र में भी उनके प्रभाव से उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा इसमें उनका मुख्य योगदान होगा। आप भी अपने बुद्धिमतापूर्ण कार्य कलापों से पिता के मान सम्मान में वृद्धि करेंगे। इसके अतिरिक्त परस्पर संबंधों में सामान्यतया अनुकूलता होगी परन्तु सैद्धान्तिक एवं वैचारिक मतभेदों के कारण यदा कदा कटुता का भाव भी उत्पन्न हो सकता है। अतः ऐसी परिस्थितियों की

आपको यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। इसके प्रभाव से आप भाग्यशाली व्यक्ति होंगे और आर्थिक दृष्टि से आपका धनार्जन उत्तम रहेगा। आप एक परम महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा मन में कई इच्छाएं एवं उमंगे विद्य मान रहेगी। साथ ही सौभाग्य के बल पर इनको पूर्ण करने में भी समर्थ रहेंगे। आप सरकार, औषधिविज्ञान तथा पिता के द्वारा जीवन में विशेष रूप से लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इन्ही के द्वारा आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी। इस प्रकार लाभ की दृष्टि से हमेशा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही बड़े भाइयों से आपको जीवन में पूर्ण लाभ सुख सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी तथा वे हमेशा आपको अपना सहयोग प्रदान करने में तत्पर रहेंगे।

मित्रों के प्रति आपके मन में पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उनके मध्य आपको मान सम्मान एवं आदर की प्राप्ति होगी। साथ ही वे सभी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे। आप एक सामाजिक प्राणी होंगे तथा समूह में मनोरंजन या अन्य कार्य करना आपके लिए आनन्द दायक रहेगा साथ ही सामाजिक जनों की सेवा तथा भलाई करने के कार्यो में भी तत्पर रहेंगे एवं जीवन में विशिष्ट मान सम्मान एवं ख्याति भी प्राप्त कर सकते है। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथापि यदा कदा गर्मी या पित आदि से उत्पन्न दोषों से किंचित अस्वस्थता की अनुभूति कर सकते है। लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा तथा आप समस्त सासांरिक सुखों का उपभोग करते हुए अपने समय को व्यतीत करेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न एवं समृद्ध रहेंगे। साथ ही जीवन में प्रचुर मात्रा में अनेक साधनों से धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। लेकिन आपका रहन सहन, खान पान उच्च स्तर का रहेगा फलतः बचत अल्प मात्रा में ही होगी तथा व्ययाधिक्य रहेगा। आप भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों पर व्यय करेंगे साथ ही वस्त्रादि भी सुदंर एवं कीमती होंगे तथा कीमती वस्त्र पहनकर समाज में अपनी धन सम्पन्नता को प्रदर्शित करेंगे।

आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्तिमय रहेगा तथा आवास स्थल भी सुदंर एवं सुसज्जित रहेगा एवं इसकी साज सज्जा पर आप काफी व्यय करेंगे। वास्तव में आप कलात्मक रूप से रहना पसन्द करते है तथा इसके लिए अत्यधिक धन की आवश्यकता रहती है। सुदंर एवं विलासमय वस्तुओं के प्रति आपकी तीव्र रूचि रहेगी तथा इनको प्राप्त करने के लिए आप कितना भी व्यय क्यों न हो करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही परिवार एवं मित्रों के साथ महंगे होटलों में खाना या नाश्ता करना भी आपका शौक रहेगा। आपकी सफलता को देखकर आपके शत्रु आपके लिए रूकावटें उत्पन्न करेंगे। अतः कभी कभी मानसिक रूप से तनावग्रस्त भी रहेंगे।

यात्रा करने के लिए आप रूचिशील रहेंगे। साथ ही आप की देश के साथ साथ विदेश संबंधी यात्राएं भी होंगी इनसे आपको उचित लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा यद्यपि इनमें व्यय भी अधिक होगा परन्तु कुछ समय के उपरांत लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे। आप भ्रमण या कार्यवश दोनों प्रकार की यात्राएं सम्पन्न करेंगे। इसके साथ ही विदेश में भी आप काफी समय तक प्रवास कर सकते है।

नक्षत्रफल

आपका जन्म विशाखा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्मराशि तुला तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण शूद्र, गण राक्षस, योनि व्याघ्र, नाड़ी अन्त्य तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "ति" या "ती" अक्षर से प्रारम्भ होगा यथा-तीरथ राम।

आप पूर्ण रूप से हमेशा अपनी स्त्री के वश में रहेंगे तथा उसी की सलाह तथा निर्देशानुसार अपने अधिकांश सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। उसकी आज्ञा के बिना आप किसी भी सांसारिक कार्य को करने में स्वयं को असहाय सा महसूस करेंगे। आप छोटी छोटी बातों तथा वस्तुओं पर यदा कदा अभिमान का भी प्रदर्शन करेंगे शत्रुवर्ग के ऊपर आपका गहन प्रभाव रहेगा तथा वे लोग अपने आपको आपसे सर्वथा पराजित समझेंगे। इसके साथ ही आपकी प्रकृति में क्रोध की भी प्रबलता रहेगी। अतः आप बात बेबात पर शीघ्र ही उत्तेजित भी होते रहेंगे।

गर्वी दारवशो जितारिरधिक क्रोधी विशाखोद्भवः।
जातक परिजातः

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक घमंड, हमेशा अपनी पत्नी के वश में रहने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला तथा अत्यधिक क्रोधी स्वभाव का होता है।

समाज में अन्य जनो के प्रति कभी कभी आपके मन में अकारण ही ईर्ष्या तथा द्वेष का भाव विद्यमान रहेगा। यदि कोई भी व्यक्ति आपसे कोई अच्छा कार्य करेगा अथवा कोई सफलता प्राप्त करेगा तो अनायास ही उसके प्रति आपके मन में ईर्ष्या उत्पन्न होने लगेगी। आप स्वभाव से ही अनावश्यक इच्छाओं तथा वस्तुओं के प्रति आपके मन में उत्सुकता रहेगी। आपका शरीर कान्ति से हमेशा सुशोभित रहेगा तथा बोलने में आप अत्यन्त ही चतुर होंगे तथा अपनी वाक्पटुता से सबको प्रभावित करेंगे। आप अन्य लोगों से तर्कहीन बातों से विवाद में भी नित्य तत्पर रहेंगे।

ईर्ष्युर्लुब्धोः द्युतिमान्वचनपटुः कलहकृद्विशाखासु।।
बृहज्जातकम्

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक ईर्ष्या तथा द्वेष करने वाला, लोभी, कान्तियुक्त, वाक्चतुर तथा कलहप्रिय होता है।

आप धार्मिकता की भावना से भी युक्त रहेंगे तथा देवताओं को प्रसन्न करने के लिए नित्य हवनादि धार्मिक क्रियाओं को सम्पन्न करते रहेंगे। साथ ही आपका मित्रता का क्षेत्र विशेष विस्तृत नहीं रहेगा तथा कम ही लोग आपके मित्र होंगे।

सदानुरक्तोग्निसुरक्रियायां धातुक्रियायामपि चोग्रसोम्यः।

यस्य प्रसूतौ च भवेद्विशाखा सखा न कस्यापि भवेन्मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवादि पूजन के निमित हवनादि कार्यो में रत रहने वाला, धातुक्रिया में कभी उग्र तो कभी सौम्यता का प्रदर्शन करने वाला तथा किसी का भी मित्र नहीं होता है।

आपके हृदय में दया तथा करूणा के भाव की भी अल्पता रहेगी तथा निपुणता की इसमें प्रबलता रहेगी। अन्य लोगों से आपका वाद विवाद चलता रहेगा। इसके अतिरिक्त समाज में अन्य जनों से भी आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे।

अतिलुब्धोडतिमानी च निष्ठुरः कलहप्रियः।
विशाखायां नरो जातः वैश्याजन रतो भवेत।।
मानसागरी

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अति लोभी, घमंडी, निष्ठुर, झगड़ा करने वाला तथा अन्य स्त्रियों से संबंध रखने वाला होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता हैं। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनो से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती हैं। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती हैं। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक स्वरूप देखने में सुन्दर तथा आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दयाभाव रहेगा। जीवन में समस्त प्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार के ऐश्वर्य तथा वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक बल से आप पूर्ण रूपेण सुसम्पन्न रहेंगे। आप निर्भयता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा किसी भी प्रकार का भय आपके हृदय में नहीं रहेगा। आप में चतुराई तथा बुद्धिमता का भाव भी रहेगा एवं आपके अधिकांश सांसारिक कार्य इसी तरह से सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त आप विविध प्रकार के सद्गुणों से भी सुशोभित रहेंगे।

तुला राशि में उत्पन्न होने के कारण आप शरीर तथा मुख से सुदर रहेंगे। आपकी नासिका उन्नत तथा आखें भी देखने में बड़ी बड़ी होंगी। आप विविध प्रकार के वाहनादि साधनो से सर्वथा सुसम्पन्न रहेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। आप वाहन तथा भूमि से शक्तिशाली होकर इनसे पर्याप्त मात्रा में धनार्जन करेंगे। आप एक पराक्रमी पुरूष होंगे तथा समाज में सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं उनको उचित मान सम्मान प्रदान करेंगे।

आप नाना प्रकार के धन वैभव तथा ऐश्वर्य से युक्त होकर जीवन सुखपूर्वक उसका उपभोग करने में सर्वथा सफलता प्राप्त करेंगे। स्त्री के आप पूर्ण रूप से वश में रहेंगे एवं समस्त सांसारिक कार्यों को उनके निर्देशानुसार ही सम्पन्न करेंगे। कार्यों को सम्पन्न करने में आप हमेशा प्रवीणता को प्राप्त रहेंगे तथा सुगमतापूर्वक किसी भी कार्य को करने में समर्थ रहेंगे। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा तथा भक्ति का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्यादि के संग्रह करने की प्रवृति से भी हमेशा युक्त रहेंगे तथा बन्धु वर्ग के लिए कल्याणकारी कार्यों को करने में सर्वथा तत्पर रहेंगे।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप समाज में देवता, ब्राहमण तथा भद्रजनों की सेवा कार्य में सर्वथा तत्पर रहेंगे तथा विद्धता से सुशोभित होकर पवित्रता पूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे। आपका शरीर सुगन्धित रहेगा।घूमने तथा यात्रा करने के आप विशेष शौकीन रहेंगे अतः यात्रादि में आपका अधिकाँश समय व्यतीत होगा। क्रय विक्रय के कार्य में आप अत्यन्त ही दक्ष रहेंगे। अतः व्यापारिक कार्यों में आप विशेष रूचि लेंगे। अपने समीपी बन्धु जनों की आप यत्नपूर्वक भलाई करेंगे परन्तु बाद में आपको इन्ही लोगों उषेद्वि भी होना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त धन का आपके पास अभाव नहीं रहेगा अपितु धन से सदा सुसम्पन्न रहेंगे।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरूक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप एक धैर्यशाली पुरूष होंगे तथा अपने अधिकाँश कार्यों को धैर्यपूर्वक ही सम्पन्न करेंगे। न्याय के प्रति आपके मन में पूर्ण सम्मान रहेगा तथा आपकी बातों से ही आपकी न्यायप्रियता का आभास होगा। आपकी इसी प्रवृति से प्रभावित होकर लोग आपको अपने विवादों का समाधान आदि करने में मध्यस्थ या पंच नियुक्त करेंगे। आपकी सन्तति भी अल्प सख्यां में होगी तथा भाग्योदय भी विलम्ब से ही उदय होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा तथा राज्य के उच्चाधिकारियों तथा पदाधिकारियों को प्रसन्न करने की कला में आप निपुण रहेंगे तथा इनसे पूर्ण आदर तथा

सहयोग प्राप्त करेंगे। आप कभी कभी बहुत अधिक बोलेंगे जिसे अन्य जन पसन्द नहीं करेंगे। इससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त आप ज्योतिष अथवा ग्रहनक्षत्र आदि के ज्ञान करने वाले शास्त्र में श्रेष्ठ विद्वान होंगे। बन्धु एवं सेवकों के प्रति आपके मन में अनुराग की भावना रहेगी।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

आप कभी कभी अनुचित अवसर पर अपने क्रोध का भी प्रदर्शन करेंगे इससे आपको दुःख की अनुभूति करनी पडेगी। आप अत्यन्त ही मधुर एवं प्रिय वाणी का अपने सम्भाषण में प्रयोग करेंगे फलतः सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। दीन दुःखियों के प्रति आपके मन में दया तथा करूणा की भावना रहेगी एवं समय समय पर अपनी इस भावना का आप प्रदर्शन करते रहेंगे। आपके नेत्रों में भी चंचलता व्याप्त रहेगी तथा धनागमन भी विषम स्थितियों में रहेगा अर्थात कभी अत्याधिक धनागमन होगा तो कभी अत्यन्त अल्प मात्रा में रहेगा। आप घर में अपने को बलवान तथा घर से बाहर अत्यन्त ही निर्बल महसूस करेंगे। मित्रों के मध्य आप प्रिय रहेंगे तथा देश से बाहर विदेश में भी आप प्रवास करेंगे।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येऽति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप विभिन्न प्रकार के वाहनों से हमेशा युक्त रहेंगे एवं आपके अर्न्तमन में दानशीलता की भावना विद्यमान रहेगी जिसका समय समय पर आप प्रदर्शन करते रहेंगे। स्त्री के आप अत्यन्त प्रिय रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सहयोग तथा आदर की भी प्राप्ति होगी। साथ ही आपका सम्पूर्ण जीवन वैभव से सुसम्पन्न रहेगा।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण कभी कभी आपकी प्रवृति व्यर्थ की बातों को अधिक कहने की रहेगी आपका हृदय भी कठोर होगा तथा दया के भाव की इसमें न्यूनता रहेगा। आप एक साहसी व्यक्ति होंगे तथा साहसपूर्वक ही अपने अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आप छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही क्रोधित होने वाले भी होंगे। अपने कार्यों को सिद्ध करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। कार्य को आप शरीर से बलिष्ठ रहेंगे तथा अन्य जनों से आपका

विवणद चलता रहेगा इससे समाज के अधिकांश लोग आपसे द्वेष की भावना रखेंगे। अतः आप अन्य जनों से आप को प्रेम तथा विनम्रतणपूर्वक व्यवहार करना चहिए।

आप अपने जीवन काल में प्रमेह तथा उन्माद रोग से भी ग्रसित हो सकते है आपकी मुखाकृति दीर्ध होगी तथा आप अपने सम्भाषण में अत्यन्त ही कठोर भाषण का उपयोग करेंगे जिससे श्रोता अत्यन्त ही कष्ट की अनुभूति करेगा। अतः यत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शाब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

व्याघ्र योनि में जन्म होने के कारण आप स्वतंत्र प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा स्वच्छन्दता पूर्वक अपने कार्य को करने की इच्छा करेंगे। बाहरी दबाव या हस्तक्षेप आपको पसन्द नहीं होगा। धन धान्य को संग्रह करने की प्रवृति भी आप में विद्यमान रहेगी। आप अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण प्ररिशिक्षित होंगे तथा इससे आप पूर्ण मान सम्मान तथा आदर के अधिकारी होंगे। आप गुणों को शीघ्रता से ग्रहण करने की क्षमता से भी सम्पन्न रहेंगे तथा अच्छी अच्छी बातों को शीघ्र धारण करेंगे। लेकिन आपका कमजोर पक्ष यह रहेगा कि आप अपने ही मुख से अपनी प्रशंसा करेंगे। इससे आपके सामाजिक प्रभाव में न्यूनता होगी।

स्वच्छन्दोडर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् व्याघ्र योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, अर्थसंग्रह में तत्पर, गुणों को ग्रहण करने वाला, दीक्षित, वैभव युक्त तथा अपने ही मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यो में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो

भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, शतमिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिल करण, गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अनिष्ट फलदायक रहेंगे अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शतमिषा नक्षत्र शुक्ल योग तथा तैतिल करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवग्रहनिर्माण, क्रयविक्रयादि महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही गुरूवार चतुर्थ प्रहर एवं धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी सजग रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्त करने में असफलता या अन्य महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध नही हो रहे हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी जी की उपासना करनी चाहिए एवं शुक्रवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही हीरा, सोना, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन,

चावल, दूध इत्यादि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। ऐसा करने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलो में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम

ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर

काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में नौवें खाने में सूर्य है। इसकी वजह से आप भाग्यवान होंगे। आपको उत्तम वाहन सुख मिलेगा। बड़े परिवार से युक्त रहेंगे। आप परोपकारी होंगे। आप अपनी सात पुश्तों को तारने वाले होंगे। आप अपने खानदान के लिए पूरा जीवन न्यौछावर कर देंगे। 22वें वर्ष में आपके जीवन पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। माता-पिता की कृपा से राजदरबार में इज्जत मिलेगी। तीर्थ यात्रा करने से आपके जीवन पर अच्छा असर पड़ेगा। आपके परंपरागत काम या सरकारी ठेकेदारी के धंधे से लाभ होगा। आपको माता-पिता का अच्छा सुख मिलेगा। आपकी बचपन में परवरिश खानदानी ढंग तथा सुख साधन से होगी। आप खानदान के लिए त्याग करेंगे और आप परोपकारी होंगे। आप पोते-पड़पोते के जन्म की खुशियां देखेंगे। पैसे की तंगी नहीं रहेगी। आप दूसरों की बीमारी दूर करने में मदद करेंगे। आपके पिता को सरकार पक्ष से लाभ होगा। बहुत बड़े परिवार को पालने का जिम्मा आप पर हो सकता है। धार्मिक कार्यों से तरक्की और कीर्ति मिलेगी। स्वपराक्रम से अपनी किस्मत का सितारा चमकायेंगे। सरकारी विभाग में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा, राजा या राजा तुल्य जीवन होगा, नौकरी-व्यापार में लाभ होगा।

यदि आपकी रसोई में उल्टे या बहुत समय से पुराने खाली बर्तन पड़े रहे, मकान का मुख्य दरवाजा पश्चिम दिशा में हुआ, भाई-बहन से झगड़ा किया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से स्वभाव अति उग्र या अति नम्र स्वभाव रहने से सर्वस्व खोना पड़ सकता है। गिफ्ट/मुफ्त का माल या दान खाने से हर तरफ हानि होगी, यात्रा में कष्ट होगा, बहन-भाई द्वारा विरोध और किस्मत का बुरा असर शुरु हो जायेगा। कई बार आपको नेकी का बदला बुराई में मिल सकता है और जिसके साथ आप संबंध रखेंगे उसी की हानि होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. मुफ्त या दान के माल से दूर रहें।
2. बहुत नर्म या बहुत गर्म स्वभाव न रखें।

उपाय :

1. पीतल के बर्तनों का प्रयोग करें।
2. सूर्य ग्रहण के समय 4 सूखे नारियल जल में प्रवाहित करें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली के पहले खाने में चंद्रमा है। इसकी वजह से आपका जन्म आपके माता-पिता की तपस्या के बाद हुआ होगा या भगवान की मिन्नतें-मन्नतें मांग कर या

आपके जन्म से पहले कई बहनों का जन्म हुआ होगा। आप सबको वशीभूत कर लेते हैं। आप शांत स्वभाव के सुंदर और सफेद कपड़े पहनने के शौकीन हैं। आप विभिन्न भाषाओं के विद्वान होंगे। आपको पैतृक मकान का सुख मिलेगा। आपको जीवन भर संपत्ति की कमी महसूस नहीं होगी। 28 वर्ष की उम्र में विवाह हो तो जीवन भर सुख मिलेगा। पराई अमानत पास रह जायेगी जिससे अमीर हो जाऐंगे। जब तक माता जीवित रहेंगी धन-दौलत का अभाव नहीं रहेगा। लंबी उम्र के मालिक होंगे। राजदरबार में सम्मान मिलेगा। आपके जन्म के बाद पिता की माली-हालत अच्छी होगी। लम्बी आयु, कारोबार तथा धन लाभ के लिए शुभ होगा। बुढ़ापा उत्तम रहेगा। 24 या 27 साल की उम्र में अगर सफर करें तो सफर से वापस घर आकर मां का आशीर्वाद लेने से माता की आयु बढ़ेगी। 24 वर्ष आयु से पहले मकान न बनावें।

यदि आपने 24 वर्ष आयु से पहले मकान बनाया होगा, 28 वर्ष आयु में विवाह किया हो, आपने नौकरानी से झगड़ा या गाय को कष्ट दिया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से पानी में डूबने का भय, मानसिक रोग, पुत्र सुख का अभाव, अति चिन्ता रहना, शारीरिक कमजोरी, आंख की पुतली खराब होना, घर में बाग-बगीचा हो तो उजड़ा सा रहेगा, आपको दिल की बिमारियां हो सकती हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. माता या बूढ़ी स्त्री से झगड़ा न करें।

उपाय :

1. चांदी के गिलास में दूध-पानी आदि पियें।
2. बट के वृक्ष को कभी-कभी पानी डालें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल ग्यारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप न्यायप्रिय, साहसी, पशुपालक, व्यापारी होंगे। आपका स्वास्थ्य उम्दा रहेगा। अपनी किस्मत स्वयं बनाने वाले होंगे। आप अधिक लाभ प्राप्त करेंगे। आपके जीवन में आपकी 28वें वर्ष से लगातार 42वें वर्ष तक की आयु तक खूब धनागम होगा। आर्थिक दशा में राजा के समान होंगे। आपके भाग्य के कारण छोटी उम्र में ही पिता के घर धन का भंडार लग जायेगा। आपका व्यवसाय या नौकरी ऊंचे दरजे की होगी। आपको पुत्र-पौत्र का सुख मिलेगा। आपके जीवन में बुरा असर कम पड़ेगा। कई प्रकार से आमदनी का स्रोत होगा। अपनी कमाई से भूमि-भवन प्राप्त करेंगे। आपको शत्रुओं को दबा कर रखना पड़ेगा। आपको सुख-सुविधाओं की कमी नहीं रहेगी। फकीरी वेश-भूषा में रह कर भी आपकी आध्यात्मिक शक्ति अच्छी होगी।

यदि आपने माता-पिता, संबंधियों से झगड़ा किया, भाई-बन्धुओं से जमीन जायदाद

के लिये मुकद्दमा किया, किसी से काम करवा कर उसका मेहनताना नहीं दिया तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से भाई-बंधुओं से जमीन-जायदाद, धन संबंधी झगड़े का भय रहेगा। अगर आपका चाल-चलन ठीक न रहे तो आमदनी होते हुये भी कर्जदार होंगे, संपत्ति बर्बाद होगी। आपके बच्चे झगड़ालू होंगे या परिवार में बच्चा गोद भी लेना पड़ सकता है। उसके आगे के जीवन में कुछ भी बुराइयां नहीं रहेंगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. भाई-बंधुओं पर भरोसा न करें।
2. कुत्ते को चोट न मारें।

उपाय :

1. जीजे-साले-भांजे या दोहते की सेवा करें।
2. मिट्टी के बर्तन में शहद या सिंदूर भर कर घर में रखें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप अपने विभाग में अधिकारी के प्रिय रहेंगे। आप व्यवहार कुशल, ठीक से जीवन निर्वाह करने वाले होंगे। आप खुशामदी और नीतिशास्त्र में निपुण होंगे। आप लेखक-संपादक, अनेक विद्याओं के जानने वाले हो सकते हैं। ठेकेदारी के काम से धन कमाने वाले होंगे। आप पूरा धन कमाने वाले हैं। आप अव्वल दर्जे के खुशामदी होंगे। आप अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से स्वार्थ सिद्ध करेंगे। आप समुद्री यात्रा या विदेश की यात्रा अवश्य करेंगे। आप शरारती और मतलब परस्त होंगे। परंतु दूसरों के हां में हां मिलाने या खुशामद करने में माहिर होंगे। आप मीठी-मीठी बातें करके सबको मोहित कर लिया करेंगे। व्यापार करने से घर के लोगों को भी बरकत होगी। आप हुनरमंद और बेशर्म स्वभाव के है। 50 वर्ष की उम्र के बाद आपका अच्छा जीवन बीतेगा और आर्थिक स्थिति में सुधार हो जाएगा।

यदि आपने मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया, हरे रंग की बोतल में विदेशी शराब या परफ्यूम अपने घर में रखा, मछली का शिकार किया तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से शराब-पीना और मांस खाना आपके लिए नुकसानदेह है। आपको अपनी नजर में दोष उत्पन्न हो सकता है। आप दूसरों के लिए बेवकूफ दोस्त के समान होंगे। आपकी दूसरों के साथ चालबाजी की आदत रहेगी। 48 वर्ष की आयु तक पिता के सुख में अभाव हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. चौड़े पत्तों का वृक्ष, तुलसी-मनीप्लांट न लगावें।
2. शराब-मछली का सेवन न करें।
3. मछली का शिकार न करें या मछली न पकड़ें।

उपाय :
1. मजदूर पेशा व्यक्ति की सेवा करें।
2. मछलियों को भोजन का हिस्सा खिलायें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति नौंवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप धनी होंगे अर्थात् बड़े भाग्यशाली होंगे। आप अपने धर्म पर अडिग और वचन के पक्के होंगे परंतु आपके जीवन में कभी भी धन की कमी महसूस नहीं होगी। आपको जौहरी या सर्राफी के काम करने से बहुत लाभ होगा। आपके घर की प्रतिष्ठा बनी रहेगी। आप तीर्थ स्थान की यात्रा के शौकीन होंगे। आप धर्मात्मा, ज्योतिषी, वैद्य, सिद्ध पुरुष होंगे। आप अपने पूर्वजों के माध्यम से प्रगति के पथ पर अग्रसर होंगे। भाग्य का श्रेष्ठ प्रभाव आपके ऊपर पड़ेगा यानि 36 वर्ष की उम्र में धन की प्राप्ति होगी। आप अच्छे, सम्मानित एवं अमीर खानदान में जन्म लेंगे। आप अपनी मेहनत से भी धन कमाएंगे। आपकी आदतें राजाओं जैसी होंगी। आप आध्यात्मिक तौर पर योगी स्वभाव के होंगे। आपकी सेहत अच्छी रहेगी। आपकी आयु के साढ़े सोलह वर्ष, 19, 33, 49 विशेष और धन प्राप्त करने वाले होंगे। आप तमाम दुनिया से लड़ कर अपनी किस्मत बना लेंगे अर्थात् आप स्वयं अपने भाग्य के निर्माता होंगे। आपकी आर्थिक स्थिति को शुभ करने के लिए भाग्य पूरा साथ देगा। आपके गृहस्थ जीवन में सुख बढ़ेंगे। इसका शुभ असर पूरे परिवार पर अच्छा रहेगा।

यदि आपने धर्म छोड़ दिया या धर्म विरोधी कार्य किये, पिता से झगड़ा या विरोध किया, किया हुआ वायदा पूरा न किया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आपके जीवन में बुरा समय आए उससे पहले आप दुनिया से कूच कर जाएंगे। आप अपनी औलाद से कई बार दुःखी होंगे। आपको दिल की बीमारी की आशंका है। आपका सोना गिर जाये, चोरी हो, लूटा जाये, गिरवी पड़े या बिक जाएगा, यह बहुत अशुभ लक्षण है। आलस्य करने से आपके महत्वपूर्ण कार्य अधूरे रह जाएंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. दिया हुआ वचन पूरा करें।
2. सोना गिरवी न रखें, गुम होने से बचायें।

उपाय :

1. गंगा स्नान करें (हर महीने में एक बार 9 महीने लगातार)।
2. धर्म की पालना करें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में शुक्र पड़ा है। इसकी वजह से आपको कन्या संतान अधिक होगी। आपकी पत्नी दिखने में भोली-भाली परंतु काम धंधे में स्वभाव से अच्छी होगी। शादी के बाद खूब आमदनी होगी। आपको कन्या सुख अधिक होगा। विलंब से पुत्र की प्राप्ति हो, ऐसी आशंका है। आपके ससुराल पक्ष के लोग सहायक होंगे और उनसे आपको लाभ होगा। आप में और आपकी पत्नी में सामान्य कामवासना रहेगी। आप पैसे के पीछे भागते रहेंगे। आप भोले स्वभाव के प्राणी होंगे। आपमें अच्छे गुण भी रहेंगे आप गुप्त कार्य करने के आदी हो जाएंगे। आप अपनी विचारधारा को शीघ्र बदल देंगे। इसके लिए धन पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा।

यदि आप परिवार में मुखिया बन कर रहे, चाल-चलन खराब किया, अप्राकृतिक सैक्स किया, कामांध बन कर पाप किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपकी कामशक्ति कमजोर होगी। (किसी योग्य वैद्य/हकीम से सलाह करके कुश्ता फौलाद या मछली का तेल प्रयोग करें वैसे चांदी का कुश्ता भी लाभदायक रहेगा)। आपकी पत्नी के हाथों धन की बरकत नहीं होगी या स्त्री द्वारा धन हानि या अपव्यय होगा। सरकार द्वारा दंड, जेल यात्रा का भय रहेगा। आपका चाल-चलन शक्की होगा। आप यदा-कदा मूर्खता भी कर बैठेंगे। आपका संतान पक्ष निर्बल रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. पत्नी को घर की खजांची न बनाएं।
2. नौकरी-व्यापार बार-बार न बदलें।

उपाय :
1. स्त्री से सरसों का तेल दान करायें।
2. विवाह समय कपिला गाय का दान करें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में शनि पड़ा है। इसकी वजह से आपका भाग्योदय 48वें वर्ष में होगा। आप अपने धर्म पर अडिग रहेंगे। जीवन के 57वें, 72वें और 89वें आयु में अच्छा फल मिलेगा। आपको पूरा आराम मिलेगा और उत्तम फल प्राप्त होंगे। लोहा, कोयला, रबड़ आदि काली चीजों के व्यवसाय से लाभ प्राप्त करेंगे। दस्तकारी में भी निपुण होंगे। आप अपने धन की सुरक्षा करेंगे। आर्थिक दृष्टि से आप प्रगति करेंगे। संतान सुख अवश्य मिलेगा। यदि आप नेकी करेंगे और धर्म का सहारा लेंगे तो मिट्टी को भी छुएंगे तो सोना हो

जाएगी। न्यायप्रिय, राज्याधिकारी, राजदरबार और धन-दौलत पर अच्छा असर पड़ेगा। भलाई करने से जिंदगी में सभी प्रकार के आराम मिलेंगे। बुजुर्गी संपत्ति का लाभ होगा, ससुराल वाले अमीर होंगे।

यदि आपने 55 वर्ष की आयु से पहले मकान बनाया, आपने परिवार के लोगों को हानि पहुंचाई, भाई से दूर रहे, धोखे-ठगी से धन कमाना शुरु किया तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आपकी शिक्षा अधूरी रह सकती है। आप गुस्सैल मिजाज के होंगे। आपके आमदनी और खर्च बराबर रहेंगे। शराब-मांस का सेवन करने से क्रोध की मात्रा बढ़ जाएगी और आप किसी की हत्या भी कर सकते हैं। आप फरेब करके पैसा बनाएंगे। बेईमानी से कमाया हुआ धन बुरा फल देगा। धोखे-ठगी से कमाया धन कैद और कफन ही देगा। विद्या में रुकावट, आपका भाई-बंधु और मित्रों से विरोध होगा, खानदान के लिए अशुभ होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. किराये के मकान में रिहाईश न करें।
2. ठगी-धोखे से धन न कमाएं।

उपाय :
1. घर में शुद्ध चांदी की ईंट रखें।
2. नये काम पर जाते समय या नया काम शुरु करते समय पानी या दूध का भरा घड़ा कुंभ के तौर पर रखें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के बारहवें खाने में राहु पड़ा है। जिसकी वजह से आपके लिए तमाम सुख-सुविधाओं का योग रहेगा। आप योगी की तरह आचरण करेंगे। आप उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपने बलबूते पर खड़े होंगे। व्यर्थ की चिंताओं से मुक्त रहेंगे। आप धनवान अपने भाई-बहन से स्नेह रखने वाले, शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाले और सुख के साथ जीवन को गुजारेंगे। आप कभी भी अर्थिक रूप से परेशान नहीं होंगे। आपकी कन्या जन्म के बाद लक्ष्मी की बड़ी कृपा होगी और आपको सभी सुख प्राप्त होंगे। विवाह-उत्सव आदि कामों में खूब खर्च करेंगे। अथाह धन की प्राप्ति होगी। आप अपनी पुत्री व बहन पर अधिक खर्च करेंगे। आप पर ऋण का बोझ पड़ जाये तो वह शीघ्र उतर जाएगा। शुभ समय पर कोई काम करके कामयाबी हासिल करेंगे। ससुराल पक्ष धनवान होगा, शत्रुओं से बचाव होगा।

यदि आपके लड़कियां अधिक हुईं, मकान रोशनी वाला हुआ, बिना सोचे समझे काम किया, शेख चिल्ली की तरह बातें ही बातें बनाने की आदत हुई तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारणवश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आप बुरे व्यसनों की आदतों के कारण या समाज में बदनाम लोगों से दोस्ती के कारण दुःखी होंगे। आपको

पसलियों या आंतों के रोग की आशंका बनती है। बवासीर रोग की आशंका है। दिमागी परेशानी के कारण रात्रि शयन में बाधा की आशंका है। आप शेख चिल्ली की तरह सपने देखेंगे और अपना समय बर्बाद करेंगे। मानसिक पीड़ा से दुःखी रहेंगे। फौजदारी-दीवानी मुकद्दमों में उलझ सकते हैं। गबन करने पर इल्जाम लगेगा। बिना सोच-समझे किये कामों में हानि हो ऐसी शंका है। आपके परिवार का बोझ आप पर होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. रसोई से बाहर खाना न खावें।
2. घर के आंगन में धुआं न करें।

उपाय :

1. घर के आखिर में अंधेरी कोठरी बनावें।
2. चांदी का ठोस हाथी घर में रखें या चांदी का चौरस टुकड़ा सफेद धागे में डाल कर गले में धारण करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली में छठे खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप अभिमान रहित होंगे। आप एक अच्छे सलाहकार होंगे। आपकी संतान आपके कामों में हाथ बंटायेगी। आप धनवान, शत्रुओं को परास्त करने वाले ननिहाल के लिए शुभ रहेंगे। आपकी संतान आपकी सहयोगी होगी। आपका पुत्र आपकी मुसीबतों का जाल कटेगा और आपकी सहायता करेगा। आपको अपने जीवन में आराम मिलेगा। आप देश या परदेश में कहीं भी रह कर सुखमय जीवन बिताएंगे।

यदि आपने ससुराल से सोने की अंगूठी या 2 चारपाई या पलंग विवाह समय न लिये, ससुराल से मिली अंगूठी गुम हो जाये या बिक जाये तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से माता और ननिहाल में बुरा असर पड़ेगा। आपको कुत्ते से डर लगेगा। कुत्ते के काटने का भय रहेगा। आपका फिजूल खर्च भी हो, ऐसी संभावना है। आपका बुढ़ापा कष्टमय रहेगा। कभी-कभी आपको बेकार की यात्राएं करनी पड़ सकती हैं। बिना किसी कारण के शत्रु पैदा हो सकते हैं। आपकी वृद्धावस्था सुखी नहीं रहेगी। आपका पुत्र दूसरों के लिए बदनसीब होता है। लड़कियां अधिक हो सकती हैं। पेट-चमड़ी-पांव में रोग होगा। आवारा घूमना या धन का अपव्यय अधिक होगा, बिना कारण शत्रु पैदा होते रहेंगे। मामा और माता को कष्ट की आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. ससुराल से मिली सोने की अंगूठी गुम न होने देवें और न बेचें।
2. परिवार की लड़कियों से झगड़ा न करें।

उपाय :

1. केसर/हल्दी का तिलक करें।
2. शुद्ध सोने की अंगूठी बायें हाथ में पहनें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

इस वर्ष 22 अप्रैल को गुरू मेष राशि में सप्तम भाव में 17 जनवरी को शनि कुम्भ राशि में पंचम भाव में और 22 नवम्बर को राहु मीन राशि में षष्ठ भाव में प्रवेश करेंगे। वक्री मंगल 13 जनवरी को मार्गी हो जाएंगे और पूरे वर्ष सरल गति से गोचर करेंगे। 4 अगस्त से 18 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तमस्थ राहु पर शनि एवं केतु की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। आपके कार्यक्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावट डाली जा सकती है। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर ही मान सम्मान प्राप्त होगा।

22 अप्रैल के बाद सप्तमस्थ गुरू पर शनि की दृष्टि होगी। उस समय आपको व्यवसाय में अच्छा लाभ होगा। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलने की सम्भावना है। इस अवधी में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद ज्यादा है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपको कार्यों में लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा और आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगें।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप इच्छित बचत कर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते है। रत्न आभुषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। जिससे पुराने चले आरहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

आपके परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। 22 अप्रैल के बाद गुरू ग्रह का गोचर और अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको मित्र या जीवनसाथी के माध्यम से धन लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। यह वृद्धि विवाह या जन्म के माध्यम से हो सकती है। वर्षारम्भ में आपके घर मांगलिक कार्य संपन्न होने का योग बन रहा है।

22 अप्रैल के बाद समय और अनुकूल हो रहा है। यदि आप अविवाहित हैं तो इस समय के अंतराल में आपका विवाह संस्कार हो सकता है। अपने जीवनसाथी या मित्र के साथ

आपके मधुर संबंध होंगे। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि प्राप्त होगी।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। षष्ठ स्थान में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा नहींहोता। वर्षारम्भ में आपकी संतान को लेकर चिन्ताएं बढ़ सकती हैं। उसका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा पर भी आ सकता है परन्तु 22 अप्रैल के बाद समय अच्छा हो जाएगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा होगा। उसको अपने कार्य क्षेत्र सफलता प्राप्त होगी। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। यदि वह विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। षष्ठ स्थान का गुरु छोटी मोटी स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो सावधानी बरतें। लग्नस्थ केतु पर राहु की दृष्टि अचानक आपका स्वास्थ प्रभावित कर सकती है। वर्षारम्भ में स्वस्थ रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव होता रहेगा।

22 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उसके बाद आपका स्वास्थ्य धीरे धीरे अनुकूल हो जाएगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। आपके खान-पान एवं दिनचर्या में भी बदलाव आयेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

22 अप्रैल के बाद यदि किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है, उसमें आपको सफलता मिलेगी। यदि आप कोई व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। राहु केतु के प्रभाव से छोटे मोटी यात्राओं के साथ-साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होते रहेंगी। आपकी अधिकांश यात्राएंअचानक होंगी।

22 अप्रैल के बाद सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से व्यापारिक व्यक्ति व्यवसाय से संबंधित यात्रा करेंगे। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यो के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान का शनि भगवान के प्रति भक्ति का भाव उत्पन्न करेगा। जिससे आप मन्त्र पाठ, साधन और परमात्मा की भक्ति करेंगे। 22 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर और भी अच्छा हो रहा है। उस समय आपको आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आप धार्मिक कार्य संपन्न करेंगे। अपने गुरूजनो का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। समय समय पर आप गरीबों की सहायता करेंगे। जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख प्राप्त होगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरण करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को अर्घ्य दें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2023 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों को प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज एवं समाजिक जनों के मध्य यशार्जन करने में भी आप समर्थ रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना विद्यमान रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे। साथ ही अन्य जनों का परोपकार करने के लिए भी आप उद्यत रहेंगे। आपका स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा तथा किसी भी प्रकार से आप शारीरिक या मानसिक कष्ट प्राप्त नहीं करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे तथा उनके आश्रय से समाज में ख्याति अर्जित करेंगे।मित्र एवं भाइयों से इस मास आपको उचित सहयोग तथा सुख भी प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपके मानसिक संकल्प भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त करेंगे एवं अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सफल बनाने में समर्थ रहेंगे। इस समय आप दूर या समीप की यात्रा भी कर सकते हैं जिससे आपको लाभ होगा। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्र तथा द्रव्यों को भी आप प्राप्त करेंगे या इनसे युक्त होंगे। अतः यह मास आपके लिए विशेष शुभ एवं आनंददायक रहेगा।

फरवरी 2023 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष शुभ फलदायक नहीं रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शत्रु बलवान रहेंगे जिसके कारण आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। साथ ही पारिवारिक जनों से सम्बन्धों में भी तनाव का वातावरण रहेगा जिससे परिवार में अशान्ति रहेगी। अतः मानसिक रूप से आप चिन्तित रहेंगे। इस समय आपके व्यापार या अजीविका संबधी कार्यों में मंदी आएगी या आपका कोई कार्य छूट भी सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य समाजिक जनों से आपका विवाद भी हो सकता है। जिससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि का योग भी बनता है एवं शरीर में कोई रोग भी हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः स्त्री का आपको पूर्ण सुख मिलेगा तथा आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा बुद्धि बल से लाभार्जन करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा तथा आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन करने के लिए उत्सुक होंगे।

मार्च 2023 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला होगा। इस मास में आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य आप अपनी बुद्धिबल से ही सम्पन्न करेंगे। इस समय आप कई प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करेंगे एवं पुत्र सुख भी आपको प्राप्त होगा। आपके प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी एवं सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को मन से स्वीकार करेंगे। इस मास आपके शुभ कार्य भी सम्पन्न होंगे तथा किसी शुभ समाचार को भी प्राप्त करेंगे। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा इनका आप यथोचित सम्मान एवं पूजन करेंगे। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप यथोचित लाभ अर्जित करने में भी सफल सिद्ध होंगे एवं समाज से पूर्ण मान प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।अतः मानसिक रूप से पूर्ण प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख अर्जित करेंगे एवं अपनी बुद्धिमता से आवश्यक शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने में भी सफल रहेंगे। धर्मानुपालन में भी आपकी रूचि उत्पन्न होगी तथा किसी धार्मिक कार्य क्रम का आयोजन करने में भी आप प्रवृत होंगे।

अप्रैल 2023 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ फल दायक रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता भी विद्यमान रहेगी। आपके शत्रु इस समय अधिक प्रबल होंगे फलतः शत्रु पक्ष से भय तथा चिन्ता बनी रहेगी। आपके घर में इस समय चोरी भी हो सकती है ।अतः सावधान रहने की आवश्यकता रहेगी। नौकरी या व्यवसाय में अपने उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें अन्यथा आप किसी प्रकार से दंडित या जुर्माना प्राप्त कर सकते हैं। इस मास आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। इसके साथ ही आप किसी कठोर कार्य को भी सम्पन्न कर सकते हैं। जिसका प्रभाव आपकी प्रतिष्ठा पर पड़ेगा तथा इससे आपको बाद में पछताना पड़ेगा। आपकी मित्रों तथा सम्बन्धियों से भी इस समय सम्बन्धों में तनाव रहेगा तथा आशाओं में पूर्ण सफलता प्राप्त करने में भी असमर्थ रहेंगे।

साथ ही इस समय आप पित्तादि दोषों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा रूधिर विकार की भी सम्भावना हो सकती है। अतः इस मास शारीरिक सुरक्षा का भी आपको पूर्ण ध्यान रखना चाहिए जिससे अल्प मात्रा में ही कष्ट हो।

मई 2023 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आप स्त्री या बन्धु वर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे अथवा आपके बन्धु वर्ग तथा स्त्री को किसी प्रकार का कष्ट होगा। साथ ही शत्रुपक्ष से भी आपको नित्य चिन्ता तथा भय बना रहेगा। आपमें इस मास उत्साह की अल्पता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होगी तथा अनावश्यक रूप से धन भी अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आर्थिक रूप से भी आप कष्टानुभुति प्राप्त करेंगे आपके मन में लालच के भाव की भी

वृद्धि होगी तथा शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा। बन्धु जनों से आपके सम्बन्धों में तनाव व्याप्त होगा तथा ऐसे समय में मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे जिससे आपको मानसिक रूप से असन्तुष्टि रहेगी। साथ ही अन्य पारिवारिक या समाजिक जनों से भी वादविवाद होते रहेंगे।

लेकिन इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फलों को भी अवश्य प्राप्त करेंगे। इससे आपको स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा इनसे आप पूर्ण सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्रों तथा द्रव्य आदि को प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे। अतः यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त रहेगा।

जून 2023 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा। अतः शत्रु पक्ष से आप चिन्तित रहेंगे तथा ये आपके लिए समस्याएं भी उत्पन्न करेंगे। साथ ही आपके घर में चोरी भी हो सकती है। अतः चोरों से आपको सावधान रहना चाहिए। इस महीने में आपका अनावश्यक धन का व्यय होगा जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा न ही आप इसका अनुपालन करेंगे। आपका स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप शारीरिक रूप से कष्ट की अनुभूति करेंगे फलतः आपकी शारीरिक शक्ति का ह्रास होगा। साथ ही इस महीने आप घर से दूर किसी यात्रा पर भी जा सकते हैं। सांसारिक कार्यों में भी आपको कष्ट होगा तथा मुकद्दमे आदि में भी आपके धन का व्यय हो सकता है। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

साथ ही इस मास में आप वातजन्य रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा किसी एसे कार्य को भी आप सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी मान प्रतिष्ठा को आघात पहुचेगा। इस समय अग्नि के द्वारा भी आप किसी प्रकार से हानि प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानी पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

जुलाई 2023 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुख एवं सौभाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धन लाभ अर्जित करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सम्पन्न होंगे। इस मास में आप घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते हैं। सन्तति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगे तथा इनका आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनका पूजन एवं सम्मान करने के लिए आप तत्पर रहेंगे। इस मास में समाज में आपका यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा तथा भाग्योदय सम्बन्धी कार्यों में वृद्धि तथा उन्नति होगी। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता की प्रबलता रहेगी एवं दूर समीप की आप कोई लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न करेंगे। मित्र तथा बन्धुवर्ग से इस समय सम्बन्धों में घनिष्ठता होगी। इसके अतिरिक्त आप सर्वत्र मान प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

इसके साथ ही इस मास में आप शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे इससे आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा वातोत्पन्न रोगों से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि का भी भय होगा जिससे हानि की आशंका बनी रहेगी। अतः संयम एवं सर्तकता पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

अगस्त 2023 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने कार्य क्षेत्र में आशातीत उन्नति तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे साथ ही आपके उच्चाधिकारी या वरिष्ठ सहयोगी आपसे पूर्ण प्रसन्न रहेंगे फलतः आप कार्यक्षेत्र में प्रोन्नति प्राप्त करेंगे। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनकी भलाई के लिए कार्योंको भी सम्पन्न करेंगे साथ ही आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सिद्ध होंगे। फलतः आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों में आपकी श्रद्धा होगी तथा इनकी पूजा एवं सेवा में भी आप तत्पर रहेंगे। इस समय सामाजिक जनों में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा यश भी दूर दूर तक फैलेगा। इसके साथ ही अन्य प्रकार से भी लाभ योग बनते रहेंगे। इस समय आप नवीन स्थान या गृह आदि भी प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त पिछली असफल आशाओं को पूर्ण करने में भी आपको सफलता प्राप्त होगी।

इसके साथ ही इस मास में आप पुत्र एवं स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा नवीन वस्त्रों या द्रव्यों की भी प्राप्ति हो सकती है। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ, महत्वपूर्ण एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला होगा जिसमें आपको अपने असफल कार्यों में भी सफलता प्राप्त होगी।

सितम्बर 2023 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय स्त्री वर्ग से आपको पूर्ण लाभ होगा तथा सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप उचित लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस समय आपका स्वास्थ भी उत्तम रहेगा तथा मन से भी पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे। ज्ञानार्जन में भी आप रूचिशील रहेंगे तथा इस क्षेत्र में आप सफलता भी प्राप्त करेंगे। साथ ही मित्र एवं बन्धुवर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल सिद्ध होंगे। आपको इस मास वांछित पदार्थों की भी प्राप्ति होगी तथा इनका आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे। समाज तथा समाजिक जनों से आप पूर्ण आदर एवं सम्मान प्राप्त करेंगे साथ ही विगत रूके हुए कार्यों में भी आप इच्छित सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

इसके साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित्त दोष से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे तथा रक्त विकार का योग भी

बनता है। अतः दुर्घटना आदि से भी सावधान रहें। इसके अतिरिक्त अग्नि आदि से भी धन हानि होने की सम्भावना है अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

अक्तूबर 2023 के लिए फलादेश

यह मास आपके लए मध्यम रहेगा अर्थात शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त होंगे अतः आप का व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट जनों की संगति भी करेंगे। साथ ही आपका स्वास्थ्य भी पूर्ण रूप से ठीक नहीं रहेगा इस समय आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य पराक्रम एवं परिश्रम के उपरान्त भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा न ही आप इसका अनुपालन करेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आप धन हानि को प्राप्त कर सकते हैं। मित्रों एवं सम्बन्धियों के मध्य आपके सम्बन्धों में तनाव रहेगा तथा उनसे उचित सहयोग तथा सुख प्राप्त करने में असमर्थ रहेंगे। आपके कार्यक्षेत्र में भी इस मास में व्यवधान उत्पन्न होंगे तथा शत्रुओं से नित्य भय तथा चिन्ता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त आप जिस कार्य को भी प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मिलेगी। साथ ही मन से भी अशान्त रहेंगे एवं बैचेनी की अनुभूति करेंगे।

इसके साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं उससे आपको अपेक्षित सहयोग भी प्राप्त होगा। आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा पूर्ण रूपेण धन लाभ तथा सुख प्राप्त करेंगे। साथ ही आप समाज में कीर्ति भी प्राप्त कर सकेंगे।

नवम्बर 2023 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय शरीर से आप पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा मन में सन्तुष्टि का भाव विद्यमान रहेगा। आपके पराक्रम में इस समय पूर्ण वृद्धि होगी तथा शत्रु वर्ग को परास्त करने में आप सफल रहेंगे।साथ ही आपके लाभमार्ग प्रशस्त रहेंगे फलतः इस मास में आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करेंगे। इस मास आप भाग्योन्नति सम्बन्धी कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा ऐसे महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होंगे जिनको आप काफी समय से सिद्ध करना चाहते थे। इसके अतिरिक्त बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपके दृढ़ एवं मधुर सम्बन्ध स्थापित होंगे तथा सबसे आप यथोचित मान सम्मान अर्जित करेंगे। साथ ही सांसारिक कार्यों में भी आप सफलता अर्जित करेंगे राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा इनसे आपको अनुकूल सहयोग प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य महिला सहयोगियों से भी लाभ प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव में वृद्धि होगी तथा धन लाभ भी प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज एवं समाजिक जनों से पूर्ण प्रतिष्ठा तथा आदर प्राप्त करने में सफल रहेंगे। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ रहेगा।

दिसम्बर 2023 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने उत्साह द्वारा धन को अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज से आपको पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आप अपने बन्धुओं तथा मित्रों के मध्य उचित प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेंगे एवं उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त होगा जिससे आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे। साथ ही मिष्ठानोपभोग भी आप अधिक मात्रा में करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा शत्रु वर्ग कमजोर रहेंगे एवं उनको पराजित करने में आपको पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। स्त्री से आप पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं व्यापारादि कार्यों में भी आपको वांछित लाभ प्राप्त होगा। इस प्रकार आपका यह मास सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

साथ ही इस मास में आप महिला सहयोगियों से वांछित सहयोग एवं लाभ भी अर्जित करेंगे। आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की भी अभिवृद्धि होगी तथा सम्पूर्ण मास आप उचित धन लाभ एवं सुख प्राप्त करने में सफल सिद्ध होंगे। धर्मानुपालन में भी आपकी श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज एवं समाजिक जनों से पूर्ण यश एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में आपको सफलता मिलेगी।

इस वर्ष शनि कुम्भ राशि में पंचम भाव में और राहु मीन राशि षष्ठ भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में गुरु मेष राशि में सप्तम भाव में रहेंगे और 1 मई को वृष राशि में अष्टम भाव में गोचर करेंगे। मंगल ग्रह अपने सरल गति से गोचर करेंगे। 29 अप्रैल से 28 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यवसाय में उत्तम लाभ होगा। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा।

यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा और आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। नौकरी करने वालों का अपने कार्यस्थल पर ही मान-सम्मान बढ़ेगा। अप्रैल के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो सकता है। उस समय शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं परन्तु षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से आप उन पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे, और आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में जीवनसाथी एवं बड़े भाई का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

अप्रैल के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन, रत्न, आभूषण इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन खर्च होगा। बड़े निवेश के लिए भी समय अनुकूल है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पत्नी के साथ समन्वय मधुर होगें। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह संस्कार हो सकता है। आपकी समाजिक पद व प्रतिष्ठा मे बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे जिससे आपका पराक्रम बढ़ेगा। समाज में मान-सम्मान के साथ-साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी।

अप्रैल के बाद द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि के कारण आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण और उत्तम हो रहा है। उस समय परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि का योग बन रहा है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनकूल रहेगा। स्वगृही शनि पंचमस्थ होने के कारण आपके बच्चों के पराक्रम में वृद्धि होगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम व पराक्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय काफी अनुकूल है। उसका चौमुखी विकास होगा। यदि वह विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

अप्रैल के बाद अष्टम स्थान का गुरु आपकी संतान को मानसिक अशान्ति दे सकता है। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी पढ़ाई-लिखाई पर भी पड़ सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या उत्तम होगी।

लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती भी है तो आप शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएंगे। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से ग्रस्त हैं तो सावधानी बरतें क्योंकि अप्रैल के बाद समय और प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। छठे स्थान में राहु के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं मे सफलता प्राप्त करेंगे। जो व्यक्ति इलैक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं, उनको अपने करियर में सफलता मिलेगी।

जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल जाएगी। इस वर्ष आप शत्रुओं को परास्त करने में सफल रहेंगे। व्यापारिक व्यक्तियों को अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद व्यापारिक वर्ग का समय थोड़ा प्रभावित हो सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से छोटी-मोटी यात्रा होती रहेंगी। सप्तमस्थ गुरू के प्रभाव से व्यापारिक व्यक्तियों को व्यवसाय से सम्बन्धित यात्राएं होंगी।

अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरू की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप अपने पत्नी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर पुण्य भी कमायेंगे। पंचमस्थ शनि के प्रभाव से आपके मन में ईश्वर के प्रति श्रद्धा विश्वास बढ़ेगा। अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मो पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय अथवा गरीब बच्चों की पढ़ाई-लिखाई पर भी पैसा खर्च हो सकता है।

- सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को जल चढ़ाएं।
- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना करें और उसके सामने घी का दीपक जलाएं।
- गुरूवार के दिन केला या बेशन के लड्डू गरीबों में बांटे, और वीरवार का व्रत रखें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए उत्तम तथा शुभ फल प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा नाना प्रकार से सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज एवं समाजिक जनों से आप यथोचित आदर तथा सम्मान प्राप्त करने में सफल सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूजा एवं सम्मान का भाव विद्य मान रहेगा तथा धर्मानुपालन में भी आपकी रूचि उत्पन्न होगी। साथ ही अन्य लोगों के परोपकार संबधी कार्यो को भी आप सम्पन्न करेंगे। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आश्रय प्राप्त करके समाज में यश एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। इस महीने में बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा आप भी उनको सहयोग तथा सुख प्रदान करेंगे इसके अतिरिक्त अपने मानसिक विचारों तथा संकल्पों को पूर्ण करने में भी आप सफलता अर्जित करेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से भी सुख प्राप्त करेंगे तथा आपकी बुद्धि में भी सद्विचारों की वृद्धि होगी। विविध प्रकार के सुखों का आप इस समय उपभोग कर सकेंगे। इसके अलावा धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन करने में भी आप सफल हो सकेंगे। इस प्रकार यह मास आपका शान्ति एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

फरवरी 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्य रूप से शुभाशुभ फल प्रदान करेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं शरीर में आप दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। साथ ही शत्रु वर्ग से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक स्थिति भी अच्छी नहीं रहेगी एवं इसमें अशान्ति रहेगी।पारिवारिक जनों से भी आपके संबधों में मधुरता नहीं रहेगी तथा आपस में अनबन रहेगी। आपके कार्य क्षेत्र में इस समय शिथिलता आएगी तथा स्थान परिर्वतन का योग भी बन सकता है। आप इस समय अपने किसी कार्य को छोड़ भी सकते है। सामाजिक जनों से भी आपके संबध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा परस्पर विवाद आदि भी होते रहेंगे फलतः आपके सम्मान में न्यूनता का भाव आएगा। इसके अतिरिक्त शरीर में रोग तथा धन हानि की भी संभावना रहेगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होंगे।अतः आप स्त्री से पूर्ण सुख अर्जित करेंगे तथा अपनी बुद्धिमता से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा यत्न पूर्वक आप धार्मिक कार्य करने के लिए प्रवृत रहेंगे। साथ ही अन्य कई प्रकार के शुभ फल भी इस समय घटित हो सकेंगे।अतः मास शुभाशुभ फलों से युक्त होकर मध्यम रहेगा।

मार्च 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ फल प्रद ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता बनी रहेगी तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को आप बुद्धि बल से ही सम्पन्न करेंगे। इस मास आप पुत्र से सुख प्राप्त करेंगे एवं अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ भी होगा। आपके प्रभुत्व की इस समय वृद्धि होगी तथा सभी लोग हृदय से आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त आपके कई शुभ कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे तथा कहीं से कोई शुभ एवं महत्वपूर्ण समाचार की प्राप्ति भी होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना पैदा होगी एवं आप श्रद्धा पूर्वक इनकी पूजा तथा सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्च अधिकारी वर्ग से भी आप अनुकूल एवं वांछित लाभ प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा मानसिक चिन्ताओं से भी मुक्ति मिलेगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी होंगे जिसके प्रभाव से आप गर्मी या पितादि दोषों से उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे एवं रक्त विकार होने की भी संभावना रहेगी। अतः इस मास में आपको शारीरिक सुरक्षा के प्रति भी सजग रहना चाहिए।

अप्रैल 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त रहेगा इस समय आप शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे जिससे शरीर में दुर्बलता रहेगी। इस मास आपका शत्रुपक्ष बलवान रहेगा अतः उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे फलतः मानसिक रूप से आप उद्विग्न तथा अशान्त रहेंगे। इस समय आपके घर में चोरी होने की भी सम्भावना रहेगी। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें एवं उन्हें उचित सहयोग प्रदान करें अन्यथा आप किसी प्रकार से दंडित हो सकते हैं। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अल्प मात्रा में ही सफल होंगे अन्यथा आपको असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी। साथ ही धन का व्यय भी अनावश्यक रूप से अधिक होगा जिससे आर्थिक संकट भी न्यूनाधिक मात्रा में रहेगा। आपके द्वारा इस मास कोई ऐसा भी कार्य हो सकता है जिसके लिए आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। इस मास आपके सम्बन्धियों तथा मित्रों से तनावपूर्ण संबध रहेंगे एवं मधुरता का अभाव रहेगा। इसके अतिरिक्त समाज से भी आपको उपेक्षा मिलेगी तथा आशाएं भी अल्पमात्रा में पूर्ण होंगी।

साथ ही अशुभ फलों के साथ साथ इस मास में शुभ फल भी घटित होंगे।जिसके प्रभाव से आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सहयोग एवं सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे जिससे मानसिक प्रसन्नता तथा शान्ति की अनुभूति होगी।

मई 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फल अधिक मात्रा में

प्राप्त होंगे। इस समय आप स्त्री एवं बन्धुवर्ग से कष्ट की प्राप्ति करेंगे तथा शत्रुपक्ष से भी आपको भय तथा चिन्ता बनी रहेगी जिससे आप मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे ।साथ ही आप में उत्साह के भाव की भी अल्पता रहेगी तथा धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आर्थिक संकट भी बना रहेगा। शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ रहेंगे एवं मन में लोभ के भाव की प्रबलता रहेगी। अपने मित्र एवं बन्धुजनों से भी आपका परस्पर मनमुटाव रहेगा तथा ऐसे समय पर मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे जिससे आप आन्तरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य समाजिक या बन्धुजनों से भी वादविवाद आदि की भी सम्भावना बनी रहेगी। अतः आपका यह समय कष्टपूर्वक ही व्यतीत होगा।

साथ ही इस समय आप वायु से उत्पन्न होने वाले रोगों से अस्वस्थ रहेंगे तथा जाने या अनजाने में किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं जिसके लिए बाद में आपको पश्चाताप करना पड़े। इससे आपकी समाजिक अवमानना भी होगी। इसके अतिरिक्त इस समय आप अग्नि के द्वारा न्यूनाधिक मात्रा में धन हानि भी प्राप्त करेंगे। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

जून 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए समान्यता अशुभ रहेगा। इस समय आपको शत्रुओं से भय बना रहेगा तथा मन में चिन्ता व्याप्त रहेगी साथ ही आपके घर में किसी प्रकार से चोरी आदि भी हो सकती है। इस समय आप अनावश्यक रूप से धन व्यय करेंगे एवं धर्म के प्रति भी आपके मन की श्रद्धा में अल्पता आएगी। आपका स्वास्थ्य भी इस मास में अच्छा नहीं रहेगा तथा समय समय पर आप शारीरिक व्याकुलता प्राप्त करेंगे परिणामतः आपके शारीरिक बल में भी न्यूनता आएगी तथा आपको दुर्बलता का आभास होगा। इसके साथ ही इस मास आप दूर की यात्रा भी कर सकते हैं। अपने सांसारिक कार्यों को सिद्ध करने में आप प्रायः असफल ही रहेंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी आपका धन व्यय होगा जिससे आप आर्थिक रूप से भी शिथिल होंगे।

साथ ही इस मास में आप वायु से उत्पन्न होने वाले रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा किसी ऐसे कार्य को भी जाने अनजाने सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी समाज में मान हानि हो सकती है। इसके साथ ही आग के द्वारा भी आपको किसी प्रकार से हानि हो सकती है। अतः सावधानीपूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

जुलाई 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए पूर्ण रूपेण शुभ फल दायक रहेगा। इस समय आपके उच्चाधिकारी वर्ग आपसे सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे ।फलतः आप किसी सम्माननीय पद को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे। धनार्जन इस समय प्रचुर मात्रा में होगा तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको धन लाभ हो सकेगा। इस मास आपके घर में कोई धार्मिक कार्यक्रम भी सम्पन्न होने की सम्भावना रहेगी। साथ ही स्त्री एवं पुत्र से भी पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी

तथा यत्नपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। समाज में इस समय आपकी यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा अधिकांश रूप से भाग्योदय सम्बन्धी कार्य सम्पन्न होंगे। इस मास आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा लाभदायक यात्राओं का भी योग बनेगा। साथ ही मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे। इस प्रकार आप सर्वत्र मानप्रतिष्ठा अर्जित करेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक समय व्यतीत करेंगे।

साथ ही इस समय गृहस्थ सुख उत्तम रहेगा एवं नवीन वस्त्रों या अन्य द्रव्यों को प्राप्त करन में भी सफल रहेंगे एवं आनंदपूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे।

अगस्त 2024 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में अर्जित करेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र, नौकरी या व्यापार में उन्नति होगी तथा समाजिक क्षेत्र में यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे तथा वे सभी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धु जनों से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे तथा परस्पर आपको उचित सहयोग मिलता रहेगा। आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे जो काफी समय से रुके हुए थे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा इनकी पूजा तथा सेवा करने में भी आप तत्पर रहेंगे। सन्तति पक्ष से आप सुखी रहेंगे तथा बन्धुबान्धवों में भी आदर एवं प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। साथ ही आप अपनी असफल आशाओं में भी इस समय सफलता अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरक्त मानसिक रूप से भी आप पूर्ण शान्त एवं प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ इस मास में अशुभ फल भी होंगे अतः आप गर्मी या पित्त दोष से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे तथा किसी प्रकार से रक्त विकार भी हो सकता है। अतः सावधानी पूर्वक अपने समय को व्यतीत करें एवं शारीरिक सुरक्षा का विशेष ध्यान रखें।

सितम्बर 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए पूर्ण शुभ तथा प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय स्त्री वर्ग से आप लाभार्जन करेंगे तथा सौभाग्य से युक्त रहेंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि रहेगी जिसमें आप सफलता अर्जित करेंगे। आप मन से भी इस समय शान्त एवं प्रसन्न रहेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त करेंगे तथा अन्य वांछित पदार्थों की भी आपको प्राप्ति होगी। संतति पक्ष से भी आप सुखार्जन करेंगे एवं सम्बन्धियों के मध्य मानप्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस समय में सम्पन्न होंगे तथा आप प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा अन्य पारिवारिक जनों से पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा तथा धन लाभ प्रचुर

मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा सुख पूर्वक समय व्यतीत करके समाज में पूर्ण यश तथा सम्मान प्राप्त करेंगे।

अक्तूबर 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपका मध्यम रूप से व्यतीत होगा तथा आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। इस समय आपका व्ययाधिक्य रहेगा तथा दुष्ट मनुष्यों की संगति भी करेंगे फलतः समाज में आपके सम्मान में न्यूनता आएगी। इस समय आप शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे एवं मन में अशान्ति का भाव भी विद्यमान रहेगा। अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने के लिए आपको अत्यधिक परिश्रम एवं पराक्रम प्रदर्शित करना पड़ेगा फिर भी सफलता अल्प मात्रा में ही मिलेगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा की अपेक्षा उपेक्षा का भाव ही अधिक रहेगा साथ ही मित्रों एवं सम्बधियों के साथ परस्पर संबन्धों में तनाव रहेगा आपके कार्यक्षेत्र में भी इस समय व्यवधान उत्पन्न होगा एवं शत्रुपक्ष से भी चिन्ता तथा भय नित्य बना रहेगा। इसके अतिरिक्त मानसिक रूप से भी आप उद्विग्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इससे आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की भी वृद्धि होगी तथा अन्य प्रकार से भी आप सुखानुभूति प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन करेंगे।

नवम्बर 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला सिद्ध होगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मन से भी आप शान्त एवं सन्तुष्ट रहेंगे।साथ ही आपके पराक्रम में अभिवृद्धि होगी तथा शत्रु वर्ग आपसे चिन्तित, भयभीत एवं पराजित होंगे। आपके लाभमार्ग इस समय प्रशस्त रहेंगे अतः आर्थिक स्थिति में सुदृढता होगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास आपके भाग्योदय सम्बन्धी कार्य सम्पन्न होंगे साथ ही कोई ऐसा महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होगा जिसकी आप काफी समय से प्रतीक्षा कर रहे थे। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे तथा उनसे सुख भी प्राप्त करेंगे। सांसारिक कार्यो को सिद्ध करने में आप पूर्ण समर्थ रहेंगे तथा अपने उच्चाधिकारियों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में भी आप सफल रहेंगे जिससे आपके सम्मान में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से वांछित सहयोग एवं लाभ भी अर्जित करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव में वृद्धि होगी तथा उचित लाभ एवं सुख प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। इस मास में धर्मानुपालन में भी आप प्रवृत रहेंगे तथा समाज में पूर्ण मान प्रतिष्ठा अर्जित करके प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

दिसम्बर 2024 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे इस समय आप अपने उत्साह एवं परिश्रम से धनार्जन करके अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ता प्रदान करेंगे। साथ ही समाज में आपका यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा। मित्र एवं बन्धु वर्ग से आप यथोचित आदर तथा सम्मान प्राप्त करेंगे तथा स्वयं भी उनको अपना वांछित सहयोग प्रदान करेंगे। उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग का आपको पूर्ण संरक्षण तथा आश्रय प्राप्त होगा जिससे आप उचित लाभ एवं सहायता प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही इस महीने में आप मिष्ठान का भक्षण अधिक मात्रा में करेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ भी अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न एवं शान्त रहेंगे। साथ ही शत्रु वर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे तथा वे आपसे चिन्तित एवं भय की अनुभूति करेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्य के द्वारा भी आप धनार्जन करने में सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप अपने श्रेष्ठ जनों या उच्चाधिकारियों से सहयोग प्राप्त करेंगे जिससे आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति या विस्तार होने की सम्भवाना बढ़ेगी। इस समय आप दूर समीप की यात्रा भी कर सकते हैं तथा नवीन वस्तुओं या वस्त्रों आदि की भी आपको प्राप्ति हो सकेगी।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि पंचम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु छठे भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि छठे भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुअष्टम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि नवम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि दशम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि नवम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा, परन्तु मई के बाद बहुत अच्छा हो रहा है। वर्षारम्भ में आप परिश्रम के बल पर कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। अष्टम स्थान के गुरुआपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव के योग बना रहे हैं। कार्य क्षेत्र में कुछ गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अंतराल आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे व्यवसाय को ही और सुव्यवस्थित ढंग से चलाएं।

14 मई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आप कोई भी कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें भाग्य आपका साथ देगा। छठे स्थान के शनि आपके शत्रुओं का दमन करते हुए आपके ब्राण्ड नेम को ऊपर ले जा सकते हैं, जिससे आपके व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को उनके कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप आर्थिक बचत करने में सफल रहेंगे। रत्न आभूषण इत्यादि का लाभ भी प्राप्त होगा। अचल संपत्तित के साथ-साथ वाहनादि का भी सुख प्राप्त होगा।

मई के बाद नवम स्थान का गुरुआपकी आर्थिक उन्नति के लिए और भी अच्छा रहेगा। उस समय आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत कर सकते हैं। मांगलिक कार्यों या सामाजिक कार्यों एवं बच्चे की उच्च शिक्षा पर आप का धन खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पर गुरुकी दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। घरेलू वातावरण अच्छा रहेगा परन्तु सप्तमस्थ शनि की दृष्टि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य खराब कर सकती है या किसी कार्यवश आप पत्नी से दूर रह सकते हैं।

14 मई के बाद तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी समाजिक प्रतिष्ठा मे बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे जिससे समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आपको छोटे भाई बहनों का सहयोग प्राप्त होगा ।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ शनि स्वगृही होने के कारण आपके बच्चों की उन्नति करेगें। गुरुग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय उच्च शिक्षा प्राप्ति के शुभ योग हैं।

मई के बाद पंचम स्थान का राहु आपकी संतान का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। यह समय गर्भाधान के लिए अशुभ है साथ ही गर्भवती महिलाओं को विशेष सावधानी की आवश्यकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की आवश्यकता है।

14 मई के बाद लग्न स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। उस समय नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। धार्मिक कृत्यों में अधिक रूचि बढ़ेगी तथा आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सफलता प्रदायक रहेगा। वर्षारम्भ में छठे स्थान में राहु के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए समय बहुत अनुकूल है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं उनके लिए समय शुभ है। इस वर्ष आप अपने सारे शत्रुओ को छोड़कर आगे निकलेंगे। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल जायेगा। मई के बाद समय और अनुकूल हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

14 मई के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगे। नवमस्थ गुरुके प्रभाव से धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक द्वन्दता के कारण पूजा पाठ में एकाग्रता नहीं रहेगी, परन्तु 14 मई के बाद आपका मन धार्मिक कार्यो में आकृष्ट होगा।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरुव मंदिर के पुजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तुओं का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।

इस वर्ष मीन राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमेंचतुर्थ भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरुनवम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमेंदशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं एकादशभाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत बढ़ीया रहेगा। आप अपने भाग्य के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे।गुरु एवं शनि ग्रह का अनुकूल स्थान में होने से आपका चौमुखी विकास होगा। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। उच्च अधिकारियों या वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। जिससे आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ सकता है।

02 मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ-साथ इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता होने के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप भौतिक सुख सुबिधा पर भी खर्च करेंगे। बच्चों की स्वास्थ्य संबंधित परेशानी पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

02 जून के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ साथ रत्न आभुषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों केमांगलिक कार्यों में भी धन का व्यय होगा। 31 अक्टूबर के बाद धनागम में वृद्धि होगी। जिससे आप आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने मे सफल रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगेपरन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से सामाजिक उत्थान के लिए आपका पूर्ण प्रयास रहेगा।

02 जून के बाद पारिवारिक रूप से समय और भी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा और आपसी आकर्षण भी बढ़ेगा। पिताजी के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मालुत पक्ष के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपके बच्चे को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। दूसरी संतान के लिए समय अच्छा है। उसकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

02 जून के बाद समय अधिक प्रभावित हो रहा है। उस समय पंचमस्थ राहु संतान संबंधित परेशानि उत्पन्न कर सकता है। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। इस समय के अंतराल मेंबच्चेके स्वास्थ्य से संबंधित कोई भी लापरवाही नहीं करनी चाहिए। 31 अक्टूबर के बाद आपके बच्चों का उन्नति होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत है। मानसिक शांति, प्रसन्नताएवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध मेंस्वास्थ्य के प्रति ध्यान देना आवश्यक होगा। खाने-पीने की वस्तुओं में परहेज रखें। कभी कभी स्वस्थ रहते हुए भी कमजोरी जैसा अनुभव होता रहेगा। रात को जल्दी सोना और सुबह जल्दी उठकरघूमना आपके शरीर के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले जातकों को सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल सकती है। तकनीकि शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए भी यह समय श्रेष्ठतम रहेगा।

02 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु उनकी शिक्षा में अवरोध उत्पन्न कर सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नतिकारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकीकिसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। 02 जूनके बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मानोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म स्थल की यात्रा हो सकती हैअथवा अपने पूरे परिवार सहित दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त कर सकते है। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आप कोई विशेष अनुष्ठान संपन्न करेंगे। आप योग, ध्यान, एवं अपने गुरु के द्वारा दिये गये मन्त्रो का पाठ करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप दान पुण्य व गरीबों की सहायता अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एकनारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि छठे भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं छठे भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष चतुर्थ भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। आप अपने कार्य व्यवसाय में सफलता प्राप्त करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं या किसी अनुभवी व्यक्ति से मिल कर अपने व्यापार में उन्नति के लिए कोई नई योजना भी बना सकते हैं। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अधिक लाभ प्राप्त नहीं होगा।

जून के बाद सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके कार्य व्यवसाय में उत्तम वृद्धि होगी। उच्च अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। सफलता के पीछे आपकी पत्नी का पूर्ण सहयोग होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर करे हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और अपने साझेदार से संतुष्ट रहेगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। षष्टस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके शत्रु पक्ष से आपको धन लाभ होगा। धन निवेश के लिए भी अच्छा समय चल रहा है।

जून के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका रुको हुआधन मिल सकता है व धनागम में वृद्धि होगी। इस समय कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धन संचित करने में आपकी पत्नी का अहम सहयोग होगा। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर भी धन खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपके परिवार में विषमता की स्थिति बनी रहेगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति वैचारिक मतभेद हो सकता है। परन्तु आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार पारिवारिक वातावरण अनुकूल करने की कोशिश करेंगें और आप सफल भी होंगे। आपकी माता का स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता हैं।

दशमस्थ गुरु के कारण आपको पिता का अच्छा सहयोग मिलेगा।

26 जून के बाद आपको प्रेम प्रसंगो में सफलता मिलेगा। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो जाएगा। विवाहित व्यक्तियों का धर्मपत्नी के साथ समन्वय मधुर होगा। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आपकी सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। 26 नमम्बर के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। इस समयान्तराल में सन्तान पर अधिक ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर और भी शुभ हो रहा है, लेकिन साथ ही लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मानसिक परेशानी या शारीरिक आलस्यता बढ़ सकती है, जिसके फलस्वरूप आप बीमार हो सकते हैं। सुबह-सुबह व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। इस समय के अंतराल में नौकरी भी मिल सकती है।

26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो के लिए समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से अपने जन्म स्थल से दुर की यात्रा हो सकती है। स्थान परिवर्तन के योग भी बन रहे है। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी हो सकती है।

जून के बाद छोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। वर्षान्त में जलीय स्थल या समुद्र के माध्यम से विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। चतुर्थ राहु के प्रभाव से आपके नित्य नैमित्य पूजा प्रभावित हो सकती है। 26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा, जिसके फलस्वरूप आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा व सत्कर्म करेंगे। 26 नवम्बर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- घर में श्रीयन्त्र स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- प्रत्येक दिन प्राणायाम करें।
- अपने माता-पिता की सेवा करें।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। पारिवारिक परेशानी के कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। परन्तु छठे स्थान का शनि आपको सफलता के लक्ष्य तक अवश्य पहुंचाएगा। फरवरी के बाद बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं तो सफलता मिलेगी। चतुर्थ स्थान का राहु नौकरी करने वाले जातकों का स्थान परिवर्तन करा सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधिओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश की जा सकती है। अतः आपको सकारात्मक सोच में वृद्धि कर अपना आत्मविश्वास बनाए रखना होगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। कुछ अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। 28 फरवरी से एकादश स्थान में गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आपके आय के स्रोत बढ़ेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु हो जाएगा। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन वापस मिल सकता है।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करे। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। चतुर्थ स्थान के राहु आपके परिवार में विषम परिस्थिति उत्पन्न कर देंगे, जिससे परिवारिक अनुकूलता भंग हो

सकती है। साथ ही परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं, नही तो उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका अच्छा संबंध बना रहेगा। फरवरी से आपको भाईयों सहयोग मिलेगा।

24 मई से घरेलू वातावरण अच्छा होना शुरु हो जाएगा। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावारण बना हरेगा। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः उनको स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लापवाही नहीं बरतनी चाहिए।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। द्वादश स्थान के गुरु बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। 28 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर एकादश स्थान में हो रहा है जिसके बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होना शुरु हो जाएगा।

आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेंगे। परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 24 जुलाई से समय फिर से प्रभावित हो रहा है जिसके फलस्वरूप आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे परन्तु 28 फरवरी के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे।

24 जुलाई के बाद बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवर से सम्बन्धित बीमारियां हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा नहीं तो आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप सारे शत्रुओं को पछाड़कर अपने करियर में आगे बढ़ेंगे। फरवरी के बाद से विद्यार्थियों के लिए समय बहुत उत्तम है। तकनीकी शिक्षा अथवा व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपकी शिक्षा में रुकावटें आ

सकती हैं। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को उस समय सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी परन्तु 23 फरवरी के बाद लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा, गरीबों को दान और दूसरे की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। फरवरी के बाद एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्शित रहेगा। परमात्मा की भक्ति एवं मन्त्र पाठ में रूचि लेंगे। सप्तमस्थ शनि ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे। जैसे- माता का जागरण, चौकी, अखण्ड रामायण पाठ इत्यादि।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें। बुधवार के दिन गणेशजी को दूर्वा चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यापार में अच्छा लाभ मिलेगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। 29 मार्च से कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान आ सकता है। गुप्त शत्रुओं द्वारा कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाना चाहिए।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से बहुत अच्छा हो रहा है। आपको व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलना शुरु हो जाएगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण उन्नति के श्रेष्ठ योग बन रहे हैं। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहें हैं तो इच्छित लाभ की प्राप्ति होगी। आपके मित्र आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। सट्टा, शेयर बजार से जुड़े व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर ही मान-सम्मान मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नती के लिए अच्छा रहेगा। आय में अनुकूलता बनी रहेगी परन्तु 29 मार्च के आय के मार्ग प्रभावित होंगे जिससे आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है इसलिए आपको आर्थिक मामलों में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए। कुछ खर्चे अचानक आपकी आर्थिक स्थिति को बिगाड़ सकते हैं। अतः अभी से अतिरिक्त धन का संचय कर सकते हैं।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। आप के रुके हुए पैसे मिल सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु हो जाएगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से लाभ होगा। अपने व्यापर को और आगे बढ़ाने में भी धन व्यय करेंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। छोटे भाईयों का

अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु 29 मार्च के बाद गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक अनुकूलता भी भंग हो सकती है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति वेमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है। परिवार में कुछ लोगों का वर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। ऐसे में आपको अपने विवेक से काम लेने होगा। 25 अगस्त के बाद ससुराल पक्ष के लोगों के साथ संबंध खराब हो सकते हैं।

05 अगस्त के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा। उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा रहेगा। पंचम भाव पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति के अच्छे योग बन रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च से 25 अगस्त तक का समय प्रभावित रहेगा। उसके बाद का समय अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्नस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि आपकी सेहत के लिए उत्तम है। यदि आप बीमार भी होते हैं तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। 29 मार्च के बाद अचानक आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। कफ, मधुमेह एवं पेट संबंधित बीमारियों के कारण आप परेशान हो सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से भी बचें।

25 अगस्त के बाद स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा जिससे रोगप्रतिरोधक शक्ति और अतिरिक्त मानसिक ऊर्जा प्राप्त होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। व्यवसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। 29 मार्च के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आप पढ़ाई-लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से वर्षारम्भ से ही छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। ज्यादातर यात्राएं अचानक होंगी। 29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं।

25 अगस्त के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यात्रा के दौरान या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत बरतें, क्योकि अष्टम स्थान का शनि यात्रा के लिए शुभ नहीं होता।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारंभ में लग्न, पंचम व नवम इन तीनों त्रिकोण भावों पर गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन तथा गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि कर्म अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन लोहे का तवा गरीब व्यक्ति को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

व्यावसाय से जोड़ कर देखा जाए तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही हितकारी होगा। आपको प्रतीत होगा कि आपके कुछ सपने अभी भी अधूरे हैं और इसलिए इस साल आप उन सपनों को पूरा करने के लिए अधिक मेहनत करेंगे और अपने सपनों को साकार करेंगे। मुख्यतः ग्रहों के गोचर अनुकूल होने के कारण किसी भी समस्या का समाधान करना आपके लिए आसान होगा जिसके चलते आप अपने अधिकारियों की नजरों में आएंगे।

17 अप्रैल के बाद अष्टम स्थान के शनि व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। इस अवधि में आपका अपने प्रति विश्वास ही आपको लगातार विजय दिलाएगा। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कुछ कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार अपना कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए सिर्फ लाभ को दर्शाता है। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह उजागर हो जाएगा। निवेश करने के लिए भी यह एकदम उपयुक्त समय होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

अप्रैल के बाद राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आर्थिक समृद्धि में कमी आएगी। द्वितीय स्थान का राहु अचानक कुछ ऐसे खर्चे ला देगा जिसके चलते आपको आर्थिक तंगी आ सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े लोगों की सलाह अवश्य लें, नही तो पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ से ही आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

राहु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए शुभ नहीं है। परिवार के कुछ

लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना होगा। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंग। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगा। वर्ष का प्रथम माह बच्चों के लिए अच्छा रहेगा। 04 फरवरी से राहु एवं गुरु की युति संतान के लिए अच्छा नहीं है। इस समय के अंतराल में संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य एवं पढ़ाई-लिखाई पर आपको विशेष ध्यान देना चाहिए।

1 मई से गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने से आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह उत्तम समय चल रहा है। आपके बच्चों के साथ मधुर संबंधों में वृद्धि होगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं होती अतः आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति थोड़ा सतर्क रहने की आवश्यकता है ताकि आप अपने जीवन का भरपूर लाभ उठा सकें। फिर चाहे व्यावसायिक जीवन हो या व्यक्तिगत जीवन, यदि आप स्वस्थ नहीं होंगे तो इसका बुरा असर आपके जीवन पर पड़ेगा।

राहु ग्रह का गोचर आपके स्वास्थ्य के लिए और प्रतिकूल हो रहा है। अतः आप खुद को बीमार होने से बचाएं। इस दौरान आप तनाव से भी ग्रसित हो सकते हैं। स्वस्थ रहने के लिए आप योग, ध्यान या सुबह-सुबह व्यायाम नियमित रूप से करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रथम माह विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

17 अप्रैल के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। इस समय आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना होगा। अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर तैयारी करते रहना चाहिए क्योंकि आपकी मेहनत ही आपको लक्ष्य तक पहुंचाएगी।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी परन्तु 01 मई से नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। इस समय आपकी व्यवसाय से संबंधित यात्रा हो सकती है।

यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है, क्योकि शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से वाहन दुर्घटना या यात्रा के अंतराल चोरी होने के प्रबल संकेत है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु 1 मई से नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाए।
- दुर्गा जी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

इस वर्ष वृष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक जीवन में व्यवधान आएगा। इस समय के अंतराल में किसी पर विश्वास करना या कोई नया कार्य प्रारम्भ करना आपके हित में नहीं रहेगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ अच्छा होगा। नए रोजगार, पदोन्नति या किसी व्यवसाय में साझेदार के साथ एक सफल योजना बना सकते हैं।

9 अगस्त के बाद कार्यस्थल पर वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। यदि आप साझेदारी में काम कर रहे हैं तो आप अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे। गुप्त या प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बिना किसी पर विश्वास किये अपने आत्मविश्वास के साथ काम करते रहना चाहिए।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान में ग्रह गोचर धन संचय में कमी करेगा। अचानक कुछ ऐसे खर्चे आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। इस समय आपको बड़े निवेश या खरीदारी से बचना होगा।

अगस्त के बाद आपको लाभ होगा। व्यावसायियों को अपने व्यवसाय का विस्तार करने के लिए लुभावने अवसर मिलेंगे। 15 अक्टूबर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तु की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल जाएगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान में गुरु एवं राहु की युति के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर आपके भाईयों के लिए बहुत शुभ रहेगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियो में आप बढ-चढ कर भाग लेंगे। समाज उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

9 अगस्त के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे आपके

परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। इस वर्ष आपके परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे।

संतान

वर्षारम्भ से 18 फरवरी तक का समय संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। 9 अगस्त से आपके बच्चों की उन्नति होगी और उनके साथ संबंधो में मधुरता आएगी। आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय श्रेष्ठतम है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो उसका विवाह हो सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का पूर्वार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से परेशान हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ अच्छा होगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट व शारीरिक रूप से रोग मुक्त रहेंगे।

9 अगस्त से राहु का गोचर लग्न स्थान में होने के कारण अचानक आप फिर से बीमार हो सकते हैं। ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। कुछ समय ऐसा भी आएगा जब आप खुद को थका हुआ महसूस करेंगे किन्तु कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधित समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आप तनाव व चिंतामुक्त रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ में आपको गुप्त शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। 18 फरवरी के बाद भाग्य का सहयोग पूर्ण रूप से मिलने के फलस्वरूप प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को नये-नये तकनीकी विषय की ओर रूझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक सेवा, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

9 अगस्त के बाद लग्नस्थ राहु के प्रभाव से आप अचानक आलसी हो जाएंगे और यही आलस्य आपकी सफलता में रुकावट उत्पन्न करेगा। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो 15 अक्टूबर के बाद नौकरी मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। 18 फरवरी के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी-मोटभ यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक तीर्थ यात्रा भी करेंगे। 14

जून के बाद विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में घरेलू परेशानी के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित कर सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बड़ेगा। गुप्त विद्या या तान्त्रिक क्रियाओं की सिद्धि के लिए आप साधना भी कर सकते हैं।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीब लोगों को बांट दें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं अष्टम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं तृतीय भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिएयह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। अष्टमस्थ शनि के कारणव्यावसायिक जीवन में थोडे बहुत झटके आएंगे।आपके कार्यो में गुप्त शत्रु या विरोधियों द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। बिना किसी पर विश्वास किये आपको अपना कार्य करते रहना चाहिए और इस अंतराल में जल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लेना चाहिए नहीं तो उसका परिणाम प्रतिकूल होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।जो व्यक्ति नए रोजगार की तलाश में है उन्हें शनि के गोचर के बाद सफलता अवश्य मिलेगी। उस समय आप अपने सपनों को साकार करने के लिए अपने लक्ष्यों की ओर बेझिझक, पूर्ण विश्वास के साथ बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष से प्रारम्भ में ही कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण धोखा या धन हानि का योग बना हुआ है। अतः शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीको पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है।

पारिवारिक सदस्य की बीमारी दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।शनि ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। फिर भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस विषय में सोच विचार करना बहुत जरूरी है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के प्रारम्भ में पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी जिससे परिजनों के बीच सामंजस्य बिठाने में कठिनाई पैदा होगी। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अनुकूल नहीं है।

गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत अच्छा रहेगा। परिवार में एक दूसरे के साथ भावनात्मक लगााव में वृद्धि होगी। माता के लिए समय काफी शुभ है।

23 अक्तूबर से आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा।

संतान

पंचम स्थान पर राहु एवंशनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से बच्चों कोस्वास्थ्य संबंधित परेशानी होगी जिससे उनकीशिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित होगी। मई के बाद समय अच्छा हो रहा है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी दूसरे संतान के लिएसमय अच्छा हो रहा है। आपके दूसरे बच्चों के साथ प्रेम समन्वय में बृद्धि होगी। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय श्रेष्ठ है। यदि आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

पूरे वर्ष लग्न स्थान के राहु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव कि स्थिति बनाए रखेंगे। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें।

सुबह जल्दी उठ कर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा। मई के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उसके बाद आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दूर होना शुरु हो जाएगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। 5 मई के बाद माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये समय बहुत शुभ है।

विदेशी भाषा सीखने के लिए 12 अगस्त के बाद समय काफी शुभ है यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ गुरु के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी-लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 5 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तर आपके अनुकूल स्थान पर भी हो सकती है।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप तीर्थयात्रा और धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है।आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को फलीभू करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें एवं प्राणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनि ग्रह का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रही है। 18 मार्च से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर भी प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। राहु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होने कारण अचानक आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी निदान निकाल लेंगे।

नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे। यदि आप नौकरी में है तो बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपको पुरस्कुत भी किया जाएगा। कार्य स्थल पर आपका मान-संमान भी बढ़ेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान का राहु आर्थिक स्थिति में उतार-चढाव करते रहेंगे। लगभग सभी वित्तीय मामलों में आपको निराशा ही हाथ लगेगी और हानि का सामना करना पड़ेगा। अतः जोखिम भरे कार्यों में निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। 18 मार्च के बाद आय भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा।

शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपके सामने कई लाभकारी सौदे आएंगे। इसका भरपूर लाभ उठाने के लिए आप सतर्क रहें।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। इन सबके पीछे आपका ही महत्वपूर्ण योगदान होगा। क्योंकि आप भी बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए हितकर होंगे। आपके माता पिता के लिए समय काफी शुभ है।

मार्च के बाद चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में किंचित परेशानि आ सकती है। परन्तु आप नकारात्मक परिस्थितियों को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देंगे। पंचमस्थ राहु के प्रभाव से आपके प्रेम संबंधो में मधुरता बढ़ेगी। बच्चों के साथ भवनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। अपने परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्यों का आयोजन होगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। 18 मार्च से पंचम स्थान में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए श्रेष्ठ है। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा है। यदि वे किसी प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं तो अपने लक्ष्य में अवश्य सफल रहेंगे। उनके सारे विरोधी शान्त होंगे। इस वर्ष वे अच्छा उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में व्यावसायिक व्यस्तता के कारण आप अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देंगे। मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। द्वादश स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। परन्तु 18 मार्च से लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास करेगी। आप अपने दैनिक कार्यों में स्फुर्तिवान बने रहेंगे।

आप अपने प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे। जो आपकी मनोकामनाओं को पूरा करने में सहयोग करेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

इस वर्ष विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए 18 मार्च के बाद का समय बहुत अच्छा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार प्रारम्भ करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

आपके लिए रोजगार के नये अवसर भी पैदा होंगे। जिससे आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी-मोटी यात्राएं कराती रहेगी। 18

मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी लम्बी यात्राएं भी कराएगी।

आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके घर में धार्मिक व मांगलिक कार्यक्रम अधिक होंगे। 18 मार्च से पूजा-पाठ, यज्ञ-अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी।

- आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना भी कर सकते हैं। ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा।
- प्रत्येक दिन सूर्य को (तांबे के लोटे में लाल अक्षत, लाल फूल एवं रोली डालकर) जल दें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- बुधवार के दिन गणेशजी को दुर्वा चढ़ाएं व गणेश अथर्वशीष का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं नशम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में आपको ज्यादा से ज्यादा मुनाफा होगा। यह समय आपकी सभी मनोकामनाओं को पूरा करने वाला है। लॉटरी, सट्टा इत्यादि कार्यों में अपना भाग्य आजमा सकते हैं। आप को अच्छी सफलता मिल सकती है। नवम स्थान का शनि अपेक्षाकृत ज्यादा मुनाफा देने वाला है, लेकिन आपकी सभी मनोकामनाएं जुलाई के बाद ही पूरी होंगी। हालाँकि जो लोग कारोबार या रीयल एस्टेट से जुड़े हैं, उनको थोड़ा मायूस होना पड़ सकता है। वैसे चिंता करने की बात नहीं है। क्योंकि 12 अगस्त के बाद राहु ग्रह का गोचर व्यावसायिक जीवन में अच्छी उन्नति ले कर आ रहा है।

बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। बस आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे की ओर कदम बढ़ाना है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। सवाल यह नहीं उठता है कि आप किस प्रकार की नौकरी कर रहें हैं, हर हाल में आपको सराहना, सहयोग और ऐसी खुशी मिलेगी जिसकी तलाश आप एक लम्बे समय से कर रहे थे। वर्तमान नौकरी के अलावा अन्य स्रोतों से भी आपको लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए उत्तम रहेगा। संचित धन में वृद्धि होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। इस संबंध में आपको सफलता भी मिलेगा। 28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपको क्रय विक्रय के मामले में सावधान रहना चाहिए। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो द्वादश स्थान के राहु आपका अनावश्यक खर्च बढ़ा सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। कार्य व्यवसाय में भी आपको अच्छा लाभ मिलेगा, जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। एकादशस्थ राहु के कारण अचानक धन लाभ होगा और आय के सारे बन्द मार्ग खुलेंगे।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपकी पारिवरिक स्थिति बेहतर रहने वाली है। सभी लोगों के साथ स्नेह

और आपसी सौहार्द के साथ पेश आएं। परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है, लेकिन इसके विरुद्ध जाना घातक हो सकता है। जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि परिवार में कुछ परेशानियों को जन्म दे सकती है, लेकिन कुछ ज्यादा हानि होने की संभावना नहीं है।

माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहार में संयम बरतें। पिता के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे। साल का उत्तरार्द्ध आपके लिए बेहतर साबित होगा और कारोबार में मुनाफा होगा। अपने जीवनसाथी के साथ मां-बाप की सेवा कर पुण्यार्जन करें।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी शुभ रहेगा। यदि संतान की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय चल रहा है। यदि आपके बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे उनका प्रवेश हो जाएगा।

जुलाई के बाद पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल कर सकती है जिसके कारण उनकी शिक्षा-दिक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। अतः उस समय अपने बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। परन्तु 28 मार्च के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मानसिक अशान्ति व आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है। खान पान एवं दिनचर्या की अनुशासित बनायें।

वर्ष का उत्तरार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अनुकुल रहेगा। खुद को मानसिक तौर पर खुश रखने की कोशिश करें। पर्याप्त मात्रा में पानी पीना और नियमित रूप से टहलना आपकी अच्छी सेहत का राज हो सकता है। हरी पत्तेदार सब्जियों को अपने आहार में शामिल करें। उपरोक्त सामान्य बातों का पालन कर आप निश्चित तौर पर स्वास्थ्य के धनी हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता मिलने का योग बन रहा है। व्यवसायी इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो अच्छा लाभ मिलेगा। आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए काफी शुभ है।

जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको वर्ष के उतरार्द्ध में नौकरी मिल जाएगी।

आपके लिए यह बहुत ही अच्छा समय चल रहा है। आप जिस क्षेत्र में काम कर रहे हैं उसमें आपको सम्मान मिलेगा।

यात्रा-तबादला

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी लम्बी यात्रा के योग बन रही है। 28 मार्च के बाद आप विदेश यात्रा भी करेंगे। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यात्रा के अंतराल में किसी से मित्रता भी हो सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध सामान्य रहेगा। छोटी यात्रा तो होती रहेंगी। विशेष किसी प्रकार की यात्रा का योग नहीं बन रहा है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। जैसे मन्दिर निर्माण, भण्डारा, गरीबों की सहायता इत्यादि। तीर्थ स्थलों की यात्रा कर खूब पुण्यार्जन करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- दुर्गा कवच का पाठ करें या दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसका पूजन करे।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि दशम भाव में और सिंह राशि का राहु एकादश भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो यह साल आपके लिए श्रेष्ठ रहने वाला है। आप अपने परिश्रम की बदौलत व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। दशमस्थ शनि आपके अंदर काम करने का जुनून उत्पन्न करेगा। यही आपके व्यावसायिक उन्नति का कारण बनेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपको अधीनस्थ कर्मचारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा और बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे।

व्यापारियों को उम्मीद से ज्यादा मुनाफा होने वाला है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। लक्ष्मी आपके द्वार पर दस्तक देगी। यदि आप ब्याज पर भी पैसे देते हैं तो भी अच्छे लाभ होने की संभावना है। इसके अतिरिक्त जो लोग शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं या इससे संबंधित क्षेत्र में उनका पैसा लगा है उनको भी बेहतर मुनाफा होगा। साझेदारी में कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए सामान्य रहेगा। परन्तु 6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर बहुत ही शुभ हो रहा है। उसके बाद आपकी आर्थिक स्थिति बेहद ही शानदार रहने वाली है। इस सफर में आपको बहुत ही कम चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। जिन्दगी के इस सुनहरे पल का भरपूर आनंद लें।

एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धनागम में वृद्धि करगी। यह समय आपके लिए उपलब्धियों से भरा रहेगा। नई संपत्ति में निवेश करेंगे। पुराने कर्ज से मुक्त होंगे। तरक्की के द्वार खुलेंगे। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन निवेश करेंगे। घरेलू सुख सुविधा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूवार्द्ध मिला-जुला रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक माहौल में विषमता की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। अतः आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। हालांकि द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि को दर्शाता है। 6 अप्रैल के बाद मित्र व पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे। पति पत्नी के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी।

आपके भाई-बहनों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह

की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे, जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। बच्चों के स्वास्थ्य संबंधित किसी भी प्रकार की लापरवाही न करें क्योंकि पूरे वर्ष पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि बनी रहेगी। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ है। उसका चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

साल का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिहाज से अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

6 अप्रैल से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि शारीरिक व्याधियों को दूर कर आरोग्यता प्रदान करेगा। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास होगा जिससे आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ महसूस करेंगे। अपने खान-पान पर संयम रखें। सूर्योदय से पहले उठकर टहलना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। अप्रैल के बाद अध्ययन कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी।

जो लोग नौकरी की तलाश में है उनको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है। इस समय के अंतराल में आप किसी के साथ मित्रता में कार्य कर सकते हैं।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी छोटी मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

6 अप्रैल के बाद पत्नी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। सप्तमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्राएं भी होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है। 6 अप्रैल के बाद धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। ईश्वर भक्ति के कार्यों में आप अधिक समय देंगे। भगवान के प्रति आपका आकर्षण और बढ़ेगा।

बेसन की लड्डू वीरवार के दिन विष्णुजी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।

- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल देना आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगा।
- गणेशजी के निम्न मन्त्र का पाठ करें-

  ॐ गं गणपतये नमः

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि मे कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद अधिक है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद और बढ़ जाएगी। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा और आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। 15 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

9 सितम्बर के बाद समय बहुत ही अनुकूल हो रहा है। अतः उस समय व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी होंगी, जो आपके लिए अनुकूल सिद्ध होंगी। किसी बड़ी कम्पनी के साथ भी कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा और उनके साथ कार्य कर आप अपने व्यवसाय में उन्नति करेंगे। पिता का सहयोग व भाग्य में रुकावटों का उन्मूलन होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। सप्तम स्थान के गुरु आपके धनागम में निरन्तरता बनाए रखेंगे, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे। एकादशस्थ राहु के कारण विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। 15 अप्रैल के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि-भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा।

अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में आपका धन खर्च होगा। यदि कोई बड़ा निवेश करना चाहते हैं, तो उसके लिए भी समय अनुकूल है। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ अनावश्यक खर्चे भी आ सकते हैं। परन्तु 9 सितम्बर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अच्छा रहेगा। आपको भाईयों का सहयोग मिलेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। परन्तु माता पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

गुरु ग्रह का गोचर आपके ससुराल वालों के साथ संबंध खराब कर सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा। अगस्त के बाद एकादशस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। यदि दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

15 अप्रैल के बाद आपके बच्चों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अष्टम स्थान के गुरु आपकी संतान को मानसिक अशान्ति दे सकते हैं, जिससे उसकी पढ़ाई-लिखाई प्रभावित हो सकती है। अतः वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे, जिससे प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती है तो आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे।

अप्रैल के बाद अष्टमस्थ गुरु के कारण आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति कम होगी। जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपका रुची बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं। आप अचानक बीमार हो सकते हैं। तुला दान व अन्न दान करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। एकादश स्थान में राहु के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। यदि आप विदेश

जा कर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए समय बहुत अनुकूल है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं। उनको अपने करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी के तलाश में हैं उसको नौकरी मिल जाएगी। इस वर्ष आप अपने सारे शत्रुओं को पीछे छोड़ कर आगे निकलेंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से छोटी मोटी यात्राएं होंगी। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से व्यवसाय से सम्बन्धित यात्राएं भी होंगी। नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

15 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे। 15 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय या गरीब बच्चे की पढ़ाई-लिखाई पर भी आपका पैसे खर्च होगा।

- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें व सूर्य को जल चढ़ाएं।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बाटें और वीरवार का व्रत करें।
- अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें एवं उसका नित्य पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। एकादशस्थ शनि के कारण व्यापार में अच्छी सफलता मिलेगी। नौकरी करने वालों की अचानक पदोन्नति हो सकती है। 26 अप्रैल तक गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें। अन्यथा आपको हानि हो सकती है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत ही श्रेष्ठ रहेगा। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद ज्यादा है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद और बढ़ जाएगी।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें।

चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए काफि शुभ है। फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। 16 सितम्बर से द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचल संपत्ति के साथ साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यों में आप का धन खर्च हो सकता है। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन व्यय करेंगे।

घर-परिवार, समाज

परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। नहीं तो चतुर्थ स्थान पर राहु की दृष्टि विषमता की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। अतः आपको खुद पर नियंत्रण रखना होगा। माता के साथ आपके संबंध मधुर नहीं रहेंगे, उनके साथ झगड़ा होने की संभावना है। अतः थोड़ा सावधान रहें। पिता के साथ कुछ अनबन हो सकती है।

परन्तु 26 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए बहुत ही शुभ है। सामाजिक गतिविधियो में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान-सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। आपको भाई बहनों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

सितम्बर के बाद पारिवारिक रूप से समय बहुत ही शुभ हो रहा है। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा और घरेलू वातावरण भी अच्छा रहेगा। माता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। परन्तु आपके बच्चों के स्वास्थ्य के लिए यह समय अच्छा नहीं है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। अष्टमस्थ गुरु संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकते हैं। ऐसे में उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

अप्रैल के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उन्नति करेंगे। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव कि स्थिति बनी रहेगी। अष्टमस्थ गुरु के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। ऐसी स्थिति में आपको खान पान के साथ अपनी दिनचर्या भी सुधारनी चाहिए। लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि आपको आलसी बना सकती है। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

26 अप्रैल के बाद स्वतः आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरु हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से मन में अच्छे विचार आएंगे। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। फिर भी सुबह सुबह व्यायाम करना आपके लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष ठीक-ठाक रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है। 26 अप्रैल के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के कारण लम्बी यात्राओं के साथ साथ धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

यात्रा के अंतराल में किसी के साथ आपकी मित्रता हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी। सितम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानातरण आपके मनोनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। अपने घर से दूर रहने

वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी।

यात्रा-तबादला

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। विद्यार्थियों के लिए बाधाएं आती रहेंगी। परन्तु अप्रैल माह के बाद शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है।

विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। व्यापार व नौकरी में अचानक उन्नति के योग बने हुए हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। अतः पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान में आपका मन कम ही लगेगा। लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण मानसिक द्वन्दता बनी रहेगी, जिससे पूजा पाठ में मन एकाग्र नहीं हो पायेगा। गुरु ग्रह का गोचर धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। आपका मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता कर उनके दुःख दूर करेंगे। विशेष रूप से आप भगवान शिव जी की उपासना करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- तुला दान करें व महामृत्युंजय मन्त्र का नित्य पाठ करें।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं एकादश भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं दशम भाव में आजाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

एकादश स्थान का शनि कार्य व्यवसाय के लिए श्रेष्ठ है। आपको व्यापार में लाभ एवं उन्नति प्राप्त होगी। मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए लाभप्रद रहेगा। उन्नति के मार्ग इस वर्ष प्रशस्त रहेंगे तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। आपका चतुर्मुखी विकास होगा।

यदि आप भूमि से संबंधित कार्य कर रहे हैं तो सफलता अवश्य मिलेगी। कुछ सम्मानित व बड़े लोगों का सहयोग मिलेगा। यदि कोई नया कार्य प्रारम्भ करना चाहते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है। परन्तु अक्टूबर के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावट डाल सकते हैं, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में आप बड़े विवेक से काम लें। व्यापार में किसी पर आंख बन्द कर विश्वास न करें नहीं तो हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

एकादशस्थ शनि के प्रभाव से धनागम में वृद्धि होगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी। मई के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भुमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि की प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय करेंगे। यदि कोई बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

अक्टूबर के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण बीमारी इत्यादि में धन व्यय होगा। अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है। अतः अपने खर्चों पर अंकुश लगाएं तथा किसी को उधार न दें। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके के हक में नहीं होगा।

घर-परिवार, समाज

इस साल पारिवारिक माहौल अनुकूल रहेगा। घर परिवार में सुख शान्ति का माहौल बना रहेगा। पारिवारिक अनुकूलता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य लोगों को भी इसमें सम्मिलित करेंगे। रिश्तेदारों के साथ भी आपके संबंध मधुर रहेंगे। मई के बाद आपके

माता पिता के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है तथा उनका स्वाभाव बहुत ही सरल होगा। कर्तव्यपरायणता का भाव भी उनमें विद्यामान होगा तथा अपनी व्यवहार कुशलता से वे परिवार की सुख शान्ति एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव होगा।

एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपको मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा अपनी बुद्धिमत्ता एवं विद्वता से आप किसी सामाजिक पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप आदरणीय एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे। सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने जीवन में अर्जित उपलब्धियों से सन्तुष्ट रहेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि आपके बच्चों के लिए शुभ है। उन्नति के सारे मार्ग खुलेंगे और आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। प्रथम संतान के बारे में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। परन्तु राहु की युति संतान संबंधित कुछ परेशानी भी उत्पन्न कर सकती है। लेकिन उसका हल आप निकाल लेंगे।

मई के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है। अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। यह समय संतान की भाग्योन्नति के लिए बहुत ही शुभ है।

स्वास्थ्य

यह साल स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। आपकी सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपके अंदर नवीन विचारों का सृजन होगा। मई के बाद समय और भी उत्तम हो रहा है। उस समय अच्छे स्वास्थ्य के साथ आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

अक्टूबर के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। अत्यधिक आलस्यता के कारण आप स्वस्थ्य रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। यदि आपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो किसी बड़ी बीमारी के चपेट में आ सकते हैं। ऐसी स्थिति में आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी रहेगी। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपको प्रवेश मिल सकता है। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में भी सफलता मिलेगी तथा करियर में अच्छी उन्नति करेंगे।

मई के बाद अत्यधिक भोजन एवं आलस्य से बचें। विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। यदि आप व्यापारी हैं तो 22 अक्टूबर के बाद आपके व्यापार में व्यवधान आ सकता है। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

यात्रा-तबादला

छोटी मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अत्यधिक लाभ मिलेगा। मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है।

22 अक्टूबर के बाद द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि द्वादश स्थान का शनि यात्रा के अंतराल में दुघर्टना का भी योग बना रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्षारम्भ श्रेष्ठ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। दान पुण्य अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ध्यान व योग अधिक करेंगे।

आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। सत्संग व सत्कर्म अधिक करेंगे। भागवत कथा सुनना व सत्संग में जाना आपका नैसर्गिक गुण होगा। अक्टूबर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष के नीचे जल चढ़ाएं एवं शाम के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कार्य व्यवसाय में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुप्त व प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। हार्डवेयर, ईधन व कानून से जुड़े लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। हालांकि 5 अप्रैल से समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपके व्यापार में सुधार होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। भूमि, वाहन व शिक्षा से जुड़े लोगों का चौमुखी विकास होगा। दशमस्थ गुरु के प्रभाव से मान सम्मान व यश में वृद्धि होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा क्योंकि शनि एवं राहु ग्रह का गोचर एक साथ प्रतिकूल होने से आपके सारे कार्य प्रभावित होंगे। आपके प्रतिद्वंदी आपको किसी कानूनी प्रक्रिया में फंसा सकते हैं। अतः जितना हो सके वाद-विवाद व कोर्ट कचहरी से दूर रहना ही आपके लिए लाभप्रद रहेगा। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें तथा पुराने कार्यों को ही अच्छे ढंग से चलाएं। किसी पर भी ज्यादा विश्वास न करें तथा अपने मन की बात सब के साथ शेयर न करें। 4 नवम्बर के बाद व्यवसाय, नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

धन संपत्ति

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आर्थिक स्थिति में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। धनागम तो होगा परन्तु व्यय अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। परन्तु 5 अप्रैल के बाद अचल धन व रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। आय के स्रोत बढ़ेंगे तथा रुके हुए व फंसे हुए धन की प्राप्ति होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के वेतन में अचानक बढ़ोत्तरी होगी तथा आपको बड़े अधिकारियों से भी लाभ प्राप्त होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आर्थिक हानि का योग बना रहा है। इस समय आपको खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। अचानक परिवार में कुछ ऐसे खर्चे आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक कमी का एहसास हो सकता है। अतः इस समय के अंतराल में आपको सावधान रहना चाहिए। 4 नवम्बर के बाद आर्थिक लेन देन व निवेश न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

द्वादश स्थान का शनि पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। घरेलू माहौल को अनुकूल बनाये रखने के लिए छोटी मोटी बातों को अनदेखा न करें नहीं तो आपका पारिवारिक वातावरण ज्यादा प्रभावित हो सकता है। आपको अपनी वाणी पर भी नियंत्रण रखना होगा। परन्तु 5 अप्रैल से समय अनुकूल हो रहा है। आपके भाई बहनों की उन्नति होगी। माता पिता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर बने रहेंगे। मान सम्मान तथा पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, जिससे समाज में आपका यश सर्वत्र व्याप्त होगा। सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपको उचित सम्मान प्रदान करेंगे।

13 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक चिंताएं बढ़ सकती हैं। ससुराल एवं मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय शुभ नहीं है। इस समय के अंतराल में घरेलू जिम्मेदारियां बढ़ेंगी, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते है। ऐसे में आप अपनी धैर्य शक्ति बढ़ाएं तथा पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाए रखने के लिए पूर्ण प्रयास करें क्योंकि 4 नवम्बर के बाद समय और ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है।

संतान

पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि संतान के लिए श्रेष्ठ योग बना रही है। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। 3 मार्च के बाद आपके बच्चों को उन्नति करने के लिए अधिक प्रयास करना पड़ेगा। प्रथम संतान का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। परन्तु 2 जून के बाद समय बहुत ही श्रेष्ठ हो रहा है।

आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा तथा वे आपकी उम्मीदों से बढ़कर कार्य करेंगे। यदि आपके बच्चे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु 4 नवम्बर के बाद समय फिर से प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय उनके रहन सहन पर विशेष ध्यान देना होगा।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेंगे। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव बढ़ सकता है। द्वादशस्थ शनि के कारण आपको ऐसा लगेगा कि आप धीरे धीरे कमजोर होते जा रहे हैं। परन्तु 5 अप्रैल से आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा। खान पान तथा दिनचर्या पर आप विशेष ध्यान देंगे। अपने दैनिक जीवन नवीन गतिविधियो को शामिल करेंगे। जैसे सुबह व्यायाम करना या खेल कूद व प्रतियोगिता में शामिल होगा।

13 जुलाई से राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आप अचानक बीमार हो सकते हैं। आपकी दैनिक दिनचर्या भी खराब हो सकती है। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें नहीं तो आपका मोटापा बढ़ सकता है। आलस्य का त्याग कर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

द्वादश स्थान में शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आलस्यता व दीर्घसूत्रता आपकी उन्नति में बाधक बन सकती है। अतः समय का सदुपयोग के साथ मन को एकाग्र कर अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 5 अप्रैल के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल हो रहा है। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज के लिए प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हों उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा। यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है।

13 जुलाई के बाद यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो सावधान रहिए, यह प्रस्ताव आपके लिए अच्छा नहीं है। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने कारण आपको धोखा मिल सकता है। जो व्यक्ति विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं, उनके लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान के शनि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे है। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से छोटी यात्राएं होती रहेंगी। इस वर्ष आपकी सारी यात्राएं अचानक होंगी क्योंकि नवमस्थ राहु के कारण पूर्व निर्धारित यात्राएं निरस्त होंगी।

5 अप्रैल के बाद उच्च शिक्षा हेतु आपकी विदेश यात्रा होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधानी बहुत ही जरूरी है क्योंकि 13 जुलाई के बाद राहु एवं शनि का गोचर दुर्घटना इत्यादि का प्रबल योग बना रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में आप एक कर्मनिष्ठ व्यक्ति होंगे अर्थात् कर्म को ही अपना धर्म मानेंगे और कर्म पर ज्यादा विश्वास करेंगे। गरीबों की सहायता करेंगे और उसके दुःखों को दूर करने का पूर्ण प्रयास करेंगे। 5 अप्रैल के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा। जिससे आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। सुबह शाम मन्दिर जाना व पूजा पाठ करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आपके दैनिक पूजा पाठ में भी सुधार होगा।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें व मंगलवार के दिन हनुमानजी को चोला चढ़ाएं।
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें और सुबह सुबह उसका दर्शन करें।
- दुर्गा कवच का पाठ करें तथा आठ मुखी रुद्राक्ष काले धागे में सोमवार के दिन धारण करें।

• तुला दान मतलब अपने बजन के बराबर अन्न का दान करें।

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं प्रथम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ व्यवसायिक उन्नति के लिए अच्छा नहीं है। गुरु, राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके प्रतिद्वंदी आगे बढ़ेंगे तथा आपको किसी षड्यन्त्र में फंसा सकते है। यदि आप नौकरी में हैं तो बड़े अधिकारियों से वैचारिक मतभेद होने के कारण आपकी उन्नति रुक सकती है या प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है ऐसी विषम परिस्थिति में आपको बड़े ही विवेक से काम लेना होगा। लोहा, तेल, कच्चे माल के कारखानों आदि से जुड़े लोगों के लिए समय ज्यादा प्रभावित रहेगा। 6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण कुछ सफलता मिलेगी। अनुभवी व वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा, जिसके प्रभाव से कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय फिर से प्रभावित हो रहा है। मालिक या किसी सत्ताधारी से संबंध बिगड़ जाने के कारण व्यापार या कार्यक्षेत्र प्रभावित रह सकता है। काम धंधा अच्छा नहीं चलेगा। लेन देन के व्यापार में हानि होने की संभावना है। कार्यक्षेत्र से सम्बन्धित कुछ न कुछ परेशानियां सदैव घेरे रहेंगी। इन तमाम कारणों के चलते इस अवधि में किसी नए काम के बारे में सोचना या नए काम की शुरुआत करना जोखिम भरा होगा। आप स्वयं में आत्मविश्वास की कमी का अनुभव करेंगे।

धन संपत्ति

मुख्यतः सभी ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण अनावश्यक खर्चे बढ़ेंगे, जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें। घर में रोग की अधिकता होगी जिसके निवारण में धन का व्यय होगा। रिश्तेदारों व मित्रों के साथ पैसे का लेन देन न करें नहीं तो उनके साथ आपके संबंध बिगड़ सकता है। 3 मार्च से 2 जून तक समय कुछ अच्छा हो रहा है। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें क्योंकि द्वादश स्थान में शनि ग्रह का गोचर शुभ नहीं है।

परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। अपनी व्यापारिक उन्नति के लिए बैंक से लोन भी ले सकते हैं । नई संपत्ति क्रय करने के लिए यह समय शुभ नहीं है। धन संपत्ति से जुड़े मामलों को कोर्ट कचहरी में ले जाने से बचें।

नहीं तो आपका ज्यादा नुकसान होगा। आप कुछ ऐसे कामों में उलझे रह सकते हैं जो कम फायदा देने वाले होंगे। कुछ बेकार के कामों में भी आप पैसे बर्बाद कर सकते हैं। कुछ ऐसे खर्चे भी सामने आ सकते हैं जिनकी आपने उम्मीद नहीं की होगी। इस प्रकार की आर्थिक समस्याएं आपकी दिमागी शांति को भंग करने का काम करेंगी। 3 दिसम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल होगा।

घर-परिवार, समाज

परिवार के कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाएं आहत हो सकती हैं। कुछ विषम परिस्थियां भी निर्मित होंगी अतः अच्छा यही रहेगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। कुछ लोगों का व्यवहार वैमनस्य पूर्ण भी रह सकता है। आपके ईष्ट-मित्र अपने वादों से मुकर सकते हैं तथा उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

आपके बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान में केतु की स्थिति इस बात के संकेत कर रही है कि यदि आपने निष्ठा के साथ संबंधों को सुधारने का प्रयास किया तो आपके सम्बंध संतोषप्रद रह सकते हैं। अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष समान्य रहेगा।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण बच्चों के लिए समय शुभ नहीं है। आपके बच्चे कुसंगति का शिकार हो सकते हैं। उनका रहन-सहन व दिनर्चया बिगड़ सकती है, जिससे उनकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है। 6 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए शुभ है। आपके बच्चे अपनी योग्यता के बल पर उन्नति करेंगे तथा उनके बारे में शुभ सामाचार प्राप्त होंगे। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके बच्चों के स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। आलस्यता एवं दीर्घ सूत्रता के कारण उनकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। चोट चपेट व वाहनादि से दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है तथा कोई बड़ी समस्या भी हो सकती है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। सर्जरी आदि होने की भी संभावनाएं बनी हुई हैं। अतः स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा। खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। 6 अप्रैल से 28 जून तक समय कुछ अच्छा हो रहा है। इस समय के अंतराल में आप अपने को स्वस्थ महसूस करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आर्थिक मुद्दे को लेकर या

किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव भी रह सकता है। किसी यात्रा के दौरान भी आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः अनावश्यक यात्राएं करना भी ठीक नहीं होगा। गलत प्रवृत्तियों पर भी अंकुश लगाने की आवश्यकता है। किसी कानूनी मामले में पड़कर चिंता करना भी स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालेगा। खान-पान पर संयम रखें अन्यथा उदर विकार होने की सम्भावना है। आपको समय-समय पर डॉक्टर की सलाह लेते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने खान पान का विशेष ध्यान रखना होगा। जहां तक हो सके शुद्ध शाकाहारी भोजन करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह साल श्रेष्ठ नहीं है, परन्तु 6 अप्रैल से 28 जून तक का समय विद्यार्थियों के लिए अच्छा है। यदि आप उच्च शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते है तो यह समय उत्तम है।

यदि आप अपने करियर में सफलता पाना चाहते हैं तो अथक परिश्रम करना पड़ेगा। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं उनके लिए यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 6 अप्रैल के बाद आपकी छोटी मोटी यात्राएं होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए काफि लाभप्रद रहेगी। सामुद्रिक यात्रा या जलीय स्थान की यात्रा अधिक होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह साल अच्छा नहीं है। आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान आएंगे। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा, परन्तु आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों की सहायता करना, भूखे को खाना खिलाना आप अपना धर्म समझेंगे।

- वीरवार के दिन पीला वस्तु केला या बेसन के लड्डू दान करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। 25 सतम्बर तक शनि कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला-जुला रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। व्यापारिक उन्नति के लिए कोई बड़ा निवेश न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। लग्नस्थ गुरु के कारण आपको सरकारी अफसरों और अनुभवी लोगों का सहयोग भी पर्याप्त रूप से मिलता रहेगा।

6 मई से 30 जुलाई तक आपके कार्यों में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। मित्र के साझेदारी में कड़वाहट आने की संभावना बन रही है। जुलाई के बाद आप अपने कार्यक्षेत्र को लेकर कुछ नई योजनाएं बनाएंगे तथा आपके कार्यो में सुधार होगा। वर्षान्त में आप व्यवसाय में अधिक व्यस्त रहेंगे। प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी व आय के साधनो में सुधार होने के प्रबल योग हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक मामलों के लिए इस वर्ष आपको ज्यादा सतर्क रहना होगा क्योंकि द्वादश स्थान में शनि ग्रह का गोचर धन संपत्ति के लिए अच्छा नहीं है। कुछ अनावश्यक खर्चे भी आ सकते हैं जो आपकी आर्थिक स्थिति को कमजोर कर सकते हैं। 6 मई के बाद आप कोई बड़ा निवेश न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। शेयर बाजार व सट्टे-लॉटरी में धन लगाने से बचें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक स्थिति को बेहतर करने के लिए आप कठोर परिश्रम करेंगे। थोड़ी सूझ-बूझ और अवसर को पहचान कर आप धन कमाने में सफल रहेंगे। अनावश्यक खर्चो पर नियंत्रण रखना आपकी प्राथमिकता होनी चाहिए, ताकि अवसर पड़ने पर पैसों की दिक्कत न हो। 25 सितम्बर के बाद धन संपत्ति के मामले में सुधार देखने को मिलेगा। जीवनसाथी को अपने कार्यक्षेत्र में कोई सफलता मिलने से आपको आर्थिक सहयोग मिलना संभव है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक जीवन की बात करें तो यह वर्ष सामान्य रहेगा। संतान या पिता के लिए वर्ष का प्रारम्भ शुभ रहने वाला है। 6 मई के बाद अचानक धर्मपत्नी के साथ संबंधो में खटास आने की संभावना बन रही है। पारिवारिक सदस्यों का सहयोग नहीं मिलने के कारण

आप कुछ परेशान रह सकते हैं, परन्तु 30 जुलाई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में पारिवारिक अनुकूलता के साथ-साथ सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। वर्षान्त दाम्पत्य जीवन के लिए काफी शुभ है। पति-पत्नी के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। पुराने परिचितों से मिलने-जुलने और पुराने रिश्तों को फिर से तरोताजा करने के लिए अच्छा समय है।

संतान

वर्षारम्भ बच्चों के लिए शुभ है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि बच्चों की उन्नति के लिए श्रेष्ठ योग बना रही है। संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बन रहे हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में संतान के पराक्रम में वृद्धि होगी तथा इनका सामाजिक स्तर भी बढ़ेगा। यह समय आपके दूसरी संतान के लिए ज्यादा शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के लिए शुभ है। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। लग्नस्थ गुरु के कारण आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। खाने पीने पर आप विशेष ध्यान देंगे।

6 मई से 30 जुलाई के अंतराल आपके स्वास्थ्य में कुछ कमी आने की संभावना बन रही है। मौसम जनित बीमारियां परेशान कर सकती हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों की वर्ष के प्रारम्भ में पढ़ाई-लिखाई में रुचि बढ़ेगी। स्मरण शक्ति अच्छी होने से आप कठिन विषयों को बड़ी आसानी से समझने में सफल होंगे। उच्च शिक्षा तथा रिसर्च से जुड़े छात्रों को अपनी मेहनत के अनुपात में ज्यादा बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे।

जो छात्र विदेश में जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं उनको 6 मई के बाद नये अवसर मिलने की उम्मीद है तथा 25 सितम्बर के बाद शिक्षा संबंधित सभी कार्यो में सफलता मिलने की प्रबल संभावना बन रहा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ व्यवसायिक लम्बी यात्राओं के लिए शुभ है। धार्मिक व पर्यटक स्थल की यात्रा होने की संभावना बन रहा है। 6 मई से 30 जुलाई के अंतराल आपके विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके व्यवसायिक यात्राएं भी अधिक होंगी। मुख्यतः सभी यात्राएं मंगलमय व सौभाग्यवर्धक तथा आनंददायक होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्य के लिए शुभ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। व्रत, यज्ञ, अनुष्ठा व भगवान की भक्ति में ज्यादा समय व्यतित होगा। गुरु भक्ति व मन्त्र सिद्धि के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ेगी।

- एक मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें।
- नीलम रत्न धारण करें।
- अपने पूजा घर में स्फटिक श्रीयन्त्र की स्थापना करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं लग्न स्थान मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अधिक अनुकूल नहीं रहेगा। व्यवसाय में परिवर्तन की संभावना बन रही है। नौकरी करने वालों का स्थानान्तरण हो सकता है। जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ेगा। व्यवसाय/नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। यदि करना बहुत जरूरी है तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह जरूर लें। यदि किसी के साथ मिलकर व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने भागीदार से असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के कारण धनागम का स्रोत बना रहेगा। परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के हित में अधिक खर्च करेंगे।

निवेश के मामले में सावधानी रखना जरूरी होगा। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने के तरीकों पर अच्छी तरह सोच-विचार कर निर्णय लें। यह वर्ष जोखिम उठाने के लिए उपयुक्त नहीं है। संपत्ति के क्रय-विक्रय संबंधी कार्यों के लिए 22 जून को राहु ग्रह का गोचर सफलता लेकर आ रहा है। अंतिम निर्णय सोच समझ कर लें।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपके मान-सम्मान में लगातार वृद्धि होगी। आप सामाजिक गतिविधियों में और अधिक सक्रिय होंगे। सप्तमस्थ राहु पर शनि की दृष्टि जीवनसाथी की स्वास्थ्य संबंधी कठिनाईयों को बताता है। द्वितीय स्थान में गुरु की स्थिति परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि का योग बना रही है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध पारिवारिक मामलों के लिए अधिक अनुकूल नहीं है। परिवार से जुड़े हर मामलों में बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। परिवार में कुछ लोगों के साथ वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। वर्षान्त में घर में मांगलिक कार्य भी संभव होंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा। आपकी आज्ञापालन में वे हमेशा तत्पर रहेंगे।

आप अपनी ओर से उनकी उन्नति का यथोचित प्रबन्ध करेंगे और वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करने में सफल भी होंगे। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ शनि स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। चिकित्सकीय परामर्श लेते रहें और अपने खान-पान पर भी विशेष ध्यान दें। नहीं तो स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

जून के बाद आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा क्योंकि लग्न स्थान में गुरु ग्रह का गोचर सकारात्मक ऊर्जाओं की वृद्धि कर रहा है, जो आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत ही शुभ है। वर्षान्त में आपका स्वास्थ्य फिर से बिगड़ सकता है। अतः खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। घुटनो में दर्द व पैर में चोट लगने की पूर्ण संभावना बन रही है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह समय उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु उत्तम है। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज में प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा।

यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है। यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो आपको सावधान रहना चाहिए क्योंकि शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल चल रहा है जिसके कारण आपको धोखा मिल सकता है। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो 22 जून के बाद वांछित नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं होंगी परन्तु 10 जून के बाद आप बड़ी यात्राओं का भी आनन्द लेंगे। व्यवसाय से संबंधित अधिक यात्राएं होंगी। तीर्थ यात्राओं का भी योग बन रहा है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। विदेश यात्रा के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्न स्थान के शनि धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करेंगे जिससे आप चाह कर भी कोई शुभ कार्य नहीं कर पाएंगे। आलस्य के कारण दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। जून के बाद लग्न स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय अनुकूल हो रहा है। आपका मन धार्मिक कार्यों के प्रति विशेष आकर्षित होगा। घर में कोई मांगलिक या धार्मिक कार्य संपन्न होगा। किसी तीर्थ स्थान की यात्रा होगी। गुरु का आशीर्वाद व गुरु दीक्षा प्राप्त होगी।

वर्षान्त में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ेगी। साधना व योग में आप अधिक से अधिक समय निकालेंगे। सत्संग में जाना व गुरुवाणी सुनना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- शिवजी की उपासना करें एवं महामृत्युंजय मंत्र का पाठ करें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- अपने बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त करना एवं माता-पिता की सेवा करना लाभदायक रहेगा।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं काली वस्तु का दान करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध
(18/09/2010 - 18/09/2027)

बुध की महादशा 18/09/2010 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 18/09/2027 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध दशम भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के कारण सन्तान से सुख और शत्रु पर विजय मिली होगी तथा कार्य स्थान में स्थिति अनुकूल रही होगी। बुध की इस दशा में आप को यश तथा ख्याति मिलेगी, जीवन में प्रगति होगी, सम्मान और उत्तम शिक्षा मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपमें भरपूर शक्ति, उत्साह तथा क्रियाशीलता रहेगी। मौसम में परिवर्तन के कारण हल्का ज्वर, विषाणु जन्य संक्रामक बीमारी, त्वचा रोग तथा स्नायविक दुर्बलता हो सकती है। अधिक मानसिक तथा शारीरिक श्रम से बचे।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थित अत्यन्त सुदृढ़ होगी। व्यवसाय तथा व्यापार से आय में वृद्धि होगी। जमीन-जायदाद से भी आय में वृद्धि होगी। आपको माता-पिता से लाभ मिल सकता है। सट्टे में लेन-देन लाभदायक होगा। जीविकोपार्जन के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर तथा हाथ से बने सामानों का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सम्मान मिलेगा, आय में वृद्धि होगी तथा वरिष्ठ कर्मचारियों और उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और अधीनस्थ कर्मचारियों तथा सहकर्मियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। व्यापार में विस्तार तथा व्यवसायियाँ के कार्य-क्षेत्र में वृद्धि होगी। आर्थिक तथा व्यावसायिक समृद्धि के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित लेन-देन लाभदायक होगा। चल-अचल सम्पत्ति से लाभ मिलेगा। वाहन सुख भी मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा तथा सूर्य की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी। कार्य के सिलसिले में यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा अत्ति उत्तम होगी। आपकी शैक्षिक उपलब्धि आपकी जीविका की संभावना में वृद्धि करेगी। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा व्यापार के विषय में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि

है। आपका दिमाग विवेक पूर्ण व विश्लेषणात्मक है और आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। अपके जीवन साथी की अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और सुख की प्राप्ति होगी। आपका जीवन साथी के साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता की विदेश यात्रा, साझेदारों से लाभ तथा आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। आपके पिता का धन-संग्रह और सुख की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के कार्य में शुभ परिवर्तन और अचानक लाभ मिलेगा जबकि बड़ों का शुभ उद्देश्य के लिए व्यय होगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध अति उत्तम रहेगा। इस दशा के दौरान आपको यश, सम्मान तथा सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको व्यवसाय में सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में धन और समृद्धि की प्राप्ति होगी जबकि सूर्य को अन्तर्दशा में व्यय तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के कारण हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा और कुछ बाधाएं हो सकती हैं। राहु की अन्तर्दशा में कुछ बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप बच्चों से सुख मिलेगा।

अंर्तदशा :- बुध - गुरु
(03/10/2022 - 08/01/2025)

आपके लिए बुध की महादशा 18/09/2010 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 03/10/2022 को प्रारंभ होकर 08/01/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में आप धनी और भाग्यशाली बनेंगे। शिक्षा उत्तम होगी। ज्ञान-विज्ञान, अध्ययन और धर्म में रुचि होगी। समाजसेवा और दान-धर्म में रुचि होगी। अध्यापन, लेखन और अध्ययन के लिए शुभ समय है। छोटे भाई या बहन का विवाह हो सकता है। आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी, समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। धन, कार्यों की पूर्ति और सौभाग्य का योग है।

आपके जीवनसाथी की लघुयात्राएं हो सकती हैं, सबसे संबंध सुधरेंगे। आपके पिता को सफलता मिलेगी, धनी बनेंगे, अरिष्ट से बचाव होगा। माता के मातहत, कर्मचारी वफ़ादार रहेंगे।

आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, विवाह, यात्रा, धन, प्रभावशाली मित्र और सफलता का संकेत है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों से मधुर संबंध होंगे। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं हो सकती हैं। व्यापारी सामान बेचने में दक्षता द्वारा धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- बुध - शनि
(08/01/2025 - 18/09/2027)

आपके लिए बुध की महादशा 18/09/2010 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा शनि की होगी जो आपके लिए 08/01/2025 को प्रारंभ होकर 18/09/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु और धैर्य का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे, भूमि और वाहन का सुख भोगेंगे। आप बुद्धिमान हैं। समझ-बूझ से किये निवेश से लाभ होगा। शिक्षा उत्तम होगी, संतान से सुख मिलेगा। सब कार्य पूर्ण होंगे, समाज में प्रभाव बढ़ेगा, आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, प्रोन्नति होगी, प्रसिद्धि मिलेगी, व्यापार में लाभ होगा। साझेदार या जीवनसाथी के माध्यम से लाभ हो सकता है। अचानक लाभ होगा। वसीयत, उपहार, सेवानिवृत्ति निधि, बोनस आदि से धन आ सकता है। अध्यात्म, धर्म या तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे, उन्हें धन का लाभ होगा। आपके पिता सफल होंगे। माता के जीवन में अप्रत्याशित घटना घट सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, धन का लाभ, आत्मविश्वास में वृद्धि, कार्यों की सफलतापूर्वक समाप्ति, जनता में लोकप्रियता का संकेत है।

आपकी संतान को सामूहिक गतिविधियों में लाभ होगा, जनता में लोकप्रियता बढ़ेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में सुखद वातावरण होगा। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारी सौभाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नेत्रों और कानों में मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए दाल, तिल, तेल और काले वस्त्र दान करें।

महादशा :- केतु
(18/09/2027 - 18/09/2034)

केतु की महादशा को 18/09/2027 आरम्भ और 18/09/2034 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में केतु छठे भाव में स्थित है जहाँ से इसकी दृष्टि बारहवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको यश और ख्याति की प्राप्ति और प्रगति हुई होगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहा होगा। केतु की वर्तमान दशा में शत्रुओं पर विजय, सौभाग्य, यश तथा अधिकार मिलेगा।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में किसी बीमारी से लड़ने की क्षमता होगी। आपको छूत की बीमारी, बुखार, अल्सर, चर्मरोग, घाव और मूत्राशय में पीड़ा हो सकती है। कुछ सावधानी बरतकर इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। आपको अपने विरोधियों से लाभ मिलेगा। ननिहाल पक्ष से लाभ मिल सकता है। सट्टे तथा अन्य निवेश से लाभ होगा। केस-मुकदमे में निर्णय आपके पक्ष में होंगे। जीविका-व्यवसाय के लिए भाषा, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक, शरीर-विज्ञान, प्रौद्योगिकी, ज्योतिष, परा-चिकित्सा सेवा अथवा समाज सेवा के क्षेत्र का अध्ययन कर सकते हैं। चिकित्सा उपकरण, द्रव इंजीनियरी, लोहा-इस्पात, दवा, रेडियो के पुर्जे, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक के पुर्जे, रत्न, खनिज आदि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के कार्य-स्थान में माहौल अनुकूल रहेगा। आपको सहयोगियों-सहकर्मियों से सहयोग और वरिष्ठ कर्मचारियों से सदभाव मिलेगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को कार्य में सफलता, अच्छी आय और लाभ होगा। कार्य के सिलसिले में आपकी यात्रा हो सकती है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको आराम मिलेगा। आप गाड़ी बदल सकते हैं या नयी गाड़ी ले सकते हैं। आप जमीन-जायदाद की खरीद या बिक्री कर सकते हैं। आवास में परिवर्तन हो सकता है। मंगल की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा और सूर्य की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा की सम्भावना है।

शिक्षा :

शिक्षा उत्तम होगी और आप प्रतियोगिताओं और परीक्षाओं में अच्छा करेंगे। तकनीकी विषयों में आपकी रुचि होगी। कम्प्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग, भाषा, भौतिक शास्त्र, वायु-सैनिक के कार्य, दवा, विज्ञान, तत्त्वमीमांसा, प्रसारण, गुप्त विद्या तथा अन्य विषय आदि में भी आपकी रुचि हो सकती है। आप अपने अध्ययन में अच्छा करेंगे और सभी परीक्षाओं प्रतियोगिताओं में सफल होंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को लाभ तथा समृद्धि

मिलेगी। आपके जीवन साथी को कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी, अनावश्यक खर्च होगा तथा व्यर्थ की यात्रा होगी। आपकी माता के जीवन में कुछ परिवर्तन होगा, छोटी यात्रा होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा जबकि पिता को यश, ख्याति और अधिकार प्राप्त होगा। आपके छोटे भाई-बहनों की जमीन-जायदाद में वृद्धि, उत्तम शिक्षा तथा कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या होगी जबकि बड़ों के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन, अचानक लाभ तथा हानि होगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान विरोधियों पर विजय मिलेगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मंगल की अन्तर्दशा में सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में लोकप्रियता मिलेगी और विभिन्न स्रोतों से लाभ होगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा तथा स्वास्थ्य-समस्या होगी। राहु के कारण कुछ समस्या हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और साझेदारों से लाभ मिलेगा तथा विवाह होगा। शनि के कारण बच्चों से सुख और विरोधियों पर विजय मिलेगी जबकि बुध की अन्तर्दशा में यश और ख्याति मिलेगी, जीवन में प्रगति तथा कार्यों में सफलता मिलेगी।

अंर्तदशा :- केतु - केतु
(18/09/2027 - 14/02/2028)

आपके लिए केतु महादशा 18/09/2027 को आरंभ हुई है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 18/09/2027 को प्रारंभ होकर 14/02/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष, अचानक घटने वाली घटना और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप लक्ष्यप्राप्ति के लिए दृढ़प्रतिज्ञ होंगे। स्पर्धियों से कष्ट हो सकता है। रिश्तेदारों से अच्छे संबंध रहेंगे। शत्रुओं पर विजय होगी, कर्ज़ से मुक्ति मिलेगी, नौकरी में मालिकों से लाभ होगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं हो सकती हैं, खर्चे बढ़ेंगे। आपके पिता सफलता प्राप्त करेंगे। माता में स्पर्धियों पर विजय पाने की संकल्पशक्ति होगी। आपके भाई-बहनों के लिए अचल संपत्ति, उत्तम शिक्षा और माता से मधुर संबंधों का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, उन्हें सब सुविधाएं उपलब्ध होंगी, मित्रों और भाइयों से मधुर संबंध होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धन संचित होगा, प्रसन्न रहेंगे, सहकर्मियों से उत्तम संबंध रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो पर्याप्त आत्मविश्वास होगा, आय बढ़ेगी, सफलता मिलेगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के काम में कुछ परिवर्तन हो सकता है, यात्राएं होंगी, खर्चे बढ़ेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द, कंबल और तेल दान में दें।

अंर्तदशा :- केतु - शुक्र
(14/02/2028 - 16/04/2029)

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी ।

इस अवधि में आपकी आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। किस्मत साथ देगी, लोकप्रियता बढ़ेगी। धनागम अच्छा होगा। धन संचित होगा, अचल संपत्ति और वाहन क्रय कर सकते हैं। सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके बहुत से ज्ञानवान और प्रभावशाली मित्र होंगे जो लाभकारी रहेंगे। कला में रुचि होगी। आप प्रसन्नचित्त रहेंगे। कार्यक्षेत्र में उच्चपद प्राप्त होगा, सम्मान मिलेगा।

आपके जीवनसाथी सौभाग्यशाली होंगे। आपके पिता को स्वयं के प्रयास से सफलता मिलेगी; वे धनी बनेंगे, लघु यात्राएं होंगी। माता विरासत द्वारा अचल संपत्ति की मालिक बन सकती हैं; धनी बनेंगी। आपके छोटे भाई-बहनों के लिए यात्रा, पिता से लाभकारी संबंध, धन-समृद्धि और प्रसन्नता का योग है। बड़े भाई-बहन उच्चपद प्राप्त करेंगे, प्रसिद्ध और

धनी बनेंगे।

आपकी संतान सफल रहेगी, उत्तम मित्र होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार से लाभ होगा, किस्मत साथ देगी, धनार्जन अच्छा होगा। अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाताओं को विविध माध्यमों से लाभ होगा। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र मंत्र का जाप करें।

ऊँ शुं शुक्राय नमः

अंर्तदशा :- केतु - सूर्य
(16/04/2029 - 21/08/2029)

आपके लिए केतु महादशा 18/09/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 16/04/2029 को प्रारंभ होकर 21/08/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य पिता, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कार्यक्षमता और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और भाग्यशाली रहेंगे। व्यापार में धनार्जन उत्तम होगा। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। शिक्षा या धर्म से संबंधित यात्राएं हो सकती हैं। साहित्य या संचार माध्यम द्वारा लाभ हो सकता है। कला में रुचि हो सकती है। प्रत्येक समस्या का सामना साहसपूर्वक करेंगे।

आपके जीवनसाथी को उत्साह के कारण सफलता मिलेगी, इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपके पिता के आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी; वे प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे।

आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, वांछित स्थान पर तबादला, धन और सफलता का संकेत है। आपकी संतान भाग्यशाली रहेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो इच्छाएं पूर्ण होंगी।

अगर आप कार्यरत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, आय अच्छी होगी, सफल रहेंगे। परामर्शदाताओं के कार्य में कुछ बाधा आ सकती है। व्यापारियों की बिक्री उत्तम होगी, धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए गेहूं, गुड़ और तांबे का दान करें।

अंर्तदशा :- केतु - चन्द्र
(21/08/2029 - 22/03/2030)

आपके लिए केतु महादशा 18/09/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 21/08/2029 से प्रारंभ होकर 22/03/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

इस अवधि में आपको प्रोन्नति मिल सकती है। जीवनसाथी के माध्यम से लाभ हो सकता है। सैर सपाटे की इच्छा पूर्ण हो सकती है। धनार्जन उत्तम होगा; प्रसन्न रहेंगे। तरल और जलीय पदार्थों के व्यापार में लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी के पास सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके पिता का पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। माता सफल होंगी, प्रसिद्धि प्राप्त करेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए बहुत से मित्र, धन, संतान से प्रसन्नता और सफलता का संकेत है।

आपकी संतान भाग्यशाली होगी, प्रसन्न रहेगी और परीक्षा में सफल होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं, बाधाएं आ सकती हैं। परामर्शदाताओं को पहले किये निवेश से लाभ होगा। व्यापारी मार्केटिंग में कुशलता द्वारा धन कमा सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। श्वसन तंत्र की मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के मंत्र का जाप करें।

ऊँ सों सोमाय नमः

अंतर्दशा :- केतु - मंगल
(22/03/2030 - 19/08/2030)

आपके लिए केतु की महादशा 18/09/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी जो आपके लिए 22/03/2030 को प्रारंभ होकर 19/08/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल शारीरिक शक्ति, ऊर्जा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपका धनागम उत्तम होगा; कार्यों में सफलता मिलेगी। साहस और मनोबल उत्तम होंगे। आपका प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा। बहुत से हितकारी मित्र होंगे। भाई-बहनों और चाचा से उत्तम संबंध होंगे। निवेश से लाभ होगा। संतान से सुख मिलेगा या संतान का जन्म हो सकता है। रोग निरोधक क्षमता उत्तम होगी; शत्रुओं पर विजय मिलेगी।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली और धनी होंगे। आपके पिता साहसी और उत्साही होंगे। माता के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकता है, अचानक लाभ हो सकता है।

आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, धन, सक्रिय जीवन और प्रसिद्धि का संकेत है। आपकी संतान को साझेदारी से लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्रा हो सकती है, व्यापार से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए मसूर की दाल, चंदन और लाल वस्त्र दान में दें।

अंर्तदशा :- केतु - राहु
(19/08/2030 - 06/09/2031)

आपके लिए केतु महादशा 18/09/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 19/08/2030 को प्रारंभ होकर 06/09/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। विदेश यात्रा हो सकती है। नयी मित्रता लाभकारी हो सकती है। व्यापार में उन्नति होगी। कार्यों में प्रारंभ में बाधाएं आ सकती हैं। शत्रुओं पर विजय होगी, चिंताएं खत्म होंगी, कर्ज़ से मुक्ति मिलेगी। नौकरी में या मातहतों के माध्यम से लाभ होगा। खेलकूद आदि में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी का कार्यालय उत्तम होगा; सब का सहयोग प्राप्त होगा। आपके पिता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं; घरेलू सुख रहेगा। माता भाग्यशाली और धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए प्रसिद्धि, धनलाभ, धनसंचय, सुखी पारिवारिक जीवन का संकेत है।

आपकी संतान को अचानक लाभ हो सकता है या परिवर्तन आ सकता है। उन्हें सफलता के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो तबादला या अन्य परिवर्तन संभव है।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों से लाभ होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे, उत्साह उत्तम रहेगा। व्यापारी स्पर्धियों पर सफलता प्राप्त करेंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द, सतनजा और नीले वस्त्र दान करें।

अंर्तदशा :- केतु - गुरु
(06/09/2031 - 12/08/2032)

आपके लिए केतु महादशा 18/09/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 06/09/2031 को प्रारंभ होकर 12/08/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति ज्ञान, धन और संतान का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। मानवता की भलाई और दान धर्म के कार्य करेंगे। भाग्य साथ देगा। अध्यात्म में रुचि होगी। स्वास्थ्य उत्तम होगा। संतान सुखकारी होगी, निवेश से लाभ होगा। वेद और मंत्रों में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी की लघु यात्राएं हो सकती हैं; उन्हें परिवारजनों से सुख मिलेगा। आपके पिता भाग्यशाली और धनी होंगे। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा; उन्हें शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, धन में वृद्धि, प्रभावशाली मित्र आदि का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्रा हो सकती है, धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भूतकाल की साख से लाभ होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं। व्यापारियों की आय अच्छी होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ऊँ बृं वृहस्पतये नमः

अंर्तदशा :- केतु - शनि
(12/08/2032 - 21/09/2033)

आपके लिए केतु महादशा 18/09/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 9 दिन होगी। यह अंतर्दशा 12/08/2032 को प्रारंभ होकर 21/09/2033 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि भाग्य और सेवा का कारक है।

इस अवधि में आपको व्यापार में लाभ होगा, अचानक धनागम हो सकता है, अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आप धनी बनेंगे, खुद की जमीन हो सकती है, वाहन सुख रहेगा। आपके प्रभावशाली मित्र होंगे जो लाभकारी सिद्ध होंगे। आय अच्छी होगी। सब काम बन जाएंगे, आत्मविश्वास बढ़ेगा, प्रोन्नति और प्रसिद्धि का संकेत है। जीवन संयमित रहेगा। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे; उन्हें निवेश से लाभ होगा। आपके पिता उत्साही रहेंगे। माता के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है। आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, समृद्धि, आत्मविश्वास में वृद्धि का संकेत है।

आपकी संतान को सामूहिक गतिविधियों से लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार में लाभ होगा, साझेदारी लभकारी रहेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः

महादशा :- शुक्र
(18/09/2034 - 18/09/2054)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 18/09/2034 को आरम्भ और 18/09/2054 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र सामान्य रुप से एक शुभ ग्रह कहा जाता है जो संगीत, ड्रामा, भावनात्मक आनन्द, स्वाद, फैशन तथा सुखमय जीवन का द्योतक है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह कन्या राशि में निम्न का तथा मीन राशि में उच्च का होता है। आपकी कुण्डली में यह एकादश भाव में स्थित है। यह आपकी जन्म कुण्डली के पंचम भाव को देख रहा है तथा उस पर भाव के कारकत्व का प्रभाव पड़ रहा है। यह विवाह का कारक भी है। भाव जिसमें यह स्थित है मित्र, समुदाय, लक्ष्य, इच्छा और उसकी पूर्ति, धन की प्राप्ति, समृद्धि, बड़े भाई,

भाग्योदय तथा दखनों का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र एकादश अर्थात् आय भाव में स्थित है जहाँ से यह पंचम भाव को देख रहा है। इसके फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा तथा इस दशा काल में आपको कोई बड़ी या छोटी समस्या नहीं होगी।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र एकादश भाव अर्थात् आय भाव के अतिरिक्त चतुर्थ अर्थात् अपने ही भाव में स्थित होकर भाव के कारकत्व को प्रबलित कर रहा है। इस दशा काल में आपकी आय में वृद्धि होगी। आप वाहन खरीद सकते हैं और चल-अचल संपत्ति अर्जित करेंगे।

व्यवसाय :

आप अपना व्यवसाय स्वयं आरंभ करेंगे। आप मवेशियों की खरीद-विक्री और जमीन-जायदाद का कारोबार करेंगे जो आपके लिए लाभदायक होगा। आपके मित्रों के अतिरिक्त आपके बड़े भाई सहयोगी स्वभाव के होंगे जो आपकी सहायता करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन आनन्दमय होगा। आप स्त्रियों के प्रति आकर्षित होंगे। आप पुरुषों से अधिक स्त्रियों से मित्रता करेंगे और स्त्रियों का साथ पाने को उत्सुक रहेंगे। आपके बच्चे आपके सहयोगी होंगे जो अपनी मेहनत के बल पर समाज में आपका नाम रौशन करेंगे। यह दशा अति आनन्ददायक होगी।

अंर्तदशा :- शुक्र - शुक्र
(18/09/2034 - 18/01/2038)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 18/09/2034 को प्रारंभ होकर 18/09/2054 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 18/09/2034 को प्रारंभ होकर 18/01/2038 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। एकादश भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के 5वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके बहुत से मित्र होंगे, लोकप्रियता बढ़ेगी। यात्राएं खूब होंगी। बहुत से लोगों से संपर्क होगा, इनमें विपरीत लिंग के व्यक्ति भी शामिल रहेंगे। धनागम उत्तम रहेगा। यह अंतर्दशा बहुत शुभ रहेगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 64000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - सूर्य
(18/01/2038 - 18/01/2039)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 18/09/2034 को प्रारंभ होकर 18/09/2054 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 1 वर्ष की होगी जो 18/01/2038 को प्रारंभ होकर 18/01/2039 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है और एक शक्तिशाली ग्रह है। नवम भाव में स्थित होकर सूर्य कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी धर्म में रुचि होगी। पिता और गुरु के भक्त बनेंगे। आध्यात्मिक और धार्मिक कार्यों में मन लगेगा।

पुत्रों से खुशी प्राप्त होगी। उनके और स्वयं के प्रयत्नों से अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आप महत्वाकांक्षी और उद्यमी होंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य मंत्र का नित्य जाप करें और सूर्य के तांत्रिक मंत्र के 28000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - चन्द्र
(18/01/2039 - 18/09/2040)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 18/09/2034 को प्रारंभ हुई थी और 18/09/2054 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास की होगी जो आपके लिए 18/01/2039 से प्रारंभ होकर 18/09/2040 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

चंद्रमा मष्तिष्क और माता का कारक है।

लग्न में स्थित होकर चंद्रमा कुंडली के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप बहुत मूडी और संवेदनशील हो सकते हैं। कुछ समस्याएं उभर सकती हैं। आप और आपके जीवनसाथी सुंदर हैं। विपरीत लिंग के लोग आपकी ओर आकर्षित होंगे जिससे कुछ परेशानी में फंस सकते हैं, अतः सावधान रहें।

घरेलू सुख उत्तम रहेगा। माता से संबंध मधुर रहेंगे। समय-समय पर बेचैन या कल्पनाशील हो सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्र के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें। शाम को चंद्रोदय के समय चंद्रमा को कच्चा दूध चंद्र मंत्र का उच्चारण करते हुए अर्पित करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - मंगल
(18/09/2040 - 18/11/2041)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 18/09/2034 को प्रारंभ होकर 18/09/2054 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 14 मास रहेगी। यह 18/09/2040 को प्रारंभ होकर 18/11/2041 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। एकादश भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 2, 5, 6 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी आय अच्छी होगी, धन संचित होगा। धन कमाने के लिए वांछित, अवांछित तरीकों को अपनाने में संकोच नहीं करेंगे। धन का अभिमान हो सकता है। भाषणकला में प्रवीण होंगे; वाणी कठोर, प्रभावशाली, अभिमान से भरी और क्रोधपूर्ण हो सकती है। महत्वपूर्ण व्यक्तियों से आपका संपर्क रहेगा जिसके द्वारा अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी धन की पिपासा शांत नहीं होगी।

अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का लाल मूंगा चांदी की अंगूठी में, मंगलवार के दिन प्रातःकाल कच्चेदूध से धोकर और हनुमान, गणेश या शिवजी की उपासना के उपरांत धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - राहु
(18/11/2041 - 17/11/2044)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 18/09/2034 को प्रारंभ होकर 18/09/2054 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 3 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 18/11/2041 को प्रारंभ होकर 17/11/2044 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है।

राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है। इसका शुभ/अशुभ प्रभाव इसकी स्थिति, भाव और राशि के अनुसार होता है।

राहु शुभ ग्रह है। द्वादश भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के 6ठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप करुणाभाव से ओतप्रोत रहेंगे और सबकी मदद करेंगे। धनी बनेंगे, आय कई गुना बढ़ जाएगी। धन खर्च करने की फ़िक्र में फ़िज़ूलखर्ची कर सकते हैं। नेक कार्यों में भी धन खर्च करेंगे, गरीबों की मदद करेंगे। चरित्र का ध्यान रखें और आत्मप्रशंसा से बचें। नेत्ररोगों से बचाव श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2023

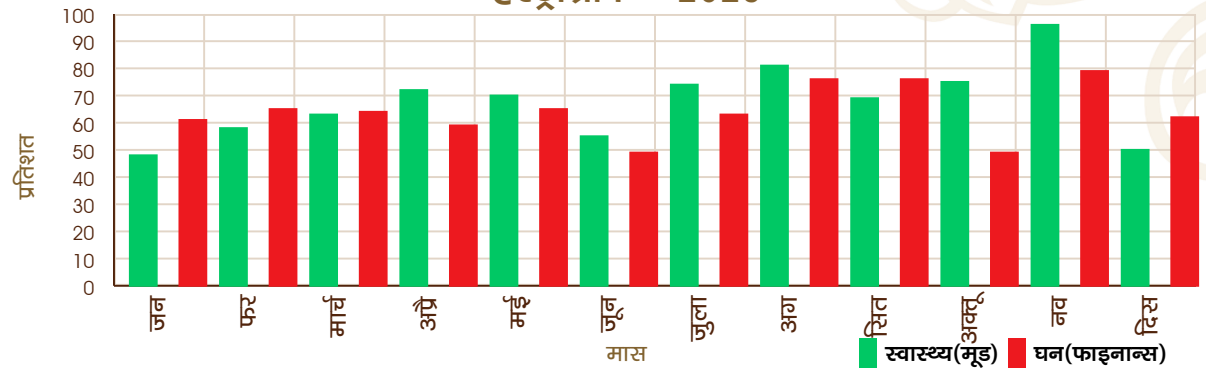

एस्ट्रोग्राफ - 2024

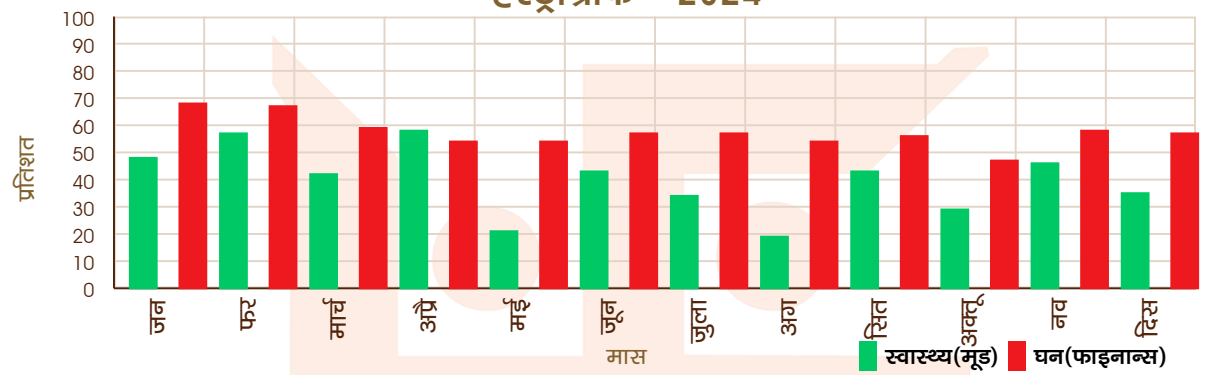

एस्ट्रोग्राफ - 2025

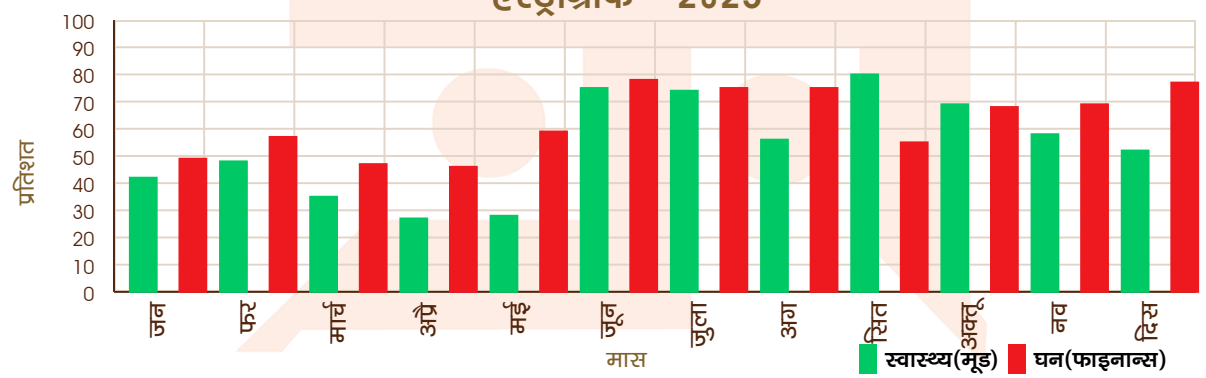

एस्ट्रोग्राफ - 2026

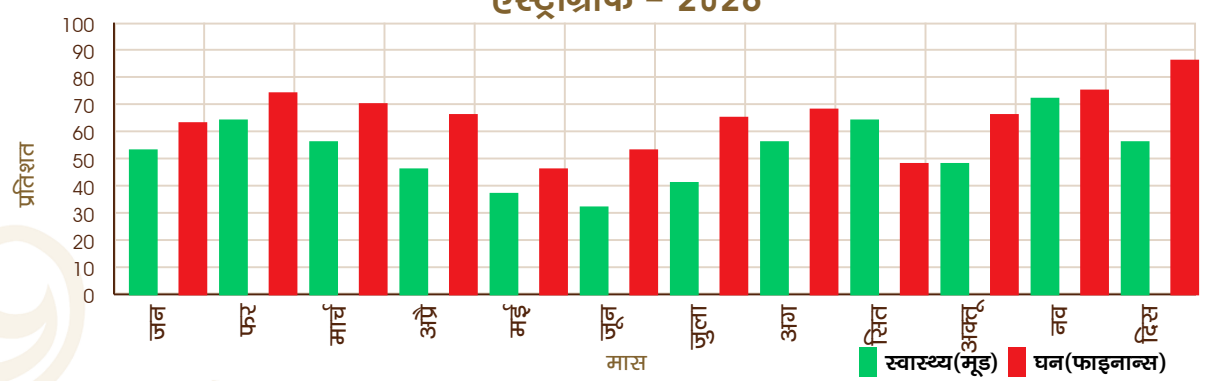

एस्ट्रोग्राफ - 2027

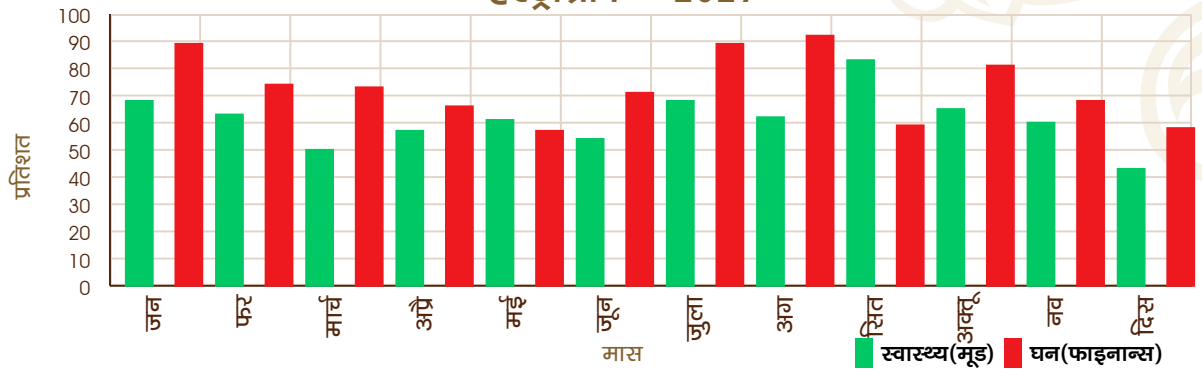

एस्ट्रोग्राफ - 2028

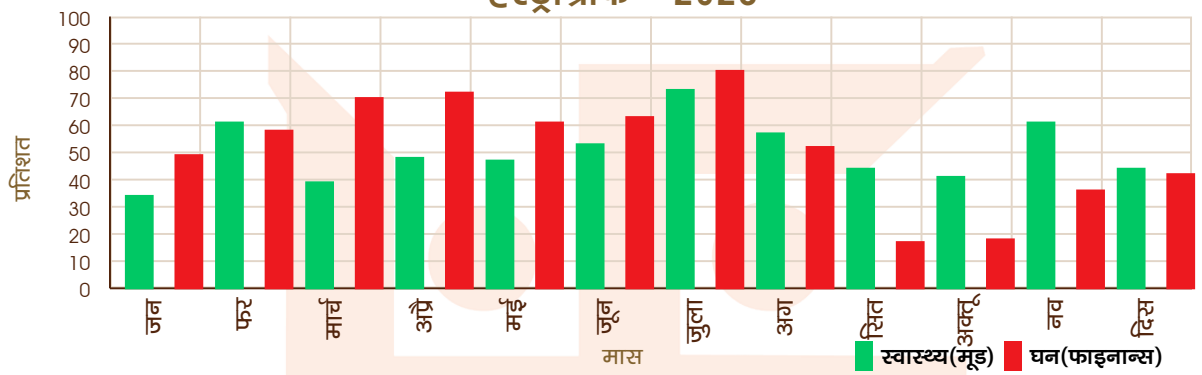

एस्ट्रोग्राफ - 2029

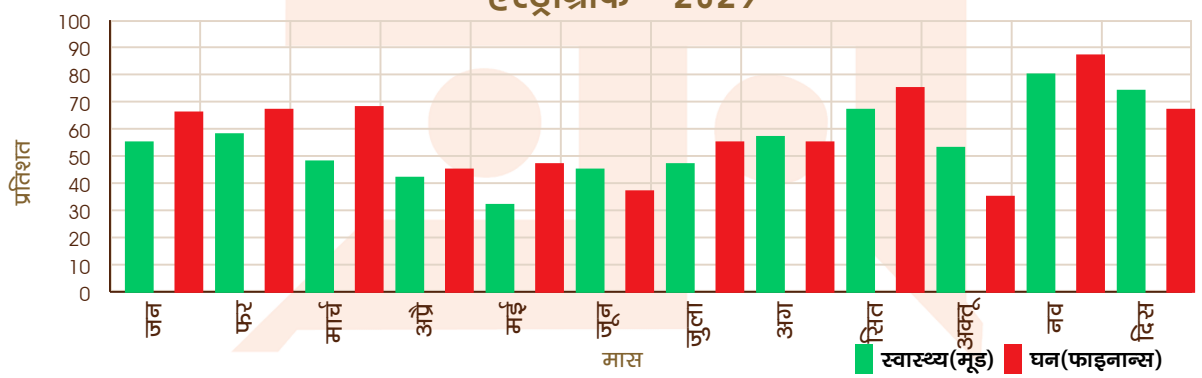

एस्ट्रोग्राफ - 2030

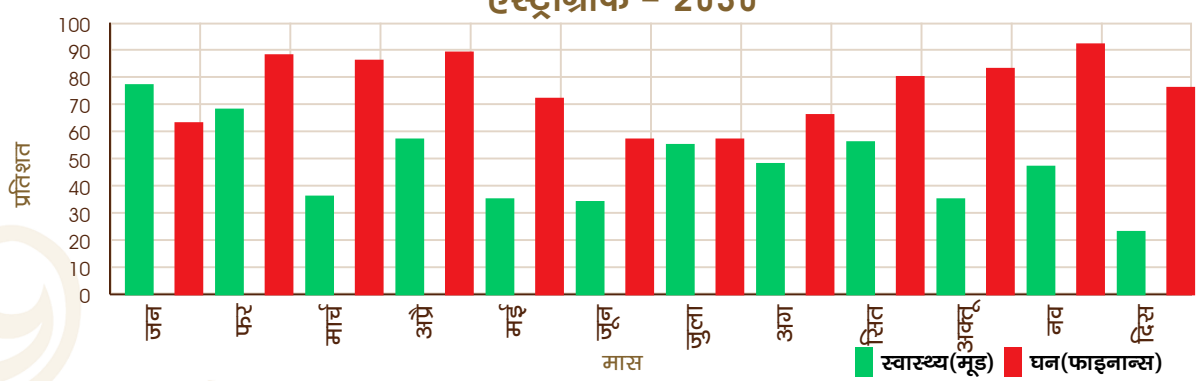

एस्ट्रोग्राफ - 2031

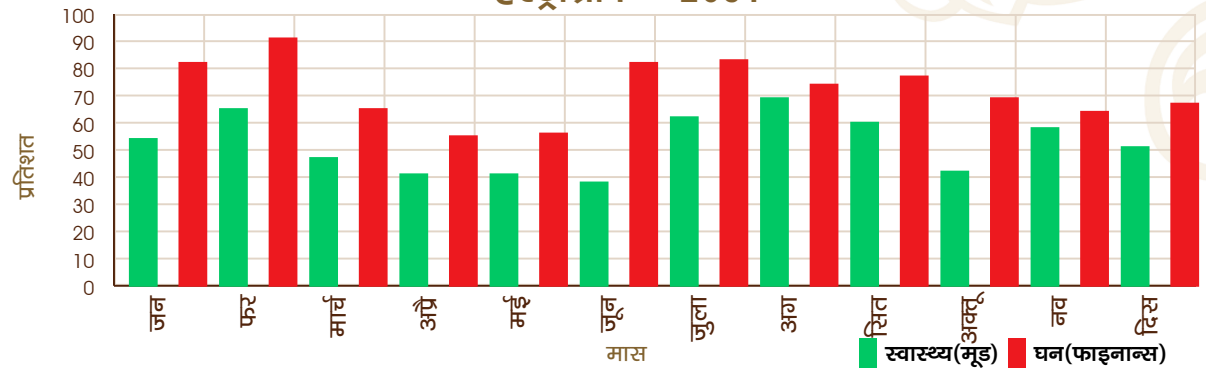

एस्ट्रोग्राफ - 2032

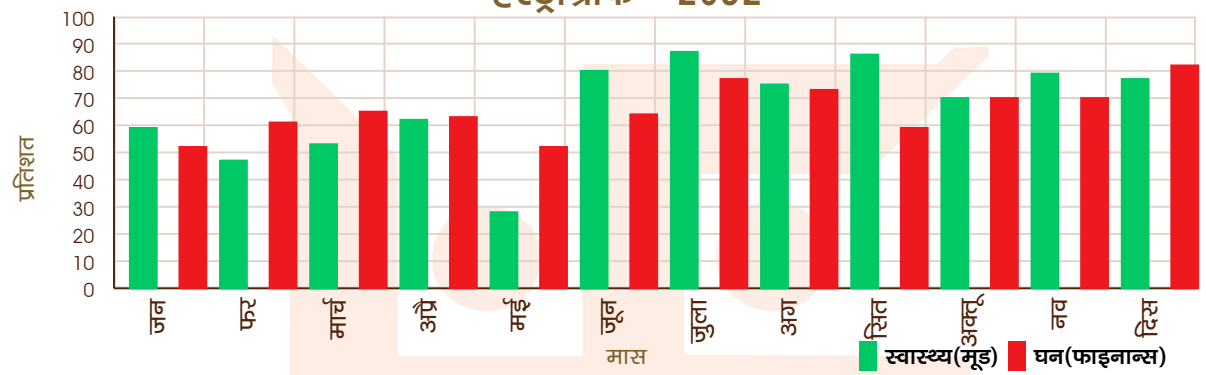

एस्ट्रोग्राफ - 2033

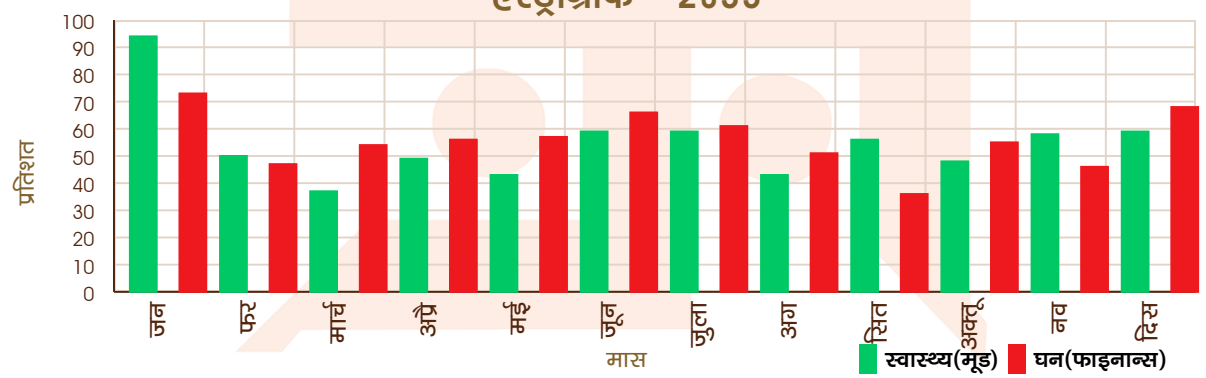

एस्ट्रोग्राफ - 2034

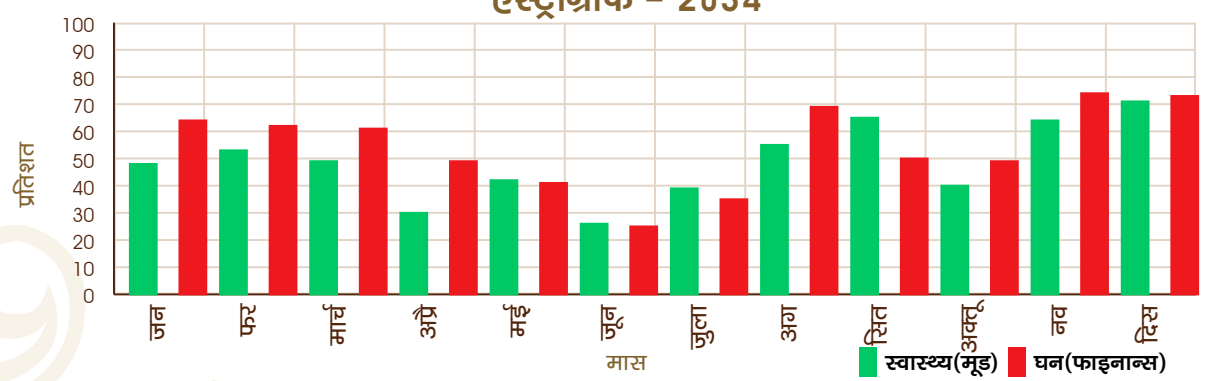

एस्ट्रोग्राफ - 2035

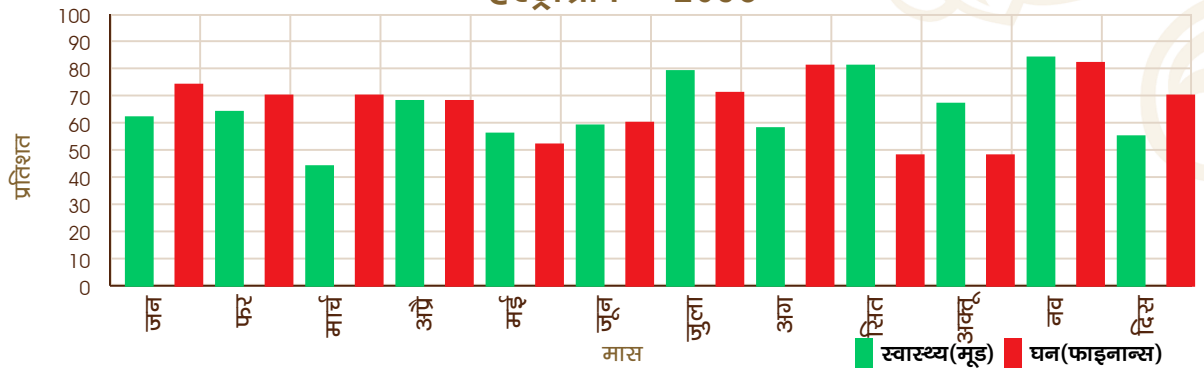

एस्ट्रोग्राफ - 2036

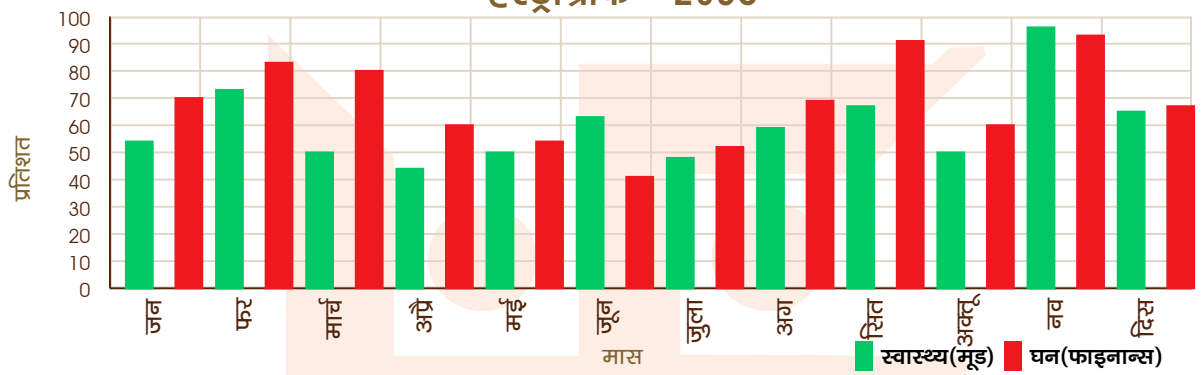

एस्ट्रोग्राफ - 2037

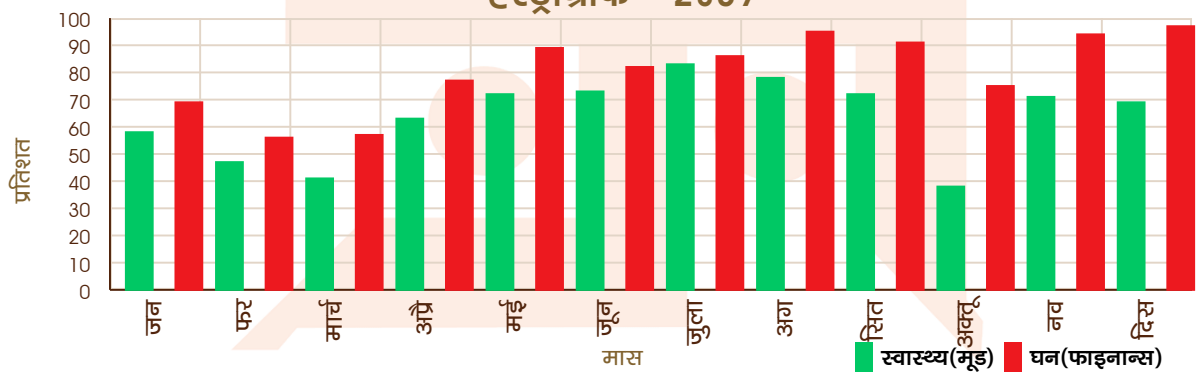

एस्ट्रोग्राफ - 2038

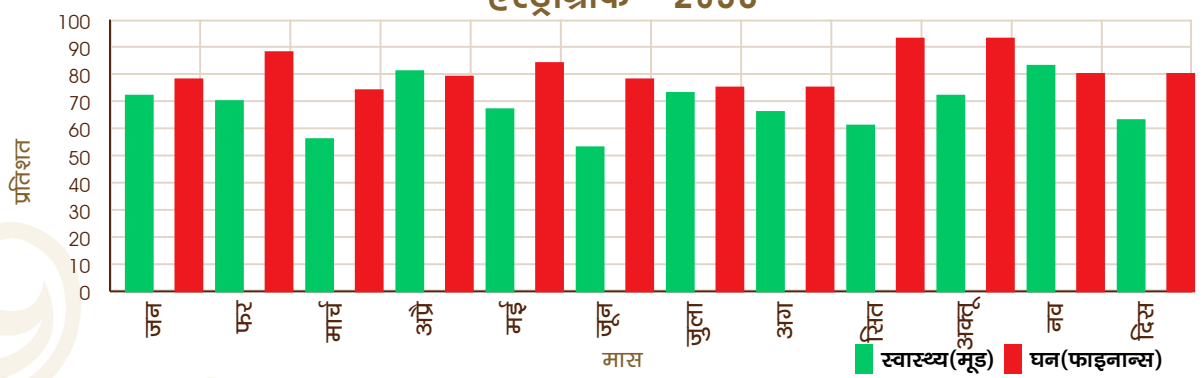

एस्ट्रोग्राफ - 2039

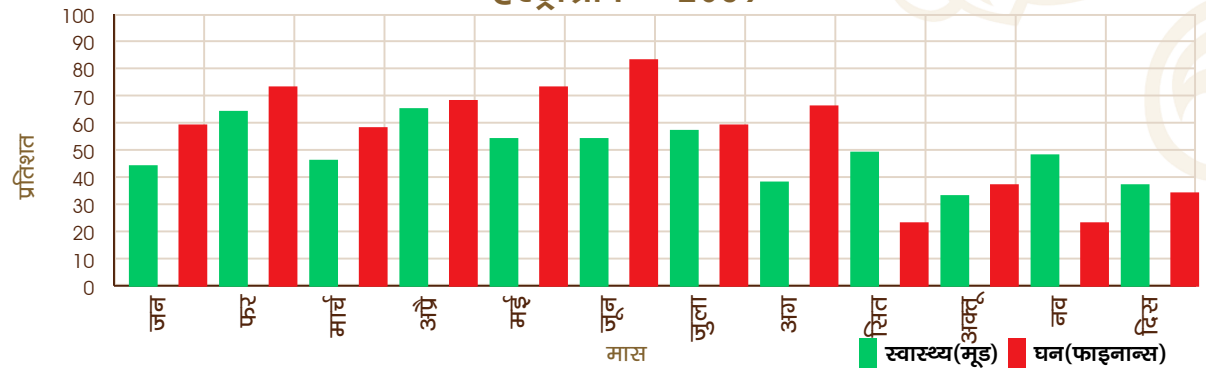

एस्ट्रोग्राफ - 2040

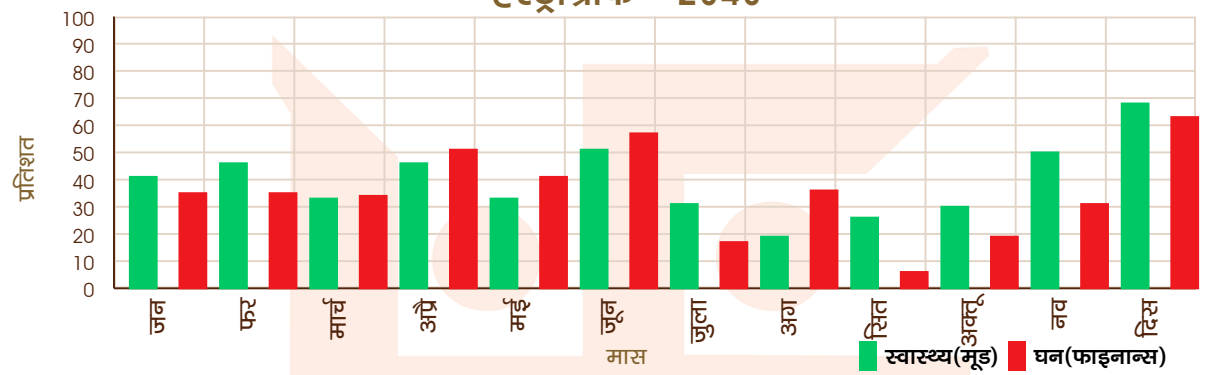

एस्ट्रोग्राफ - 2041

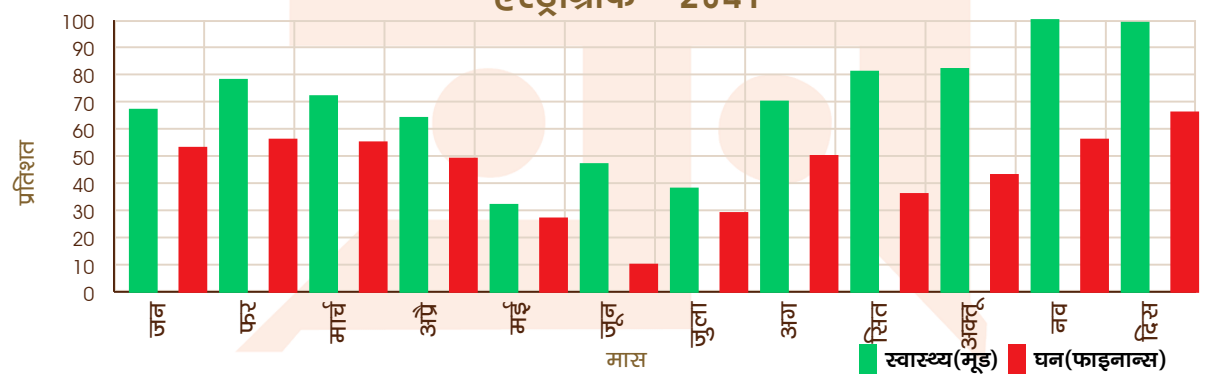

एस्ट्रोग्राफ - 2042

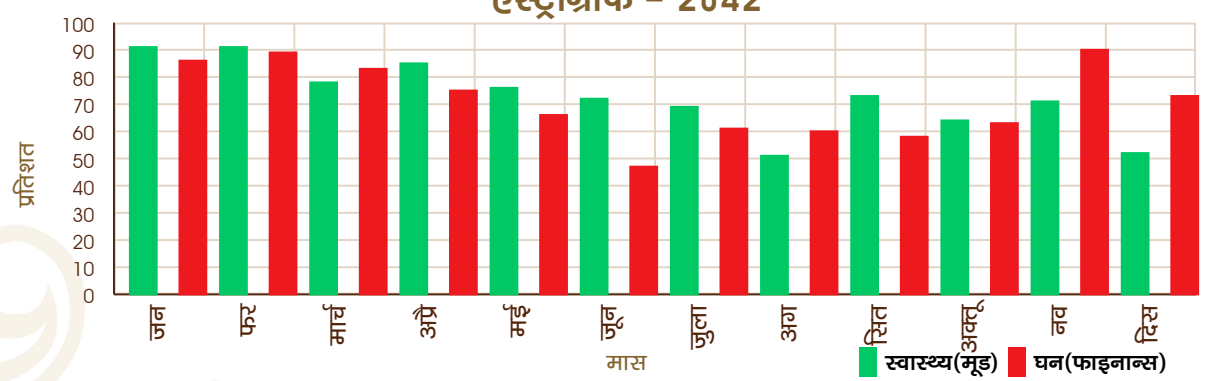

योग

अमलयोग

चन्द्राद्वोम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

भ्रातृवृद्धि योग

भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।
भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो. -16 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,गुरु,मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-41 ।।

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरू से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान एवं धैर्यवान होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

दत्तकपुत्र प्राप्ति योग

मान्दं सुतर्क्षं यदि वाऽथबौधं
मान्द्यर्कपुत्रान्वितवीक्षितं चेत् दत्तात्मजः ।।
।। फलदीपिका ।। अ. 12/श्लो.-8 ।।

जन्मपत्रिका में यदि पंचम भाव पर मिथुन, कन्या, मकर या कुंभ राशि हो और शनि पंचम स्थान में स्थित हों या पंचम भाव पर मान्दिय शनि की दृष्टि हो तो दत्तक पुत्र प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको पुत्र गोद लेना पड़े, ऐसी संभावना है।

पुत्रहीन योग

शुक्रेन्दुवर्गे सुतभे विलग्नाच्छुक्रेण चन्द्रेण युतेऽथ दृष्टे ।
शन्यारदृष्टे सति पुत्रहीनः ।।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-10 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्न से पंचम भाव शुक्र या चंद्रमा से दृष्ट, युक्त और वर्ग में हो और उसपर शनि एवं मंगल की दृष्टि हो तो पुत्रहीन योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,मंगल,शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप पुत्रहीन होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : शुक्र,शनि,मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

अतिकामी योग

पापव्योमचरान्वितौ तनुरिपुस्थानाधिपौ कामुकः।
।। जातकपारिजात ।। अ.-14/श्लो.-3 ।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठेश पाप ग्रह से युक्त हो तथा लग्नेश भी पापग्रह से युक्त हो तो अति कामी योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र योग की संभावना : 16 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अतिकामी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

देवतुल्य अति दीर्घायु योग

न च केन्द्रगताः पापा न त्रिकोणे न नैधने।
तस्यायुरमरप्रख्यं निश्चयेन च कीर्त्यते।।
।। सारावली ।। अ.10/श्लो.-97।।

यदि जन्मपत्रिका में केन्द्र त्रिकोण या अष्टम भाव में पाप ग्रह न हों तो जातक की देवतुल्य आयु होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि,राहु,केतु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,राहु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।